अप्रैल (द्वितीय) 1998, रुपए 14.00

सरिता



नकल अध्यादेश
शिक्षा व्यवस्था में सुधार

गोरखधंधा
फर्जी डाक्टर बनाने का

वैवाहिक विवाद
सख्त कदम न उठाएं

खतरनाक प...
बच्चों से...

...त्रीय दलों की बढ़ती ताकत



लिप-आर्ट
कलैक्शन
में
समा गया
और
मेटालिक
जादू!
COPPER & BRONZE
LIP-ART
FROM ULTRA CREME
लॅक्मे पेश करते हैं आपके गोल्ड और सिल्वर लिप-आर्ट कलैक्शन के लिए दो और नगीने-कॉपर और ब्रॉन्ज़. अपने आप में मनमोहक कॉपर और ब्रॉन्ज़ लिप-आर्ट को आप अपनी मनपसंद अल्ट्रा क्रीम लिपस्टिक के साथ मिक्स-एन-मैच करके बनाइए अपने मनचाहे रंग. और सजाइए अपने होंठों पर एक नई जादुई बहार!
बांया चित्र : कॉपर लिप-आर्ट C104 के साथ मिली है टी रोज़ मेंट PO1. दांया चित्र : ब्रॉन्ज़ लिप-आर्ट B103 के साथ मिली है फॉरएवर ब्राउन्न 804.
LAKMÉ
Ambience/LU/1

Bhardwaj Abha

सरिता

सामाजिक व पारिवारिक पुनर्निर्माण की पाक्षिक पत्रिका

संपादक व प्रकाशक : विश्वनाथ अंक : 1032 अप्रैल (द्वितीय) 1998

लेख



कथा साहित्य



स्तंभ

कविताएं



मुख्य संपादकीय व विज्ञापन कार्यालय :
दिल्ली प्रेस भवन, ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली – 110055.
अन्य कार्यालय : 503, नारायण चैंबर्स, आश्रम रोड, **अहमदाबाद**-380009. जी–3, एचवीएस कोर्ट, 21 कनिंघम रोड, **बंगलौर**–560052. 79–ए, मित्तल चैंबर्स, नरीमन पाइंट, **मुंबई**–400021. तीसरी मंजिल, पोद्दार पाइंट, 113 पार्क स्ट्रीट, **कलकत्ता**–700016. 14, पहली मंजिल, सीसंस कांप्लेक्स, 150/82, मांटीअथ रोड, **मद्रास**–600008. 122, पहली मंजिल, चिनाय ट्रेड सेंटर लेन, 116, पार्क लेन, **सिकंदराबाद**–500003. फ्लैट नं. बी–जी/3, 4 सप्रू मार्ग, **लखनऊ**-226001. 111, आशियाना टावर्स, एग्जीबिशन रोड, **पटना**-800001. जी-7, पायोनियर टावर्स. 1, मेरीन ड्राइव, **कोचीन**-682031. 12 बी, महाराणा प्रताप नगर, जोन-I, भोपाल-462011.

© दिल्ली प्रेस पत्र प्रकाशन लि. बिना आज्ञा कोई रचना किसी प्रकार उद्धृत नहीं की जानी चाहिए. सरिता में प्रकाशित कथा साहित्य में नाम, स्थान, घटनाएं व संस्थाएं काल्पनिक हैं और वास्तविक व्यक्तियों, संस्थाओं से उन की किसी भी प्रकार की समानता संयोग मात्र है.

दिल्ली प्रेस पत्र प्रकाशन लि. के लिए विश्वनाथ द्वारा प्रकाशित तथा दिल्ली प्रेस समाचार पत्र प्रा. लि. साहिबाबाद/गाजियाबाद में मुद्रित.
वैवाहिक विज्ञापन विभाग : एम-12, कनाट सरकस, नई दिल्ली-110001.
वार्षिक मूल्य : केवल ड्राफ्ट/मनीआर्डर द्वारा ही 'दिल्ली प्रकाशन वितरण लिमिटेड' के नाम से ई-3, झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-110055 को ही भेजें. चैक व वी.पी.पी. नहीं.
विदेशों में मूल्य : एक प्रति 48 सेंट अमेरिकी डालर, डाक व्यय अतिरिक्त.
वार्षिक : 25 अमेरिकी डालर (समुद्री डाक से), 50 अमेरिकी डालर (हवाई डाक से); रजिस्टर्ड डाक 10 अमेरिकी डालर अतिरिक्त.

COPYRIGHT NOTICE
© Delhi Press Patra Prakashan Ltd., New Delhi-110055 INDIA

ISSN 0971—1538

No article, story, photo or any other matter can be reproduced from this magazine without written permission. **THIS COPY IS SOLD ON THE CONDITION THAT IT WILL NOT BE EXPORTED OUT OF INDIA WITHOUT EXPRESS PERMISSION OF THE PUBLISHERS.** THE PUBLISHERS RETAIN RIGHT TO STOP ANY UNAUTHORISED EXPORT AND CLAIM DAMAGES.

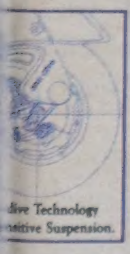
मूल्य : एक प्रति 14 रुपए. वार्षिक : 336 रुपए.
वायुसेवा अधिभार 75 पैसे प्रति.
सिल्चर, डिब्रूगढ़, अगरतला, तेजपुर, इंफाल, दीमापुर, करीमगंज, पोर्ट ब्लेयर, अकारस और नेपाल में

bajaj auto ltd
Value for money, for years.



हमारे दो संवेदनशील ग्राहकों द्वारा जांचा-परखा, जिन्होंने इसे देखा भी और नहीं भी.

है नया बजाज क्लासिक SL, अल्ट्रा-स्मूद रोड सेंसिटिव सस्पेंशन के साथ.



नया बजाज क्लासिक SL तकनीक के क्षेत्र में औरों से मीलों आगे है. इसकी एक उत्कृष्ट पेशकश है इसका रोड सेंसिटिव न. एक ऐसा आधुनिक शॉक ऑब्ज़र्बर सिस्टम सी भी तरह की सड़क के हिसाब से एडजस्ट आपको दे सबसे ज़्यादा आरामदेह सफ़र. और सिर्फ़ इसी में है अत्याधुनिक ऐन्टी-डाइव ब्रेकिंग तकनीक, जो आपको हर राह, हर मोड़ पर संभाले और हर झटके से बचाए. जब आप अचानक रुकें, तब भी. इसके अलावा इसका आकर्षक रूप और आधुनिक अंदाज़-यानी दो पहिया वाहनों की दुनिया की सबसे सनसनीख़ेज़ ख़बर.

bajaj
NEW CLASSIC SL
हंसते हंसते, कट जाएं रास्ते.

SL फ़ायदे और भी • 56 कि. मी. प्रति लीटर-शहरी यातायात में • तुरंत पिक अप के लिए शक्तिशाली 7.5 बीएचपी इंजन • रात सफ़र के लिए ज़्यादा बड़ी व चमकदार हेडलाइट • आकर्षक कंसोल और इस्तेमाल में आसान रोटरी स्विचेस • अतिरिक्त सुविधा म्बेल की तरह हैन्डग्रिप और कॉन्टूर्ड लीवर्स • बीपर्स के साथ इंडिकेटर्स • आसानी से ब्रेक लगाने के लिए कार की तरह ब्रेक पैडल.

आप के पत्र

सरित प्रवाह/मार्च/प्रथम

सोनिया गांधी व कांग्रेस के संबंध में आप ने जो कुछ कहा है, उस से मैं पूर्णतः सहमत हूं. कांग्रेस ने देश को बरबाद करने में कोई कोरकसर नहीं छोड़ी है. अब अंतिम मुहरे के रूप में सोनिया गांधी को उतारा गया है. सोनिया गांधी खुद भी इस मुगालते में हैं कि देश की जनता उन्हें हाथोंहाथ लेगी, लेकिन यह उन की भूल है. देश का पढ़ालिखा कोई भी समझदार यही कहेगा कि नेहरू खानदान के साथ जो भी घटा, उस के जिम्मेदार उस के सदस्य ही थे. गलत काम का नतीजा हमेशा गलत ही होता है. सोनिया को सोने के बसेरे में रहने की आदत है, बालबच्चों समेत वहीं विराजें, वरना देश की भलाई के नाम पर वह उसे और भी नुकसान पहुंचाएंगी. –निम्मी वर्मा

*

सोनिया गांधी व नेहरू खानदान पर आप ने सटीक टिप्पणी की है. वास्तव में नेहरू खानदान इस देश के लिए नासूर बन चुका है. यह खानदान उस सूदखोर की तरह है, जिस से एक बार कर्ज लेने के बाद पीढ़ी दर पीढ़ी चुकाना पड़ता है, पर फिर भी वह पूरा नहीं होता. आज देश इस खानदान की काली करतूतों का ही खमियाजा भुगत रहा है.

लोग इस खानदान के आजादी के संघर्ष में किए योगदान का रातदिन बखान करते नहीं थकते, जब कि उस की कीमत इस ने 40 वर्ष शासन कर के वसूल ली है. देश में आतंकवाद को बढ़ावा दे कर, कई हजार वर्गमील जमीन चीन के हवाले कर के व करोड़ों के रिश्वत घोटालों के द्वारा इस ने जो कुछ ब्याज के रूप में वसूला है, वह क्या कम है?

यही नहीं, सोनिया द्वारा नेहरू खानदान के नाम पर ट्रस्ट चलाने के लिए सरकारी भवनों पर कब्जा व सरकारी सहायता आदि क्या है? जहां आम आदमी को सुरक्षा की कोई गारंटी नहीं है, वहीं इस खानदान के वारिसों की सुरक्षा पर लाखों रुपए प्रतिमाह खर्च हो रहे हैं. सोनिया की बेटी प्रियंका को दहेज में एक सरकारी बंगला मिला. जब कि इस देश के लाखों लोगों के पास सिर छिपाने को छत नहीं है. जहां तक राजीव व इंदिरा की मौत का सवाल है, वह न तो 'बलिदान' था और न ही 'शहीद' शब्द उन के लिए उचित है. वह तो उन के ही कारनामों का परिणाम था. –निरंजन सिंह भारती

*

नेहरू परिवार के विषय में आप के विचार सही लगे. लेकिन जहां तक सोनिया का प्रश्न है, मैं आप के विचारों से सहमत नहीं हूं. आप का कहना है कि भारत की बहू होने पर उन में भारतीयता कहां से आ गई. इस का मतलब तो यह हुआ कि लड़की ससुराल में आ कर उस का हिस्सा नहीं बन सकती, क्योंकि वह दूसरे घर से आई है.

जहां तक किसी भाषा को बोलने, पढ़ने व लिखने का सवाल है, इस से क्या भारतीयता सिद्ध होती है? हम भारतीय जिन्होंने इसी भारत में जन्म लिया है, कोई न कोई भारतीय भाषा तो पढ़नालिखना जानते हैं, लेकिन हम में से कितने हैं जो पूरी तरह से देश के प्रति अपने कर्त्तव्यों का निर्वाह करते हैं?

राजीव गांधी से विवाह के पश्चात सोनिया ने शीघ्र ही साड़ी पहनना शुरू कर दिया था, जो कि भारतीयता की निशानी है. हाल के चुनावों के दौरान सोनिया ने अपने ज्यादातर भाषण भी हिंदी में ही दिए. इस विषय में आप क्या कहना चाहेंगे? –कुमकुम भौमिक

*

अगर सोनिया गांधी को हम भारतीय मान लें तो मुगलों के शासन को भी विदेशी शासन नहीं कहा जा सकेगा. उन्होंने भी भारत की भाषाएं अपना ली थीं, भारत में पैदा हुई लड़कियों से विवाह कर लिए थे.

बात एक इतनी है कि क्या एक ऐसा व्यक्ति जो भारत में न पैदा हुआ हो और न भारत के प्रति प्रेम के कारण भारत में आया हो, देश के प्रधानमंत्री बनने लायक है? –संपादक

*

बढ़ती आबादी पर आप के विचार पढ़े. वह जमाना चला गया, जब औरत को बच्चे पैदा करने की मशीन समझा जाता था. तब असंख्य स्त्रियां बच्चे को जन्म देते वक्त काल का ग्रास बन जाती थीं. उस समय नई तकनीक का विकास नहीं हुआ था और पृथ्वी पर ज्यादा भार भी नहीं था. इसलिए जैसेजैसे सोचसमझ बढ़ने लगी, कुछ महिलाओं ने बच्चों के जन्म को सीमित करने की कोशिश

की. लेकिन पुरुष वर्ग इस के खिलाफ खड़ा हो गया. फिर जब महंगाई की भार के कारण औरत को बाहर निकलना पड़ा और बच्चों को शिशुघर में रखने का चलन शुरू हुआ तो फिर औरत को ही कोसा गया. फिगर बनाने की बात को इतना उछाला गया कि वैज्ञानिकों ने स्तनपान को आवश्यक घोषित कर दिया.

इन सब से मध्यवर्ग ही हताहत हुआ, उच्चवर्ग तो पहले ही समझदारों की श्रेणी में था. निम्नवर्ग तो आज भी धड़ाधड़ बच्चों की लाइन लगा रहा है.

आज का समय पुरुषवर्ग का नहीं रहा, फिर भी वह अपनी पुरानी धारणाओं को छोड़ नहीं पा रहा है. इसी कारण से छटपटाता पुरुषवर्ग भ्रूणहत्या, माडर्न बनती कुछ प्रतिशत महिलाओं को कटाक्ष का केंद्रबिंदु बना संपूर्ण नारीजाति को एक ही तीर से बेंधने की असफल कोशिश में लगा है. –अंजना छलोगे

*

वर्तमान को संवारना है

लेख 'धर्मग्रंथ : अनैतिक सीख के सहारे नैतिकता की तलाश' (मार्च/प्रथम) पढ़ा. बातें कड़वी अवश्य थीं, परंतु सोचने पर विवश करती थीं. किसी को 'ताजा कमल' को पाना है तो कीचड़ में धंसना ही पड़ेगा. सत्य और असत्य के बीच अति सूक्ष्म अंतर होता है और यही अंतर सत्यता की कसौटी है. चाहे राम स्वर्णमृग के पीछे भागे हों या भीष्म से छोटे भाई की पत्नी के साथ संबंध स्थापित करने को कहा गया हो, यह समय की मांग थी. यह अतीत का साहित्य है, वर्तमान को हमें संवारना है. –घायल

*

त्योहार केवल औपचारिकता रह गए हैं

लेख 'यों मनाएं रंगों का त्योहार' (मार्च/प्रथम) बहुत प्रेरक व सार्थक लगा. पहले लोगों में अनजाने व्यक्ति को भी गले लगाने की भावना थी, मगर आज लोग टीवी व घर के दायरे में सिमट गए हैं और आत्मकेंद्रित हो गए हैं. अब सभी त्योहार केवल औपचारिकता भर रह गए हैं. धनवान इन के बहाने अपने वैभव का प्रदर्शन करते हैं और निर्धन कर्ज ले कर लोकलाज के लिए त्योहार मनाते हैं.

होली पर शराब पीना और हुड़दंग मचाना कभी केवल कथित छोटी जातियों में ही प्रचलित था, लेकिन अब इसे प्रतिष्ठा का प्रतीक समझा जाने लगा है. क्या शराब के बिना खुशियां नहीं बटोरी जा सकतीं? –कमलेश कुमार सक्सेना

HAIR REMOVING fem CREAM

कल्पना कीजिए एक ऐसी हेयर रिमूविंग क्रीम की जो रोके बालों का बढ़ना भी

और आकर्षित करे 'उनको' भी

न हवाई कल्पना नहीं. एक हकीकत. सुगंधित फेम हेयर रिमूविंग क्रीम दो को ध्यान में रखते हुए खासतौर पर गयी है. अनचाहे बालों को असरदार छुटकारा दिलाने के लिए तथा बालों ल्दी से दोबारा न उगने देने के लिए. आपको मिले नर्म, कोमल, रेशमी, बाल- सुन्दर त्वचा. और उनकी तारीफें भी.

उत्पादक :
फेम केयर फार्मा लि.,
डी-५५, एम आई डी सी,
आम्बाड, नासिक - ४२२ ०१०.

fem का उत्पादन



व्यर्थ का दिखावा

लेख 'विवाह आयोजनों पर बढ़ती फिजूलखर्ची व फूहड़पन' (मार्च/प्रथम) अच्छा लगा. आए दिन हमारे शहरों में ऐसे आयोजन होते दिखाई देते हैं, जिन की सजावट व भव्यता पर लाखों रुपए व्यर्थ में फूंक दिए जाते हैं. इस झूठी शानोशौकत से समाज को कोई लाभ नहीं मिल पाता. ऐसे आयोजनों में शराब भी पानी की तरह बहाई जाती है. एक तरफ तो हजारोंलाखों रुपए ऐसे आयोजनों में उड़ा दिए जाते हैं, दूसरी तरफ ऐसे लोग भी हैं, जिन्हें एक वक्त का खाना तक नहीं मिल पाता. अगर इन रुपयों को समाज की भलाई के लिए खर्च किया जाए तो देश में काफी सुधार लाया जा सकता है. –हीरालाल खेराजानी

*

आत्मविश्वास जागा

लेख 'सुंदर नहीं तो गुणों का विकास करें' (मार्च/प्रथम) बहुत उपयोगी व सार्थक लगा. इसे पढ़ कर आत्मविश्वास जागा कि रूप और सौंदर्य ही सब कुछ नहीं है. मृत्यु के पश्चात सौंदर्य जल कर राख हो जाता है, किंतु व्यक्ति के गुण, उस की अच्छाइयां चिता में जल कर खाक नहीं होतीं, एक मिसाल बन कर जीवित रहती हैं. सुंदरता इनसान को कमजोर बनाती है. अतः शारीरिक सुंदरता का इतना महत्त्व नहीं होता जितना कि मानवीय गुणों का. –साधना ठाकुर

*

परिपक्वता की कमी

कहानी 'रियासत' (मार्च/प्रथम) जहां आज की भौतिकतावादी जिंदगी के खोखलेपन को उजागर करती है, वहीं संयुक्त परिवार की महत्ता को भी सिद्ध करती है. आज शिक्षित युवकयुवतियों में स्वावलंबी बनने की ललक तो है, पर परिपक्वता की कमी है. शिक्षित युवतियां यदि नौकरी करती हैं तो भोगविलास की वस्तुएं एकत्र करती हैं. स्वावलंबी होने पर स्वतंत्रता की चाह न केवल पुरुष में होती है, बल्कि स्त्री में भी यह स्वतः ही उत्पन्न हो जाती है, जिस के कारण अहं की भावना पैदा होती है फिर यह अहं ही परिवार को तोड़ने का कारण बनता है. –मुकेश कुमार वर्मा

*

लोगों की उंगलियां उठ ही जाती हैं

कहानी 'लक्ष्य की ओर' (मार्च/प्रथम) अत्यधिक मर्मस्पर्शी लगी. वास्तव में हमारे समाज में कुछ लोगों ने अपने क्षणिक दैहिक सुख के लिए रिश्तों को इस तरह से बदनाम कर दिया है कि आप अपने रिश्ते के प्रति चाहे कितने भी ईमानदार क्यों न रहें, लोगों की उंगलियां उठ ही जाती हैं. लोग यह क्यों नहीं सोचते कि स्त्रीपुरुष के बीच केवल पतिपत्नी का ही नहीं बल्कि और भी कई रिश्ते होते हैं. हां, आवश्यकता होती है, उन्हें समझने व महसूस करने की. –ज्योति नायडू

*

चाटुकारों की करामात

जन्मजात भारत का नागरिक होने पर भी हम जम्मूकश्मीर, हिमाचल प्रदेश, मेघालय और नागालैंड में भूखंड खरीद कर मकान बना कर नहीं रह सकते क्योंकि हम वहां पैदा नहीं हुए हैं लेकिन इटली में पैदा और भारत में विवाहित महिला जिस ने विवाह के 17 वर्ष पश्चात भारत की नागरिकता ग्रहण की उसे हम भारत की बागडोर सौंपने को तैयार हैं, जब कि उसे भारत की भाषा, रहनसहन, रीतिरिवाज, सभ्यता, संस्कार व भूगोल इतिहास का कुछ भी ज्ञान नहीं है. ऐसे में जब केवल दूसरों के द्वारा लिखित भाषा पढ़ कर अपने ही परिवार के बलिदानों के विषय में बता रही है, जन समस्याओं को क्या जान पाएगी.

अमेरिका, इंगलैंड आदि में कितने ही भारतीय बसे हैं जो वहां के नागरिक हैं और अपनेअपने क्षेत्र में धाक रखते हैं, लेकिन उन्हें कभी मंत्री, प्रधानमंत्री, गवर्नर, राष्ट्रपति बनने का अवसर नहीं मिला.

चाटुकार इस देश का बेड़ागर्क करने पर तुले हैं, उन्हें कुछ तो आत्मसम्मान का ध्यान होना चाहिए. क्या कांग्रेस में ऐसा कोई भारतीय व्यक्ति नहीं बचा है जो देश की बागडोर संभालने योग्य हो. –के.पी. सिंह

*

चिंता का विषय

वर्तमान भारतीय राजनीतिक उथलपुथल एक गंभीर चिंता का विषय बन गया है. जातपात के आधार पर लोगों को बरगलाने वाली पार्टियां भी अपने आप को धर्मनिरपेक्षता का प्रमाणपत्र देने में लगी हैं.

कांग्रेस ने अपने आप को फिर एक परिवार की बपौती बना दिया है. जिस सोनिया गांधी ने भारत की नागरिकता पाने के लिए 20 वर्ष लगा दिए आज उसे ही वह अपना नेता बना बैठी है. आज जब सभी अनिश्चितता के माहौल से निकलना चाहते हैं तो जो सरकार देश में बनी है, राजनीतिबाज उसे गिराने की कोशिशों में जुटे हैं. भारतीय मतदाता का इस से बड़ा अपमान और क्या होगा. –बालकृष्ण चौधरी ●



EXECUTIVE STYLE
Rs. 595.00
EUROSTYLE
Rs. 995.00
ESTEEM
Rs. 141.95
रिलैक्सो
मज़बूती और आराम
का बेजोड़ संगम
CASUALS
Rs. 169.95 to
Rs. 229.95
FUN SHOES
Rs. 180.95 to
Rs. 227.95
HAWAI
Rs. 42.95 to Rs. 51.95
BAHAMAS
Rs. 101.95 to
Rs. 139.95
ELENA
Rs. 141.95 to
Rs. 152.95
SCHOOLMATE
Rs. 115.95 to
Rs. 179.95
ATHLETE
Rs. 64.95 to
Rs. 101.95
RELAXO
मंज़िलें और भी हैं...

Woman's era

Competing with her man

When the wife earns more than the husband does, both need to make some adjustments to keep marital relations harmonious.





An oasis for destitute women in Arunachal

The Oju Welfare Association is an organisation that provides destitute women not just a shoulder to cry on but the means to become self-reliant.

Primary schools: A blessing or drudgery?

Primary school children dislike going to school and take no interest in learning. What should be done?



DON'T FORGET TO BUY *WE*: A MUST FO



APRIL (SECOND) 1998



Unwanted pregnancy

How can a young woman avoid undesired pregnancy and if it does occur, how can she terminate it?

How to feel good on a bad day

When you are feeling bad, spending some time in solitude might help.



SHORT STORIES

n Id gift

If I give birth to a girl child, how will people react? wonders a woman in the family way.

desire to change

As she was not intelligent and smart, her husband was unhappy with her but then...

second chance

A divorced husband and wife meet again.

❐ *24 regular features which would make you an addict.*

RY WOMAN

Send 3 rupees' postage stamp for sample copy

Woman's era
E-3, Jhandewalan Estate, Rani Jhansi Road, New Delhi - 55

Name ....
Address ....
....
Pin code ....

सरिता प्रवाह

भारतीय जनता पार्टी की केंद्रीय सरकार ने कहा है कि वह भारतीय संविधान की समीक्षा करने के लिए एक समिति बनाएगी. इस पर कांग्रेसी सांसदों ने, जिन का अब सिवा इस के कोई काम नहीं रह गया है कि भाजपा सरकार के हर काम में कोई न कोई बदनीयती ढूंढ़ कर उस का ढोल पीटा जाए, चिंता प्रकट की कि भाजपा संविधान में अपनी मनमरजी के संशोधन करेगी. पर वे यह भूल जाते हैं कि संविधान में रद्दोबदल करने के लिए संसद में दोतिहाई बहुमत चाहिए जो भाजपा के पास नहीं है–उस के पास तो स्वयं का बहुमत भी नहीं है.

संविधान पर एक बार फिर निगाह डालना जरूरी हो गया है क्योंकि यह जब 50 वर्ष पहले बना था तो इस का आधार 2 दलों द्वारा देश की राजनीति चलाने का हिसाबकिताब था–जैसा ब्रिटेन में होता है, जहां लेबर और कंजरवेटिव 2 दल हैं और अदलबदल कर सरकार बनाते रहते हैं.

पर हमारे यहां कांग्रेस के विघटन से सारा माहौल ही बदल गया है. अब हर प्रदेश में एक या एक से अधिक राजनीतिक दल बन गए हैं जो किसी भी दल को केंद्र में, या प्रदेशों में भी, बहुमत प्राप्त नहीं करने देते. इसीलिए हर रोज सांसदों और विधायकों के दलबदल का सिलसिला जारी रहता है, और कोई स्थिर सरकार नहीं बन पाती.

इस के लिए कुछ न कुछ तो करना ही होगा. एक सुझाव तो यह है कि अमेरिका की तरह यहां भी राष्ट्रपति ही 5 वर्ष के लिए आम जनता द्वारा चुना जाए और वह बहुत बड़े जुर्म के अलावा केवल साधारण मतों से न हटाया जा सके.

इस के अलावा दलबदल रोकने के लिए भी संविधान में नियम बनाया जा सकता है कि यदि कोई व्यक्ति अपना दल, जिस के टिकट पर वह चुनाव जीता हो, छोड़ कर दूसरे दल में शामिल होता है तो उसे दोबारा चुनाव लड़ना पड़े. इस से कम से कम सांसदों व विधायकों की खरीदफरोख्त तो बंद हो जाएगी.

ऐसे ही और भी काफी मुद्दे हैं जो संविधान में अब परिवर्तन की बाट देख रहे हैं. इसलिए भाजपा का संविधान समीक्षा के लिए एक समिति बनाने का विचार अच्छा है. और अन्य राजनीतिक दलों को इस का स्वागत करना चाहिए–आखिर, जैसा ऊपर कहा गया है. संविधान में बिना $^{2}/_{3}$ बहुमत के कोई संशोधन नहीं हो सकता.

वैसे कांग्रेस के लिए यह कहना कि संविधान में संशोधन का जिक्र भी एक बहुत बड़ा पाप है, केवल मगरमच्छी आंसू हैं. कांग्रेस ने अपने शासनकाल में संविधान में 60 से अधिक संशोधन किए हैं–वह भी बिना आम सहमति के, केवल अपने $^{2}/_{3}$ बहुमत के आधार पर.

*

सिद्धांत के रूप में सभी लोग व सभी राजनीतिक दल शराबबंदी के पक्ष मे हैं, क्योंकि शराबखोरी किसी का कुछ भला तो नहीं करती, उलटे हर व्यक्ति व परिवार को अपनी बढ़त के साथसाथ आर्थिक व नैतिक रूप से खस्ताहाल कर देती है. और स्त्रियों के लिए तो विशेषकर हानिकारक होती है क्योंकि पुरुष की कमाई का एक बहुत बड़ा हिस्सा जो खाना, कपड़ा, बच्चों

की पढ़ाईलिखाई, मकान बनाने इत्यादि में खर्च होना चाहिए, बोतलों में नष्ट हो जाता है और शराब पी कर आदमी का स्त्री पर हाथ उठाना भी बहुत आसान हो जाता है.

इसलिए नशा/शराबबंदी की मांग में स्त्रियां आगे रही हैं, और कुछ बरस पहले आंध्रप्रदेश में रामाराव इसी के बल पर चुनाव जीते. इसी प्रकार शराबबंदी के मुद्दे के कारण ही हरियाणा में बंसीलाल सरकार बनाने में कामयाब हुए. दोनों राज्यों में शराबबंदी लागू कर दी गई.

पर स्त्रियों ने गलती यह की कि एक बार शराब पर पाबंदी लगाने का आंदोलन चला कर वे चुप हो कर बैठ गईं कि अब सरकार ने शराब पर रोक लगा दी है तो उन का काम पूरा हो गया.

पर वे यह भूल गईं कि शराब उत्पादन, बिक्री और उस की खपत का एक बहुत बड़ा संगठित, शक्तिशाली संगठन गिरोह है, जिस में शराब के सब से अधिक पैरोकार पत्रकार और लेखक हैं. ये लोग मुफ्त की शराब उड़ाने के लिए मशहूर हैं, और इसलिए हमेशा शराबबंदी को एक बेवकूफी की बात बता कर प्रचार करते रहते हैं. अधिकतर राजनीतिबाज भी शराब (वह भी मुफ्त की) के लिए लालायित रहते हैं और चुनावों में वोट लेने के लिए इस का खुल कर इस्तेमाल करते हैं.

इस प्रकार शराबबंदी के शत्रुओं का बड़ा मजबूत और विस्तृत संगठन है, जो हर तरह से शराब के खुलेआम उत्पादन, बिक्री और खपत पर जोर देता रहता है. और उस का सब से प्रभावशाली हथियार होता है–सरकार को शराब पर लगे टैक्स की आमदनी से होने वाला नुकसान.

आंध्र प्रदेश और हरियाणा में इस हजार करोड़ रुपए वार्षिक की टैक्स की आमदनी का मुद्दा उठा कर शराबी गिरोह शराबबंदी हटवाने में सफल हो गए.

जैसा ऊपर कहा गया है, स्त्रियों की गलती यह थी कि इन के संगठनों ने इस विषय में कोई जवाबी हमला नहीं किया–वे सब चुप बैठे रहीं. राष्ट्रीय महिला आयोग से जुड़ी महिलाएं एक मुजरिम, अपराधी स्त्री को उच्च न्यायालय द्वारा फांसी की सजा दिए जाने पर फट पड़ीं और बड़ा बावेला मचा दिया. पर शराबबंदी पर, जिस का लाभ हर घर में होता है, वह मौन साधे बैठी हैं–हो सकता है, इस के पदाधिकारी स्वयं शराब का मजा लेने में आनाकानी न करती हों. अगर शराबबंदी सफल बनानी है तो हर महिला संगठन का पहला कर्तव्य, ध्येय और अभियान शराबबंदी की वकालत करना होना चाहिए, अन्यथा वही ढाक के तीन पात. मर्द शराब पी कर घर आएगा, पैसा उड़ाएगा, स्त्री को मारेगापीटेगा और कुटुंब को गरीबी में फंसाए रखेगा.

*

एक समय था जब फौजी अफसर होना एक गर्व की बात समझी जाती थी और इन नौकरियों के लिए बड़ी होड़ लगती थी. पर आज सरकार को समाचारपत्रों में विज्ञापन दे कर नवयुवकों को लुभाना पड़ रहा है कि आइए, फौजी अफसर बनिए आप को उस से यह लाभ होगा, वह फायदा होगा. पर फिर भी उसे उचित और इच्छित किस्म के नवयुवक फौज में अफसरी करने के लिए नहीं मिल रहे हैं. यह काफी चिंता का विषय है–क्योंकि कोई भी देश अच्छी, शक्तिशाली, कर्तव्यनिष्ठ और वफादार फौज के बिना जिंदा नहीं रह सकता. इस का कारण है कि जहां बाहर से विदेशियों के धावे की संभावनाएं कम हो गई हैं, वहीं आंतरिक बैरभाव, शासन के प्रति घृणा और उसे नीचा दिखाने की प्रवृत्ति बढ़ती जा रही है. इस के साथसाथ अब विस्फोटक पदार्थ इतनी आसानी से मिल रहे हैं कि तोड़फोड़ से किसी भी देश के हिस्से को अलग कर देने से देश के विघटन की संभावनाएं बढ़ती जा रही हैं.

हमारे पड़ोस ही के लगभग सभी देशों में विभिन्न समुदायों द्वारा अपना अलग राज बनाने के लिए हथियारों का उपयोग एक आम बात हो गई है. और भारत में तो कश्मीर

में विद्रोह बराबर बना हुआ ही है, जिसे पाकिस्तान बराबर हर तरीके से उकसा रहा है.

इन सब कारणों से देश के लिए एक अच्छी, मजबूत व वफादार फौज और फौजी अफसरों की आवश्यकता है–विशेषत: अफसरों की. क्योंकि चाहे बम और गोलियां चलाना साधारण सिपाहियों की जिम्मेदारी है, पर कहां, कब, कैसे दुश्मन का मुकाबला किया जाए, कैसे उसे पछाड़ा जाए, यह काम तो अफसरों का ही होता है.

सेना के उच्च अधिकारियों का कहना है कि भारतीय फौज में कई हजार अफसरों के पद खाली पड़े हैं, और उन्हें भरने के लिए उपयुक्त नवयुवक नहीं मिल रहे हैं. इसीलिए ये विज्ञापन निकाले जा रहे हैं.

पर केवल विज्ञापनों से अच्छी किस्म के नवयुवक नहीं मिल सकते. आज जो वेतन और सुविधाएं जनसाधारण को उद्योगव्यापार में मिल रही हैं, उन के मुकाबले फौज में कुछ भी नहीं मिलता. इसीलिए कुशल व महत्त्वाकांक्षी युवक फौज का रास्ता ही नहीं पकड़ते.

फौज में किस प्रकार का असंतोष फैला है, इस की जानकारी पिछले दिनों फौज के वेतन आयोग की सिफारिशों के विरुद्ध कई अंगों में अफसरों द्वारा की गई हड़ताल से मिलती है. एक ऐसी संस्था, जहां हड़ताल एक विद्रोह समझी जाती है, जिस पर कैद की सजा दी जा सकती है, वह भारतीय फौज में हुई और सरकार बड़ी कठिनाई से उसे निरस्त कर पाई.

इसलिए आवश्यक है दफ्तरों के छोटेबड़े बाबुओं के वेतन व सुविधाओं से ऊपर उठ कर नवयुवकों को फौजी अफसरी के लिए प्रेरित किया जाए. दफ्तरों के बाबुओं, अफसरों को अपने सरकारी काम में जान का खतरा तो लगभग नहीं होता. पर फौज में तो यह पहली शर्त है, आवश्यकता है. अब अगर इस जोखिम का मुआवजा नहीं मिलता तो इस ओर क्यों कोई आएगा?

विश्व स्वास्थ्य संगठन ने एक खोज में पाया है कि जहां सिगरेट पीने वालों को फेफड़ों का कैंसर होना आम बात है, वहीं जो लोग स्वयं सिगरेट नहीं पीते, पर और लोगों के पीने से फैलने वाले धुएं को अपने श्वास के साथ अंदर ले जाने से रोक नहीं पाते, उन्हें भी कैंसर होने की पूरी संभावना रहती है. इसे 'पैस्सिव स्मोकिंग'–'अनचाहा, स्वयं न किया हुआ धूम्रपान' कहते हैं.

फ्रांस में एक सर्वेक्षण में पाया गया कि इस अनचाहे धूम्रपान से हर वर्ष 100-150 व्यक्ति कैंसर से मर जाते हैं.

जब यूरोप के एक छोटे से देश फ्रांस में ही इतनी अनचाही मौतें होती हैं तो भारतवर्ष जैसे बड़े देश में, जहां हर जगह सिगरेट, बीड़ी व हुक्के के दम लगते रहते हैं, कितने लोग अनावश्यक मृत्यु के हवाले होते होंगे, इस का अंदाजा लगाया जा सकता है.

इसलिए आवश्यक है कि यातायात साधनों, जैसे रेल, बस, टैक्सी में, दफ्तरों और दुकानों में, जहां आदमियों का जमघट होता है, सिगरेट, बीड़ी पीने पर पाबंदी लगाई जानी चाहिए.

इस के लिए यह नियम बनाया जा सकता है कि यदि ऐसी जगहों में कोई व्यक्ति बराबर धुआं उड़ाता हो तो उसे पुलिस पकड़ सके.

एक जमाना था जब बड़ी अदा से लोग सिगरेट मुंह में लगाए बड़प्पन व रोबदाब प्रदर्शित किया करते थे. पर अब यह दृश्य मौत को बुलावा साबित हो रहा है.

इस बीच आवश्यक है कि सिगरेट बीड़ी के विज्ञापनों पर सरकार द्वारा प्रतिबंध लगाया जाए क्योंकि आजकल सिगरेट कंपनियां खेलों के टूर्नामेंटों, प्रतियोगिताओं को आयोजित करती हैं, जिस से नवयुवकनवयुवतियों में यह भावना घर कर जाती है कि जो सिगरेट पीता है, वह शानदार, बहादुर व अच्छा खिलाड़ी होता है.

दिल्ली पुलिस विभाग ने समाचारपत्रों में एक बहुत लंबाचौड़ा विज्ञापन छपवाना शुरू किया, जिस का शीर्षक था, 'बहुत हो चुका, महिलाएं बहुत कुछ चुपचाप सहती रही हैं. अब वे हम से बात करें.' और आगे कहा गया है कि महिलाएं हर रोज छेड़छाड़, बलात्कार, वैवाहिक झगड़े और इन के अतिरिक्त भी बहुत कुछ सहती रही हैं. अब और सहने की आवश्यकता नहीं है. चाहे यह डर से हो, चाहे बदनामी से बचने के लिए या निष्ठा के लिए हो, अब महिलाओं को यह सब सहने की जरूरत नहीं है. आप हमें 'हेल्पलाइन'–'सहायता की डोर' को फोन कीजिए. आप की तत्काल सहायता की जाएगी...इत्यादि. जहां तक छेड़छाड़, बलात्कार का सवाल है, वहां तक तो पुलिस का हस्तक्षेप ठीक है, पर जब वह वैवाहिक संबंधों की अनबन, झगड़ों या मनमुटाव में दखल देगी तो यह परिवार को तोड़ने की एक भर्त्सना योग्य कोशिश होगी.

कौन सा ऐसा घर या दंपती है, जहां पतिपत्नी में मनमुटाव, कहासुनी या झगड़े नहीं होते? पर अधिकांश में जब दोनों का गुस्सा ठंडा हो जाता है तो मामला रफादफा हो जाता है. स्त्रियां अधिकतर भावुक होती हैं. यदि पत्नी गुस्से में आ कर पति की छोटी सी बात पर भावुकता में पुलिस को फोन कर देती है और पुलिस वाले या पुलिसवालियां वहां अपनी गश्ती कारों में बैठ कर झटपट उस घर में जा घुसते हैं तो इस का क्या नतीजा होगा?

जो झगड़ा या मनमुटाव 1-2 दिन में ठीक हो जाता, वह सार्वजनिक किस्सा बन जाएगा. सारे पासपड़ोस वाले आ खड़े होंगे, और पति न केवल बेहद लज्जित होगा, वह अपना स्वाभिमान, अपना दिमागी संतुलन भी खो बैठेगा, क्योंकि वह फिर पासपड़ोस, रिश्तेदारी में मुंह दिखाने लायक नहीं रहेगा. और इस का अंत होगा तलाक में. और तलाक से पति को नुकसान तो पहुंचता है, पर पत्नी की बहुत अधिक हानि होती है, बच्चों का भविष्य बिगड़ जाता है.

दिल्ली की, और देश के अन्य शहरों और कसबों की, पुलिस अभी अनेक अपराध–चोरी, डकैती, मारपीट, हत्याएं, दंगे, बम विस्फोट इत्यादि संभालने में सफल नहीं है. वैवाहिक झगड़ों में अपनी टांग फंसाने से वह न प्रभावित दंपती का, न अपना, न समाज का कोई भला करेगी.

जो स्त्रियां समझती हैं कि पुरुषप्रधान समाज उन को हमेशा दबाता, निचोड़ता और अत्याचार ही करता है, उन्हें विवाह का नाम नहीं लेना चाहिए. विवाह में तो त्याग है, तपस्या है, मेहनत है, पुरुष का कुछ न कुछ दबाव है. अब महिलाओं के लिए सब व्यवसाय, नौकरियां, उद्योगधंधे खुल गए हैं. कमाइए, खाइए, जो मरजी आए, कीजिए. विवाह के बंधन में पड़ने की मूर्खता क्यों करें–जिस बंधन में महिला मुक्ति आंदोलनवालियों के अनुसार पुरुष की अपेक्षा स्त्री को बहुत अधिक त्याग करना पड़ता है.

*

पंजाब में अकाल तख्त ने, जो सिख मजहब का सब से बड़ा, शक्तिशाली, सर्वोच्च धार्मिक मंच है और जिसे सभी प्रकार के सिखों में, डर से या खुशी से, मान्यता प्राप्त है, यह आदेश दिया है कि कोई सिख न तंबाकू पीएगा, न उसे रखेगा, न उस का व्यापार करेगा, न उस की खेती करेगा.

यह धार्मिक पक्ष छोड़ कर भी सामाजिक, पारिवारिक और व्यक्ति की भलाई के लिए उठाया गया सही कदम है, क्योंकि तंबाकू खानेपीने से लाखों आदमी हर वर्ष संसारभर में बीमार हो कर मर जाते हैं.

पर अकाल तख्त शराब पर भी ऐसी पाबंदी क्यों नहीं लगाता? क्या शराब तंबाकू से कम हानिकारक है? उलटे जहां तंबाकू से परिवार नहीं बिगड़ते, टूटते, और जिस पर व्यक्ति की आमदनी का बहुत बड़ा हिस्सा भी खर्च नहीं होता, न ही इसे पी कर घर में स्त्रियों को मारापीटा जाता है, वहां शराब यह सब कुछ कराती है. और क्या गुरु साहिब ने शराब पीने को मना नहीं किया, केवल तंबाकू पर ही पाबंदी लगाई थी? ●

क्षेत्रीय दलों की
कहीं खतरे की

लेख ● सूर्यनाथ सिंह

पिछले दो चुनावों में केंद्र सरकार पर क्षेत्रीय दलों का दबदबा बढ़ा है. आज स्थिति यह है कि सदन में बड़ी से बड़ी राष्ट्रीय पार्टी भी क्षेत्रीय दलों के साथ सौदेबाजी कर अथवा उन की शर्तों के साथ समझौता कर सरकार चलाने को मजबूर है. कुछ राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि क्षेत्रीय दलों की बढ़ती हुई यह शक्ति जनतंत्र के लिए शुभ संकेत है, क्योंकि इस से सरकार में स्थानीय लोगों की अधिक से अधिक भागीदारी सुनिश्चित हुई है और क्षेत्रीय नीतियों के निर्धारण में उन का सीधा हस्तक्षेप संभव हो सका है. क्षेत्रीय दलों के संगठन से एक तीसरा मोरचा अस्तित्व में आया है. विश्लेषकों की इस



बढ़ती ताकत
घंटी तो नहीं?



व्याख्या से इत्तिफाक रखा जाना चाहिए, किंतु इन क्षेत्रीय दलों की बढ़ती हुई ताकत से जो गठबंधन सरकारों की एक परंपरा शुरू हुई है, उस पर भी गंभीरता से विचार किया जाना चाहिए. दूसरी बात यह कि क्षेत्रीय दलों की बढ़ती हुई ताकत के कारण राजनीति की अवसरवादिता तथा क्षेत्रीयता संबंधी चरमपंथी रुझान को बढ़ावा मिला है. राष्ट्रीयता की भावना धुंधली पड़ी है. देश के विभिन्न हिस्सों में जो स्थानीय हितों के मुद्दों पर आंदोलन शुरू हुए थे, वे चरमपंथी रुझान के कारण अलगाववाद की शक्ल में तबदील होते दिखाई देने लगे हैं. यह प्रवृत्ति संप्रदायवाद की तरह

आज देश की बड़ी से बड़ी राष्ट्रीय पार्टी भी क्षेत्रीय दलों से सांठगांठ कर सरकार चलाने को मजबूर है. क्षेत्रीय दलों की इस बढ़ती हुई ताकत से जहां राजनीतिक अवसरवादिता को बढ़ावा मिल रहा है वहीं राष्ट्रीयता की बजाय क्षेत्रीय हितों के मुद्दों को उठा कर अलगाववाद की प्रवृत्ति भी उभर रही है. क्या ऐसी राजनीति देश के हित के लिए खतरनाक साबित नहीं होगी?

ही देश के लिए खतरनाक साबित हो सकती है. आज जब संविधान की समीक्षा के लिए आयोग गठित किए जाने की बात चल रही है, ऐसे में सरकारों के स्थायित्व, सार्वजनिक हितों और समस्याओं के सार्वभौम समाधान हेतु देश की दलीय प्रणाली की भी गंभीरतापूर्वक समीक्षा की जानी चाहिए.

दरअसल केंद्र सरकार द्वारा स्थानीय समस्याओं की उपेक्षा और राज्य सरकारों के मामले में अनावश्यक हस्तक्षेप के चलते ही क्षेत्रीय दलों का उदय आरंभ हुआ था. चूंकि आजादी के बाद से 1967 तक भारतीय राजनीति में कांग्रेस का ही प्रभुत्व था, इसलिए कांग्रेस के नेताओं में एकाधिकार की भावना भरती चली गई थी. एक कहावत है कि 'जब राजा अधिक दिनों तक अपने पद पर बना रहता है तो धीरेधीरे वह निकम्मा हो जाता है.' यही बात कांग्रेस पर भी लागू हुई और इस की सरकार ने क्षेत्रीय समस्याओं की उपेक्षा करनी शुरू कर दी, जिस का परिणाम

आम सहमति : क्या हैं वादे, क्या हैं इरादे

नवगठित भाजपा सरकार ने कहा है कि वह सत्ता का संचालन आम सहमति के आधार पर करेगी. कामों में राष्ट्रीय सहमति रहेगी. इस ने बारबार दोहराया भी है कि सहयोगी दलों के साथ मिल कर बनाए गए राष्ट्रीय एजेंडे के आधार पर वह काम करना चाहती है.

इस के लिए उसे अपनी पार्टी के उन मुद्दों को छोड़ देना पड़ा, जिन्हें जनता के आगे रख कर उस ने चुनाव लड़ा था. वर्षों से वह इन्हीं मुद्दों के बल पर आगे बढ़ती आई थी.

मगर इस बार मामला उलटा हो गया. वर्षों से तपस्या करतेकरते जो हाल विश्वामित्र का मेनका को देख कर हुआ, भाजपा का भी कुछ वैसा ही हुआ. सहयोगी दलों की मदद की बदौलत जब सत्ता नजदीक खड़ी दिखाई दी तो ऐसा लगा मानो भाजपा से सत्ता सुंदरी पूछ रही हो कि मैं तुम्हारा वरण तभी कर सकती हूं, जब तुम अपनी यह माला, कमंडल, चिमटा और भगवा उतार दोगे. आसक्त साधु को जैसे मजबूरी में भेष छोड़ना पड़ता है, उसी तरह भाजपा को अपने सारे मुद्दे त्याग कर एक राष्ट्रीय एजेंडा अपनाना पड़ा है.

अब वह राष्ट्रीय आम सहमति की बात बारबार कर रही है. आम सहमति के वादे तो ठीक हैं, जब तक वे वास्तविक मंशा से किए गए हों, पर वादों के साथसाथ इरादों पर संदेह के बादल न छाए हों.

यहां शक इसलिए है क्योंकि भाजपा की राजनीतिक विचारधारा पर देश में कभी सर्वानुमति नहीं रही. भाजपा अरसे से अयोध्या, अनुच्छेद 370, समान नागरिक संहिता जैसे मसलों के बल पर चलती आई है, क्या इन के बिना उस की दाल गल पाएगी? या यों कह सकते हैं कि क्या कोई कट्टर आस्तिक साधु नास्तिक पत्नी के साथ बगैर पूजापाठ किए गुजारा चला सकता है.

संसद में भाजपा नेताओं ने न तो यह आश्वासन दिया है कि हम अपनी पार्टी के विवादास्पद मुद्दों को भविष्य में उठाएंगे न ही यह कहा कि ये बिलकुल छोड़ दिए गए हैं.



झारखंडी आंदोलन : क्षेत्रीय पार्टियों के उठाए मुद्दे ही हैं कि आज अलग राज्य की मांग के लिए सशस्त्र आंदोलन चलाए जाने लगे हैं.

यह हुआ कि 1967 के विधानसभा चुनावों में बिहार, उत्तरप्रदेश, पंजाब, हरियाणा, उड़ीसा और तमिलनाडु में कांग्रेस को हार का मुंह देखना पड़ा. वहां गैर कांग्रेसी सरकारें गठित हुईं. यह एक प्रकार से जनता का सामूहिक प्रतिरोध था. इसी दौर में क्षेत्रीय दलों का भी सूत्रपात हुआ. किंतु यह सूत्रपात कांग्रेस के सत्ता के प्रति एकाधिकार एवं नीतिनिर्धारण में आए ठहराव के विरुद्ध विद्रोह था, कोई अवसरवादी अथवा राजनीतिक प्रतिशोध का परिणाम नहीं.

बाद में जब जनता पार्टी का गठन हुआ तो कम्युनिस्ट पार्टियों को छोड़ कर बाकी गैर कांग्रेसी तथा क्षेत्रीय पार्टियों का इस में विलय हो गया. किंतु कुछ ही दिनों बाद जनता पार्टी सरकार गिर गई और सारे दल बिखरने शुरू हो गए. इस बिखराव का परिणाम यह हुआ कि विभिन्न क्षेत्रों में स्थानीय समस्याओं को ले कर शुरू किए

अलबत्ता केंद्रीय गृहमंत्री लालकृष्ण आडवाणी यह कहते हैं कि हमें इन मुद्दों को अपने घोषणापत्र में रखने पर कोई अफसोस नहीं है. उन्होंने यह भी कहा कि जनता से किए गए वादे पूरे किए जाएंगे. यदि वादे पूरे नहीं किए गए तो लोग पार्टी को खारिज कर देंगे.

यह बात भी पार्टी के इरादों पर शक पैदा करती है.

राष्ट्रीय एजेंडे में भाजपा के इन खास मुद्दों का उल्लेख नहीं है न ही राष्ट्रपति के अभिभाषण में चर्चा थी, जो कि एक तरह से सरकार की नीतियों का ही दस्तावेज होता है. पर उस के नेताओं के अलगअलग बयानों पर आशंका पैदा होती है.

हिंदुत्व, धारा 370, समान नागरिक संहिता, अयोध्या मसला भाजपा के बुनियादी सिद्धांत माने जाते हैं. इसलिए वह आम सहमति की बात पर जोर दे रही है.

भाजपा गठबंधन सरकार अगर आम सहमति की अपनी मंशा को मूर्तरूप देती है तो यह देश के लिए ठीक ही है. देश के मौजूदा राजनीतिक हालात को देखते हुए यह उचित भी है, पर उस के विगत आचरण और सिद्धांतों को देख कर स्पष्ट तौर पर नहीं कहा जा सकता कि आम सहमति का वादा उस की रणनीति है या वास्तविक मंशा.

भाजपा ने यह तो कहा है कि राष्ट्रीय एजेंडे के अलावा उस का कोई छिपा एजेंडा नहीं है, फिर भी यकीन नहीं किया जा सकता. यकीन न करने के कई कारण हैं. जैसे बाबरी मस्जिद ढहाने से पहले उच्चतम न्यायालय में दिया गया हलफनामा. या फिर हाल ही में लोकसभा अध्यक्ष पद के लिए अपना दिया गया आम सहमति का वादा.

लोकसभा अध्यक्ष पद के लिए सत्तारूढ़ गठबंधन दल आम सहमति की वकालत करते नजर आया था, पर सत्ता के गणित का समीकरण अनुकूल होते ही वह पलटा खा गया और तेलुगूदेशम के बालयोगी को अध्यक्ष बनवा दिया.

आम सहमति, सर्वसम्मति, जैसे शब्द भाजपा की कूटनीतिक शब्दावली के रूप में परिभाषित हो सकते हैं. हर वक्त मुंह में राम और हिंदुत्व को जपने वाली भाजपा का व्यक्तिगत रुख आखिर किस राष्ट्रीय आम सहमति के लिए छटपटा रहा है?

गए आंदोलनों की बागडोर को कुछ घाघ और चालाक नेताओं ने लपक लिया फिर गठबंधन सरकारों का दौर शुरू हुआ और 1989 से ले कर वर्तमान सरकार बनने से पहले तक, यानी लगभग 10 वर्षों में वी.पी. सिंह, चंद्रशेखर, नरसिंह राव, वाजपेयी, देवगौड़ा फिर गुजराल यानी 7 सरकारें बनीं. जिस में 5 साल नरसिंह राव सरकार ही चली थी.

दरअसल अधिकांश क्षेत्रीय दलों के नेतृत्व की बागडोर ऐसे नेताओं के हाथों में है, जो या तो राजनीतिक प्रतिशोध के अथवा महत्त्वाकांक्षा के शिकार हैं. यही कारण है कि जो क्षेत्रीय दल राज्य में जिस दल के विरोधी हैं, केंद्र में उसी के साथ मिल कर सरकार बनाते हैं. ऐसे में सवाल यह उठता है कि जिन क्षेत्रीय समस्याओं को ले कर एक स्तर पर आपस में विरोध हो, उसी समस्या को हल करने का तर्क दे कर केंद्र में उसी दल का सहयोग करने से क्या समस्या का समाधान संभव है? कतई नहीं और न ही ऐसे में कभी मैत्रीपूर्ण ढंग से समस्याओं का समाधान ढूंढ़ा जा सका है.

दूसरी बात यह है कि इन क्षेत्रीय दलों के पास राष्ट्रीय मुद्दों की अपेक्षा क्षेत्रीय मुद्दे ज्यादा वजनी होते हैं और इन का हर संभव प्रयास होता है स्थानीय लोगों में क्षेत्रीयता की भावना को प्रबल बनाना. इस से इन दलों को लाभ तो अवश्य मिलता है, किंतु लोगों में राष्ट्रीय भावना दब जाती है. इस का सब से खराब असर यह हुआ है कि लोगों में चरमपंथी रुझान बढ़ा है. जब सोच का दायरा संकुचित होता है, तब चरमपंथ और अतिवाद का उदय होता ही है. आज स्थिति यह है कि एक ही राज्य के एक हिस्से के लोग दूसरे हिस्से के लोगों को अपना दुश्मन समझने लगे हैं. स्थानीय समस्याओं के समाधान की मांग ने राज्यों की स्वायत्तता तथा स्वतंत्रता की मांग का रूप ले लिया है. इस के अलावा भाषा विवाद और जल विवाद जैसे छोटेछोटे

रोटी, कपड़ा व मकान ये ऐसे मुद्दे हैं, जिन पर कोई भी राजनीतिक दल असहमत नहीं हो सकता. इन पर राष्ट्रीय आम सहमति की मुहर पक्की है, पर प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी शपथ लेने के 4 दिन बाद अयोध्या में राम मंदिर पर आम सहमति की बात कहते हैं तो इस से उन के इरादों पर संदेह होना स्वाभाविक है.

सरकार द्वारा राष्ट्रीय सुरक्षा की बात प्रमुखता से कही गई है. परमाणु विकल्प की बात खासतौर से कही गई है. कहा गया है कि परमाणु विकल्प के सवाल पर किसी की चिंता नहीं है कि कौन नाराज हो रहा है.

पड़ोसी देश पाकिस्तान, चीन से हमारे संबंध पहले से ही अच्छे नहीं चल रहे हैं. समूचे विश्व का वातावरण भी अशांत चल रहा है तो क्या सरकार देश के सामने सुरक्षा का हौआ खड़ा कर के किसी तरह की आम सहमति पर हां कराने की मंशा रखती है? आपत्ति के समय कौन एक नहीं होगा.

सरकार द्वारा संविधान की समीक्षा का मुद्दा भी प्रमुख है. इस के लिए एक आयोग गठित करने की बात कही है.

इधर भाजपा राष्ट्रपति प्रणाली की वकालत करती रही है. चुनावों के वक्त प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी यह जाहिर भी कर चुके हैं. इस से आपत्तिजनक ढंग से सत्ता को अपने नियंत्रण में रखने के इरादे को नकारा नहीं जा सकता.

सदियों से सत्ता पर काबिज अथवा अपना वर्चस्व बनाए रखने वाले गुरु के रूप में अनेक लोगों को लोकतांत्रिक व्यवस्था खलने लगी है. इसलिए संविधान समीक्षा के वादे पर भी और भाजपा के इरादे पर शक होता है.

संविधान के मूलभूत तत्त्व के रूप में धर्मनिरपेक्षता से भाजपा को गुरेज है. वह धर्मनिरपेक्षता को संविधान के मूलभूत तत्त्व के रूप में स्वीकार नहीं करती. अनुच्छेद 370 और 30 को संविधान से हटाना चाहती है. इसलिए आयोग का गठन गणतांत्रिक धर्मनिरपेक्ष संविधान को चोट पहुंचाने का इरादा नहीं है?

आजादी के बाद अटल बिहारी वाजपेयी की पहली भाजपा सरकार बनी है. इसे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का आशीर्वाद प्राप्त है. ये दोनों ही संगठन ऐसे हैं, जो इस देश की आम विचारधारा से अपनी अलग विचारधारा रखते

किंतु खतरनाक मुद्दे भी क्षेत्रीय पार्टियों के ही उभारे हुए नासूर हैं. और यही कारण है कि बोडोलैंड, झारखंड, उत्तराखंड, खालिस्तान, गोरखालैंड, मिथिलांचल आदि के लिए सशस्त्र आंदोलन चलाए जाने लगे हैं.

अब सवाल यह उठता है कि इन संवेदनशील मुद्दों को उभार कर ये क्षेत्रीय दल स्थानीय समस्याओं का कौन सा हल निकालना चाहते हैं, और जहां तक क्षेत्रीय दलों द्वारा समस्याओं के समाधान का प्रश्न है, तो जिन प्रांतों में इन दलों की सरकारें हैं, उन पर ध्यान दें तो बात अपनेआप स्पष्ट हो जाएगी. आंध्रप्रदेश, तमिलनाडु, पंजाब, आसाम और हरियाणा में क्षेत्रीय दलों की सरकारें रही हैं. वहां सस्ते दाम पर राशन और वस्त्र बांटने के नाम पर और मुफ्त में किसानों को बिजली दिए जाने के नाम पर या तो घोटाले किए गए हैं अथवा प्रांतीय बजट को विशाल घाटे के समक्ष खड़ा कर दिया गया. जिस का देश की अर्थव्यवस्था पर गहरा प्रभाव पड़ता है. कहना न होगा कि अस्थिर सरकारों के साथसाथ चरमपंथी क्षेत्रीयता को बढ़ावा देने में भी इन्हीं दलों का मुख्य हाथ रहा है.

एक बात और, वह यह कि सत्ता हथियाने के लिए की जाने वाली खरीदफरोख्त की परंपरा भी इन क्षेत्रीय दलों की ही पहल से शुरू हुई है. चूंकि इन क्षेत्रीय दलों के नेताओं के चरित्र में कोई स्थायित्व नहीं होता इसलिए ये कुछ रुपयों के एवज में अथवा सरकार में किसी पद के एवज में समर्थन देते रहते हैं. नरसिंह राव सरकार को झारखंडी नेताओं का समर्थन इस बात का ज्वलंत उदाहरण है. इतना ही नहीं, इन्हें अपनी वर्षों पुरानी विचारधारा और संगठन की



भाजपा और सहयोगी दलों द्वारा जारी राष्ट्रीय एजेंडा क्या सरकार को लंबी आयु दे सका?

हैं. सरकार पर संघ का नियंत्रण रहेगा, नीतियां उसी की चलेंगी, इस से इनकार नहीं किया जा सकता.

भाजपा और संघ की विचारधारा का स्रोत हिंदुत्व है, जिस का आधार यह है कि भारत मुख्यतया हिंदुओं का है इसलिए उस की संस्कृति, भाषा, राजनीति, धर्म जैसे खास क्षेत्रों पर हिंदू छाप होनी चाहिए. इसलिए भाजपा को संघ का दबाव और नियंत्रण सहना पड़ेगा और वह अपने बुनियादी स्वरूप नहीं छोड़ सकती, इस के लिए वह आम सहमति के लिए जायज-नाजायज हथकंडे अपनाती रहेगी.

आम सहमति के और भी मुद्दे उठ सकते हैं. नाजीवाद भी देशप्रेम, राष्ट्रीयता से ओतप्रोत रहा था. सुरक्षा के लिए हर सूरत में आम सहमति के लिए जनता कुछ भी कर सकती है.

इंदिरा गांधी का आपातकाल के समय थोपा गया 20 सूत्रीय कार्यक्रम भी एक तरह से आम सहमति का रूप था. मौजूदा सरकार का राष्ट्रीय एजेंडा भी उस कार्यक्रम से अधिक भिन्न नहीं है. आम सहमति के वादे तो ठीक हैं, पर इरादे भी ठीक होने चाहिए. अगर ठीक हैं, तो फिर कहना ही क्या.

–जगदीश पंवार

नीतियों को त्यागने में भी कोई संकोच नहीं होता. तेलुगूदेशम पार्टी की वर्तमान सरकार के साथ नाटक क्षेत्रीय दलों की वैचारिक अस्थिरता का ही परिणाम है. सवाल यह है कि जिन को अपने वर्षों पुराने उसूल तोड़ने में तनिक देर नहीं लगी, उन को अपने छोटे से छोटे स्वार्थ के लिए 2 दिन की पुरानी दोस्ती तोड़ने में कितना वक्त लगेगा?

क्षेत्रीय दलों का सहयोग

लेकिन इस बात की जानकारी राष्ट्रीय दलों को भी है और वे बखूबी समझ चुके हैं कि क्षेत्रीय दलों के सहयोग के बिना केंद्र में सरकार गठित करना अब टेढ़ी खीर हो गया है. इसलिए वे क्षेत्रीय दलों की शर्तों को, सहर्ष कहिए या मजबूरी में, स्वीकार कर लेते हैं.

वर्तमान सरकार ने जब शपथ ली, तब भाजपा के 177 सदस्य होते हुए भी सहयोगी क्षेत्रीय दलों के 87 सदस्यों को ज्यादा महत्त्व दिया. उस के कैबिनेट मंत्रिमंडल में भाजपा के 10 मंत्री थे, जब कि क्षेत्रीय दलों के 11. ऐसा सिर्फ इसलिए हुआ क्योंकि मुख्य राजनीतिक दल पर छोटेछोटे क्षेत्रीय दलों का दबाव अधिक था. अब सवाल यह उठता है कि जो लोग क्षेत्रीय दलों की इस जबरदस्त भागीदारी पर इतराते नहीं अघाते, क्या वे इस बात को महसूस कर पा रहे हैं कि जिन क्षेत्रीय समस्याओं के समाधान का सपना क्षेत्रीय दल देख रहे थे वह राष्ट्रीय एजेंडा के किसी हिस्से में दिखाई नहीं दे रहा? क्षेत्रीय स्वायत्तता अथवा स्वतंत्रता और भाषा तथा जल जैसे विवादों का निपटारा किन स्थितियों में संभव हो पाएगा? सचाई तो यह है कि यहां भी वही ढाक के तीन पात निकलते दिखाई दे रहे हैं. गठबंधन सरकारों की परंपरा क्षेत्रीय लोगों को छलने के सिवा कोई समाधान नहीं प्रस्तुत करने जा रही. क्योंकि विकास के ठोस कदम सिर्फ स्थिर सरकार ही उठा सकती है, अपनी कुरसी के हिलते पायों पर ध्यान लगाए अस्थिर सरकार नहीं. ऐसे में गुजराल और चंद्रशेखर जैसे दूरदर्शी राजनेता भी पटखनी खा जाते हैं.

लेकिन स्थिर सरकार के न गठित हो पाने के मूल में क्या कारण रहा है, चिंतन का विषय है. दरअसल जब तक राष्ट्रीय दल पूरे देश में जिला और ब्लाक स्तर तक अपनी इकाइयां स्थापित कर क्षेत्रीय समस्याओं की तह तक जा कर समझने का प्रयास नहीं करेंगे, तब तक खंडित जनादेश ही प्राप्त होता रहेगा और अस्थिर सरकारें ही गठित होती रहेंगी. यदि कांग्रेस पार्टी को छोड़ दिया जाए तो कोई भी ऐसा राष्ट्रीय राजनीतिक दल नहीं है, जिस की ब्लाक स्तर तक पूरे देश में पार्टी की इकाइयां गठित हों. लेकिन कांग्रेस अपनी जड़ता के कारण लोगों में अपना विश्वास खो चुकी है. यह बड़े शर्म और जनतंत्र के लिए खतरे की बात है कि हमारे देश की राष्ट्रीय पार्टियां देश की समग्र क्षेत्रीय समस्याओं से अनभिज्ञ हैं. देश की एकता और अखंडता को बनाए रखने के लिए जरूरी है कि राष्ट्रीय दल विभिन्न स्तरों पर अपनी इकाइयां गठित कर देश की समग्र क्षेत्रीय समस्याओं का अध्ययन करें. यदि ऐसा नहीं होगा तो सरकारें तो अस्थिर होंगी ही, संप्रदायवाद की तरह क्षेत्रवाद और अलगाववाद का जहर भी देश को धीरेधीरे कमजोर करता चला जाएगा और इस का परिणाम यह होगा कि बाहरी शक्तियां देश की इस कमजोरी का लाभ उठा कर चोरीछिपे विखंडनवाद को बढ़ावा देती रहेंगी.

एक बात और. आज जब संविधान की समीक्षा के लिए आयोग गठित करने की बात चल रही है, उस में राजनीतिक दलों के स्वरूप और संगठित ढांचे पर एक पुष्ट विचार बनना चाहिए, क्योंकि हमारे देश की बहुदलीय व्यवस्था सार्थक राजनीति के बजाए विकृत राजनीति को जन्म दे रही है, जिस से जनतंत्र को खतरा पैदा हो गया है इसलिए राजनीतिक दलों के गठन की प्रक्रिया कठोर बनाई जानी चाहिए, ताकि मशरूम की तरह उग रहे राजनीतिक दलों पर प्रतिबंध लगाया जा सके. ●



नकल अध्यादेश

शिक्षा व्यवस्था में सुधार लाने का प्रयास

लेख ● शैलेंद्र सिंह

उत्तर प्रदेश सरकार नकल अध्यादेश जारी कर के अपना यह इरादा प्रकट कर चुकी है कि वह नकल की बीमारी को समाप्त करने के लिए पूरा प्रयास करेगी. हालांकि 1992 में भी जब भारतीय जनता पार्टी की प्रदेश में सरकार थी तो मुख्यमंत्री कल्याण सिंह ने इस प्रकार का एक अध्यादेश जारी किया था.

लेकिन जब भाजपा की सरकार नहीं रही तो समाजवादी पार्टी के नेता मुलायम

सिंह ने यह घोषणा की कि यदि वह मुख्यमंत्री बने तो नकल अध्यादेश समाप्त कर देंगे. यह सच है कि उस समय नकल अध्यादेश सख्त था. वह नकल करने वाले छात्र को जेल भेजने की व्यवस्था कर रहा था.

कुछ समय बाद प्रदेश में समाजवादी पार्टी और बहुजन समाज पार्टी गठबंधन की सरकार बनी तो तत्कालीन मुख्यमंत्री मुलायम सिंह ने नकल अध्यादेश तो समाप्त किया ही, नकल रोकने की भी कोई वैकल्पिक व्यवस्था नहीं की. 4 वर्ष बाद जब 1997 में भाजपा की पुनः सरकार बनी और कल्याण सिंह प्रदेश के मुख्यमंत्री हुए तो उन्होंने नकल रोकने का संकल्प दोहराया और उस पुराने अध्यादेश में फेरबदल कर के उसे मार्च 1998 में उत्तर प्रदेश बोर्ड परीक्षाओं के पहले लागू कर के यह साबित कर दिया कि वह अपने

इस के पूर्व यह अवधि 1 वर्ष तक के कारावास या 2 हजार रुपए जुर्माने अथवा दोनों की व्यवस्था थी. सजा के नियमों में इस नए संशोधन से नकल करने वाले छात्र का 1 वर्ष बेकार नहीं जाएगा और वह उसी सत्र में दोबारा परीक्षा दे सकेगा.

इसी प्रकार नए अध्यादेश में नकल कराने वाले के लिए 1 वर्ष के कारावास या 5 हजार रुपए जुर्माने अथवा दोनों सजाओं की व्यवस्था है. नकल कराने वालों का अपराध संज्ञेय और गैरजमानती रखा गया है. इस के पूर्व नकल कराने वालों का अपराध संज्ञेय एवं गैरजमानती नहीं था. उन्हें केवल 6 माह के कारावास या 2 हजार रुपए के जुर्माने की व्यवस्था थी.

नकल करने या कराने के लिए हिंसात्मक तरीके अपनाने वालों के लिए अब

यों तो उत्तर प्रदेश सरकार नकल अध्यादेश लागू कर के शिक्षा व्यवस्था में सुधार करना चाहती है, लेकिन इस मुद्दे को उठा कर जहां राजनीतिबाज अपना स्वार्थ साधने लगे हैं वहीं बारबार नियम बनने व तोड़ने से छात्रों पर बुरा प्रभाव पड़ रहा है. क्या यह बेहतर न होता कि इस अध्यादेश की बजाय शिक्षा प्रणाली में सुधार कर एक राष्ट्रस्तरीय शिक्षा नीति लागू की जाए?

निश्चय से डिगे नहीं हैं. हालांकि अब नकल एक राजनीतिक मुद्दा भी बन चुका है.

उत्तर प्रदेश सार्वजनिक परीक्षा (अनुचित साधनों का निवारण) अध्यादेश 1998 को मंत्रिमंडल ने जैसे ही मंजूरी दी, राज्यपाल मुहमद शफी कुरैशी ने उस पर हस्ताक्षर कर के जारी कर दिया. नए नकल अध्यादेश के नकल करने वालों के अपराध को संज्ञेय एवं जमानती बनाया गया है. जबकि इस के पहले यह संज्ञेय और गैरजमानती था. इसी प्रकार नकल करने वालों के लिए अब 3 माह तक के कारावास या 2 हजार रुपए अथवा दोनों के जुर्माने की व्यवस्था की गई है.

5 वर्ष तक का कारावास या 5 हजार रुपए का जुर्माना अथवा दोनों सजाओं का प्रावधान किया गया है. यह अपराध भी संज्ञेय और गैरजमानती रखा गया है. जबकि पूर्व में इस में 3 वर्ष के कारावास अथवा 5 हजार रुपए के जुर्माने की व्यवस्था थी. यह अध्यादेश उत्तर प्रदेश अधिनियम द्वारा स्थापित किसी परिषद अथवा निकाय द्वारा लागू की जाने वाली परीक्षाओं पर लागू होगा, परंतु यह प्रतिबंध प्रतियोगितात्मक परीक्षाओं पर लागू नहीं होगा.

प्रदेश में 24 मार्च से उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद की परीक्षाएं शुरू होने वाली थीं, इसलिए 18 मार्च को ही



उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री कल्याण सिंह का कहना है कि नकल शिक्षा और समाज की ऐसी विकृति है, जिस से युवा पीढ़ी का भविष्य अवरुद्ध हो जाता है. नकल से प्रमाणपत्र भले ही मिल जाए, लेकिन प्रतियोगितात्मक परीक्षाओं में छात्र कुंठा का शिकार हो कर असफल हो जाते हैं, नकल की जड़ छात्र नहीं बल्कि शिक्षा व्यवस्था में ही है, इस का इलाज भी शीघ्र किया जाएगा.

सरकार ट्यूशन पढ़ाने वाले शिक्षकों के खिलाफ कारवाई करने के लिए विचार कर रही है और इस का प्रारूप भी तैयार हो रहा है.

कल्याण सिंह मानते हैं कि नकल करने वालों से कहीं अधिक दोषी कराने वाले हैं. वे संगठित हो कर एक गैंग की तरह यह काम करते हैं. नकल माफिया नकल कराने के लिए पैसा वूसल करते हैं. वे इसे एक धंधे के रूप में विकसित कर चुके थे. इस से पूरी शिक्षा व्यवस्था कलंकित हो रही थी. इस के माध्यम से सरकार नकल माफियाओं पर भी कठोर कारवाई करने की अपनी बात दोहरा रही है.

अध्यादेश बना कर लागू किया गया अन्यथा पहले सरकार का मन था कि विधानसभा में इसे विधेयक के रूप में पारित कराया जाता. यही नहीं, इस अध्यादेश को तत्काल प्रभाव से, चल रही विश्वविद्यालय परीक्षाओं में भी लागू कर दिया गया.

इस अध्यादेश के लागू होने से सरकार की यह मनशा प्रकट हो गई कि वह नकल की समस्या को समाप्त करना चाहती है. इस के लिए वह राजनीतिक नुकसान उठाने के लिए भी तैयार है. इस अध्यादेश के लागू होते ही इस का विरोध करने वाले सक्रिय हो गए. नकल माफिया इस के लागू होने से खासतौर पर परेशान है.

समाजवादी पार्टी ने इस अध्यादेश को छात्रों के साथ विश्वासघात बताया है. समाजवादी छात्रसभा के प्रदेश अध्यक्ष और लखनऊ विश्वविद्यालय छात्र संघ के अध्यक्ष ने इस की कड़ी आलोचना करते हुए कहा कि 'सरकार ने छात्रों के सम्मान के साथ खिलवाड़ किया है.' उन्होंने छात्रों को एकजुट होने और संघर्ष करने के लिए तैयार होने को कहा है. सपा इस मुद्दे को एक बार फिर उठा कर अपना राजनीतिक हित साधना चाहती है.

छात्रों एवं अन्य वर्गों के तमाम लोगों ने इस का समर्थन किया है और इस कार्य की तारीफ की है. विश्वविद्यालय शिक्षा संकाय के अधिष्ठाता प्रोफेसर आर.जे. सिंह ने इसे सकारात्मक कदम बताया है. उन का मानना है कि 'छात्र नकल कर के क्षणिक लाभ ले सकता है, लेकिन उसे भविष्य में पछतावा होता है.' प्रो. सिंह नकल को हतोत्साहित करना जरूरी समझते हैं.

विश्वविद्यालय शिक्षक संघ (लूटा) के पूर्व महामंत्री प्रोफेसर राधेश्याम की प्रतिक्रिया है कि विश्वविद्यालय के परिसर में पुलिस और जिला प्रशासन का हस्तक्षेप बढ़ेगा. इस से विश्वविद्यालय की गरिमा कम होगी. नकल करने के कार्य को अपराध बना देने से शिक्षा जगत बदनाम होगा. नकल के आरोपी विद्यार्थियों पर मुकदमा चलेगा और

उन्हें वर्षों फैसले का इंतजार करना पड़ेगा.' उन्होंने ऐसे मामलों के समयबद्ध निस्तारण का भी सुझाव दिया है. माध्यमिक शिक्षक संघ (पांडेय गुट) के प्रांतीय प्रवक्ता ओमप्रकाश त्रिपाठी ने इस का स्वागत किया है. जय नरायण महाविद्यालय के पूर्व छात्र संघ अध्यक्ष माधुरी भूषण तिवारी ने कहा कि यह एक साहसिक कदम है.

नकल का समर्थन करना तो अजीब सी बात है, लेकिन उसे रोकने के लिए ऐसे कदम उठाना बहुत सही बात नहीं है. इसलिए कुछ दूसरे पहलुओं पर भी विचार करना चाहिए. आखिर हमारी शिक्षा प्रणाली में ऐसी कौन सी बुराइयां घुस आई हैं, जो विद्यार्थियों को अक्ल से परीक्षा देने के बजाय नकल करने के लिए विवश करती हैं? अगर गंभीरता से सोचा जाए तो इस का दोष विद्यार्थियों से अधिक शिक्षकों, शिक्षण एवं मूल्यांकन के तरीकों तथा शिक्षा व्यवस्था का है. अगर शिक्षक नियमित रूप से अपनी कक्षाएं लें, विद्यार्थियों में पाठ्यक्रम के प्रति रुचि उत्पन्न हो, कापियों की मूल्यांकन पद्धति को वैज्ञानिक और भेदभाव रहित बनाया जाए तो विद्यार्थी नकल करने से बचने का प्रयास करेंगे. विद्यार्थी जब शिक्षा से दूर भागते हैं तो शिक्षक भी उन्हें पढ़ाने में रुचि नहीं दिखाते. यदि यह समस्या हल हो जाए तो नकल की समस्या नहीं होगी.

सोचने का विषय यह भी है कि देश के अन्य किसी राज्य में ही नहीं बल्कि दुनिया के किसी अन्य देश में इस प्रकार की कोई व्यवस्था नहीं है कि नकल करने वाले छात्र को जेल भेजा जाए. फिर उत्तर प्रदेश में ही यह स्थिति क्यों आई?

वैसे नकल के कारण और कहीं छिपे हैं, इसलिए बजाय इतनी सख्ती कर के नकल रोकने के, उस प्रक्रिया को समाप्त किया जाना चाहिए, जिस के चलते यह स्थिति बनी है, अन्यथा नकल और शिक्षा भी राजनीतिबाजों के हाथों का खिलौना हो जाएगी. कोई इस का समर्थन करेगा तो कोई विरोध. भावी पीढ़ी भी इस चक्कर में पड़ कर कुंठित और प्रतिरोधी बन कर रह जाएगी. शिक्षा व्यवस्था में परिवर्तन करने से नकल करने वालों की संख्या अपनेआप कम हो जाएगी. ●



सरिता

पर्यटन विशेषांक

मई (प्रथम) 1998

मुफ्त 5 रंगीन, आकर्षक व्यू कार्ड



पश्चिम अर्धभारत
के प्रमुख
पर्यटन स्थलों
पर पहुंचने,
रहने,खानेपीने,
घूमने की
संपूर्ण जानकारी

इन के अतिरिक्त
आप की यात्रा को
सुखद बनाने के लिए
कई अन्य लेख,
संपूर्ण परिवार का
मनोरंजन करने वाली
कहानियां,मर्मस्पर्शी
कविताएं व सभी स्तंभ

खरीदना न भूलें

फर्जी डाक्टर बनाने का गोरखधंधा

लेख ● सुरेंद्र कुमार शर्मा

देश में फर्जी डाक्टरों एवं उन्हें फर्जी डिगरी देने वाले फर्जी चिकित्सा संस्थानों की संख्या लगातार बढ़ रही है. सरकार



की नाक के नीचे अनेक चिकित्सा संस्थान अवैध रूप से चल रहे हैं, जो बेरोजगार युवकों को डाक्टर बनाने का सब्जबाग दिखा कर दोनों हाथों से लूट रहे हैं. लेकिन केंद्र एवं राज्य सरकारों द्वारा इन के खिलाफ कोई ठोस वैधानिक काररवाई नहीं की जा रही है. शायद यही वजह है कि तकरीबन हर प्रदेश में कुछ धोखेबाज लोगों ने गिरोह बना कर फर्जी मेडिकल कालिज स्थापित कर लिए हैं और वे धड़ल्ले से डाक्टरी की फर्जी डिगरी बेचने का धंधा चला रहे हैं.



शहडोल जिले का रामबाबू इलेक्ट्रो होमियो कालिज एवं हास्पिटल : गैरकानूनी ढंग से बी.ई.एच.एस. की डिगरी दी जा सकती है.

वर्ष 1995 में केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री ने राज्यसभा में 22 फर्जी चिकित्सा संस्थानों की सूची जारी की, जो शिक्षित बेरोजगार युवकों से मुंहमांगे पैसे ले कर उन्हें फर्जी डिगरी देते रहे हैं, ये संस्थान हैं:

- दि सोसाइटी फार एडवांस्ड स्टडीज इन मेडिकल साइंसेज, दिल्ली.
- दि दिल्ली एंड हेल्थ हाइजीन सिंडिकेट दिल्ली.
- रेग्यूलर मेडिकल प्रैक्टिशनर्स कमेटी, अहमदाबाद.
- डाक्टर्स ट्रेनिंग कोर्स, नागपुर.
- दि आल इंडिया मेडिकल सोसाइटी, होशियारपुर, पंजाब.
- बांबे डेवलपमेंट आफ आयुर्वेदिक कालिज वर्ली, मुंबई.
- आयुर्वेद प्रशिक्षण बांद्रा, मुंबई.
- एम.एस.जी. रिसर्च इंस्टिट्यूट, भंडारा.
- स्वामी विवेकानंद आयुर्वेद महाविद्यालय, वर्धा.
- चंद्रपुर मेडिकल ट्रेनिंग इंस्टिट्यूट, चंद्रपुर.
- के.एन.एच. मेडिकल कालिज एंड हास्पिटल, नागपुर.
- डाक्टर्स ट्रेनिंग इंस्टिट्यूट, नागपुर.
- महाराष्ट्र न्यूरोपैथिक मैग्नोथेरैपिक एंड इलेक्ट्रोपैथिक मेडिकल ट्रेनिंग सेंटर, सतारा.
- इलेक्ट्रो होमियो मेडिकल कालिज वर्दवान, कलकत्ता.
- नेशनल आयुर्वेदिक कालिज एंड हास्पिटल, अकोला.
- प्राकृतिक चिकित्सा ज्ञानपीठ मेडिकल प्रैक्टिस, कुमारपारा.
- आल इंडिया एलोपैथिक ट्रेनिंग कालिज एंड हास्पिटल, चेन्नई.
- मेडिकल कालिज आफ आल्टरनेटिव मेडिसिन, कलकत्ता.
- मिदनापुर गुरु संकारी इलेक्ट्रो होमियो मेडिकल कालिज, मिदनापुर.
- जनरल काउंसिल आफ इलेक्ट्रो होमियोपैथिक सिस्टम आफ मेडिसन, मिदनापुर.
- इलेक्ट्रो होमियो मेडिकल इंस्टिट्यूट एंड हास्पिटल, डोगो.
- मैनेजमेंट प्रोफेशनल, चेन्नई.



यह तो थी सरकार द्वारा दी गई फर्जी एवं अवैध चिकित्सा संस्थानों की सूची. वास्तविकता यह है कि इस सूची से कई गुना अधिक फर्जी संस्थाएं यत्रतत्र चोरीछिपे चल रही है और शिक्षित बेरोजगारी को डाक्टर बनाने के हसीन सपने दिखा कर लूट रही है.

ये फर्जी संस्थाएं मान्य संस्थाओं द्वारा अपनीअपनी चिकित्सा पद्धति में दी जा रही डिगरियों से मिलतीजुलती डिगरियां बेच रही हैं. मसलन, एलोपैथिक पद्धति में एम.बी.बी.एस., बी.डी.एस.; एम.एस. एम.डी.; होमियोपैथिक पद्धति में बी.एच.एम.एस., डी.एच.एम.एस.; आयुर्वेदिक पद्धति में बी.ए.एम.एस., एम.एस. और यूनानी पद्धति में बी.यू.एम.एस. जैसी स्नातक एवं स्नातकोत्तर उपाधियां दी जाती हैं.

पिछले कुछ वर्षों से चिकित्सा के क्षेत्र में इलेक्ट्रो होमियोपैथी नामक नई चिकित्सा पद्धति की चर्चा सुर्खियों में रही है. केंद्र और राज्य सरकारों द्वारा मान्यता प्राप्त किसी भी मेडिकल कालिज में 'इलेक्ट्रो होमियोपैथी' की शिक्षा न तो शुरू की गई है और न ही तत्संबंधी डिगरी प्रदान की जा रही है, किंतु

आज ऐसी अनेक फर्जी चिकित्सा संस्थाएं अवैध रूप से चल रही हैं जो मान्य संस्थाओं द्वारा दी जा रही डिगरियों से मिलतीजुलती डिगरियां बेच रही हैं. हालत यह है कि यह सब गोरखधंधा सरकार की नाक के नीचे चल रहा है, फिर भी देश की चिकित्सा शिक्षा प्रणाली की धज्जियां उड़ाती इस फर्जी संस्थाओं पर कोई रोक नहीं है.

अनेक जगहों पर गैरकानूनी ढंग से संचालित मेडिकल कालिजों द्वारा बी.ई.एच.एस. की डिगरी दी जाने लगी है.

इस संदर्भ में असलियत एवं कानूनी स्थिति यह है कि पिछली लोकसभा में इस चिकित्सा पद्धति को मान्यता देने के प्रस्ताव को संसद ने नामंजूर कर दिया था. लेकिन संसद द्वारा अस्वीकृत पाठ्यक्रम देश के विभिन्न हिस्सों में अखबारी विज्ञापन द्वारा पत्राचार पाठ्यक्रम के रूप में धड़ल्ले से चलाया जा रहा है. डाक्टर बनने के इच्छुक छात्र इन फर्जी चिकित्सा संस्थानों के लुभावने, किंतु झूठे विज्ञापनों के मोहजाल में फंस कर हजारों रुपए लुटा रहे हैं.

इसी प्रकार सरकार ने वी.ए.एम.एस. नामक डिगरी को खारिज कर दिया है. यह डिगरी पूरी तरह से आयुर्वेद स्नातक डिगरी बी.ए.एम.एस. से मिलतीजुलती है, जोकि पूर्णरूपेण गैरकानूनी है. सरकार ने ऐसी किसी भी डिगरी या उपाधि को मान्यता नहीं दी है, लेकिन विभिन्न प्रांतों के दूरदराज इलाकों में चिकित्सा की आड़ में इस प्रकार की लूटपाट जारी है. इस मामले में एक रोचक तथ्य यह है कि ऐसे फर्जी संस्थान चलाने वाले प्राचार्यो एवं संचालकों की डिगरी भी प्रायः फर्जी एवं संदिग्ध ही होती है.

करीब एक दशक पहले तक फर्जी डिगरी और फर्जी संस्थानों के मामले में बिहार कुख्यात था. इस प्रांत की शिक्षा और चिकित्सा संबंधी डिगरियों को लोग प्रायः संदेह की नजरों से देखते रहे हैं, लेकिन आज वस्तुस्थिति यह है कि बिहार के अलावा मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश, पश्चिम बंगाल राजस्थान, हरियाणा, दिल्ली तथा अन्य प्रांतो में भी फर्जी एवं गैर कानूनी चिकित्सा संस्थान चल रहे हैं, जो शिक्षित बेरोजगारों से भारीभरकम रकम ले कर उन्हें फर्जी डिगरी दे कर फर्जी डाक्टर बना देते हैं.

जुलाई 1996 के प्रथम सप्ताह मे मध्यप्रदेश की राजनांदगांव पुलिस ने एक ऐसे ही गिरोह का भंडाफोड़ किया, जिस के सदस्य बिलासपुर, रायपुर, दुर्ग, राजनांदगांव तथा रायगढ़ जिलों में बेरोजगारों से मोटी रकम ले कर उन्हें चिकित्सा की फर्जी डिगरी बेचा करते थे.

उपर्युक्त गिरोह का परदाफाश उस समय हुआ जब बछेराभाटा गांव के शंकर दास बघेल ने राजनांदगांव जिले के डोंगरगढ़ पुलिस थाने में रिपोर्ट दर्ज कराई कि डोंगरगढ़ के डा. गोवर्द्धन दास ने उस से चिकित्सा संबंधी प्रमाणपत्र देने के लिए 5 हजार रुप मांगे थे और 2,800 रुपए ले कर रजिस्ट्रेश प्रमाणपत्र, डिप्लोमा आदि दे दिया था.

लेकिन अंक सूची में काटपीट देख क शंकरदास को संदेह हुआ. तब उस ने गोवर्द्ध दास से अपने पैसे वापस मांगे. गोवर्द्धन दा ने पैसे लौटाने में असमर्थता जताई. विव हो कर शंकरदास ने थाने में शिकायत द करा दी. इस पर पुलिस ने गोवर्द्धन दास चिकित्सालय में छापा मार कर बड़ी संख में फर्जी डिगरियां, अंक सूचियां, रबर मुहरें आदि जब्त कर लीं.

गोवर्द्धन दास ने पुलिस को बताया इस गिरोह का असली सरगना डा. अतुल दास है, जो दुर्ग जिले के नानकट्टी गांव

रहने वाला है. पुलिस के अनुसार, डा. दास मूलतः बंगलादेश का निवासी है और उसे अभी तक भारत की नागरिकता हासिल नहीं हुई है. वर्ष 1987 में वह नानकट्टी गांव आया था और वहां चिकित्सा व्यवसाय करने लगा. बाद में उस ने कुछ लोगों को साथ ले कर एक फर्जी चिकित्सा संस्थान बनाया और अल्पशिक्षित बेरोजगारों से मोटी रकम ले कर फर्जी प्रमाणपत्र बांटने शुरू कर दिए. इस काम को वह अपने दलालों के जरिए बखूबी



शहडोल जिले में अवैध रूप से संचालित इलेक्ट्रो होम्यो क्लिनिक. आम लोगों की जिंदगी से खिलवाड़.

अंजाम देता था. फिलहाल प्रकरण चल रहा है.

जुलाई 1996 में ही जबलपुर में संचालित जे.बी. मेडिकल कालिज को जिला प्रशासन ने बंद कर दिया. आरोप है कि यह कालिज (एम.बी.बी.एस.) की डिगरी देता था. इस के लिए वह छात्रों से प्रतिमाह 200 रुपए फीस लेता था.

उल्लेखनीय है कि मध्य प्रदेश में चिकित्सा संस्थान चलाने के लिए राज्य सरकार की पूर्व अनुमति अनिवार्य है, जबकि जे.बी. मेडिकल कालिज के पास इस आशय की कोई स्वीकृति नहीं पाई गई. कालिज के प्राचार्य ने पुलिस के समक्ष यह जरूर स्वीकार किया कि छात्रों को एनाटामी, फिजियोलाजी, बायोकेमिस्ट्री, बायोफिजियोलाजी, पैथोलाजी वगैरह विषय पढ़ाए जाते हैं, जिस के एवज में हर छात्र से प्रतिमाह 200 रुपए का शुल्क लिया जाता है. परंतु प्राचार्य तथा अन्य स्टाफ के पास उपर्युक्त चिकित्सा पद्धति पढ़ाने की योग्यता होने के प्रमाण नहीं पाए गए.

रिपोर्ट के अनुसार इस कालिज के पास भारतीय चिकित्सा परिषद की मान्यता का प्रमाणपत्र नहीं था और न ही देश के किसी भी प्रांत की किसी मेडिकल काउंसिल का रजिस्ट्रेशन. प्राचार्य ने मेडिकल बोर्ड आफ बायोकेमिक सिस्टम आफ मेडिसिन, जिला आरा (बिहार) नाम की किसी संस्था का एक प्रमाणपत्र अवश्य पेश किया लेकिन इस संदर्भ में महत्त्वपूर्ण बात यह है कि बायोकेमिक सिस्टम आफ मेडिसिन किसी भी प्रदेश की चिकित्सा पद्धति में नहीं आती है.

दूसरे शब्दों में, उपर्युक्त कालिज केंद्र अथवा राज्य सरकार से स्वीकृति लिए बिना देश की चिकित्सा शिक्षा प्रणाली से संबंधित कानून की धज्जियां उड़ाते हुए चलाया जा रहा था और छात्रों को एम.बी.बी.एस., एम.डी., डी.वी.एम.एस. की फर्जी डिगरियां दे रहा था. लिहाजा जिला प्रशासन ने कालिज के संचालन पर रोक लगा दी थी.

इसी प्रकार जबलपुर में रांझी स्थित एम.ई.एच. मेडिकल कालिज को भी तत्काल प्रभाव से बंद करने और मध्यप्रदेश सरकार अथवा केंद्र सरकार से सक्षम आदेश जारी होने तक संस्थान को दोबारा न खोलने का आदेश दिया गया था. इस के साथ ही जबलपुर उच्च न्यायालय ने इस कालिज को किसी प्रकार की कोई डिगरी या डिप्लोमा किसी को प्रदान करने से मना करते हुए

इंडियन इलेक्ट्रो होमियोपैथिक मेडिकल काउंसिल उत्तम नगर, दिल्ली द्वारा प्रदत्त कोई भी डिगरी वितरित न करने के आदेश दिए थे.

जबलपुर में चल रहे एम.ई.एच. मेडिकल कालिज एंड हास्पिटल पर आरोप था कि उस के पास मध्यप्रदेश चिकित्सा शिक्षा संस्थान अधिनियम के तहत राज्य शासन अथवा केंद्र सरकार से किसी प्रकार की कोई मान्यता नहीं है. गौरतलब है कि भारत सरकार के स्वास्थ्य मंत्रालय द्वारा भी 19 जनवरी 1993 के अपने आदेश के तहत इलेक्ट्रोपैथी एवं इलेक्ट्रो होमियोपैथी चिकित्सा शिक्षा प्रणाली को अस्वीकृत किए जाने के फलस्वरूप ऐसे संस्थानों के संचालन पर रोक लगाने का निर्देश जिला प्रशासन को दिया गया है.

कुछ माह पहले उपभोक्ता संरक्षण फोरम की ग्वालियर जिला इकाई ने स्थानीय राजेंद्र प्रसाद मेडिकल कालिज आफ इलेक्ट्रो होमियोपैथी के संचालन को अवैध मानते हुए उस पर 10 हजार रुपए का जुर्माना किया.

अभियोजन के अनुसार, आवेदक पवन कुमार जैन ने उक्त संस्थान में विधिवत प्रवेश लिया और निर्धारित फीस दे कर एक साल तक अध्ययन किया. इस दौरान कुछ अखबारों में कालिज के संचालन एवं डिगरी की वैधता को ले कर समाचार छपे. पवन जैन ने जब इस बारे में कालिज के संचालक एवं चिकित्सा अधिकारियों से संपर्क कर वास्तविकता जाननी चाही तो उन्हें स्पष्ट जवाब नहीं दिया गया. फलस्वरूप उन्होंने आर्थिक क्षतिपूर्ति हेतु उपभोक्ता फोरम का सहारा लिया.

शहडोल जिले में ही इलेक्ट्रो होमियोपैथी के नाम पर 2 कालिज बिना मान्यता के चल रहे हैं, जिन के नाम हैं, रामबाबू इलेक्ट्रो होमियो कालिज और राजीव गांधी इलेक्ट्रो होमियो कालिज. यहां 12वीं कक्षा उत्तीर्ण छात्रों को 3 वर्षीय पाठ्यक्रम बी.ई.एम.एस. (बैचलर आफ इलेक्ट्रो होमियो मेडिसिन एंड सर्जरी) में दाखिला दिया जाता है. इस के अतिरिक्त ए.एम.पी.ई. (आथोराइज्ड मेडिकल प्रैक्टिशनर इलेक्ट्रो होमियोपैथी) का एक व पाठ्यक्रम भी उपलब्ध है. फिलहाल रा गांधी इलेक्ट्रो होमियो कालिज को बंद क दिया गया है.

इस प्रतिनिधि ने पिछले दिनों रामब इलेक्ट्रो होमियो कालिज के प्राचार्य ड कृष्ण प्रसाद से इलेक्ट्रो होमियोपैथी ए कालिज संचालन की वैधता तथा अ पहलुओं पर व्यापक चर्चा की. बातचीत दौरान कृष्ण प्रसाद ने स्वीकार किया कि इ पैथी (चिकित्सा पद्धति) को शासन से अ तक मान्यता नहीं मिली है, लेकिन इसे अवै कहना गलत है.

डा. कृष्ण प्रसाद कहते हैं, "शासकी मान्यता का न होना फर्जी होने की परिभा नहीं है. यदि ऐसा मान लिया जाए तो सह



प्रश्न उठता कि क होमियोपैथ यूनानी अ आयुर्वेद जै चिकित्स पद्धतिय सरकारी मान् के पूर्व फ थीं? 42 वर्षों तक होमियोपैथी बिना मान् के चली. 1973 में शासन ने उसे मान् प्रदान की तो क्या यह मान लिया जाए होमियोपैथी अवैध चिकित्सा प्रणाली थी

उन का कहना है कि इले होमियोपैथी संस्थाएं म.प्र. के सोसा रजिस्ट्रेशन एक्ट 1973 के 6 (3) नि संख्या 44, वर्ष 1982, भोपाल से विधि पंजीकृत है. ये गैरकानूनी अथवा फर्जी मानी जा सकती है, जब इन से वर्तमान क की किसी धारा अथवा उपधारा का उल्ल होता हो. पूर्व मुख्यमंत्री मोतीलाल वोर भी इसे गैरकानूनी करार देते हुए कह कि केंद्र सरकार इस पर प्रतिबंध हेतु विधेयक ला रही है किन्तु एक दशक

अधिक समय गुजर जाने के बावजूद इस पर पाबंदी नहीं लगाई गई. फिर यह अवैध कैसे हुई?"

डा. प्रसाद कहते हैं, "वर्ष 1987 से 1997 तक हमारे द्वारा लगभग 27 निःशुल्क इलेक्ट्रो होमियोपैथी शिविर लगाए गए जिन से हजारों लोग लाभान्वित हुए. 17 शिविर केवल शहडोल जिले में विभिन्न अवसरों पर जिला प्रशासन एवं मुख्य चिकित्सा अधिकारी की अनुमति से लगाए गए. अगर वाकई इलेक्ट्रो होमियोपैथी को अवैध एवं निरर्थक चिकित्सा पद्धति माना जाता है, तो फिर जिला प्रशासन ने समयसमय पर शिविर लगाने की अनुमति क्यों दी?"

डिगरी देने संबंधी सवाल के जवाब में डा. कृष्ण प्रसाद ने कहा, "प्रदेश में इस समय करीब 35 इलेक्ट्रो होमियो कालिज हैं, जो काउंसिल आफ इलेक्ट्रो होमियोपैथिक सिस्टम आफ मेडिसिन भोपाल से संबद्ध हैं. अंक सूची या डिगरी देने का अधिकार किसी भी कालिज को नहीं है. यह कार्य यूनिवर्सिटी अथवा बोर्ड करता है."

शहडोल में इलेक्ट्रो होमियो के नाम पर 5 क्लिनिक चल रहे हैं. गंज रोड स्थित सराफ इलेक्ट्रो अस्पताल के डा. एस.एल. सराफ से जब हम ने पूछा कि शासन द्वारा इस पैथी को मान्यता नहीं दी गई है. इस के बावजूद आप इस पद्धति से प्रैक्टिस कर रहे हैं, क्या यह गैरकानूनी कृत्य नहीं है?

प्रत्युत्तर में डा. सराफ ने कहा, "जब तक सरकार कानून बना कर इलेक्ट्रो होमियो पर प्रतिबंध नहीं लगाती है तब तक प्रैक्टिस करना अथवा क्लिनिक चलाना गैरकानूनी नहीं है."

जब हम ने उन के डाक्टरी प्रमाणपत्र की जानकारी चाही तो उन्होंने बताया कि वह सिर्फ इलेक्ट्रो होमियोपैथी में ही आथोराइज्ड मेडिकल प्रैक्टिशनर हैं. वर्ष 1992 से इस पेशे में हैं. उन्होंने स्वीकार किया कि अधिकतर डाक्टर एलोपैथी तथा अन्य पद्धतियों में प्रैक्टिस करते हैं जोकि गैरकानूनी तथा आपराधिक है.

इसी संदर्भ में बुढ़ार चौराहा स्थित 'इलेक्ट्रो होमियो क्लिनिक' के डा. एस. अहमद कहते हैं, "इलेक्ट्रो होमियोपैथी के बारे में अन्य चिकित्सा पद्धतियों से जुड़े कुछ लोग ही सरकार को भ्रमित कर रहे हैं, क्योंकि वे नहीं चाहते कि इसे सरकारी संरक्षण मिले जबकि मेरे विचार से इस से सस्ती एवं दुष्प्रभाव विहीन कोई चिकित्सा प्रणाली नहीं है."

प्रसंगवश यहां यह बताना उचित होगा कि म.प्र. उच्च न्यायालय की ग्वालियर खंडपीठ ने अगस्त 1997 के अंत में प्रदेश सरकार को स्थानीय राजेंद्र प्रसाद मेडिकल इंस्टिट्यूट आफ इलेक्ट्रो होमियोपैथी और इलेक्ट्रो चिकित्सा पद्धति को मान्यता दिए जाने के संबंध में 6 माह के अंदर निर्णय लेने के निर्देश दिए हैं.

शहडोल जिला अस्पताल के डाक्टर प्रदीप खरे ने इस संवाददाता के साथ बातचीत में कहा, "किसी भी चिकित्सा पद्धति के चिकित्सा व्यवसाय हेतु चिकित्सा स्नातक को राज्य सरकार के संबंधित बोर्ड से पंजीयन कराना आवश्यक होता है. लेकिन प्रदेश के विभिन्न नगरों में धड़ल्ले से चल रहे अवैध मेडिकल कालिज पता नहीं किस प्रकार अथवा किस बोर्ड से स्नातकों का पंजीयन करा रहे हैं. सरकार के चिकित्सा पंजीयन कार्यालयों से इन कालिजों की डिगरी को न तो मान्यता मिली हुई है और न ही ऐसे कालिजों के चिकित्सकों का यहां पंजीयन होता है. इस के बावजूद लोगबाग फर्जी मेडिकल कालिज या संस्था खोल कर अर्द्धशिक्षित युवकों को फर्जी डाक्टर बनाने का गोरखधंधा चला रहे हैं."

जनता दल के विधायक बच्चन नायक ने गत 19 फरवरी 1996 को विधान सभा में एक प्रश्न के जरिए यह जानना चाहा था कि प्रदेश में किसकिस चिकित्सा पद्धति को मान्यता मिली हुई है और किसकिस नाम से इन के बोर्ड कहांकहां संचालित हैं?

इस के जवाब में सरकार की ओर से चिकित्सा शिक्षा मंत्री बालेंदु शुक्ल ने बताया

था, "प्रदेश में एलोपैथिक, आयुर्वेदिक, यूनानी, होमियोपैथिक तथा प्राकृतिक चिकित्सा बोर्ड को मान्यता प्राप्त है और 1. चिकित्सा परिषद भोपाल, 2. म.प्र. दंत चिकित्सा परिषद इंदौर, 3. म.प्र. आयुर्वेदिक तथा यूनानी चिकित्सा पद्धति एवं प्राकृतिक चिकित्सा परिषद भोपाल तथा 4. म.प्र. राज्य होमियोपैथी परिषद भोपाल से पंजीकृत डाक्टरों को ही प्रैक्टिस करने की पात्रता है. इन 4 बोर्डों के अलावा किसी अन्य बोर्ड या काउंसिल से पंजीकृत डाक्टर की प्रैक्टिस अमान्य तथा गैरकानूनी होगी और उस के विरुद्ध आपराधिक प्रकरण (मुकदमा) चलाया जा सकता है."

कुछ माह पहले जबलपुर उच्च न्यायालय ने भी अपने एक महत्त्वपूर्ण निर्णय में स्पष्ट कहा था कि कोई भी चिकित्सक उसी पद्धति से चिकित्सा कर सकता है, जिस पद्धति में उस ने योग्यता हासिल की हो. अगर वह दूसरी पद्धति से चिकित्सा करता है तो उसे मिथ्या अथवा नीमहकीम की संज्ञा दी जा सकती है. यह चिकित्सा नियमों का उल्लंघन समझा जाएगा और संबंधित चिकित्सक के विरुद्ध आपराधिक मामला कायम किया जा सकता है. ऐसी स्थिति में उपभोक्ता को पूरा अधिकार है कि वह ऐसे चिकित्सक के खिलाफ अदालत में मुकदमा चलाए.

उच्च न्यायालय के इस महत्त्वपूर्ण फैसले के बावजूद प्रदेश के तकरीबन सभी जिलों में न सिर्फ नीमहकीमों की बाढ़ सी आ गई है, अपितु वे विभिन्न चिकित्सा पद्धतियों से इलाज कर लोगों की जिंदगी से खिलवाड़ कर रहे हैं और प्रशासन में बैठे आला अफसरों से ले कर मानव अधिकारों की वकालत करने वाली तमाम संस्थाएं मूकदर्शक बनी हुई हैं.

देश में फर्जी डाक्टरों तथा नीमहकीमों की संख्या के बारे में कोई अधिकृत आंकड़े उपलब्ध नहीं हैं, लेकिन अनुमान लगाया जाता है कि जितने वैध एवं वास्तविक डाक्टर हैं उस से कहीं अधिक संख्या में फर्जी चिकित्सक हैं. हैरत की बात तो यह है कि देश की राजधानी नई दिल्ली में 30 ह फर्जी चिकित्सक हैं.

इंडियन मेडिकल एसोसिएशन दिल्ली शाखा ने कुछ समय पहले दि उच्च न्यायालय में दायर एक जनहित याचि में उपर्युक्त जानकारी देते हुए कहा कि फर्जी चिकित्सक अवैध रूप से चिकि व्यवसाय कर आम लोगों की जिंदगी खिलवाड़ कर रहे हैं.

मध्यप्रदेश जूनियर डाक्टर एसोसिए के प्रांतीय अध्यक्ष डा. एम.एम. मं (शहडोल) के अनुसार, प्रदेश में लग 50 हजार फर्जी डाक्टर हैं, जो धड़ल्ले दवाखाने खोल कर मरीजों को जिंदगी के बदले मौत बांट रहे हैं.

युवा पत्रकार आनंद सचदेव तथा नेता मनीष श्रीवास्तव द्वारा कुछ समय प क्रमशः 34 और 41 फर्जी डाक्टरों की सू (केवल शहडोल जिले की) म.प्र. मेडिक काउंसिल को भेज कर समुचित काररव की मांग की गई थी, जिस पर काउंसिल जिला प्रशासन को दंडात्मक कारवाई निर्देश दिए. नतीजतन अब तक 13 फ डाक्टरों को गिरफ्तार किया जा चुका वैसे यहां 100 से अधिक फर्जी डिगरीध चिकित्सक सक्रिय हैं.

बिहार के नालंदा जिले में फ प्रमाणपत्र के आधार पर चिकित्सा व्यवस कर रहे 80 फर्जी चिकित्सकों के खिल प्राथमिकी दर्ज कराने का आदेश वहां जिला मजिस्ट्रेट दीपक कुमार ने कुछ स पूर्व दिया.

जिला प्रशासन को जब फर्जी डि के आधार पर चिकित्सा कर रहे नीमहक के खिलाफ काफी शिकायतें मिलीं तो जि दंडाधिकारी दीपक कुमार ने फर्जी प्रमाण की जांच के सिलसिले में विभिन्न अस्पत एवं क्लिनिकों में ताबड़तोड़ छापे मारे 80 चिकित्सकों की आर.एम.पी. की डि को फर्जी पाया. अन्य स्थानों में भी चिकित्सकों की सक्रियता का अंदाजा से लगाया जा सकता है.

क्या भगवान भक्तों की रक्षा हेतु पधारते हैं?



लेख ● राम किशोर शर्मा

धर्म के ठेकेदार तथा कथावाचक दिनरात अलापते रहते हैं कि भगवान अपने भक्तों की रक्षा करने तुरंत पधारते हैं. सब से पहले प्रश्न यह उठता है कि वह अपने भक्तों की ही रक्षा क्यों करते हैं? क्या दूसरे प्राणियों की रक्षा का दायित्व उन के ऊपर नहीं है? यहां यह बात स्पष्ट हो जाती है कि यह जुमला धर्म के ठेकेदारों



ने जनता को लुभाने के लिए रचा है.

हिंदू धर्म के अनुरूप तो भगवान खुद सीधे पृथ्वी पर उतर आते हैं. लेकिन जब भगवान अपने पिता दशरथ को नहीं बचा पाए, श्रीकृष्ण जी अपने प्रिय सखा अर्जुन के पुत्र अभिमन्यु की रक्षा नहीं कर पाए तो फिर वह किस भक्त की रक्षा हेतु पधारते हैं?

गीता में श्रीकृष्ण अर्जुन को उपदेश देते हुए कहते हैं, 'तू तो निमित्त मात्र है, यह सब योद्धा तो मेरे द्वारा मारे जा चुके हैं.' यदि श्रीकृष्ण की इस दलील को मान लिया जाए तो यह भी मानना पड़ेगा कि अभिमन्यु की मौत का कारण वह स्वयं रहे हैं.

यह ऐतिहासिक तथ्य है कि जब महमूद गजनवी ने सोमनाथ के मंदिर पर हमला किया तो हजारों भक्त भगवान से रक्षा की प्रार्थना करते रहे, परंतु गजनवी सभी को मार कर, ऊंटों पर धन व सोना लाद कर चलता बना. 1996 में एक मेले में भगदड़ मचने से कई भक्त मर गए. अमरनाथ यात्रा पर जाने वाले भक्त बर्फ में दब कर मर गए. जब अन्य भक्तों का साक्षात्कार लिया तो किसी ने भी रक्षा के लिए भगवान के आने का जिक्र तक नहीं किया, सभी ने सेना व पुलिस के जवानों की प्रशंसा की.

यदि खुदा या ईश्वर अपने भक्तों की रक्षा के लिए पधारते तो हज पर जाने वाले तीर्थयात्रियों के जहाज क्यों डूब जाते, तीर्थयात्रा पर जाने वाले भक्तों की बसें क्यों खाइयों में गिरतीं? आए दिन ऐसी घटनाएं होती रहती हैं, लेकिन सब कुछ जानते हुए भी लोग स्वार्थी तत्त्वों के चंगुल में फंसते रहते हैं.

धर्म के ठेकेदारों ने इनसान को ठगने के लिए तरहतरह की कहानियां, किस्से ग[...] रखे हैं. यहां तक कि विद्यालयों में भी इ[...] असत्य रचनाओं को पढ़ाया जाता है. मीराबा[...] के बारे में पढ़ाया जाता है कि राजा द्वा[...] भेजा गया विष कृष्ण भगवान ने अमृत [...] बदल दिया था. यह घटना कोई ऐतिहासिक तथ्य नहीं है. यदि कोई इसे ऐतिहासिक सत्[...] कहने की जिद करे तो उस भक्त को सोडियम सायनाइड का एक कैप्सूल तो खा कर दिखाना ही चाहिए.

यदि भगवान भक्तों की रक्षा करने के लिए पधारते हैं तो वह एक धर्मपरायण देश को सदियों तक गुलामी क्यों झेलने देते? जबकि सत्य यह है कि धर्म के ठेकेदारों की वजह से ही अपने देश को गुलामी और गरीबी भुगतनी पड़ी.

विभिन्न धर्मों के ठेकेदारों ने झूठे किस्से और कहानियां इसलिए रचीं ताकि इन्हें जिंदगी भर मुफ्त में खाने को मिलता रहे, देश चाहे जहन्नुम में जाए.

दिनांक 19 सितंबर 1985 को धर्मगुरु मुहम्मद अली के कहने पर ईश्वर दर्शन के झांसे में आ कर मनीला में 60 व्यक्तियों ने विष पी कर आत्महत्या की. हर वर्ष कई अज्ञानी लोग सिद्धी प्राप्ति के चक्कर में स्व[...] अपनी बलि दे देते हैं. इन प्रयासों से सि[...] होता है कि यह मनुष्य नाम का प्राणी ज[...] धार्मिक ठेकेदारों के अंधविश्वास में फंस जात[...] है तो स्वयं को बुद्धिहीन सिद्ध कर देता है.

धर्म के ठेकेदार कहते हैं कि भगवा[...] अपने भक्तों की रक्षा करते हैं. प्रश्न उठत[...] है कि भगवान अपने भक्तों की रक्षा कर [...] पक्षपात क्यों करते हैं? दूसरा प्रश्न उठता

कहते हैं कि भगवान अपने भक्तों की जरूर सुनता है. धर्म के ठेकेदारों द्वारा गढ़े इस झूठ के कारण ही शायद लोग भगवान के आगे हाथ जोड़े खड़े रहते हैं. लेकिन क्या भगवान मुसीबत के वक्त इन्हीं भक्तों की रक्षा हेतु पधारते हैं?



अमरनाथ यात्रा पर जाने वाले भक्तों के साथ हुई त्रासदी के वक्त भगवान नहीं बल्कि सेना व पुलिस जीजान से उन्हें बचाने में लगे हुए थे.

कि उस निर्मोही भगवान को अपनी चमचागीरी कराने की लालसा क्यों है? यदि भगवान रिश्वत पाने से खुश होता है तो वह आजकल के रिश्वत लेने वाले अधिकारी या नेता से किस तरह से श्रेष्ठ हैं. इस से साफ जाहिर होता है कि भगवान द्वारा भक्तों की रक्षा करने का जुमला स्वार्थी धार्मिक ठेकेदारों ने ही गढ़ा है. क्योंकि ऐसा लोभ देने से ही लोग उन के चक्कर में आ सकते हैं.

धर्म के ये ठेकेदार अपने स्वार्थ में इस हद तक अंधे हो जाते हैं कि पुत्र तथा पिता के संबंधों को बिगाड़ने में भी नहीं हिचकिचाते हैं. ऐसे ही स्वार्थी तत्त्वों द्वारा प्रहलाद तथा उस के पिता हिरण्यकश्यप की कहानी को रचा गया है. इस प्रकार के किस्से समाज को क्या सिखाते हैं? यदि आज के पुत्र इन की सीखों को अपनाना शुरू कर दें तो उन के परिवारों का क्या हाल होगा? आप बखूबी जान सकते हैं.

तुलसीदास ने मीराबाई को भी यही सीख दी थी, 'जाके प्रिय न राम वैदेही, तज्यों ताहि कोटि वैरी सम, यद्यपि परम सनेही.' ऐसी सीख देने वाले व्यक्ति इस भारत को किस प्रकार से समन्वय के सूत्र में बांध सकते हैं. भारत में विद्वेष और अंधविश्वास फैलाने में इन स्वार्थी तत्त्वों का ही विशेष योगदान रहा है. इन स्वार्थी साधुसंतों ने इस दुनिया और उस के संबंधों को नकली बताबता कर दूसरों को भारत पर आक्रमण करने के लिए समुचित योगदान दिया है. अब आप ही बताइए, ऐसे समय में ईश्वर ने इन की रक्षा क्यों नहीं की?

आए दिन बलात्कार के मामले होते रहते हैं, परंतु अबला की चीखपुकार पर भी भगवान रक्षा के लिए क्यों नही पधारते हैं? जब हमारे देवता तो खुद ही औरत की इज्जत लूटने पहुंच जाते हैं तो फिर कौन से भगवान भक्तों की रक्षा को आएंगे? ●

इंगलैंड में जातीय घृणा

कैली टर्नर ने जातीय दंगों के शिकार एक दक्षिण एशियाई युवक को बचाने के लिए सब से दुश्मनी मोल ले ली और दंगों में शामिल अपने ही एक दोस्त को पकड़वाने में पुलिस की मदद की. यहां तक कि उस दोस्त को 6 महीने की कैद तक की सजा दिलवा दी. लेकिन इस का अंजाम उसे बाद में भुगतना पड़ा.

इस घटना का सब से आश्चर्यजनक पहलू यह है कि जातिवाद के खिलाफ आवाज उठाने वाली इस किशोरी को एक अफ्रीकी मूल के छात्र ने ही बुरी तरह से मारापीटा और दक्षिण एशियाई युवक का साथ देने का विरोध किया. वह स्कूल में अपनी सहेलियों और दोस्तों के कोपभाजन का शिकार पहले ही हो चुकी थी. खास बात यह है कि कैली टर्नर स्वयं श्वेत है और उस का वह दोस्त भी जिसे सजा मिली श्वेत ही है.

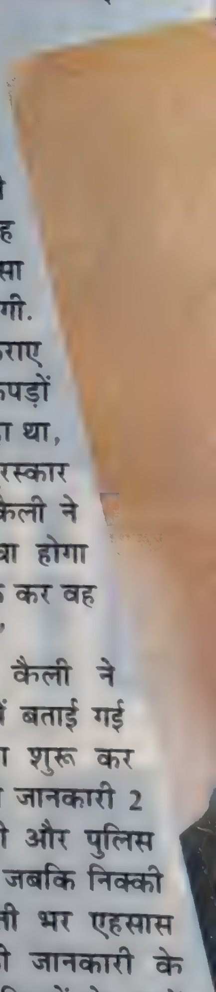
कैली के सारे दोस्तों ने उस से बोलना बंद कर दिया था और उस से अपराधियों की तरह व्यवहार करने लगे थे. यहां तक कि सड़कों पर उस का पीछा करते और फोन पर जान से मारने की धमकियां देते. साल भर हिंसा और आतंक के वातावरण में जीने वाली कैली को अब भी इस बात का अफसोस नहीं है कि वह पुलिस के पास क्यों गई?

कैली ने जातीय दंगों में जिस दक्षिण एशियाई युवक को बुरी तरह से पीटे जाने का विरोध किया वह बंगलादेशी है और उस का नाम है, मुख्तार अहमद.

कैली के जीवन का भयावह दौर फरवरी 1994 में तब शुरू हुआ, जब 18 साल के निक्की फुल्लर और 19 अन्य ने मिल कर बंगाली छात्र मुख्तार अहमद (19 वर्षीय) की जम कर पिटाई की. यह जातीय दंगा इतना भयंकर था कि मुख्तार के [illegible] की पूरी खाल ही उधेड़ दी गई और उस [illegible] शक्ल बुरी तरह से बिगाड़ दी गई. दंगाई [illegible] मरणासन्न हालत में ईस्ट लंदन के बेथन[illegible] ग्रीन में छोड़ गए.

कैली बताती है, "निक्की फुल्लर ए[illegible] बंगलादेशी छात्र को बुरी तरह से पीटे ज[illegible] पर फूला नहीं समा रहा था."

निक्की फुल्लर रोमफोर्ड, ऐसक्स [illegible] एक नाइट क्लब की वैलनटाइन पार्टी में खून से सने कपड़े पहन कर आया. उस ने जब कपड़ों की लेस के बीच जमा खून कैली को दिखाया तो वह अपनेआप को बीमार सा महसूस करने लगी. निक्की लगातार मुसकराए जा रहा था और उन कपड़ों को इस तरह दिखा रहा था, मानो कोई ट्राफी या पुरस्कार जीत कर आया हो. कैली ने बताया, "उस ने सोचा होगा कि इस तरह डींग हांक कर वह मेरा दिल जीत लेगा."

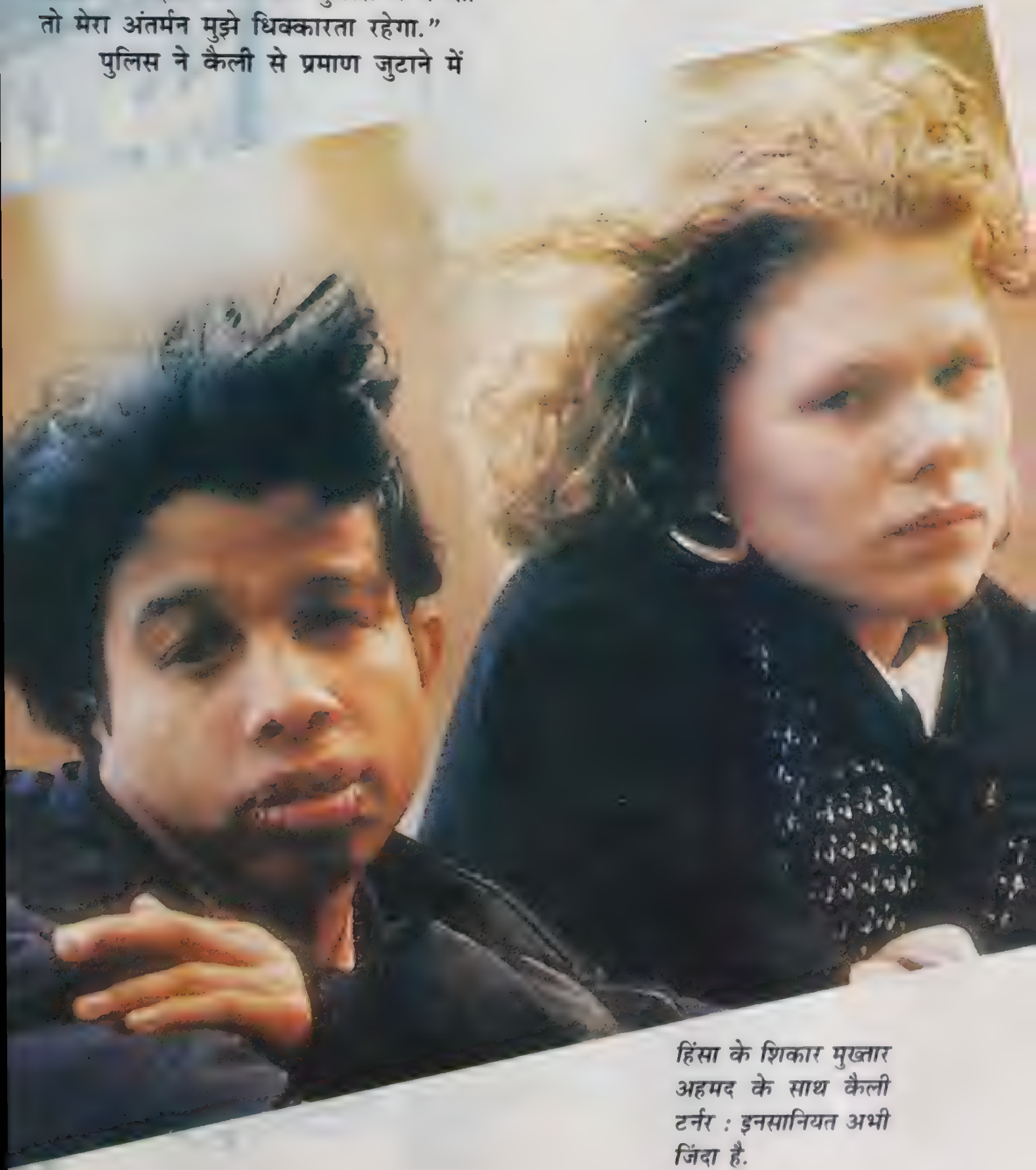


बस, तब से कैली ने जातीय दंगे के बारे में बताई गई हर बात को लिखना शुरू कर दिया. उस ने यह सारी जानकारी 2 पन्नों पर नोट कर ली और पुलिस के जासूसों को दे दी. जबकि निक्की को इस बात का रत्ती भर एहसास नहीं था. निक्की की जानकारी के आधार पर कैली व्यक्तियों के नामों, तिथियों और स्थानों सहित इस दंगे का

श्वेत युवती आई बंगलादेशी युवक के बचाव में

खाका खींच सकती थी. वह बताती है, "मैं ने परिणाम की चिंता किए बगैर यह जानकारी पुलिस जासूसों को दी. मैं जानती थी कि अगर मैं ने इस की रिपोर्ट पुलिस में न की तो मेरा अंतर्मन मुझे धिक्कारता रहेगा."

पुलिस ने कैली से प्रमाण जुटाने में एक सप्ताह का समय लिया, जिस के आधार पर फुल्लर को 6 महीने के लिए जेल हो गई. अदालत में कैली को निक्की



हिंसा के शिकार मुख्तार अहमद के साथ कैली टर्नर : इनसानियत अभी जिंदा है.



कैली टर्नर : दोस्तों की बेरुखी और धमकियां भी डिगा नहीं पाईं.

फुल्लर का सामना न करना पड़ा, क्योंकि निक्की ने अपनी गलती कबूल कर ली थी. लेकिन कोर्ट केस से पहले कैली को धमकी भरे फोन आने शुरू हो गए थे, उसे जान से मारने की धमकियां भी दी गईं.

इस बीच उसे एक अफ्रीकी मूल के लड़के ने बहुत मारा. उस ने कैली को गाली देते हुए कहा कि 'क्यों तुम ने एक बंगलादेशी की सहायता की?'

पश्चिमी देशों में रंगभेद पर आधारित जातीय हिंसा कोई नई बात नहीं है लेकिन 4 वर्ष पूर्व लंदन में ऐसी घटना घटी जिस ने एक श्वेत युवती को इस के खिलाफ आवाज उठाने को विवश कर दिया.

उस ने कैली के सिर के पिछले हिस्से में इतनी जोर से मुक्का मारा कि वह दूर जा गिरी. कुछ समय के लिए वह होश ही खो बैठी और उस के शरीर पर बुरी तरह से खरोंचें आईं. तब दूसरे छात्रों ने उस अफ्रीकी छात्र को कैली से किसी तरह खींच कर अलग किया. तब से कैली अपनी मां के फ्लैट में रह रही है, जहां 3 कुत्ते उस की सुरक्षा का भार संभाले हुए हैं. वह स्कूल जाने से डरने लगी थी. यहां तक कि उसे घर से जाते वक्त भी डर लगता था.

स्कूल में 7 महीने तक उस की जम कर खिंचाई की गई. कैली पर पेट्रोल छिड़क कर जला कर मार देने की धमकी भी दी गई. उसे 'पाकिस्तानियों (बंगलादेशियों) को पनाह देने वाली', 'कुतिया', 'कुलटा' आदि गंदे नामों से पुकारा गया. वह कहती है, "मैं सोचती थी कि यह बुरा वक्त किसी तरह से बीत जाए, पर मैं स्कूल भी नहीं बदलना चाहती थी. मैं नहीं समझ पाई कि आखि

मेरी गलती क्या है?"

निक्की फुल्लर के दोस्तों ने भी उस का पीछा किया और तरहतरह की धमकियां दीं.

इस के बावजूद क्षितिज पर जीने की हलकी सी आशा की किरण अवश्य सामने थी. 7 महीने पहले वह एक कंप्यूटर आपरेटर से मिली और उसे उस से प्रेम हो गया. क्रिसमस पर दोनों की सगाई हो गई. उस ने बुरे समय में भी कैली का साथ नहीं छोड़ा.

कैली की 40 वर्षीय मां को अपनी बेटी की हिम्मत और व्यवहार पर नाज है. वह कहती हैं, "मैं ने अपने बच्चों को यही शिक्षा दी है कि वे जाति भेद के चक्कर में न पड़ें और किसी की चमड़ी के रंग को देख कर उस के बारे में कोई निर्णय न लें."

निश्चित रूप से मुख्तार की शक्ल हमेशा के लिए बिगड़ गई है. वह 2 दिन तक बेहोश रहा. 6 चोटों पर लगभग 100 टांके लगे. वह कहता है, "इस दुनिया में बाहर से सुंदर नजर आना भी बेहद जरूरी है, फिर मेरे पास न तो कोई नौकरी है और न ही कोई महिला मित्र."

इस हमले के बाद से मुख्तार बहुत सतर्क हो गया है. वह बताता है, "मैं जहां भी जाता हूं, मुझे भगदड़ और कदमों की आहट सुनाई देती है. इसलिए अब मैं मुश्किल से ही कहीं बाहर आताजाता हूं." वह कैली की बहादुरी से प्रभावित है और कहता है कि दुनिया में इनसानियत अभी भी जिंदा है. वह समझता है कि निक्की फुल्लर को 6 महीने से अधिक समय की सजा मिलनी चाहिए थी, क्योंकि उस ने उस का (मुख्तार) सर्वनाश कर दिया है. इस के बावजूद वह कहता है, "मैं गोरे लोगों से नफरत नहीं करता." ●



की देखभाल संबंधी अधिक जानकारी के लिए अपनी उम्र, पता और त्वचा की किस्म देते हुए इस पते पर लिखिए : लॅक्मे, पी.ओ बॉक्स 838 (SR3), जी.पी.ओ., मुम्बई 400 001
O&M 3800 HN

पाठकों की समस्याएं



मैं एक 35 वर्षीय विवाहिता हूं. 2 वर्ष पूर्व एक 10 वर्षीय बच्ची के बाप (जो विधुर थे) से मेरा विवाह हुआ था. बाद में पता चला कि वह अपनी ही एक सहकर्मिणी से अवैध संबंध बनाए हुए हैं, जो कि दिल की मरीज हैं, इसीलिए विवाह नहीं करना चाहती. पति से इस बारे में बात की तो उन्होंने गुस्से में तलाक का केस भी कर दिया. दिल चाहता है कि आत्महत्या ही कर लूं. बहुत परेशान हूं, क्या करूं?

आप के पति एक चालाक इंसान हैं. वह अपनी बच्ची की देखभाल के लिए आप को ले तो आए, लेकिन आप को उस से जुड़ने नहीं देते. उन्हें भय है कि ऐसा होने पर वह भी आप के साथ मिल कर उन के कुकर्मों के खिलाफ आवाज उठाएगी. अब जब उन्होंने तलाक का केस दायर कर ही दिया है तो आप भी उन से दो टूक बात कर के समझा दें कि आप तो उन के जीवन से चली ही जाएंगी और उधर उनकी तथाकथित प्रेमिका भी उन से विवाह नहीं कर पाएगी. अंत में उन की ही बेटी अकेली रह जाएगी. हो सकता है, इस से उनकी चेतना जाग जाए और आप की अहमियत समझने लगें. यदि ऐसा नहीं हो पाता हो तो उन से अलग हो जाने में ही आप की भलाई है.

मैं 12वीं कक्षा का छात्र हूं और बालिग होने वाला हूं. मैं एक लड़की से प्रेम करता हूं, जिस की मंगनी बचपन में हो गई थी. पर वह अपने मंगेतर को पसंद नहीं करती. लेकिन उस के घर वाले उस की शादी वहीं करना चाहते हैं. लड़की अभी 18 वर्ष की नहीं हुई. चूंकि मैं ब्राह्मण हूं और वह निम्न जाति की है, इसलिए मेरे घर वाले भी नहीं मानेंगे. बताइए मैं क्या करूं? वैसे यह भी बता दूं कि 12वीं पास करने के बाद मैं नौ सेना में चला जाऊंगा.

आप स्वयं सोचिए, अभी आप महज 17-18 वर्ष के हैं और प्रेम ने आप को इतना दीवाना बना दिया कि विवाह की सोचने लगे. हर दोस्ती विवाह के अंजाम तक पहुंचे यह जरूरी तो नहीं. विवाह के लिए लड़की की आयु 18 वर्ष और लड़के की आयु 21 वर्ष होनी चाहिए. क्या वह लड़की 3 बरस तक आप का इंतजार कर पाएगी? अगर आप दोनों में इतना धैर्य है कि इतने वर्षों तक एकदूसरे के लिए त्याग कर सकें तो फिर शादी हो सकती है. हर बात को ध्यान में रख कर ही फैसला करें.

मैं एक अविवाहित कालिज छात्रा हूं और बी.एड. कर रही हूं. मेरी एक सहेली का प्रेमी कविता आदि लिखा करता था और मैं भी बीच में हंस लिया करती थी. एक बार टीचिंग प्रशिक्षण के दौरान हमें बाहर जाना पड़ा. तब मैं उस लड़के से और भी खुल गई. फिर वही हुआ, जिस का डर था. वह लड़का मुझ से प्रेम का इजहार कर बैठा, जिसे सुन कर मुझे बहुत बुरा लगा.

पर जब उस लड़के को समझाया कि वह मेरी सहेली का प्रेमी है तो उस ने माफी मांगी और बात वहीं खत्म हो गई. पर अचानक मैं ने जब एक अन्य कालिज में प्रवेश लिया तो उस लड़के ने भी वहीं प्रवेश ले लिया. उस के विषय भी वही हैं, जो मेरे हैं. आप से राय चाहती हूं कि उस लड़के से बिलकुल भी बात न करूं या दोस्ती तक सीमित संबंध बनाए रखूं?

दरअसल कई बार होता यह है कि थोड़ा खुला सा व्यवहार दूसरे को गलतफहमी में डाल देता है. सर्वप्रथम आप को अपने खुले व्यवहार पर अंकुश लगाना होगा, ताकि दूसरे इस का गलत अर्थ न निकालें. अब आप को उस लड़के से कुछ दूरी बनाए रखनी होगी. क्योंकि आप के थोड़े भी खुलेपन को वह फिर मूक निमंत्रण समझ लेगा.

–कंचन

पाठकों की व्यक्तिगत, मनोवैज्ञानिक, पारिवारिक, कानूनी आदि समस्याओं के उत्तर इस स्तंभ में दिए जाते हैं. स्वास्थ्य संबंधी उत्तर देना संभव नहीं है. पत्र द्वारा अलग से उत्तर नहीं दिए जा सकते. अपनी समस्याएं इस पते पर भेजें : कंचन, सरिता, झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-110055.

वैवाहिक विवाद पर सख्त कदम उठाने से पहले सोचें



लेख ● बिहारी लाल गुप्ता

(न्यायाधीश, पारिवारिक न्यायालय, अजमेर)

पतिपत्नी के मध्य परिवार को चलाने के लिए प्रेम व विश्वास अत्यंत आवश्यक है. पतिपत्नी परिवार रूपी रथ के 2 पहिए होते हैं तथा परिवार के बाकी सदस्य सवारियों के समान होते हैं. अगर दोनों पहियों में सामंजस्य न हो तथा साथसाथ न चलें तो परिवार रूपी रथ लुढ़क जाएगा तथा उस के सवार परिवार के सदस्यों का भविष्य बरबाद हो जाएगा.

परिवार में प्रेम व विश्वास की कमी ही कभीकभी उग्र रूप धारण कर लेती है और परिवार विघटन की स्थिति में पहुंच जाता है. कभीकभी छोटीछोटी बातों पर ही विवाद होते हैं और यही विवाद पतिपत्नी को पुलिस तथा अदालत तक ले जाते हैं. कभीकभी छोटीमोटी गलतफहमी की वजह से इस प्रकार के विवाद होते हैं तो कभी

पतिपत्नी के बीच प्रेम व विश्वास की कमी कभीकभी गंभीर रूप ले लेती है...यहां तक कि मामला पुलिस व अदालत तक पहुंच जाता है. लेकिन इस तरह वैवाहिक विवाद पर सख्त कदम उठा कर घर तबाह करने में कहां की समझदारी है?

सिर्फ अहंकार व नासमझी के कारण. दोनों पक्ष एकदूसरे पर तरहतरह के आरोप लगा कर अपमानित व नीचा दिखाने का प्रयास करते हैं तथा इन्हीं आरोपों की परिणति मुकदमेबाजी के रूप में सामने आती है.

महिलाओं को कानूनी रूप से काफी सुरक्षा प्रदान की गई है. पति द्वारा प्रताड़ित किए जाने पर वह इस सुरक्षा का प्रयोग कर सकती है. परंतु ज्यादातर मामलों में इस सुरक्षा का दुरुपयोग ही होता है. महिला द्वारा थाने में बढ़ाचढ़ा कर लिखाई गई रिपोर्ट उस के गले की हड्डी बन जाती है तथा जो सुरक्षा उसे कानून प्रदान करना चाहती है उलटे उसी पर वार कर देती है. ऐसे कई मामले देखने में आए हैं कि बिना किसी उचित कारण के पुलिस थाने में या अदालत में की गई काररवाई ने परिवार को विनाश के कगार पर पहुंचा दिया.

मेरे समक्ष एक ऐसा ही मामला आया. पतिपत्नी दोनों नवविवाहित थे. दीवाली के दिन पत्नी बाहर घूमने जाना चाहती थी. पति दुकानदार था, वह पहले पूजा करना चाहता था. बस इसी बात को ले कर पत्नी ने पूजा की थाली उठा कर फेंक दी. मामला गंभीर रूप धारण करता चला गया. अंततः दोनों पक्ष न्यायालय में आ गए.

पति ने पत्नी पर क्रूरता के आरोप लगाए. पत्नी ने जवाब में बताया कि पति उसे जला कर मार देना चाहता है और उस के अन्य महिलाओं से नाजायज संबंध हैं.

पत्नी जब साक्ष्य में आई तो उस ने अपने द्वारा पति पर लगाए गए आरोपों से इनकार किया और बताया कि उस के वकील ने बिना किसी कारण के लिखा दिए हैं. बात जरा सी थी और बढ़तेबढ़ते कहां तक गई. साथ रहने की जो संभावना थी, पत्नी द्वारा अपने उत्तर दावा में लगाए आरोपों से धूमिल हो गई.

पति अब इस बात से डर रहा है जब कुछ नहीं कहा, तब इतने आरोप ल रही है और यदि कुछ कह दिया तो फांसी होगी. अतः आरोपों में सत्यता होनी चाहि

एक और नवविवाहित दंपती मामला आया. दोनों बड़े आनंद से रह थे. उन के मध्य शादी के बाद जो पत्राच हुआ था, उस से प्रतीत होता था कि संसार में इस से सुखी जोड़ा और कोई न हो सकता. एक दिन मजाक में पति ने प के मायके वालों के लिए कोई बात कह जो उसे अच्छी न लगी और वह नाराज मायके चली गई.

पति ने मनाने का प्रयास भी कि परंतु इस अवधि में वह किसी कान सलाहकार के चक्कर में आ गई और शुरू हो गई मुकदमेबाजी. पत्नी ने पहले भरणपोषण के लिए मुकदमा किया और में पति पर तरहतरह के आरोप लगाए.

भरणपोषण मिलना शुरू हो गया, फिर दहेज प्रताड़ना का मुकदमा लगा दि पत्नी दहेज का सारा सामान इस मुकदमे जरिए ले गई. पति तथा साससंसुर गिरफ हुए और बड़ी मुश्किल से जमानत हुई.

अब पति तलाक का मुकदमा ले आ गया. पत्नी को जैसे ही तलाक का नो मिला उस के पैरों के नीचे से जमीन खिस गई. पत्नी तथा उस का पिता, पति के व के पिता के सामने रोने व गिड़गिड़ाने तथा पत्नी को साथ रखने के लिए कह

परंतु पति पत्नी को किसी भी शर्त पर साथ रखने को तैयार न था. पत्नी ने छोटी सी बात का बतंगड़ बनाया. पति की गलती थी तो उसे समझाया जा सकता था. परंतु पति व उस के परिवारजनों की इज्जत खराब कर के अब यह कहे कि वह साथ रहना चाहती है तो कितना झूठ लगता है. अपने अधिकारों का प्रयोग अवश्य करना चाहिए पर परिणामों पर भी विचार करना जरूरी है.

पतिपत्नी के विवादों की कड़ी में ही ऐसा एक और उदाहरण है. पतिपत्नी प्रतिष्ठित जैन परिवार से हैं. शादी में दोनों पक्षों ने



पतिपत्नी को चाहिए कि झगड़ा इतना अधिक न बढ़ाएं कि लोगों की नजर में तमाशा बन जाए.

क़रीबकरीब आधा करोड़ रुपया खर्चा करना बताया. झगड़े की शुरुआत हुई बरात की ख़ातिरदारी से. वर पक्ष की यह शिकायत रही कि उन की बरात का उन की प्रतिष्ठा के अनुरूप सम्मान नहीं किया गया.

कुछ दिन बाद लड़के वालों के यहां लड़की वाले मिलने गए तो उन के साथ भी ऐसा ही व्यवहार किया गया. नाराजगी बढ़ती चली गई. लड़की अपने पिता के साथ मायके आ गई तथा वापस नहीं गई.

पति ने समझाने व साथ रखने का प्रयास किया. पर समस्त प्रयास विफल होने पर पति ने साथ रखने का मुकदमा किया. जैसे ही अदालत का नोटिस आया, पत्नी ने पति तथा उस के परिवारजनों पर दहेज का मुकदमा ठोंक दिया. उस ने मायके आने के 6 माह बाद दहेज का मुकदमा दर्ज कराया.

पुलिस सारा सामान जप्त कर के ले गई. पति के पिता को पुलिस ने गिरफ्तार किया. वह 15 दिन हिरासत में रहा. सिर्फ मूंछों की व प्रतिष्ठा की लड़ाई के पीछे परिवार बरबाद हो गया.

कुल मिला कर यह कोई ऐसा विवाद नहीं था, जिस के कारण पुलिस व अदालत में जाना पड़े. ऐसे विवादों को आपस में मिलबैठ कर तय किया जा सकता है. ऐसे विवादों में बिचौलियों को बड़ा आनंद आता है. वे दोनों पक्षों को लूटते हैं.

पत्नी यदि अपने अधिकारों का प्रयोग सुरक्षा या ढाल के रूप में न कर के तलवार के रूप में करती है तो उसी तलवार का वार उसे भी घायल कर सकता है. ठीक इसी प्रकार यदि पुरुष अपनी मर्दानगी के अहं में महिला पर अत्याचार करता है तो कानून की लाठी का वार इतनी जोर से पड़ता है कि समाज में उस का हालचाल पूछने वाला भी कोई नजर नहीं आता.

अपने अधिकारों का प्रयोग करें, परंतु उस के परिणामों पर पहले विचार करें. कहीं ऐसा न हो कि इस के लिए पूरी जिंदगी पछताना पड़े. अधिकारों का प्रयोग करने से पहले अपने अंदर क्षमा तथा सहनशीलता इस हद तक पैदा करें कि विवाद की शुरुआत ही न हो. एक बार वैवाहिक जीवन में गांठ आने के बाद कितने भी प्रयास करें, उस की टीस हमेशा बनी ही रहती है. ●

बात ऐसे बनी

मेरी चाची को सब्जी में कुछ ज्यादा ही नमक डालने की आदत थी. चाचाजी के लाख मना करने पर भी कहतीं, कोई खास तो नहीं है.

परेशान चाचाजी अब प्रत्येक दिन खाना खा लेते एवं चुपके से बची सब्जी में और नमक डाल देते. जब चाची को लगने लगा कि सही में नमक ज्यादा पड़ जाता है तो एक दिन चाचाजी से बोलीं, "आज कुछ ज्यादा नमक पड़ गया था." चाचाजी बोले, "कोई खास तो नहीं है."

इस बारे में कई दिनों बाद जब चाची को वास्तविकता का पता चला तब तक वह नमक



की सही मात्रा पर आ चुकी थीं.

–डा. राजेंद्र कुमार

*

मैं मुरादाबाद से पहली बार अकेली बस से बदायूं यात्रा कर रही थी. मेरा 7 माह का पुत्र मेरी गोद में था. मेरे पति मुझे बस पर कंडक्टर के पीछे वाली सीट पर खिड़की के पास बैठा कर चले गए. उसी समय एक मुस्लिम वृद्धा बस में चढ़ीं और उन्होंने मुझ से खिड़की के पास बैठने की इच्छा प्रकट की. मैं ने खिसक कर उन्हें स्थान दे दिया.

कुछ समय पश्चात अन्य यात्री चढ़े और बस ठसाठस भर गई. मुझे विवशता से एक दाढ़ी वाले युवक के पास बैठना पड़ा. बस चलने की देर थी कि वह युवक सोने लगा और उस का सिर बारबार मेरे कंधे पर टिक जाता. मैं उसे ठीक से बैठने को कहती, परंतु उस के ऊपर इस का कोई प्रभाव न पड़ता.

अचानक मुझे एक उपाय सूझा. मैं ने अपने 7 माह के बेटे को गोद में इस प्रकार उठाया कि उस का मुख युवक की ओर हो गया. बच्चा बड़े ध्यान से उस की लंबी दाढ़ी को देखने लगा. जैसे ही वह युवक सोते हुए मेरे कंधे पर लुढ़का, मेरे पुत्र ने अपने छोटेछोटे हाथों से उस की दाढ़ी पकड़ ली. वह युवक चौंक कर उठ बैठा. बच्चे ने बड़ी कठिनाई से दाढ़ी के बाल छोड़े. वह युवक चुपचाप उठ कर पीछे की सीट पर चला गया और मैं ने मन ही मन मुसकराते हुए चैन की सांस ली.

–नीरजा द्विवेदी

*

गरमी का मौसम था और शहर में कर्फ्यू लगा था. एक युवक अपने घर के बाहर चारपाई बिछा कर सोया हुआ था.

दो पुलिसकर्मियों ने उसे उठा कर थाने चलने को कहा. युवक थाने चलने के लिए तैयार हो गया और अपनी चारपाई घर के अंदर रखने चला गया.

जैसे ही वह व्यक्ति घर के अंदर घुसा, उस ने भीतर से दरवाजा बंद कर लिया. पुलिस वालों द्वारा खटखटाने पर अंदर से एक ही बात दोहराता कि 'बाहर तो कर्फ्यू लगा बाहर कैसे आ सकता हूं.' कर पुलिसकर्मी उसे छोड़ चले गए.

–रामसरन दास

*

हम 4 दोस्त शाम को ट्यू पढ़ने जाते थे. सु साइकिल पर आता था पर ताला लगाए ही उसे बाहर जाता था. हमारे बहुत समझ पर भी वह साइकिल को ताला नहीं लगाता था.

सुनील की इस आदत छुड़ाने के लिए एक दिन हम उस की साइकिल झाड़ियों छिपा दी.



जब वह बाहर आया अपनी साइकिल को न देख दुखी हो गया व हमारी बात मानने पर पछताने लगा. थोड़ी पश्चात हम ने साइकिल उसे लौ दी.

उस के बाद वह हमे अपनी साइकिल में ताला ल लगा.

–अश्विनी बंसल

इस स्तंभ के लिए आप अपने, मि व संबंधियों के अनुभव भेज सक हैं. प्रत्येक प्रकाशित संस्मरण 50 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में जाएंगी. अपने संस्मरण इस पते भेजें: सरिता संपादकीय विभा ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झां मार्ग, नई दिल्ली-110055.

कहानी ● के. गुप्ता

ठंडा होता ज्वालामुखी

'उफ, मैं क्या करूं? इस बच्चे ने तो मेरी नाक में दम कर दिया है, किसी तरह चैन नहीं लेने देता. आज इस के डैडी को आने दो, इस की शिकायत अवश्य करूंगी. 5 वर्ष का है, लेकिन अकड़ 15 वर्ष के बच्चे की तरह दिखाता है. पता नहीं स्वयं को क्या समझता है.' मैं यही सब सोचतीसोचती कब रसोईघर में पहुंच गई और कब चूल्हे पर चाय का पानी रखा, मुझे स्वयं भी ज्ञात नहीं.

सर्वेश के रोने की आवाज अभी भी जोरजोर से आ रही थी और साथ ही वह चिल्लाचिल्ला कर कह रहा था, "मम्मी, मैं तुम से नफरत करता हूं."

उसे अनसुना करने का असफल प्रयास करते हुए चाय बनाई व उसे ले कर बरामदे में चली गई. सुबह से ही सब गड़बड़ हो रहा था. पोस्टआफिस गई तो काउंटर पर जा कर पता चला कि पर्स तो घर पर ही भूल आई हूं. परिणामस्वरूप न तो खरीदारी कर पाई और न ही टिकटें खरीद सकी.

सर्वेश उस समय विद्यालय में था, उसे



डेढ़ घंटे बाद ले कर आना था. अतः सोचा था कि जरूरी खरीदारी कर के उसे ले कर घर आ जाऊंगी. अब डेढ़ घंटा बिताने की समस्या थी.

तभी पोस्टआफिस के सामने ही पुस्तकालय दिखाई दिया तो मैं उस के भीतर चली गई. वैसे मेरे पास पुस्तकालय का कार्ड नहीं था, अतः कोई पुस्तक उधार ले भी न सकती थी. मैं यों ही पुस्तकें उलटतीपलटती रही. धीरेधीरे मैं हिंदी की पुस्तकों की अलमारी के पास जा पहुंची.

मुझे याद आया, जब मैं भारत में थी तो रोचक व रोमांचक पुस्तकें पढ़ने का बहुत शौक था. पिताजी साहित्यिक उपन्यास पढ़ने की प्रेरणा भी देते रहते थे व कभीकभी तो स्वयं ही पुस्तकें ला कर देते थे. मुझे याद आया कि मुंशी प्रेमचंद के सभी उपन्यास मैं ने पढ़े थे.

जब मैं ने बी. एससी. कर ली तो मेरी शादी कनाडा में बसे पल्लवेश के साथ हो गई और शादी के 5 माह बाद ही कनाडा आ गई. आने के 1 वर्ष के अंदर ही सर्वेश हो गया और मैं मात्र 20 वर्ष की अवस्था में मां बन गई.

मैं अपने घर में सब से छोटी थी, अतः पता भी नहीं था कि छोटे बच्चे की देखभाल कैसे की जाती है. मैं ने तो अपनी मां को सदा चीखते ही सुना था. मैं, सुनयना व रीतेश मां को तंग भी तो बहुत करते थे. मां भी हमें 'ढीठ', 'आलसी', 'नमकहराम' और भी न जाने क्याक्या कहती थीं, परंतु पिताजी सदा ही सभ्य भाषा का प्रयोग करते थे.

सर्वेश की आए दिन की शिकायतों और गुस्से से मांबाप तंग आ चुके थे. लेकिन मांबाप के मारनेडांटने का भी उस पर कोई असर न पड़ता. बल्कि हर गलती का उसे ही दोषी मानने पर सर्वेश के भीतर का ज्वालामुखी और भी उबलने लगता...

जब मां हमारी शिकायत पिता... करतीं तो उन्हें विश्वास ही नहीं होता... लेकिन फिर भी वह हम सब को सुधर... की चेतावनी देते थे. मां तब खुश हो... हमें माफ कर देती थीं.

पुस्तकें देखतेदेखते अचानक घड़ी... दृष्टि पड़ी तो पता चला कि सर्वेश को... का समय हो गया है. शीघ्र ही मैं उस... विद्यालय जा पहुंची. वहां उस की शिक्षि... ने बताया कि उस ने अपनी कक्षा के 2 ब... को खेल... मैदान में... दिया. उन... बच्चों ने स... की इच्छा... विरुद्ध उस... फुटबाल... लात मार दी... तब उस... फुटबाल... किक मारने... बजाय उन... लड़कों को... किक दे मारी...

मैं ने... की शिक्षिका... माफी मांगी... सर्वेश को... जाने वाली दृष्टि से घूरा. फिर मैं उसे... में लगभग खींचते हुए ही घर लाई थी. ... में उस ने आइसक्रीम लेने की बात की, ... ने मेरे क्रोध को और भी भड़का दिया. ... पहुंचते ही मैं ने सीधे सर्वेश को स्नानगृ... बंद कर दिया और तभी से वह रोरो कर... घर को सिर पर उठाए हुए था. मैं निर्वि... भाव से चाय के घूंट भरती रही, दरअ... मैं उस की रोजरोज की शिकायतों से... आ गई थी.

कुछ समय बाद सर्वेश का रोना बंद... गया. तभी पल्लवेश कार्यालय से आ... उन्होंने आते ही पूछा, "सर्वेश कहां है?...

"बेटे, यदि तुम्हें कोई तंग करे तो चुप मत रहना, मुझे और टीचर को बताना," मां की बात सुन कर सर्वेश के चेहरे की तपिश गायब होने लगी.



मैं ने पूरी बात बता दी, तब वह बोले, "हां, मैं ने भी देखा है, यह बहुत शैतान व असभ्य हो गया है. इस की पिटाई करनी चाहिए."

पर मैं ने उन्हें याद दिलाया कि बच्चों को बुरी तरह पीटने में यदि उन के शरीर पर दाग पड़ जाएं तो इस देश में यह गैरकानूनी काम हो जाता है.

पल्लवेश ने कहा, "हां, तभी तो मैं विवश हूं, वरना मारमार कर इसे कब का सुधार चुका होता. मुझे भी बचपन में मां व पिताजी बहुत मारते थे...मुझे अभी तक याद है."

पल्लवेश को स्नानघर में जाना था, अतः ऊपर चले गए. फिर स्नानघर का दरवाजा खोल कर फर्श पर सोए सर्वेश को बाहर निकाल कर बिस्तर पर लिटा दिया.

जब सर्वेश सो कर उठा तो मुझे नीचे ही पता चल गया. वह कुछ खटपट कर रहा था, पर ऐसा लगता था कि डैडी के डर से नीचे नहीं आना चाहता.

मैं रसोई में जा कर रात के खाने की तैयारी में लग गई. पल्लवेश दूरदर्शन पर समाचार देख रहे थे. थोड़ी देर बाद उन के बिगड़ने की आवाज सुनाई दी. वह जोरजोर से सर्वेश को डांट रहे थे.

जब आंच धीमी कर के मैं वहां पहुंची तो देखा कि वह सर्वेश पर बिगड़ रहे हैं, क्योंकि वह स्कूल के कपड़ों में ही कालीन पर खेलने लगा था.

पल्लवेश ने कहा, "मैं ने इस से कपड़े बदलने को कहा, पर इस ने परवाह ही नहीं की," फिर वह उसे डांटते हुए बोले, "शैतान लड़के, जल्दी से कपड़े बदलो, वरना खूब पीटूंगा."

सर्वेश ने गरदन ऊपर कर के चुनौती के अंदाज में डैडी को यों देखा, मानो कह रहा हो, 'और आप कर भी क्या सकते हैं,' उस ने चुपचाप फिर खेलना आरंभ कर

दिया.

मैं ने चुप रहना ही श्रेयस्कर समझा. पल्लवेश का धैर्य शायद जवाब दे चुका था. वह उठे और उस का हाथ पकड़ कर उसे ऊपर भेजने के लिए धक्का दे कर भोजन कक्ष तक पहुंचा दिया. पर सर्वेश की तो मानो शामत आई हुई थी, वह ऊपर जाने के बजाय वहीं खड़ा रहा. इस बार यह और जोर से चिल्लाए, "तू ऊपर जाता है या फिर स्नानघर में बंद करूं?"

यह धमकी शायद अपना प्रभाव दिखा गई, क्योंकि रात के समय वह बाथरूम में अकेले बंद नहीं होना चाहता था. अतः जोरजोर से पांव पटकता हुआ अपने कमरे की ओर चला गया.

पल्लवेश का मूड खराब हो चुका था. वह मेरे पास रसोई में आए और बोले, "मेरा मन करता है कि इस सूअर के बच्चे को हंटर से पीटूं."

मैं ने उन के मुंह पर उंगली रखते हुए कहा, "क्यों खुद को गाली दे रहे हो...अब चुप भी हो जाओ, वैसे भी वह भूखा है. दोपहर से उस ने कुछ नहीं खाया," शायद यह मैं नहीं मेरी ममता बोल रही थी. आखिर मैं उस की मां थी, सर्वेश मेरे शरीर का एक हिस्सा था. वैसे भी मैं स्वयं उसे डांटू या मारूं, पर यदि पल्लवेश उसे कुछ कहते या थप्पड़ भी मार देते तो मुझे बहुत बुरा लगता था और सर्वेश की त्रुटि होते हुए भी मैं उसी के पक्ष में हो जाती थी.

खैर, जब सर्वेश नीचे आया तो वह सोने के कपड़े पहने हुआ था. उस ने शायद मुंह भी धोया था, पर रोने के कारण आंखें सूजीसूजी सी लग रही थीं. संभवतः वह ऊपर फिर रोया था.

मैं ने पति और बेटे को खाने के लिए बुलाया और स्वयं भी खाना ले कर बैठ गई. पल्लवेश अपने कार्यालय के बारे में बातें करने लगे और मैं अपनी दिनचर्या के विषय में बताने लगी.

अचानक पल्लवेश ने सर्वेश की ओर देखा और व्यंग्यात्मक शैली में कहा, [illegible] बरखुरदार, आज कितनों के हाथपैर तो[illegible]

सर्वेश ने हिकारत से डैडी को [illegible] और चुपचाप खाना खाता रहा. शायद [illegible] भी इस तरह की बातें रोजाना ही सुन[illegible] आदत सी पड़ गई थी.

तभी पल्लवेश ने पुनः प्रश्न [illegible] "बड़ा हो कर तू गुंडा बनेगा? जब [illegible] तब मारपीट... कहो तो मैं अभी से अ[illegible] वाली बंदूक खरीद दूं?"

इतना सुनते ही सर्वेश खाना छोड़[illegible] उठा और चीखते हुए बोला, "हांहां, [illegible] दीजिए...सब से पहले मैं आप दोनों को [illegible] शूट करूंगा...और फिर अपनी उस टीचर [illegible] भी शूट करूंगा, जो मम्मी से हमेशा मेर[illegible] शिकायतें करती हैं...जबकि वे दोनों ल[illegible] खेल के मैदान में मुझे अकसर तंग करते [illegible] जब मैं शिकायत करता हूं तो बस उन[illegible] 'सारी' कहलवा देती है. आज जब मैं ने [illegible] पीट दिया तो मम्मी को बता दिया," क[illegible] हुआ सर्वेश बिना पूरा खाना खाए अपने क[illegible] में चला गया.

मैं और पल्लवेश स्तब्ध से बैठे रह [illegible] मानो बिजली का करेंट लगा हो. हम [illegible] को इस बात का अनुभव हुआ कि हम श[illegible] अपने 5 वर्षीय बेटे के साथ तालमेल [illegible] बैठा पा रहे हैं.

अवश्य ही कहीं न कहीं कुछ गलत [illegible] रहा है. सर्वेश हमें अपना पुत्र न लग[illegible] एक दहकता हुआ ज्वालामुखी सा प्रतीत [illegible] रहा था. यदि इसे अभी ठंडा नहीं किया [illegible] तो वह न केवल अपने, अपितु मातापित[illegible] जीवन पर भी खौलता हुआ लावा [illegible] सकता है.

इस के बाद हम दोनों ऊपर गए [illegible] प्यार से उसे मनाया व उसे गोद में ले[illegible] नीचे ले आए. उसे प्यार से खाना खि[illegible] व बाद में स्वयं भी खाया. फिर मैं [illegible] पुस्तक ले कर और सर्वेश को ले कर [illegible] के कमरे में चली गई. मैं ने प्यार से [illegible] का माथा चूम लिया.

जब मैं उसे कहानी सुनाने के लिए पुस्तक खोलने लगी तो उस ने अपने नन्हे हाथों से उसे बंद कर दिया और अपने बारे में विस्तृत रूप से बताने लगा.

सारी बातें सुनने के बाद मुझे सर्वेश सर्वथा निर्दोष ही प्रतीत हुआ. मैं ने कहा, "बेटे, मैं कल ही तुम्हारी टीचर को ये सारी बातें बताऊंगी. वैसे तुम अगले माह दूसरे विद्यालय में जा रहे हो. यदि तुम्हें कोई तंग करे तो चुप मत रहना, मुझे और अपनी टीचर को पूरी बात बताना. मैं यह भी देखूंगी कि तुम्हारी टीचर ने उन की मांओं को भी बताया है या नहीं."

सर्वेश के चेहरे पर से ज्वालामुखी की तपिश गायब होने लगी थी और ठंडे पानी की झील सी असीम शांति सी छाने लगी थी.

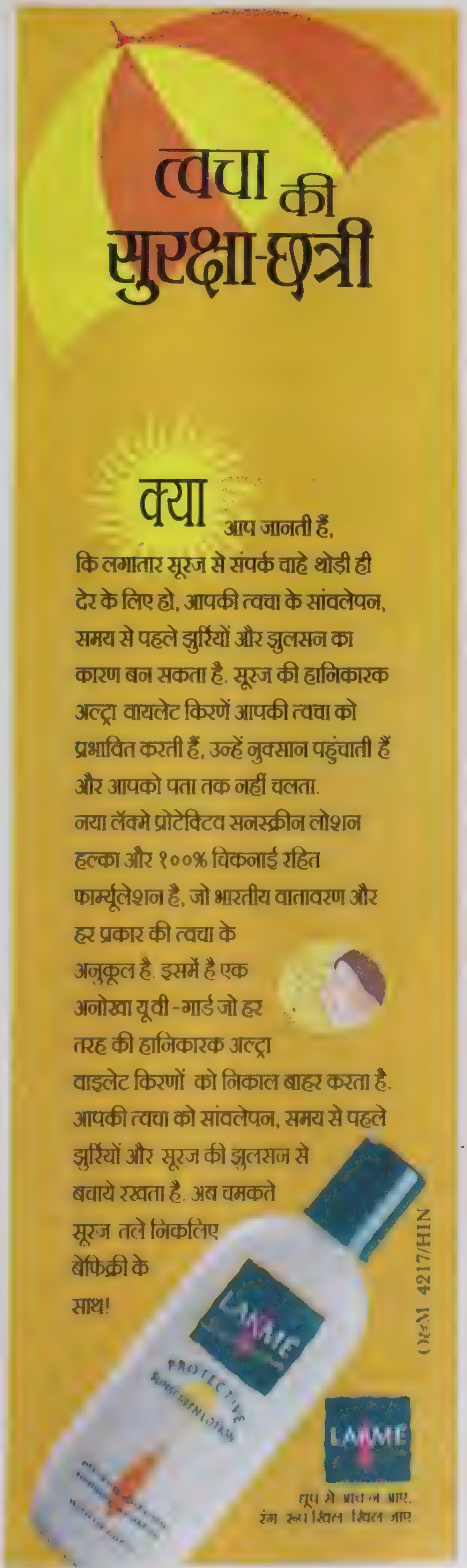
फिर वह मुझ से लिपट कर बोला, "मम्मी, मुझे माफ कर दो."

मैं ने उसे प्यार से दबोच लिया व उस के आंसुओं को अपने आंचल से पोंछ दिया. फिर वह शीघ्र ही सो गया.

मैं ने बगल में पड़ी पुस्तक एक ओर सरका दी. मैं सोच रही थी कि मैं अपने बेटे को ज्वालामुखी न बना कर शीतल जल की एक सुंदर झील बनाऊंगी. कल ही मैं फिर पुस्तकालय जाऊंगी व बाल मनोविज्ञान पर कुछ पुस्तकें अपने व पल्लवेश के लिए ले कर आऊंगी.

मैं सोचने लगी, गलती सर्वेश की नहीं बल्कि हम दोनों की है. हम दोनों ही आदर्श मातापिता नहीं बन पाए. पर आदर्श बच्चे की कामना जरूर रखते हैं. सर्वेश ने मुझ से यह भी कहा था, 'यदि आप लोग मुझे बारबार धमकी न दें तो मैं आप लोगों की बात एक बार में ही मान लूंगा.'

उस की बात ने मुझे झंझोड़ कर रख दिया. मैं सोचने पर मजबूर हो गई कि अब उसे नन्हे भाई अथवा बहन की जरूरत है, ताकि उस का अकेलापन दूर हो सके. मुझे प्रतीत हुआ कि इस समस्या का समाधान अब शीघ्र ही हो जाएगा. यही सब सोचतेसोचते मैं गहरी निद्रा के आगोश में समा गई. ●




पुरस्कार
हमारे महिला संगठन ने समाज सेवा में सर्वोत्तम योगदान के लिए पुरस्कार रखा है. मैं उसे जीतकर ही रहूंगी.
यह तो बहुत अच्छी बात है. मेरा पूरा सहयोग तुम्हारे साथ है.
मुझे आप पर गर्व है मैं मंजू के घर जा रही हूं, उसकी देखभाल करने. बेचारी बहुत बीमार है.
बाय!
दूसरे दिन
मैं गीता के साथ जा रही हूं. उसके पति को अस्पताल ले जाना है. तुम लंच कैंटीन में ही कर लेना.
तीसरे दिन
आज सुधा को कहीं जाना है. मुझे उसके बच्चों व बूढ़ी सास की देखभाल करनी चाहिए.


अरे, यह क्या?
कुछ नहीं, अंगूठा चाकू से कट गया और हाथ चाय बनाते समय जल गया था.
चौथे दिन
आज मुझे अनाथ बच्चों के लिए चंदा एकत्र करना है और फिर मुहल्ले की सफाई का प्रबंध करना है.
पन्द्रह दिन बाद
आज तुम कहीं नहीं गईं?
नहीं.
इतना काम और मेहनत की मैं ने, पर संगठन का पुरस्कार और सहानुभूति आप के नाम गई कि बिना **श्रीमानजी** के **त्याग** एवं सहयोग के बिना मैं कर ही क्या सकती थी?



हिल स्टेशन पर तबादला

व्यंग्य ● शक्ति पैन्यूली

भगत राम का तबादला एक सुंदर से हिल स्टेशन पर हुआ तो वह खुश हो गए, वह प्रकृति और शांत वातावरण के प्रेमी थे, अतः सोचने लगे, जीवन में कम से कम 4-5 साल तो इ
भागमभाग, धुएं, घुटन से दूर सुखचै



अतः लौटने के बाद ताजगी जीवन भर ही मन में बसे रहने की उम्मीद थी. दूसरी खुशी यह थी कि उन्हें पदोन्नति दे कर हिल स्टेशन पर भेजा जा रहा था.

साहब ने तबादले का आदेश देते हुए बधाई दे कर कहा था, "अब तो 4 वर्षों तक स्वर्ग का आनंद लूटोगे. हर साल छुट्टियां और रुपए बरबाद करने की जरूरत भी नहीं रह जाएगी. कभी हमारी भी घूमनेफिरने की इच्छा हुई तो कम से कम एक ठिकाना तो वहां पर रहेगा."

"जी हां...आप की जब इच्छा हो, तब चले आइएगा," भगत राम ने आदर के साथ कहा और बाहर आ गए.

बाहर साथी भी उन्हें बधाई देने लगे. एक सहकर्मी ने कहा, "ऐसा सुअवसर तो विरलों को ही मिलता है. लोग तो ऐसी जगहों पर एक घंटा बिताने के लिए भी तरसते रहते हैं...हजारों रुपए खर्च कर डालते हैं...तुम्हें तो यह सुअवसर एक तरह से सरकारी खर्चे पर मिल रहा है, वह भी पूरे 4 सालों के लिए."

"वहां जा कर हम लोगों को भूल मत जाना. जब सीजन अच्छा हो तो पत्र लिख देना. तुम्हारी कृपा से 1-2 दिनों के लिए हिल स्टेशन का आनंद हम भी लूट लेंगे," दूसरे मित्र ने कहा.

"जरूर, जरूर, भला यह भी कोई कहने की बात है," वह सब से यही कहते रहे.

घर लौट कर तबादले की खबर सुनाई तो दोनों बच्चे खुश हो गए.

"बड़ा मजा आएगा. हम ने बर्फ गिरते हुए कभी भी नहीं देखी. आप तो घुमाने केवल गरमियों में ले जाते थे...जाड़ों में तो हम कभी गए ही नहीं," बड़ा बेटा खुश होता बोला.

"जब फिल्मों में बर्फीले पहाड़ दिखाते हैं तो कितना मजा आता है. अब हम वह सब सचमुच में देख सकेंगे," छोटे ने भी ताली बजाई.

मगर पत्नी सुजाता कुछ गंभीर सी हो गई. भगत राम को लगा कि उसे शायद

बीतेंगे.

पहाड़ों की सुंदरता उन्हें इतनी पसंद थी कि हर साल गरमियों में 1-2 सप्ताह की छुट्टी ले कर परिवार सहित घूमने के लिए किसी न किसी हिल स्टेशन पर अवश्य ही जाते थे और फिर वर्ष भर उस की ताजगी मन में बसाए रखते थे.

तबादला 4-5 वर्षों के लिए होता था.

तबादले वाली बात रास नहीं आई है. उन्होंने पूछा, "क्या बात है, गुमसुम क्यों हो गई हो?"

"तबादला ही कराना था तो आसपास के किसी शहर में करा लेते. सुबह जा कर शाम को आराम से घर लौट आते, जैसे दूसरे कई लोग करते हैं. अब पूरा सामान समेट कर दोबारा से वहां पर गृहस्थी जमानी पड़ेगी. पता नहीं, वहां का वातावरण हमें रास आएगा भी या नहीं," सुजाता ने अपनी शंका जताई.

"सब ठीक हो जाएगा...मकान तो सरकारी मिलेगा, इसलिए कोई दिक्कत नहीं होगी, और फिर पहाड़ों में भी लोग रहते हैं. जैसे वे सब रहते हैं, वैसे ही हम भी रह लेंगे."

"उन्नति होने पर तबादला तो होत है. अगर तबादला रुकवाने की को करूंगा तो कई पापड़ बेलने पड़ेंगे. हो म है 10-20 हजार की भेंटपूजा भी करनी जाए और उस पर भी आसपास की सड़ीगली जगह ही मिल पाए. इस स अच्छा है, हिल स्टेशन का ही आनंद उ जाए."

यह सुन कर सुजाता ने फिर कु कहा.

दफ्तर से विदाई ले कर भगत पहले एक चक्कर अकेले ही अपने नियु स्थल का लगा आए और 15 दिनों के उन का पूरा परिवार ही वहां पहुंच गया. ब काफी खुश थे.

शुरूशुरू की छोटीमोटी परेशानी बाद जीवन पटरी पर आ ही गया. अ

हिल स्टेशन पर तबादला होने पर भगत राम फूले न समाए. पहाड़ों की सर्दी का खूब मजा लूट कर मार्च के मनभावन मौसम का अब उन्हें बेचैनी से इंतजार था. पर मौसम के आते ही उन का सारा उत्साह ऐसा ठंडा पड़ा कि...

"लेकिन सुना है, पहाड़ी शहरों में बहुत सारी परेशानियां होती हैं...स्कूल की, अस्पताल की, यातायात की और बाजारों में भी शहरों की तरह हर चीज नहीं मिल पाती," सुजाता बोली.

भगत राम हंस पड़े, "किस युग की बातें कह रही हो...आज के पहाड़ी शहर मैदानी शहरों से किसी भी तरह से कम नहीं हैं. दूरदराज के इलाकों में वह बात हो सकती है, लेकिन मेरा तबादला एक अच्छे शहर में हुआ है. वहां स्कूल, अस्पताल जैसी सारी सुविधाएं हैं. आजकल तो बड़ेबड़े करोड़पति लाखों रुपए खर्च कर के अपनी संतानों को मसूरी और शिमला के स्कूलों में पढ़ाते हैं. कारण, वहां का वातावरण बड़ा ही शांत है. हमें तो यह मौका एक तरह से मुफ्त ही मिल रहा है.

के महीने में ही वहां पर अच्छीखासी ठंड गई थी. अभी से धूप में गर्मी न रही जाड़ों की ठंड कैसी होगी, इसी प्रतीक्ष दिन बीतने लगे थे.

फरवरी तक के दिन रजाई और अं के सहारे ही बीते, फिर भी सब कुछ अ था. सब के गालों पर लाली आ गई बच्चों का बर्फ देखने का शौक भी पूर गया था.

मार्च में मौसम सुहावना हो गया था. 3 4 महीनों के मनभावन मौसम की क से भगत राम का मन असीम उत्साह से गया था. उसी उत्साह में वह एक सुबह द में पहुंचे तो प्रधान कार्यालय का 'अत्यं आवश्यक' मुहर वाला पत्र मेज पर पड़ा था.

उन्होंने पत्र पढ़ा, जिस में पूछा गया था कि 'सीजन कब आरंभ हो रहा है? लौटती डाक से सूचित करें. विभाग के निदेशक महोदय सपरिवार आप के पास घूमने आना चाहते हैं.'

सीजन की घोषणा प्रशासन द्वारा अप्रैल मध्य में की जाती थी, अतः भगत राम ने वही सूचना भिजवा दी, जिस के उत्तर में एक सप्ताह में ही तार आ गया कि निदेशक महोदय 15 तारीख को ही पहुंच रहे हैं. उन के रहने आदि की व्यवस्था हो जानी चाहिए.



निदेशक के आने की बात सुन कर सारे दफ्तर में हड़कंप सा मच गया.

"यही तो मुसीबत है, इस हिल स्टेशन की...सीजन शुरू हुआ नहीं कि अधिकारियों का तांता लग जाता है. अब पूरे 4 महीनों तक इसी तरह से नाक में दम बना रहेगा," एक पुराना चपरासी बोल पड़ा.

भगत राम वहां के प्रभारी थे. सारा प्रबंध करने का उत्तरदायित्व एक प्रकार से उन्हीं का था. मगर पहला अनुभव था, इसलिए समझ नहीं पा रहे थे कि कैसे और क्या किया जाए.

सारे स्टाफ की एक बैठक बुला कर उन्होंने विचारविमर्श किया. जो पुराने थे, उन्होंने अपने अनुभवों के आधार पर राय दे भी डाली.

"सब से पहले तो गेस्ट हाउस बुक करा लीजिए. यहां केवल 2 गेस्ट हाउस हैं. अगर किसी और ने बुक करवा लिए तो होटल की शरण लेनी पड़ेगी. बाद में निदेशक साहब जहांजहां भी घूमना चाहेंगे, आप बारीबारी से हमारी ड्यूटी लगा दीजिएगा. आप को तो सुबह 7 बजे से रात 10 बजे तक उन के साथ रहना ही पड़ेगा," एक कर्मचारी ने कहा तो भगत राम ने तुरंत गेस्ट हाउस की ओर दौड़ लगा दी.

जो गेस्ट हाउस नगर के बीचोबीच था, वहां काम बन नहीं पाया. दूसरा गेस्ट हाउस नगर से बाहर 2 किलोमीटर की दूरी पर जंगल में बना हुआ था. वहां के प्रबंधक ने कहा, "बुक तो हो जाएगा साहब....लेकिन अगर इस बीच कोई मंत्रीवंत्री आ गया तो खाली करना पड़ सकता है. वैसे तो मंत्री लोग यहां जंगल में आ कर रहना पसंद नहीं करते, लेकिन किसी के मूड का क्या भरोसा.

"भतीजा हिल स्टेशन पर रह रहा है तो घूमनेफिरने का इस से अच्छा अवसर कब मिल सकता है," फूफाजी की बात सुन कर भगत राम ने सिर पकड़ लिया.

यहां अभी सिर्फ 4 कमरे हैं, आप को कितने चाहिए?"

भगत राम समझ नहीं पाए कि कितने कमरे लेने चाहिए. साथ गए चपरासी ने उन्हें चुप देख कर तुरंत राय दी, "कमरे तो चारों लेने पड़ेंगे...क्या पता साहब के साथ कितने लोग आ जाएं, सपरिवार आने के लिए लिखा है न?"

भगत राम को भी यही ठीक लगा. सो उन्होंने पूरा गेस्ट हाउस बुक कर दिया.

ठीक 15 अप्रैल को निदेशक महोदय का काफिला वहां पहुंच गया. परिवार के नाम पर अच्छीखासी फौज उन के साथ थी. बेटा, बेटी, दामाद और साले साहब भी अपने बच्चों सहित पधारे थे. साथ में 2 छोटे अधिकारी और एक अरदली भी था.

सुबह 11 बजे उन की रेल 60 किलोमीटर की दूरी वाले शहर में पहुंची थी. भगत राम उन का स्वागत करने टैक्सी ले कर वहीं पहुंच गए थे. मेहमानों की संख्या ज्यादा देखी तो वहीं खड़ेखड़े एक मैटाडोर और भी बुक करवा ली.

शाम 4 बजे वे सब गेस्ट हाउस पहुंचे. निदेशक साहब की इच्छा आराम करने की थी, लेकिन भगत राम का आराम उसी क्षण से हराम हो गया था.

"रहने के लिए बाजार में कोई ढंग की जगह नहीं थी क्या? लेकिन चलो, हमें कौन सा यहां स्थायी रूप से रहना है. खाने का प्रबंध ठीक हो जाना चाहिए," निदेशक महोदय की पत्नी ने गेस्ट हाउस पहुंचते ही मुंह बना कर कहा. उन की यह बात कुछ ही क्षणों में आदेश बन कर भगत राम के कानों में पहुंच गई थी.

खाने की सूची में सभी की पसंद और नापसंद का ध्यान रखा गया था. भगत राम अपनी देखरेख में सारा प्रबंध करवाने में जुट गए थे. रहीसही कसर अरदली ने पूरी कर दी थी. वह बिना किसी संकोच के भगत राम के पास आ कर बोला, "व्हिस्की अगर अच्छी हो तो खाना कैसा भी हो, चल जाता है. साहब अपने साले के साथ और उन
बेटा अपने बहनोई के साथ 2-2 पेग तो
ही...बहती गंगा में साथ आए साहब लोग
हाथ धो लेंगे. रही बात मेरी, तो मैं तो
दारू से भी काम चला लूंगा."

भगत राम कभी शराब के आस
भी नहीं फटके थे, लेकिन उस दिन
अच्छी और खराब व्हिस्कियों के नाम
भाव, दोनों पता चल गए थे.

गेस्ट हाउस से घर जाने की फुर
भगत राम को रात 10 बजे ही मिल
वह भी सुबह 7 बजे फिर से हाजिर हो
की शर्त पर.

निदेशक साहब ने 10 दिनों
सैरसपाटा किया और हर दिन यही सिलसि
चलता रहा. भगत राम की हैसियत निदेश
साहब के अरदली के अरदली जैसी हो
रह गई.

निदेशक साहब गए तो उन्होंने रा
की सांस ली. मगर जो खर्चा हुआ था,
की भरपाई कहां से होगी, यह समझ न
पा रहे थे.

दफ्तर में दूसरे कर्मचारियों से बात
तो तुरंत ही परंपरा का पता चल गया.

"खर्चा तो दफ्तर ही देगा, साह
मरम्मत और पुताईरंगाई जैसे खर्चों के लि
बनाने पड़ेंगे... हर साल यही होता है," ए
कर्मचारी ने बताया.

दफ्तर की हालत तो ऐसी थी जैसे कि
कबाड़ी की दुकान की होती है. लेकि
साफसफाई के बिलों का भुगतान वास्तव
ही नियमित रूप से हो रहा था. भगत
ने भी वही किया, फिर भी अनुभव की क
के कारण 2 हजार रुपयों का गच्चा खा
गए.

निदेशक का दौरा सकुशल निबट
का संतोष लिए वह घर लौटे तो पाया
साले साहब सपरिवार पधारे हुए हैं.

"जिस दिन आप के ट्रांसफर की
सुनी, उसी दिन सोच लिया था कि इस
गरमियों में इधर ही आएंगे. एक हफ्ते

छुट्टी मिल ही गई है," साले साहब खुशी के साथ बोले.

भगत राम की इच्छा आराम करने की थी, मगर कह नहीं सके, जीजा, साले का रिश्ता वैसे भी बड़ा नाजुक होता है.

"अच्छा किया, साले साहब, मिलनेजुलने तो वैसे भी आते रहना चाहिए," भगत राम ने केवल इतना ही कहा.

साले साहब के अनुरोध पर उन्हें दफ्तर से 3 दिन की छुट्टी भी लेनी पड़ी और गाइड बन कर उन्हें घुमाना भी पड़ा.

छुट्टियां तो शायद और भी बढ़ानी पड़ जातीं, मगर बीच में ही बदहवासी की हालत में दौड़ता हुआ दफ्तर का चपरासी आ गया. उस ने बताया कि दफ्तर में आडिट पार्टी आ गई है, अब उन के लिए सारा प्रबंध करना है.

सुनते ही भगत राम तुरंत दफ्तर में पहुंच गए और आडिट पार्टी की सेवाटहल में जुट गए.

साले साहब 3 दिन बाद 'सारी खुदाई एक तरफ...वाली कहावत को चरितार्थ कर के चले गए, मगर आडिट पार्टी के सदस्यों का व्यवहार भी सगे सालों से कुछ कम न था. दफ्तर का आडिट तो एक दिन में ही खत्म हो गया था, लेकिन पूरे हिल स्टेशन का आडिट करने में एक सप्ताह से भी अधिक का समय लग गया.

आडिट चल ही रहा था कि दूर की मौसी का लड़का अपनी गर्लफ्रेंड सहित घर पर आ धमका. जब तक भगत राम मैदानी क्षेत्र के दफ्तर में नियुक्त थे, उस के कभी दर्शन भी नहीं होते थे, लेकिन अचानक ही वह सब से सगा लगने लगा था. एक हफ्ते तक वह भी बड़े अधिकारपूर्वक घर में डेरा जमाए रहा.

आडिट पार्टी भगत राम को निचोड़ कर गई तो किसी दूसरे वरिष्ठ अधिकारी के पधारने की सूचना आ गई.

"समझ में नहीं आता कि यह सिलसिला कब तक चलेगा?" भगत राम बड़बड़ाए.



सांसों में

गुलशन को अपने महका सा
सौंपा है तुम्हारे हाथों में,
कभी याद जो आऊं मैं
भर लेना इस की खुशबू को सांसों में.

–निर्मला जौहरी

"जब तक सीजन चलेगा," एक कर्मचारी ने बता दिया.

भगत राम ने अपना सिर दोनों हाथों से थाम लिया. घर पर जा कर भी सिर हाथों से हट न पाया, क्योंकि वहां फूफाजी आए हुए थे.

"भतीजा हिल स्टेशन पर रह रहा हो तो घूमनेफिरने का इस से अच्छा अवसर और कब मिल सकता है...यही सोच कर हम चले आए," फूफाजी ने आत्मीयता का प्रदर्शन करते हुए कहा.

"जी हां," भगत राम को मुसकराना पड़ा. लेकिन वह कैसे मुसकराए, यह बात वही जान सकते थे.

बाद में दूसरे अवसर पर तो बेचारे चाह कर भी ठीक से मुसकरा तक नहीं पाए थे, जब घर में दूर के एक रिश्तेदार का बेटा हनीमून मनाने ही चला आया था.

उसी समय सुजाता की एक रिश्तेदार महिला भी पति व बच्चों सहित आ गई थीं

और अचानक उन के दफ्तर के एक पुराने साथी को भी प्रकृतिप्रेम उमड़ आया था. भगत राम को रजाई, गद्दे किराए पर मंगाने पड़ गए थे.

वह स्वयं तो गाइड की नौकरी कर ही रहे थे, पत्नी को भी आया की नौकरी करनी पड़ गई थी. सुजाता की रिश्तेदार अपने पति के साथ प्रकृति का नजारा लेने के लिए अपने छोटेछोटे बच्चों को घर पर ही छोड़ जाया करती थी.

उधर दफ्तर में भी यही हाल था. एक अधिकारी से निबटते ही दूसरे अधिकारी के दौरे की सूचना आ जाती थी. शांति की तलाश में भगत राम दफ्तर में आ जाते थे और फिर दफ्तर से घर में लेकिन मानसिक शांति के साथसाथ आर्थिक शांति भी छिन्नभिन्न हो गई थी. 4 महीने कब गुजर गए, कुछ पता ही न चला. हां, 2 बातों का ज्ञान भगत राम को अवश्य हो गया था. एक तो यह कि दफ्तर के कुल कितने बड़ेबड़े अधिकारी हैं और दूसरी यह कि दुनिया में उन के रिश्तेदार और अभिन्न मित्रों की कमी नहीं है.

'सच पूछिए, तो यहां रहने का ही आ गया...जाने की इच्छा ही नहीं हो है. लेकिन छुट्टियां इतनी ही थीं, इस जाना ही पड़ेगा. अगले साल जरूर ही अ फुरसत ले कर आएंगे.' रिश्तेदार और यही कह कर विदा ले रहे थे. उन की आने की धमकी से भगत राम बुरी तर विचलित होते जा रहे थे.

"क्यों जी, अगले साल भी यही होगा क्या?" सुजाता ने पूछा. शायद वह विचलित थी.

"बिलकुल नहीं," भगत राम निर्ण स्वर में चीख से पड़े, "मैं आज ही तब का आवेदन भिजवाए देता हूं. यहां से तबा करवा कर ही रहूंगा, चाहे 10-20 ह खर्च ही क्यों न करने पड़ें."

सुजाता ने कुछ न कहा. भगत तबादले का आवेदनपत्र भेजने के लिए द की ओर चल पड़े.





ल स्टोर और किराने की दुकानों में उपलब्ध अधिक जानकारी के लिए यहां लिखें **चरक हेल्थकेयर प्रा. लि.**, एवरग्रीन इंडस्ट्रियल एस्टेट, शक्ति मिल्स लेन, डॉ. ई. मोसेस रोड, महालक्ष्मी, मुंबई

खरी / खोटी

● गोपाल चतुर्वेदी

डंडा प्रधान प्रजातंत्र

हमारे देश में प्रजातंत्र की एक विकसित परंपरा है. साल, 6 महीने में चुनाव हो जाते हैं. नेता कभी आकाश मार्ग से जनता के पास जाते हैं, कभी पैदल चल कर उस से संपर्क करते हैं. वादों की दुकान खुलती है. जनता वोट देती है. प्रजातंत्र प्रजा और राजा के मधुर मिलन से और तरक्की करता है. हमें बताया गया है कि जनतंत्र में सब बराबर हैं. बस थोड़ा सा फर्क है. कुछ ज्यादा बराबर हैं, कुछ कम.

बराबरी के इसी एहसास में खोए हम कल घर से बाजार की सैर को निकले. चौराहे तक पहुंचे तो एक सिपाही ने अपना बेंत हवा में हिला कर हमें आगे आने से रोका. हमारी समानता की भावना को ठेस लगी. हम ने अपने आक्रोश को स्वर दिया, "यह क्या बदतमीजी है?"

उस ने बेंत को हमारे पास ला कर लहराया. हमें यकायक बेंत ज्ञान हो गया कि जिस के हाथ में हथियार है, वह हम से ज्यादा बराबर है. हम ने प्रार्थना की, "पर यह तो बता दीजिए कि हमें रोका क्यों जा रहा है?"

वह निष्ठा और लगन से अपने बेंत अनुशासन में लगा रहा. हम शंकित हुए कि कहीं बमबम का खतरा तो नहीं है, वरना वरदी वाला बेकार क्यों अपनी काया को इतना कष्ट देगा. इतनी मेहनत से तो वह किसी भी पटरी वाले से अपनी दिनभर की कमाई कर लेता.

हमने वरदी वाले से फिर गुजारिश की, "साहबजी मामला क्या है...हमें आप क्यों रोक रहे हैं?"

शायद उसे हमारे स्वर की रिरियाती लाचारी पसंद आई. उस ने जानकारी "प्रजातंत्र की भूतपूर्व सवारी आ रही है

देखतेदेखते सड़क पर 7-8 गाड़ियों काफिला आया और पलक झपकते ग हो गया. पता लगा कि कोई 'भूत' प्रधान थे. पिछले 1-2 वर्षों में हमारी समाज व्यवस्था ने सब को बराबर किया है. पर स्थापित हर घोड़ा, गधा अब प्रजातं प्रधान के पद तक पहुंचने की हसरत को स्वतंत्र है. हमें उन से हमदर्दी है. सत्त शीर्ष में रह कर उन्होंने अखबार की सु का सुख भोगा. 2-3 प्रतिशत लोग उ नाम, परिवार, पुत्र और उस की हरक परिचित हुए. वह सत्ता से जुड़े, जन कटे. जब हटे तो जनता उन की शक्ल भूल गई.

हमारे पास खड़े एक सज्जन सुरक्षित हस्ती के बारे में जानना चा दूसरे ने उन्हें ज्ञान दिया, "इस देश में सारे खतरनाक मुजरिम हैं कि उन्हें पुलिस, फौज के घेरे में इधरउधर ले जाता है."

दूसरा संतुष्ट नहीं हुआ, "पर हमारे आनेजाने पर रोक लगाने की जरूरत है?"

पहले ने उस की बौद्धिक उ मिटाई, "आप हिंदी फिल्में देखते हैं कि माफिया के गैंग वाले उसे पुलिस के से बचाने की ताक में रहते हैं. अग गोलीबारी हुई तो जान गंवाने की बारी यानी सड़क की सवारी की होगी. वाले तो प्रशिक्षित हैं, पीठ दिखा क लेंगे. आतंक, दंगे, माफिया युद्ध, निर्दोष ही शहीद होते हैं."

चौराहे की चर्चा पान की दुकान की पंचायत में बदल गई. 2 समझदारों का अपने आदरणीय नेताओं को माफिया बताना हमें रास नहीं आया. हम ने उन्हें सही स्थिति सूचित करने का प्रयास किया, "यह कोई अपराधी और उस के गैंग का फिल्मी नजारा नहीं है. यह हमारे मुल्क के कल के कर्णधार की सुरक्षा का चलताफिरता दरबार है."

समाधान नहीं हुआ. एक आवाज गूंजी कि यह सुरक्षित हस्ती आखिर कौन सी थी? दूसरे ने टिप्पणी की कि होगा कोई गधा, घोड़ा, हम से क्या? किसी और अनजान ने निष्कर्ष निकाला कि जब इस 'भूत' को कोई जानता तक नहीं है तो इस की जान को किस तरह का खतरा मुमकिन है? भीड़ से घिरे रहने के बाद वीरानगी का संकट इसे जरूर सता



सवाल उछला, "पर अगर यह देश के ता हैं तो इन को घेरघार कर हांका क्यों ा रहा है?"

"आम जनता का कोई भरोसा नहीं है. स ने नेताओं को बहुत भुगत लिया. कौन ाने कब कोई सिरफिरा इन से हिसाब ुकाने पर उतारू हो जाए."

हमारे 'नेता बनाम माफिया' परिचर्चा इस योगदान से शंकालुओं का शंका

सकता है.

हमारा प्यारा भारत चौराहों पर चर्चाओं का देश है. हमारा विश्वास पारदर्शी होने में है. हर पान की दुकान के पानजीवी मुल्क की तकदीर से ले कर पिक्चर हाउस की सब से नई तसवीर के बारे में तकरीर करते हैं. नैतिकता से ले कर न्याय व्यवस्था और हर छोटेबड़े आदमी की बखिया उधेड़ना हमारा प्रिय शौक है. बहस, विवाद में हमारा

मुकाबला नहीं है. इसीलिए दुनिया में हमारी शोहरत बौद्धिक गुरु की है. कभी हम सिर्फ संसार के धर्म गुरु रहे होंगे, अब तो हम गुरु से शुरू हो कर गुरुघंटाल तक पहुंच चुके हैं.

हम ने प्रजातंत्र में डंडे का नया उसूल ईजाद किया है. इस के अनुसार, जो जनतंत्र जितना बड़ा होता है, उस के नेताओं के सामने हर पल नया खतरा खड़ा होता है. हमारे लीडर इतने लोकप्रिय हैं कि यदि उन्हें सतत सुरक्षा के घेरे में न रखा जाए तो लोग उन से छीनने, झपटने की प्रतियोगिता में उन की बोटीबोटी नोच लें.

हमारे नेता भी किसी से कम नहीं हैं. सैकड़ों आंखों की निगरानी में रहने के बावजूद वे करोड़ों खा लेते हैं और किसी को खबर तक नहीं होती. प्रजातंत्र के डंडा उसूल के मुताबिक जो नेता जनता के जितने डंडे खाने के काबिल होता है, वह उतना ही बड़ा और हर दिल अजीज लीडर गिना जाता है. उस की जान जनतंत्र के लिए बेशकीमती होती है. उस की सुरक्षा के लिए डंडाधारियों के फौजफांटे की जरूरत पड़ती है.

आज के नेता की महानता का इकलौता मापदंड उस की जनसेवा नहीं, उस की निजी सुरक्षा में लगे सुरक्षाकर्मियों की संख्या है. अगर कोई लीडर मामूली पुलिस वालों के जिम्मे है तो कतई निकम्मा है. यदि किसी को काले बिल्ले (ब्लैक कैट) घेरे होते हैं तो वह खास है. विशेष सुरक्षा दस्ते (एस. पी.जी.) के किले में कैद वाकई खाम[...] है. वह भूत हो या वर्तमान, उस का मुक[...] नहीं है. वह और उस के नजदीकी[...] संक्रामक खतरे हैं कि उन्हें जनता की [...] तक से बचा कर रखा जाता है. जो [...] अधिक बुद्धू बक्से, यानी टीवी में दिख[...] उतना बड़ा प्रतिभाशाली बुद्धू है. वह क[...] को बुद्धू बना कर बुद्धुओं के शीर्ष [...] पर पहुंचा है.

हमारे जनतंत्र में डंडे वालों [...] महत्त्वपूर्ण स्थान है. हमारे खास लोग [...] डंडे के कारण सुरक्षित और संरक्षित जि[...] बिताते हैं. भूख, बेकारी के विरोध में प्र[...] करने वाले डंडे खाते हैं. कुछ विद्वानों [...] मान्यता है कि यह उन्हीं के हित में है[...] डंडों की खुराक से ही जिंदा हैं. समा[...] डंडे वालों की इज्जत है. डाक्टर, प्राध्या[...] लेखक, कलाकार को कौन घास डालत[...] उन के पास डंडा नहीं है. माफिया, पु[...] पूंजीपति, जांच और प्रवर्तन संस्थाओं[...] बल्लेबल्ले हैं. उन सब के अपने[...] अधिकारों के डंडे हैं.

डंडे वाले चुनाव जीतते हैं [...] राजकाज चलाते हैं. आतताई बताते है[...] डंडे की बढ़ती महत्ता प्रगतिशील देश[...] पहचान है. अंतर्राष्ट्रीय समुदाय में अमे[...] के डंडे की बदौलत सब उस का लोहा [...] हैं. डंडा प्रजातंत्र का मूल मंत्र है. इसी[...] ध्यान में रख कर 'जिस की लाठी, उ[...] भैंस' जैसी कहावत का चलन है.

अजीबोगरीब व अश्लील हरकतों के खिलाफ न्यूयार्क के मे[...] का जेहाद

पाश्चात्य देशों का खुलापन इन दिनों न्यूयार्क में कुछ अधिक ही दृष्टिगोचर हो रह[...] बढ़ते वेश्यालय, शराब के ठेकों (बार) वगैरह में युवतियों का अर्धनग्नावस्था में शराब परो[...] वाहन चलाते समय 'लेना' का उल्लंघन करना तथा वाहनों में कुत्तेबिल्लियों की आवाजों [...] अजीबोगरीब हार्न लगवाना न्यूयार्क में सामान्य होता जा रहा है. लेकिन इन सब हरकतों से [...] शहर का जनजीवन अस्तव्यस्त हो रहा है वहीं स्थानीय निवासियों को अनेक मानसिक परेशा[...] का भी सामना करना पड़ रहा है. ऐसा लगता है कि यह स्थिति शहर के मेयर गियूलियानी[...] महसूस कर रहे हैं. संभवतः इसीलिए उन्होंने इस प्रकार की आपत्तिजनक हरकतों के खि[...] जेहाद छेड़ दिया है. इस संदर्भ में उन्होंने न केवल दोषी व्यक्तियों की धरपकड़ के लिए [...] बनाए हैं बल्कि जुर्माने का भी प्रावधान रखा है.

निस्संतान दंपती

डा. अविनाश चंद्र अग्रवाल

क्या आप अपनी सूनी गोद, सूने आंगन और सूने दामन को भरने के लिए एक बच्चे को तरसते हैं?

संतान की इसी चाह में व्याकुल व उचित मार्गदर्शन के अभाव से परेशान दंपती, गलत इलाज के चक्करों में फंसकर धन, समय और शक्ति नष्ट करते हैं.

संतानहीनों की समस्याओं को ध्यान में रखकर, विशेषज्ञ डाक्टरों द्वारा आमभाषा में लिखी गई यह पुस्तक नवीनतम वैज्ञानिक शोधों पर आधारित है. इस में संतानहीनता के कारण व निदान, इलाज की संभावना, इलाज में आने वाले खर्च, किन डाक्टरों से मिलें और सफलता की कितने प्रतिशत गारंटी आदि खासखास बातों का विस्तृत वर्णन है.



संतानहीनता के अभिशाप को वरदान बनाने की दिशा में मार्गदर्शक व सहायक पुस्तक.

मूल्य रु. 95.00

आज ही अपने पुस्तक विक्रेता से लें या आदेश भेजें.

दिल्ली बुक कंपनी

एम-12, कनाट सरकस, नई दिल्ली-1, फोन: 3321313

विशेष छूट कूपन
यहां से काटिए.
अग्रिम राशि भेजने पर
मूल्य केवल रु-86
डाक खर्च सहित

वी. पी. पी. द्वारा मंगवाने पर मूल्य का 25% अग्रिम भेजना अनिवार्य. डाक व्यय अतिरिक्त.

VV 97: 03-4

जीवन की मुसकान

पिछले वर्ष मुझे फार्मेसी की परीक्षा देने के लिए श्रीनगर जाना पड़ा. वहां मुझे अपने एक रिश्तेदार के घर ठहरना था. घर के दरवाजे पर लटके एक बड़े से ताले ने मेरा स्वागत किया. आसपड़ोस वालों से पूछा तो पता चला कि वे लोग एक विवाह समारोह में सम्मिलित होने जम्मू गए हुए हैं.

गलती मेरी ही थी, जो अपने आने की पूर्व सूचना उन्हें नहीं दी थी. मैं बुझे मन से लौट पड़ी.

वह अक्तूबर का महीना था. रात हो चुकी थी और सर्दी



बहुत जोरों से पड़ रही थी. मुझे ठहरने का कोई और ठिकाना नजर न आया. उस वक्त मेरे पास इतने रुपए भी न थे कि किसी होटल में ठहर सकूं. अतः असमंजस में पड़ गई कि अब क्या करना चाहिए? घर लौटूं या न लौटूं, इसी उधेड़बुन में चली जा रही थी. अचानक मैं एक वृद्ध स्त्री से टकरा गई और उस का सारा समान बिखर गया. मैं ने उस से माफी मांगी और गिरा हुआ सामान उठाने लगी.

बातों ही बातों में मैं ने उसे अपनी समस्या बताई तो वह मुझे अपने घर ले गई और भोजन कराया. सुबह परीक्षा के लिए जाने से पूर्व उस ने मुझे नाश्ता बना कर दिया और कहा कि परीक्षा देने के बाद दोपहर का भोजन कर के ही वापस जाऊं.

मैं उस वृद्धा के प्रति आज भी नतमस्तक हूं और सोचती हूं कि आज भी कई ऐसे नेक और दयालु लोग दुनिया में मौजूद हैं, जो हर समय जरूरतमंदों की सहायता को तत्पर रहते हैं.

–उर्मिला महर

*

आज भी जबतब मैं उस व्यक्ति के बारे में सोचने लगता हूं, अगर उस दिन समय रहते वह न आया होता तो आज मैं जीवित न होता.

घटना कुछ वर्ष पूर्व की है, जब मैं मात्र 13 वर्ष का था. मैं अपने भैयाभाभी के साथ शिमला घूमने गया था. वह दिसंबर का महीना था और वहां हर तरफ बर्फ जमी हुई थी. मुझे बर्फ पर चलना व भागना बहुत अच्छा लगता था.

एक दिन चांदनी रात में मुझे बर्फ पर चलने की इच्छा हुई और बिना भैयाभाभी को बताए चुपचाप निकल पड़ा. मैं बर्फ पर चलतेचलते काफी आगे निकल गया कि अचानक बर्फ के गड्ढे में गिर गया. मैं ने उस में से निकलने की बहुत कोशिश की, परंतु गड्ढा गहरा होने के कारण सारी कोशिशें असफल रहीं.

ठंड बढ़ती ही जा रही थी और मेरे हाथपैर जम चुके थे. मैं सहायता के लिए बहुत चीखाचिल्लाया, परंतु इत रात में वहां कौन था, ज मदद के लिए आता.

इतने में ही बर्फ आरंभ हो गई. अब तो अपनी आंखों के आगे मौत नाचती नजर आ जोरजोर से रोने लगा. वहां एक व्यक्ति प्रकट और हाथ बढ़ा कर मुझे ख चाहा, परंतु उस का प्रयास रहा. फिर उस ने अपने बंधी टाई खोली और उस सहारे धीरेधीरे मुझे बाहर लिया और अपने घर ले ज आग के सामने बिठा दिया



ही मेरे भैयाभाभी को भी कर दिया.

बाद में पता चला व्यक्ति की कीमती घड़ी कु पहले घूमते समय गिर ग जिसे ढूंढ़ने ही वहां आ और मेरे रोने की आवा कर मेरी मदद को आ प

आज उस व्यक्ति बदौलत दूसरा जीवन जी

–रमेश रंजन जायस

इस स्तंभ के लिए आप अपने मित्रों व संबंधियों के अनुभ सकते हैं. प्रत्येक प्रकाशित पर 50 रुपए की पुस्तकें में दी जाएंगी. अपने संस्म पते पर भेजें: सरिता सं विभाग, ई-3, झंडेवाला रानी झांसी मार्ग, दिल्ली-110055.

अभी भी स्थिति संभली नहीं है

लेख • कपिल अग्रवाल

लड़खड़ाती अर्थव्यवस्था और खाली खजाने को भरने की मशक्कत नए वित्तमंत्री को करनी है. आर्थिक सुधार कार्यक्रमों के परिणाम अब सामने हैं. एक के बाद एक दम तोड़ते देशी उद्योग तथा मुनाफा दर मुनाफा कमाती बहुराष्ट्रीय कंपनियां इन्हीं कार्यक्रमों की देन हैं. बकौल वित्तमंत्री, पुरानी अर्थव्यवस्था पूर्णतः तहसनहस कर दी गई, पर नई व्यवस्था हम ने खड़ी ही नहीं की. उदाहरण के लिए कंट्रोलर आफ कैपिटल इश्यूज (सी सी आई) को तो समाप्त कर दिया गया पर सेबी को भी तत्संबंधी अधिकार नहीं दिए गए.

वित्तमंत्री के मुताबिक, विदेशी कंपनियों ने भारत में पूंजी निवेश बढ़ा कर कम कीमतों में अच्छे शेयर खरीदे और भारीभरकम मुनाफे समेत यहां से पलायन कर लिया. वित्तमंत्री का आरोप है कि पूर्ववर्ती वित्तमंत्री पूर्णतः विश्व बैंक व आई एम एफ के निर्देशानुसार चले हैं, जिस से अर्थव्यवस्था बिलकुल चौपट हो गई है तथा इस को पोषित करने वाले तत्त्व सूखते चले गए हैं. वित्तमंत्री कहते हैं कि पूंजी बाजार किसी भी अर्थव्यवस्था की रीढ़ होता है और भारत में इस को बड़े सुनियोजित ढंग से बरबाद किया गया है.

जैसा कि वित्तमंत्री ने कहा है, पूंजी बाजार की खुशहाली बहाल करने को हर संभव उपाय किए जाएंगे. उन्होंने खासतौर से लघु निवेशकों की बात की है, यानी नई नीतियों में इन्हें विशेष रिआयतें दी जाएंगी. संभव है कि एक बार फिर पब्लिक इश्युओं का सिलसिला शुरू हो जाए और फिर 100-200 शेयरों वाली व्यवस्था लागू हो जाए. खजाना भरने को सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों के विनिवेश का कार्यक्रम भी तेजी से चलाया जाएगा. इस बात की संभावना ज्यादा है कि कम प्रीमियम पर ज्यादा शेयरों का विनिवेश कर दिया जाए.

पिछले साल की तरह इस साल भी सकल कारोबारी परिणाम ढीले रहने का अनुमान लगाया गया है. गत दिनों विश्व बैंक का एक दल भारत के गुप्त दौरे पर आया था. गुप्त इसलिए, क्योंकि राबर्ट ओ मैकनरा के नेतृत्व वाला यह दल देश की अर्थव्यवस्था का जायजा लेने अकेलेअकेले सदस्य के रूप में जनवरी के आखिर में आया और गुपचुप ढंग से दल के 8 सदस्यों ने अकेलेअकेले जानकारियां हासिल कीं, यानी विश्व बैंक की टीम की यह कोई अधिकृत यात्रा नहीं थी.

आमतौर पर 6-6 माह तथा सत्तापलट आदि महत्त्वपूर्ण मौकों पर बैंक तुरंत विशेष टीम भेजता है. विश्व बैंक की यह नीति केवल भारत ही नहीं बल्कि विश्व के सभी देशों में लागू है. उसी दल की रिपोर्ट के मुताबिक मार्च 1998 को समाप्त वित्त वर्ष की पहली छमाही मिश्रित गई थी, पर दूसरी छमाही चिंताजनक रही है. सार्वजनिक क्षेत्र के अधिकांश उपक्रमों की परफारमेंस बिगड़ी है तथा बैंकिंग क्षेत्र भी नुकसान में रहा है.

रिपोर्ट के मुताबिक, सार्वजनिक क्षेत्र के 70 से भी ज्यादा उपक्रमों व 4 बैंकों की हालत खराब है. इस में कुछ बड़े नाम भी शामिल हैं. सीमेंट, स्टील, वित्तीय कंपनियां, एल्यूमीनियम, आटोमोबाइल उद्योग, साइकिल उद्योग, रसायन उद्योग, हीरा व स्वर्णाभूषण उद्योग, खाद्य तेल, फूड प्रोसेसिंग, होटल, प्लांटेशन, पेपर, पावर उद्योग आदि की परफारमेंस बहुत चिंताजनक बताई गई है. रिपोर्ट के मुताबिक, फंड के अभाव व गलत और सुस्त नीतियों के चलते बुनियादी ढांचा चरमरा गया है.

रिपोर्ट में उदाहरण दे कर बताया गया है, सन 1991 से अब तक 150 से भी ज्यादा विद्युत परियोजनाओं की बाबत घोषणाएं की गईं, पर अभी तक इन पर ठोस कुछ भी नहीं हुआ है. रिपोर्ट में इसी तरह पूंजी बाजार की बाबत भी कहा गया है कि तमाम उपायों के बावजूद स्थिति संभली नहीं है. निवेशक गायब हैं, तरलता है नहीं तथा 70 फीसदी शेयर दलालों ने मैदान छोड़ रखा है.

नए वित्तमंत्री के बयानों, आगामी बजट व नई नीतियों के परिप्रेक्ष्य में यह रिपोर्ट काफी मायने रखती है. बजट से पूर्व विश्व बैंक के दिशा निर्देश निश्चित तौर पर वित्तमंत्री के पास पहुंचेंगे तथा प्रत्यक्ष विदेशी निवेश के लालच में उन्हें देरसवेर लागू करना ही होगा.

वैसे भी पूंजी बाजार का स्वरूप अब पूरी तरह बदल चुका है. शेयर बाजारों में कभी शेयर ब्रोकरों की संख्या 10,000 से भी ज्यादा थी, पर अब यह घट कर 2,500-3,000 के बीच रह गई है. आसपास के वे खानदानी दलाल, जो रोज दिल्ली आतेजाते हैं, बताते हैं कि यह सब विदेशी ब्रोकरों के आने से ही हुआ है. मुंबई शेयर बाजार में पिछले माह तक 600 ब्रोकर पंजीकृत थे, जिन में 395 बामुश्किल सक्रिय थे.

शेयर बाजार का रिकार्ड बताता है कि जनवरी से मार्च 1998 तक किए गए कुल डिलीवरी आधारित सौदों में से 75 फीसदी कारोबार विदेशी ब्रोकरों के माध्यम से हुआ है. बेहतर कार्यशैली के चलते भारतीय निवेशक भी विदेशियों पर ही निर्भर रहने लगे हैं. काम न होने के बावजूद देशी दलालों का रवैया आज भी निवेशकों के प्रति अच्छा नहीं है. आज भी वे निवेशक को येनकेन प्रकारेण चूना लगाने के फेर में रहते हैं. दूसरी ओर विदेशी ब्रोकर इस स्थिति को स्वाभाविक करार देते हैं. उन के मुताबिक, हांगकांग में आर्थिक सुधार शुरू होने से पूर्व 1,400 ब्रोकर थे, लेकिन अब सिर्फ 24 ही बचे हैं.

तमाम शेयर ब्रोकरों से बातचीत में ढेर सारे नुख्स निकल कर आए हैं. मसलन, सरकारों की गलत नीतियां, निवेशकों की बेरुखी, वि... संस्थागत ब्रोकरों का आगमन आदि पर को... कहने को तैयार नहीं कि यह सब उन की... की मनमानी व अभद्र व्यवहार का नतीजा ... सब उन के खुद के बोए कांटे हैं, जो उन्ही... चुभ रहे हैं.

विदेशी ब्रोकरों की कार्यकुशलत... व्यवहार देशी ब्रोकरों के मुकाबले लाख ... अच्छा है. आज भी किसी बड़ी कंपनी के 10... शेयर खरीदने निवेशक जब देशी ब्रोकर के ... जाता है तो वह नाकभौं सिकोड़ कर अभ... करने लगता है. दूसरी ओर विदेशी ब्रोकर ... जरा भी गलत नहीं मानते. वे लघु व बड़े ... तरह के निवेशकों को तवज्जुह देते हैं और अ... सेवाएं प्रदान करते हैं. इसलिए यह कहना ज... सही होगा कि आज अपनी स्थिति के लिए ... ब्रोकर खुद जिम्मेदार हैं.

हकीकत तो यह है कि आज केवल ... ब्रोकर हल्ला मचा रहे हैं जो अब तक अ... मनमानी, बेलगामी व एकाधिकारी रवैये के ... चांदी काट रहे थे. इन ब्रोकरों की हालत ... थी कि निवेशक का 80 प्रतिशत लाभ खु... जाते थे और एहसान अलग जताते थे. पहले ... तथा आज भी निवेशक ब्रोकरों पर ही निर्भ... हां, यह बात जरूर है कि पहले यह निर्भरता ... फीसदी थी, पर अब यह घट कर 40 फी... रह गई है.

इस बार एक राइट व एक पब्लिक ... है. इस के अलावा दो एफ.डी. भी हैं. प... इश्यू जम्मू एंड कश्मीर बैंक का है तथा य... में 28 रुपए प्रीमियम पर आ रहा है. बैंक, ... व राइट इश्यू जारी कर चुका है.

जम्मू एंड कश्मीर बैंक

जम्मू व कश्मीर सरकार का यह ... जनता से 70 करोड़ रुपए उगाहने को मई मे... बाजार में प्रवेश कर रहा है. कुल 1.85 ... शेयरों के लिए 28 रुपए प्रति शेयर का प्री... लिया जा रहा है. इश्यू का उद्देश्य है, ने... सुदृढ़ व दुरुस्त करना, दीर्घकालीन पूं...

DSM
THE DHAMPUR SUGAR MILLS LIMITED
Registered Office : Dhampur (NR), District (Bijnor) - 246761
Head Office & Admnistrative Office : 506-507, Kusal Bazar, 32-33, Nehru Place, New Delhi-110019
FIXED DEPOSITS SCHEME

कंपनी का नाम	वर्ष	बिक्री/आय (लाख रु. में)	शुद्ध लाभ/हानि (लाख रु. में)	लाभांश (%)	ई.पी.एस. (रु.)	शेयर मूल्य (रु.)	प्रीमियम (रु.)	इश्यू खुलने/बंद होने की तिथियां	बाजार मूल्य ऊंचा/नीचा	
जम्मू एंड कश्मीर बैंक लि.	96	34,757	1,839.00	–	26.27	10	28	11 मई/	पहला निर्गम	
	97	42,932	2,500.00	–	35.71			18 मई		
सीबार फाइनेंस लि. (राइट)	–	–	–	–	–	10	–	16 मार्च/ 16 अप्रैल	ट्रेडिंग नहीं	
स्पिक (एफ.डी.)	96	1,85,880	8,100.00	30	9.2	5,000	–	ओपन एंडेड	59	37.00
	97	1,81,065	7,262.00	30	8.25				52	34.50
धामपुर शुगर मिल्स लि. (एफ.डी.)	95	20,410	640.00	25	5.60	3,000	–	ओपन एंडेड	135	75.00
	96	27,638	585.00	15	5.10				91	35.00
	97	38,210	1,040.08	25	6.71				90	46.00
				पुराने शेयर				सलाह		
								खरीदें / रोकें / बेचें		
कैस्ट्राल (इंडिया) लि.	95	76,290	8,110.00	75	13.10	10	–		520	307.00
	96	88,825	9,453.00	85	15.30				800	361.00
	98	–	–	–	–	–		रोकें	800	400.00
मुंजाल शोवा लि.	95	8,250	510.00	25	12.70	10			395	205.00
	96	10,266	799.00	–	19.98		–		401	228.50
	97	12,400	861.00	–	21.52			रोकें	305	195.00

संसाधनों की व्यवस्था, औद्योगिक अग्रिमों के लिए ठोस कोष आदि. मार्च 1997 को समाप्त वित्तवर्ष में बैंक की पूंजी 6.99 करोड़ रुपए थी जोकि बढ़ कर अब 29.99 करोड़ रुपए हो गई है. बैंक ने पहले 1:1 के अनुपात में बोनस जारी किया और फिर राइट. इस के अलावा 9 करोड़ के शेयर प्रीफरेंशियल आधार पर जम्मू व कश्मीर सरकार को 28 रुपए प्रीमियम पर दिए गए हैं. इश्यू पूर्व राज्य सरकार की शेयर होल्डिंग बैंक में 86 फीसदी थी, जोकि इश्यू बाद 53 फीसदी हो जाएगी.

बैंक का पूंजी पर्याप्तता अनुपात वर्ष 1997 के दौरान 15.88 फीसदी रहा, जब कि यह न्यूनतम 8 फीसदी होना चाहिए. अभी इस में और इजाफा होने की उम्मीद है. बैंक गत 5 दशकों से सफल कारोबार कर रहा है और इस का वित्तीय आधार बहुत मजबूत है. वर्तमान में इस का जमा आधार 3,658 करोड़ रुपए व अग्रिम वर्ष 1,693 करोड़ रुपए है. वर्ष 1996-97 में बैंक ने 429 करोड़ रुपए की सकल आय पर 25 करोड़ रुपए का शुद्ध लाभ अर्जित किया है. इस पर बैंक का लाभ मार्जिन 6 फीसदी है. इसी प्रकार उधार लागत व जमा लागत क्रमशः 1.7 तथा 7.6 फीसदी है.

बैंक की गैर निष्पादित संपत्तियों (एन.पी.ए.) की स्थिति भी काफी ठीक है. वर्ष 1997 में यह कुल अग्रिमों का 6 फीसदी यानी 102 करोड़ रुपए था. कई राष्ट्रीय बैंकों से इस की स्थिति काफी बेहतर है.

बैंक की अच्छी स्थिति के बावजूद वाजिब रिटर्न मिलने में संदेह है. गत साल भर में इंडसइंड, स्टेट बैंक आफ बीकानेर एंड जयपुर, देना बैंक, बैंक आफ पंजाब आदि बैंकिंग क्षेत्र के इश्युओं से निवेशकों को उपयुक्त परिणाम नहीं मिले हैं और इस क्षेत्र को सोना समझने की धारणा गलत साबित होने लगी है. बैंक की वर्तमान परफारमेंस के मुताबिक ऐसा होना तो नहीं चाहिए, पर चूंकि प्रीमियम लिया जा रहा है, इसलिए जोखिम भी ज्यादा ही है. जोखिमप्रिय निवेशक चाहें तो हलका निवेश कर सकते हैं.

सीबार फाइनेंस लि.

फाइनेंस कंपनियों ने निवेशकों को तो जम कर लूटा ही है, शेयर बाजार को खराब करने

में भी इन का बड़ा उल्लेखनीय योगदान है. यह भी एक ऐसी ही कंपनी है, जो कुछ साल पूर्व पूंजी बाजार में आई थी और आज इस का कोई हिसाबकिताब नहीं है. कंपनी के शेयर की ट्रेडिंग भी बाजार में बहुत ही कम, कभीकभार ही होती है.

एक बार फिर यह कंपनी राइट इश्यू के साथ पूंजी बाजार में प्रवेश कर चुकी है. इश्यू अनुपात 1:2 है तथा इश्यू समभाव पर है. इश्यू का उद्देश्य है, नेटवर्क बढ़ाना तथा उधार क्षमता में सुधार लाना. इश्यू से 1.82 करोड़ रुपए उगाहे जा रहे हैं.

हर मोरचे पर यह कंपनी बिलकुल बंडल है. इस के कारोबार का कुछ भी पता नहीं है तथा यह बहुत छोटे स्तर की कंपनी है. गैर निष्पादित संपत्तियों की बाबत कोई भी व्यवस्था नहीं की गई है तथा 1995-96 में इस का सकल लाभ मात्र 42,000 रुपए था. वर्ष 1996-97 में यह बढ़ कर 1.71 लाख हो गया. लाभ वृद्धि का कुछ भी फायदा निवेशकों को नहीं मिला. कंपनी मुख्यत: फंड आधारित गतिविधियों से जुड़ी है. फिलहाल कारोबार काफी मंदा है.

कंपनी का सब से नकारात्मक पहलू यह है कि यह रिजर्व बैंक में रजिस्टर्ड नहीं है. इस के अलावा इस का वित्तीय आधार सुदृढ़ नहीं है. कंपनी के शेयरों की ट्रेडिंग भी बहुत कम होती है तथा वर्तमान भाव शेयर की फेस वैल्यू 10 रुपए से भी बहुत नीचे है. यह राइट इश्यू किसी भी दृष्टि से निवेश योग्य नहीं है.

स्पिक

इस कंपनी के फिक्स डिपाजिट कार्यक्रम को रेटिंग एजेंसी ने एए+ रेटिंग दी है. इस के मुताबिक इस में निवेश के लिए पर्याप्त सुरक्षा है. कंपनी खाद बनाती है तथा पेट्रोकेमिकल्स, दवा, शिपिंग, इंजीनियरिंग, एल.पी.जी. वितरण आदि भी करती है.

टिडको व एम.ए. चिदंबरम समूह की इस कंपनी ने संचयी व गैरसंचयी जमा योजनाएं जारी की हैं. कम से कम 5,000 रुपए जमा करने व 14 फीसदी का रिटर्न कंपनी के स्कीम की मुख्य विशेषता है.

कंपनी पिछले कई सालों से लाभ में है और गत 2 वर्षों में 30-30 फीसदी लाभांश घोषित किया है. गत वर्ष संयंत्र में बंदी के चलते कंपनी की बिक्री, लाभ व ई.पी.एस. में गिरावट दर्ज की गई है. पर कंपनी प्रबंधन के ... यह सब अस्थायी है. कंपनी को अपने ... में बढ़ोतरी के लिए कई करोड़ चाहिए औ... डी. से 20 करोड़ जुटाने का लक्ष्य रखा ...

कंपनी की एफ.डी. में हलका निवेश ... जा सकता है.

धामपुर शुगर मिल्स लि.

करीब 65 साल पुरानी यह कंपनी ... केमिकल्स, पेपर्स, पावर, स्ट्रा बोर्ड बन... बेचती है. कंपनी ने अपनी विभिन्न जरूर... मद्देनजर फिक्स्ड डिपाजिट स्कीम्स जारी ... कुल 3 स्कीमें हैं, जिन में कम से कम ... रुपए जमा करने हैं.

पहली यानी नान क्यूम्यूलेटिव स्की... तहत एक साल के लिए 14 फीसदी रिटर्न... साल के लिए 15 फीसदी रिटर्न रखा ग... निधि वृद्धि स्कीम के तहत 1 साल में ... फीसदी, दूसरे साल में 17.12 फीसदी व ... साल 18.80 फीसदी का रिटर्न रखा ग... तीसरी स्कीम श्रीवृद्धि सर्टिफिकेट के त... साल में 3,725 रुपए की निवेश राशि ब... 5,000 रुपए हो जाएगी तथा 3 साल में ... रुपए के भी 5,000 रुपए हो जाएंगे. करी... करोड़ के टर्नओवर वाली इस कंपनी के... डी. की रेटिंग किसी भी स्वतंत्र एजेंसी ... कराई गई है. निवेश की दृष्टि से य... नकारात्मक तथ्य है.

कारोबार के लिहाज से कंपनी ठी... है. वर्ष 1995 के मुकाबले वर्ष 1996 में ... के लाभ घटे हैं, पर वर्ष 1997 में ये ... दोगुने हो गए हैं. कंपनी के लाभ वर्ष 1... 640 लाख थे, जोकि वर्ष 1997 में ब... 1,040 लाख रुपए के हो गए हैं. कंपनी के... का भाव गत 2 सालों में काफी घटा है. 2... में शेयर का भाव 35 रुपए तक नीचे प... अपने प्रदर्शन के मुताबिक इस के बाजा... में खास बढ़ोतरी नहीं हुई है.

कुल मिला कर स्कीम में निवेश जोखि... है. कंपनी को फंड्स की जरूरत है, ... निवेशकों को भुगतान मिलने में परेश... सकती है.

पुराने शेयर

नई सरकार के नए वित्तमंत्री की घो... से पुराने शेयरों में थोड़ी रौनक तो आई...

निवेशक अब भी घाटे में हैं. चुनिंदा शेयरों को छोड़ दें तो कई बड़े शेयर हानि में ही चल रहे हैं. आज भी निवेशक कई अरब के घाटे में हैं. बकौल वित्तमंत्री, निवेशकों व पूंजी बाजार की स्थिति सुधारने को शीघ्र ही विशेष पैकेज घोषित किया जाएगा और सेबी को पुनर्गठित कर के नई शक्तियों से लैस किया जाएगा. संभव है कि सेबी अध्यक्ष को भी बदल दिया जाए.

नई सरकार ने बुनियादी ढांचागत क्षेत्र में सुधार व निवेश वृद्धि के संकेत दिए हैं. इसी प्रकार बहुराष्ट्रीय कंपनियों को भी अभयदान दिया गया है. बैंकों की हालत भी सुधारने की बात कही जा रही है. घाटे वाले कुछ बैंक पुनर्गठित किए जा सकते हैं. इस बार इसी सब को ध्यान में रखते हुए कैस्ट्राल (इंडिया) लि. व मुंजाल शोवा लि. की समीक्षा की जा रही है. कैस्ट्राल इंडिया जहां लुब्रिकेंटों के क्षेत्र में विशिष्ट है, वहीं मुंजाल शोवा आटोमोबाइल उद्योग के लिए विभिन्न प्रकार के पुरजे बनाती है.

कैस्ट्राल (इंडिया) लि.

सन 1899 में इंगलैंड में सी सी वाकफील्ड कंपनी ने 'कैस्ट्राल' ब्रांड नाम से लुब्रिकेंटों का व्यापार शुरू किया था. 1944 में यह पब्लिक कंपनी बन गई और इस का नाम बदल कर कैस्ट्राल लि. कर दिया गया. 1966 में कैस्ट्राल बरमा समूह का हिस्सा हो गई. कंपनी की भारतीय शाखा ने 1919 में अपनी गतिविधियां शुरू कीं और मुंबई, कलकत्ता, दिल्ली व चेन्नई में 4 क्षेत्रीय कार्यालय बना कर कारोबार शुरू कर दिया. 1981 में बांबे हाईकोर्ट द्वारा मंजूर की गई एकीकरण योजना के तहत कंपनी का भारतीय व्यापार और विपणन इंड्राल लुब्रिकेंट्स एंड स्पेश्यालिटीज लि. में समाहित कर दिया गया. इस के बाद पुनः ब्रिटेन की कैस्ट्राल लि. से करार कर लिया गया.

कंपनी के मुख्यतः लुब्रिकेंट आयल व ग्रीस, 2 उत्पाद हैं. जबरदस्त मार्केटिंग व प्रचार के बूते कंपनी ने अपनी बाजार हिस्सेदारी वर्ष 1992-1993 के 7 फीसदी से बढ़ा कर वर्ष 1996-97 में 14 फीसदी कर ली. यह तब हुआ, जब कि इस दौरान तमाम बड़े अंतर्राष्ट्रीय ब्रांड बाजार में आए हैं. कंपनी की सुदृढ़ नीति के चलते आई.ओ.सी., एच.पी.सी.एल., बी.पी. आदि की हिस्सेदारी लुब्रिकेंटों के बाजार में घटी है.

लुब्रिकेंट कम लागत वाला क्षेत्र है. बेस आयल में अन्य कई तत्त्व मिला कर इसे तैयार किया जाता है. भारत में बेस आयल केवल 3 कंपनियां, इंडियन आयल्स, मद्रास रिफाइनरी व एच.पी.सी.एल. बनाती हैं. अधिकांश कंपनियां भारतीय बेस आयल को ही परिष्कृत कर के अपनेअपने ब्रांड नाम से लुब्रिकेंटस बाजार में उतार रही हैं. इस के अलावा विपणन के लिए भारतीय कंपनियों द्वारा विकसित आधारभूत सुविधाओं का उपयोग किया जाता है.

बहुराष्ट्रीय कंपनियों के प्रवेश व गलाकाट प्रतिस्पर्धा के बावजूद बाजार में नकली माल की हिस्सेदारी काफी ज्यादा है. कुल बाजार 4,500 करोड़ का है. अपने कारोबार को सुधारने के लिए कंपनी ने अनेक उपाय किए हैं. गत वर्ष कंपनी ने कासमेट मैक्स को अपना कम्यूनिकेशन सर्विस प्रोवाइडर नियुक्त किया. कासमेट मैक्स अमेरिका की कासमेट कारपोरेशन व मैक्स इंडिया का साझा उपक्रम है. यह कैस्ट्राल के 7 संयंत्रों, क्षेत्रीय कार्यालयों और गोदामों के बीच आपसी संवाद बेहतर बनाने में मदद करेगी. कंपनी ने अपने वित्तीय नियोजन, निर्माण नियोजन और विपणन नियोजन को एक केंद्रीय योजना सेल के साथ जोड़ दिया है. सूचना व्यवस्था की स्थापना पर 7 करोड़ रुपए खर्च किए गए हैं.

कारोबारी लिहाज से कंपनी ठीकठाक है. दिसंबर 1995 की समाप्त वित्तवर्ष के दौरान कंपनी ने 103.05 करोड़ का शुद्ध लाभ कमाया, जब कि इस से पिछले साल यह 72.98 करोड़ रुपए था यानी इस में 41 फीसदी की वृद्धि दर्ज की गई. हालांकि दिसंबर 1996 में ये 94.53 करोड़ रह गया, पर वर्ष 1997 में इस में फिर इजाफा हुआ है.

कंपनी का शेयर 700 रुपए के आसपास घूम रहा है. कंपनी के शेयरों में खरीद 400 रुपए पर तो की जा सकती है, 700 रुपए पर नहीं. इस का कारण यह है कि गत 1 वर्ष में यह न्यूनतम 400 रुपए तथा अधिकतम 800 रुपए तक गया है. इस समय 5 माह तक के लिए इस शेयर को रोका जा सकता है. हालांकि इस में अभी बढ़ोतरी की गुंजाइश नहीं है, पर बजट तक इसे रोका जा सकता है. ताजा खरीद की सलाह न देने की एक वजह इस की लगातार घटती ई.पी.एस. भी है. 1994 में यह 18.91 रुपए थी जो कि 1995 में घट कर 16.69 व 1996 में 15.31 हो गई.

मुंजाल शोवा लि.

80 के दशक में जापान की कंपनी शोवा मैनुफैक्चरिंग लि. के तकनीकी और वित्तीय सहयोग से इस कंपनी की स्थापना नई दिल्ली में की गई थी. ताजा स्थिति के मुताबिक कंपनी में विदेशी निवेशकों की इक्विटी हिस्सेदारी 32.89 फीसदी है. विभिन्न सरकारी व वित्तीय संस्थानों के पास कंपनी के 11.38 फीसदी शेयर हैं. विभिन्न कारपोरेट निकायों के पास 32.21 व 13.94 फीसदी शेयर आम निवेशक के पास हैं.

कंपनी आटोमोबाइल उद्योग की बाबत शाक एब्जार्बर, फ्रंट फार्क, नए जेनरेशन स्ट्रट्स आदि बनाती है. कंपनी के उत्पादों के विपणन का काम सीधे कायनेटिक होंडा मोटर्स लि. व मैजेस्टिक आटो करती है. मारुति उद्योग, हीरो होंडा, बजाज आटो, हीरो मोटर्स, टेल्को आदि कंपनियों को भी यह कंपनी अपने उत्पादों की आपूर्ति करती है. कंपनी कई नई कारों के लिए उपकरण विकसित कर रही है. इसे वर्ष 1995-96 में आई.एस.ओ.–9000 मानक भी हासिल हो चुका है.

आटो एसिलरी उद्योग पिछले 5 व कई बार मंदी के दौर से गुजर चुका है प कंपनी इस से अछूती रही है. कारोबार के वि से वर्ष 1992-93 को छोड़ कर कंपनी का अच्छा ही रहा है.

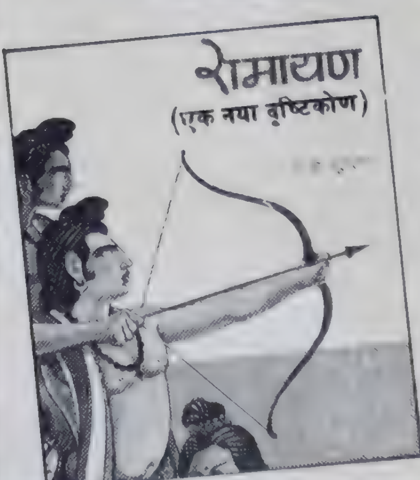
वर्ष 1994-95 में कंपनी ने 5.1 करो शुद्ध लाभ अर्जित किया, जोकि 1995-9 बढ़ कर 7.99 करोड़ व वर्ष 1996-97 में करोड़ रुपए हो गया. इस दौरान कंपनी टर्नओवर 100 करोड़ से भी ज्यादा हो गई. व की वित्तीय स्थिति काफी मजबूत है और भी बहुत कम है.

अच्छी वित्तीय स्थिति व बुनियाद के कंपनी के शेयर लाभप्रद व रखने योग् वर्तमान बाजार भाव 220 रुपए के आसपास रहा है. पिछले 1 साल में इस के भाव ऊं 305 व नीचे में 195 रुपए थे. इस लिहा यह शेयर खरीदने योग्य नहीं है. पर बजट इस को रखा जा सकता है. नई खरीद के 150-160 रुपए का भाव ठीक है.

रामायण : एक नया दृष्टिकोण

विश्व सु
साहित

प.ह. गुप्ता



प्रचलित लोक धारणा के विपरीत रामायण धर्म ग्रंथ न हो कर एक साहित्यिक रचना है. तथ्य को आधार मानते हुए लेखक ने रामाय प्रमुख चरित्रों और घटनाओं के बारे में अ चिंतन इस पुस्तक में प्रस्तुत किया है.

यह पुस्तक नई क्रांतिकारी विचारधा अनुसार रामायण के ऐतिहासिक, सामा राजनीतिक, नैतिक तथा मानवीय मूल्यो प्रकाश डालती है.

रामायण की वास्तविकता को समझने लिए विशेष पुस्तक.

नजदीक के पुस्तक विक्रेता से लें या आदेश भेजें

मूल्य 30.00

दिल्ली बुक कंपनी एम-12, कनाट सरकस, नई दिल्ली-110001

संपूर्ण राशि अग्रिम भेजने पर कोई डाक खर्च नहीं अन्यथा आदेश के साथ 10 रुपए अग्रिम भेजें तथा डाक व्यय 3.25 रु. अ



पहले तोलिए फिर बोलिए

लेख ● रश्मि बड़थ्वाल

बहुत से लोगों में बिना आगापीछा सोचे बस बोलते चले जाने की आदत होती है. यों तो पुरुष भी बिना विचारे बोलते ते हैं, किंतु महिलाएं इस मामले में कुछ ादा ही आगे हैं.

मैं ने अपने 3 साल के बेटे प्रांशु को लेपहल विद्यालय भेजा था. उसी दिन मती खरे ने मुझ से पूछा कि बच्चे को पढ़ने कहां भेज रही हैं?

मैं ने ज्यों ही विद्यालय का नाम बताया, वह तमक कर बोलीं, "हमने तो आप को मना किया था, उस स्कूल में मत डालिएगा, लेकिन आप ने हमारी बात नहीं मानी."

परंतु न तो मैं ने पहले ही श्रीमती खरे से राय मांगी थी कि बच्चे को कहां पढ़ाऊं और न ही बाद में यह पूछा था कि बच्चे को उस विद्यालय में डाल कर कैसा किया? वह बिना मांगे राय दे गई थीं कि वहां मत पढ़ाना.

लेकिन दूसरी शिक्षित और समझदार महिलाओं ने बेटे को उसी विद्यालय में पढ़ाने की राय दी. वह विद्यालय मेरे घर से पास भी है और दूसरे, वहां बहुत सी सुविधाएं भी हैं. पढ़ाई भी अच्छी होती है, और शुल्क

भी वाजिब ही लिया जाता है.

क्या श्रीमती खरे के कहने भर से मैं अपने बच्चे को वहां पढ़ाने न भेजती? उन के तुनकने का कारण भी मैं जानती थी. दरअसल उस विद्यालय में पहले श्रीमती खरे पढ़ाने जाती थीं, लेकिन रूखे, तीखे व्यवहार के कारण उन्हें उस विद्यालय से निकाल दिया गया था. श्रीमती खरे नहीं चाहती थीं कि यह बात किसी को पता चले, अतः हर परिचित से उस विद्यालय की बुराइयां करती रहतीं कि कोई भी अपने बच्चे वहां न पढ़ाए.

लेकिन श्रीमती खरे के बड़बोलेपन से परिचित होने के कारण हम ने उन की राय और निंदा को कोई महत्त्व ही न दिया. जब हम बच्चे को विद्यालय में प्रवेश दिला ही चुके थे तो श्रीमती खरे के लिए उचित यही था कि इस विषय में मौन ही रहतीं. कम से कम यही सोच कर चुप रहतीं कि शैक्षणिक कार्य का अनुभव उन्हें ही नहीं, मुझे भी रहा है.

नीना ने बड़े अरमानों से पैसे जोड़जोड़ कर कीमती कालीन खरीदा. पड़ोसिन शांता आई तो कालीन देखते ही बोली, "वाह भई, कालीन है तो बहुत बढ़िया...जरूर सरकारी मारा होगा, अपनी जेब से भला कौन इतना महंगा कालीन खरीदेगा."

नीना का सारा उत्साह पानी हो गया. उसे शांता की सूरत देखना भी बुरा लगने लगा. लेकिन मजबूरी में कुछ कह भी न सकी. आखिर पासपड़ोस का मामला ठहरा. अगर कोई दूसरा बेवकूफी कर भी दे तो कम से कम हमें तो शांत रहना ही चाहिए, वरना बात बढ़ने पर मनमुटाव हो ही जाता है.

हम ने वर्षों की गाढ़ी कमाई जोड़जोड़ कर भूखंड खरीदा था. मेरे पति के मित्र योगेश सपत्नीक हमारा भूखंड देखने गए. वहां पहुंचते ही उन की पत्नी ने मुंह बि[...] कर कहा, "यह भी कोई जमीन है, य[...] भैंसें पाली जा सकती हैं."

यही टिप्पणी उन्होंने हमारे विभ[...] मित्रों से भी की. इस बात से मेरा मन [...] खराब हुआ कि मैं ने उन से बात करन[...] छोड़ दिया. सच तो यह है कि इस प्रकार[...] बातें पूर्वाग्रह से ग्रस्त व्यक्ति ही करते हैं. किसी के प्रति मन में ईर्ष्या, द्वेष भरा ह[...] उस का मवाद इसी तरह मुंह से निकलत[...] अन्यथा मित्रों की उपलब्धि तो अ[...] उपलब्धियों से भी अधिक खुशी देती है[...]

एक बार होली का त्योहार मेरे [...] बेटे प्रत्यूष की वार्षिक परीक्षाओं के [...] बीच में पड़ा. एक तो त्योहार की तैया[...] और ऊपर से बेटे की परीक्षा, कार्यभार [...] तो मेरा रक्तचाप भी असंतुलित हो गया[...] कारणों से कुछ दिनों तक मैं किसी [...] होली मिलने नहीं जा सकी. इसी बीच श्र[...] गौतम हमारे घर आईं और कहने लगीं, [...] होली मिलने हमारे घर क्यों नहीं आई[...]

मैं ने बच्चे की परीक्षा और [...] स्वास्थ्य के बारे में बताया तो वह तुरंत [...] "अरे, यह सब तो न आने के बहाने [...] यह महल्ला छोड़ कर जाने वाली हो, इस[...] सोचती होगी कि अब यहां के लो[...] मेलजोल रखने की क्या जरूरत है."

उन की बात पर मैं भौचक र[...] क्योंकि महल्ला तो हम महीनों बाद [...] वाले थे. क्या बच्चे की वार्षिक परीक्ष[...] अपने स्वास्थ्य संबंधी बातें महत्त्वही[...] सकती हैं?

ऐसा भी नहीं है कि बिना [...] केवल स्त्रियां ही बोलती हैं और पुरुष [...] सोचविचार कर ही या संतुलित ब[...]

कई लोगों में बोलने की आदत कुछ ज्यादा ही होती है. लेकि[...] बोलते चले जाने में वे ऐसा बोल जाते हैं जो दूसरे के मन को चोट पहुंचा जाता है. इसीलिए 'पहले तोलि[...] फिर बोलिए.'



दूसरों की बात न सुन कर केवल अपनी ही कहते रहने से श्रोता बने बैठे पक्ष के मन में कुढ़न पैदा होती है.

बोलते हैं. लालजी बेचारे बेटे की बीमारी के कारण 4 दिन तक दौड़भाग करते रहे. खाना, सोना भूल कर बेटे की तीमारदारी में जुटे रहे. जब बेटे की हालत कुछ संभली तो 5वें दिन कार्यालय पहुंचे. उन के अधिकारी ने देखते ही डांटना शुरू कर दिया, "ऐसे 4-4 दिन बेमतलब छुट्टियां ले कर घर पर बैठ जाते हो...आफिस का काम कैसे चलेगा?"

बेटे की बीमारी से दुखी लालजी तिलमिला कर बोले, "आप 20-20 दिन गायब रहते हैं, तब भी तो आफिस का काम चलता ही है."

बात सच थी, इसलिए अधिकारी को अपना सा मुंह ले कर चुप रह जाना पड़ा. अगर वह पहले ही जबान संभालते, लालजी से 4 दिन अनुपस्थित रहने का कारण पूछते तो वह भला बौखलाते क्यों?

इसी तरह जब सुधाकर बीमार दिलराज का हाल पूछने गए तो उस के दोनों छोटे बच्चों को देख कर नाक सिकोड़ कर कहा, "यार, बचत का अच्छा तरीका है, न नहाने का साबुन खर्च हो, न कपड़े धोने का...और मेहमान तो ऐसे गंदे बच्चों को देख कर बिना चाय, पानी पीए ही लौट जाएंगे."

हमारे समाज में ऐसे बहुत से लोग हैं, जिन की बातें दूसरों को तनावग्रस्त करती हैं. कभी तो ऐसी बातें सुन कर लोग इसलिए मनमसोस कर रह जाते हैं कि छोड़ो कौन झगड़ा बढ़ाए, कभी यह सोच कर चुप लगा जाते हैं कि यदि इन के पास बुद्धि होती तो ऐसी बातें करते ही क्यों? किंतु सदैव ऐसा नहीं होता.

आजकल हर व्यक्ति व्यस्त है. काम की अधिकता, तनावपूर्ण, प्रदूषित माहौल, प्रतिस्पर्धा, संघर्ष की थकान, फिर अनेकानेक चिंताएं मनुष्य को पस्त किए रहती हैं. एकल परिवारों में भावनात्मक असुरक्षा भी घेरे रहती है. ऐसे में मित्रों, संबंधियों, पड़ोसियों, सहकर्मियों या परिचितों की कटु या अवांछित बातें सुन कर सहन करना बहुत कठिन हो जाता है. ऐसी बातें मन में एक स्थायी दरार बना देती हैं.

पुराने समय में साधनों की कमी से एकदूसरे के घर कभीकभी आनाजाना होता था. अब साधन बढ़े हैं तो आनाजाना भी अधिक होने लगा है, किंतु उलझनों, परेशानियों और व्यस्तता में सौहार्दपूर्ण वातावरण बनाए रखने की कला या समझ घटती सी जा रही है. हर कोई अपनीअपनी सुनाना चाहता है, दूसरे की कोई नहीं सुनना चाहता. इस प्रकार श्रोता बने बैठे पक्ष के मन में कुढ़न पैदा होती है.

यों तो सोचसमझ कर बोलने की आदत बचपन से ही डाली जानी चाहिए, किंतु जिन लोगों ने अभी तक इस बात पर ध्यान नहीं दिया है, उन्हें भी 'जब जागे तभी सवेरा' के नियमानुसार अपनी 'बिना विचारे बोलने की आदत' छोड़ देनी चाहिए. कम से कम कोई भी बात बोलने से पहले इतना तो अवश्य ही सोचना चाहिए कि कहीं आप कुछ ऐसा तो नहीं कहने जा रहे, जो दूसरे के सम्मान व स्वाभिमान को आहत करेगा. ●

सुमन सौरभ

किशोरों की
सचेतक पत्रिका



अ
19

आज का युवा अपने कैरियर के प्रति विशेष रूप से
जागरूक है. सुमन सौरभ के इस कैरियर विशेषांक में कइ
हैं जो आप के लिए पथप्रदर्शक सिद्ध होंगे :

कैरियर विशेषांक

ज्ञानवर्धक लेख



- ❐ कंपनी सचिव
- ❐ टेक्स्टाइल इंजीनियरिंग : रोजगार के बेहतर अवसर
- ❐ डाइटीशियन : एक स्वर्णिम कैरियर
- ❐ मल्टीमीडिया में स्वर्णिम भविष्य
- ❐ मौसम विज्ञान में कैरियर
- ❐ कार्टोग्राफी : भविष्य सुरक्षित है

इनामी प्रतियोगिताओं में भाग लीजिए और जीतिए

2,300 रुपए नकद और पुस्तकें

रोचक कहानियां



- ❐ खुशी के आंसू
- ❐ अप्रैल फूल
- ❐ चमत्कारी पत्थर
- ❐ फोन वाला मजनू
- ❐ तलाश अभी जारी है
- ❐ ईश्वर दर्शन

क्या आप जानना चाहते हैं कि...

- ❐ प्लेनेटेरियम क्या होते हैं?
- ❐ विश्व का सब से खतरनाक जानवर कौन सा है?
- ❐ सामान्य तौर पर लगी आग पानी से कैसे बुझ जाती है?

इन के अतिरिक्त अन्य रोचक जानकारी, प्रेरणादायक कविताएं एवं स्थायी स्तंभ

नमूने की प्रति मुफ्त मंगाने के लिए 3.00 रुपए का डाक टिकट भेजें :

सुमन सौरभ
ई-3, झंडेवाला एस्टेट
रानी झांसी रोड,
नई दिल्ली-110055.

नाम ....
पता ....
....
.... पिन कोड

यह अनूठा संग्रह खरीदना न भूलें...

बड़े अस्पताल का सरजिकल वार्ड. हिर्रा अपने पलंग पर लेटा है. दर्द के कारण वह बेचैन है. वह उठता और फिर लेट जाता. दर्द ज्यादा बढ़ गया है. दर्द की लहर उठती तो वह आंखें मूंद लेता.

दुनिया में पैसा बहुत बड़ी चीज है. पैसे के बिना हिर्रा के सामने अंधेरा ही अंधेरा है. उस का पांव सूज कर हाथी के पांव जैसा हो गया है. मवाद अंदर ही अंदर जख्म को काटता है तो उस की तकलीफ बढ़ जाती है. दर्द की एक लहर उठी और उस के मुंह से चीख निकल गई. नर्स दौड़ी, "क्यों चीखता है? दूसरे मरीजों की नींद 'डिस्टर्ब' करता है," कह कर उस ने डांटा. हिर्रा की आंखों से आंसू टपक पड़े. जालिम कराहने भी नहीं देती. प्रत्यक्षतः बोला, "बाई, इतना दर्द हो रहा है कि क्या बताएं," नर्स कुछ बड़बड़ाती हुई, एक गोली खिला कर चली गई. दर्द से उस का बुरा हाल हो रहा था. मानो कोई हथौड़े से चोट कर रहा हो.

वर्षों से हिर्रा का पैतृक पेशा बंद था. बुंदेलखंडी झब्बोंदार जूतों का प्रचलन कम हो गया और जो नई डिजाइन के 'दतियाशाही' जूते वह बनाता था उन की कीमत प्लास्टिक और रबड़ के जूतों से अधिक होती, फलतः उन्हें कोई नहीं खरीदता. मजदूरी से ही अब पेट भरता था. फिर मजदूरी भी कैसी? बाप रे, उस का कोई नियम नहीं. लोग जो दे दें, सो चुपचाप लो. थोड़ी चूंचपड़ की, निकाली तो कल से काम नहीं. जि मिलता है, वह भी बंद.

घर की 2 बीघा जमीन थी, की मिल्कियत. उसी से वर्षा ऋतु की में जो मिल जाता, वही सब कुछ की फसल के लिए सिंचाई का साध था. हिर्रा ने कुआं खोदने का निश्चय कुआं तकावी के लिए अरजी दे दी. तकावी बाबू, पटवारी और गांव सर हाथों से छनछन कर तकावी की रकम ही उसे मिल पाई. कुआं नहीं खुद शरीर पर फोड़े के निशान की तरह उ जमीन पर भी एक धब्बा बन गया थ कुएं जैसा लगता था.

पांव का दर्द फिर कसकने लग ने टंकार मारी और वह पांव से सिर सरसरा गया. कांप उठा वह. उस के और दिमाग के तार झनझना उठे. द टीस से हलक सूख गया. होंठ पपड़ा ऐसा लगा मानो छाती पर से दर्द की रेल खटरपटर करती चली जा रही हो. उद्वेग रुका तो वह बोला, "बेटा, पानी पिल

पलंग के पास ही सहमासहमा सा लड़का, तुरंत पानी लेने चला गया. पा कर उसे कुछ शांति मिली तो वह फाड़फाड़ कर देखने लगा. वह बिलबिला गया था, उस की समझ मे

हड़ताल

कहानी ●
रमेश शंकर सक्सेना

नहीं आ रहा था. सिर चकराने अतीत की स्मृतियां मानस पट उभरने लगीं. आंख बंद कर वह के सिरहाने टिक कर बैठ गया.

जिस वर्ष कुआं तकावी ल उसी साल उस की पत्नी धनिया

सरिता, बीस साल पह

अप्रैल (द्वितीय) 19



हो गई थी. देशी इलाज कराया, पर रोग शांत न हुआ. शहर के अस्पताल ले जाना पड़ा था. दवादारू के खर्च और पथ्यपरहेज के लिए कर्ज लेना पड़ा. पर खुशी हुई कि धनिया की जान बच गई. एक साल सूखा पड़ गया. कैसे दिन थे वे. खाने को तो पूरा नहीं पड़ता था, फिर कर्ज कैसे चुकता? साहूकार अपने कर्ज का तगादा करने लगा. हिर्रा टूट चुका था. वह बेईमान नहीं है. लिया है तो देगा. देरसवेर देगा. पर साहूकार क्यों मानने लगा? हार कर उस ने जमीन साहूकार के हक में लिख दी. हिर्रा बेरोजगार हो गया.

सरकार के हुक्म से सड़क बनवाई गई. सैकड़ों मजदूर काम पर लगे. हिर्रा और उस की धनिया को भी काम मिल गया, लेकिन सड़क भी कब तक बनती. सड़क बन चुकी

गरीबी की मार से अधमरा हिर्रा जैसेतैसे दो वक्त की रोटी जुटा पाता था लेकिन जब से काम करते वक्त पैर की हड्डी टूटी थी इलाज के लिए पैसों की जुगाड़ कर मुश्किल हो गया. उस पर डाक्टरों की हड़ताल ने तो उसे तिलतिल कर मरने को विवश कर दिया.

तो एक बार फिर उस के सामने अंधेरा छा गया. ठेकेदार ने उसे गिट्टी तोड़ने का काम बतला दिया. गिट्टी तोड़ो, हम खरीदेंगे. हिर्रा और धनिया ठेकेदार की गिट्टी तोड़ने लगे. पत्थर की गिट्टी तोड़ना भी कितना कठिन काम है? लोहे के हथोड़े से पत्थर कूटना.

सवेरे से शाम तक वह पत्थर तोड़ता और दिन ढलते ही धनिया को घर भेज देता, ताकि वह रोटी बना ले. सूर्यास्त के साथ ही साथ उस के काम की गति बढ़ जाती. वह एकएक पल का उपयोग करना चाहता. दिन भर की मेहनत और थकान से हाथ ऊपर नहीं उठते थे. हथेलियों में छाले पड़ जाते और फूट जाते, लेकिन एक मजबूरी थी, धन की. प्रत्येक चोट के साथ उस के मुंह से हअ...हुअ...निकलती. पसीने से सराबोर हो

जाता. आंखों के आगे चिनगारियां लगतीं. पेट थरथराने लगता, पर इ निबटाए बिना वह नहीं जाएगा, व के भोजन का जुगाड़ न हो पाएगा लंबी सांस छोड़ता और फेफड़ों के सारी हवा साइकिल के ट्यूब की से निकल जाती. इस समय वह चट्टानों को तोड़ कर छोटा करता. प क्विंटल के पत्थर, फिर एक क्वि किलो...20 किलो...और फिर 1- किलो के टुकड़े कर के छोड़ता ज टुकड़ों को वह और धनिया कल त

पत्थर की एक बड़ी चट्टान मे लोहे की राड फंसाई और जोर लगा तोड़ना, खिसकाना चाहा, पर वह चट्ट से मस न हुई. वह पसीने से भीग ग एक युक्ति सूझी. गैती से चट्टान

एक गड्ढा बनाया और फिर लोहे को दरार में फंसा कर जोर लगाया लगाते ही पत्थर अर्र...र...र से धसत लेकिन उस का पांव पत्थर के नीचे

दूसरे दिन उसे होश आया तो के अस्पताल में पड़ा था. दर्द से छ मजबूरियों और अभावों के ह बिलबिलाता. गांव के डाक्टर का क "हड्डी टूट गई है. एक्सरे कराना हो कुछ नहीं हो सकता. शहर के बड़े में ले जाओ." वह सब सुनता. अस्पताल का खर्चा वह जानता धनिया बीमार हुई थी और उसे वह लिवा ले गया था तो पूरे 20 बीसी रुपए लगे थे. तब तो जमीन थी, सो हो गया था, पर अब किस के भ

मिलेगा और कौन देगा कर्जा?

3 दिन हो गए. सूजन बढ़ती ही गई और पांव में प्राणलेवा दर्द होने लगा. गांव का डाक्टर चिल्ला पड़ा, "क्यों यहीं मारे डालते हो? शहर के अस्पताल ले जाओ."

हिर्रा एक लंबी सांस ले कर चुप साध जाता. कैसे जाए वह शहर के अस्पताल?

पता नहीं, कहां से कैसे धनिया 3 बीसी (60 रुपयों) का इंतजाम कर लाई. ढारढार आंसू बहती उस ने हिर्रा को शहर के अस्पताल इलाज कराने भेज दिया. साथ में बड़ा लड़का हीना गया. अब तक घाव पक चुका था और मवाद के साथ खून भी बहने लगा था. शहर के बड़े अस्पताल में भरती होना भी मुश्किल था. बाहर बरामदे में पूरे 5 रोज पड़ा रहा. तब कहीं उसे पलंग मिला.

र वाह री विडंबना? अगले दिन से ही डाक्टरों की हड़ताल थी. पता नहीं किस बात पर डाक्टरों ने हड़ताल कर दी. उस के पांव में मवाद कुलबुलाता तो दर्द से सिहर उठता वह. असहनीय वेदना से उस का रोयांरोयां कांप जाता. उस का पांव सड़ रहा था और डाक्टर हड़ताल पर थे.

नर्सें कहतीं, "हिर्रा, तेरा आपरेशन होगा. जल्दी आपरेशन हो जाए तो ठीक, नहीं तो मवाद खून के साथ मिल कर पेट में

पत्थर तोड़तेतोड़ते दिनभर की मेहनत से वह पसीने से नहा जाता.



पहुंच कर खतरा पैदा कर देगा. किसी प्राइवेट अस्पताल में जा कर आपरेशन करा ले. यहां तो कोई ठीक नहीं. कब डाक्टर काम पर लौटें."

कुछ समझदार, पढ़ेलिखे मरीज कहते, "सरकार डाक्टरों से बात कर रही है. हड़ताल जल्दी ही टूटेगी. आप देखना 2-4 दिनों में ही सारे के सारे डाक्टर फिर काम पर आ जाएंगे."

पर कुछ लोग कहते, "अरे, नहीं, सरकार झुकने वाली नहीं है. यह कोई तरीका है, अपनी शर्त मनवाने का?"

दूसरा कहता, "हां, भई, यह तो सच है. हमें हड़ताल कर के काम बंद नहीं करना चाहिए. हम तो जैसे हैं सो हैं, पर उसे देखो कितनी तकलीफ है. बेचारा मर रहा है," और हिर्रा के पलंग की ओर उंगली से इशारा करता.

हिर्रा सब कुछ सुनता, देखता, पर कुछ भी न समझ पाता. सरकार क्या होती है? हड़ताल क्यों हुई? डाक्टर क्या चाहते हैं और सरकार क्या कहती है? उसे कुछ भी मालूम नहीं. वह कुछ नहीं जानता. जानने की जरूरत भी नहीं, वह तो सिर्फ इतना जानता है कि पांव में सूजन बढ़ रही है. दर्द असह्य होता जा रहा है. इस का जल्द ही कोई इलाज हो जाए, जिस से उसे आराम मिल जाए. पिछले 15 दिन से सोया नहीं था वह. सरकार...डाक्टर...कंपाउंडर...नर्सें...नेता...कोई तो गरीब की पुकार सुने.

रात का अंधकार घना होता जा रहा था और हिर्रा का दर्द फिर कसकने लगा. एकाएक वार्ड की बिजली बुझ गई. शायद लाइट चली गई थी. कमरे में अंधेरा भर गया. कुछ मरीज सो रहे थे और कुछ को झपकी आ रही थी, लेकिन हिर्रा का दर्द फिर बढ़ने लगा. उस की आंखों में नींद नहीं थी. वह कराहने लगा, तभी उस के पलंग के पास से नर्स निकली. मन का बोझ कम करने के लिए उस ने पूछा, "बहनजी, हड़ताल कब खतम होगी?"

नर्स तमक उठी, आंखें तरेर क
"क्यों, क्या करना है, तुझे हड़ता
वह सिहर गया. नर्स की भ
से भयभीत हो गया. हिम्मत कर
"पांव का आपरेशन जल्दी हो जा
दर्द नहीं सहा जाता."
"हूं, इतनी फिक्र है तो किसी
में जा कर इलाज कराओ. कितनी ब
कौन जानता है, कब हड़ताल खत
पर तू सुनता ही नहीं. मरना है तो
क्या करें? जख्म सड़ रहा है."
हिर्रा सन्न हो कर रह गया.
होते तो आज यह हालत न होती. प्र
रुपया लगेगा और वही उस के पास

दर्द ने ठोकर मारी. उस का मनप्राण
गया. दर्द के कसकते ही बिच्छुओं
जैसी पीड़ा से वह तिलमिला उठा.
कसकते ही उसके शरीर का रोमरो
और दिमाग का तारतार झनझना उ
की असहनीय वेदना का उद्वेग संभ
संभल रहा था. अब बड़ी विचित्र सि
दर्द अधिक होने के कारण सहन
रहा था. नर्सें रोने नहीं देती थीं. व
लगा, 'मैं...मैं मर क्यों नहीं जा
असहनीय पीड़ा से तो मरना अच्छा
क्या बुलाने से मौत आती है? क
'मांगने से मौत भी नहीं मिलती.'
हिर्रा आंखें मींच कर गुड़ीमुड़ी
और असह्य पीड़ा से बिलखने लगा
चीखें बढ़ने लगीं. दूसरे मरीज जाग
दौड़ पड़ीं. अब उस का दर्द काबू
हो चुका था. वह दर्द से छटपटाता
फटकारफटकार कर चिल्ला रहा
का लड़का दीना झारझार आंस
"बापू, धीरज रखो, सबेरे दूसरे अ
चलूंगा. किसी तरह रात कटे." पर
जानता, उस का यह कथन कितन
था. और हिर्रा कितना धीरज रखे
के धैर्य का बांध टूट चुका था अ
रुका सैलाब बहने लगा था, बह
रहा था.

गुजर गया वक्त

गुजर गया बातों का मौसम,
ये है आंखों का मौसम,
जैसे ही वो सम्मुख आए,
ठहर गया सांसों का मौसम.

टूट गया गजरा गेंदे का,
लो आया है जुल्फों का मौसम,
पलपल रीत चली वयः सरिता,
रुका नहीं बरसों का मौसम.

किस विध रैन कटे विरहा की,
आया है यादों का मौसम,
आठ प्रहर तप कर सूरज में,
महक उठा सपनों का मौसम.

ख्वाब सुहाने देखो 'कृष्णा',
दुष्कर है रातों का मौसम.

–कृष्णा कुमारी



सुगरा बीबी का इंतकाम

कहानी ● दिग्विजय मि



"आदमी सब अच्छे होते हैं," सुगरा बीबी, जो मुझे पुत्रवत मानती थीं, मेरी उपस्थिति में दीवारों को सुनाती हुई कहा करती थीं, "कोई आदमी बुरा नहीं होता, बुरा तो वक्त होता है. लेकिन फिर भी कुछ लोग पैदाइशी शैतान होते हैं. जैसे यह मुआ मुंशी. मैं मानती हूं कि सब से मुहब्बत करना...दूसरे के लिए कुछ करने की ख्वाहिश रखना बहुत अच्छी बात है, लेकिन फिर भी समझदार आदमी को देखना, परखना चाहिए कि मुहब्बत की दौलत कहीं वहशी...दरिंदे न बटोर लें."

उन के यह सब कहने का मकसद सिर्फ इतना होता था कि मैं जैसे भी हो, मुंशी फिदा हुसैन का साथ छोड़ दूं, पता नहीं क्यों सुगरा बीबी को मुंशीजी एक आंख न भाते थे. जब भी वह उन के सामने पड़ जाते या कोई उन का जिक्र उन के सामने छेड़ देता, तो उन की गालियों का पिटारा खुल जाता.

सुगरा बीबी को जब मैं प्यार से 'अम्मां' कहता तो वह खुश हो जाया करती थीं. वह मुझे हाथ पकड़ कर भीतर ओसारे में ले जातीं तथा अपने पोपले मुंह पर एक सलोनी मुसकान सजाते हुए चांदी का एक रुपया मेरी हथेली पर धर देतीं. फिर कहतीं, "इतवारी लाल के पोते...ले, रख ले...और अच्छी चीज खा लेना. खायापीया ही आदमी का साथ देता है. पर अपनेआप को उस लुच्चे मुंशी से बचा कर रखना. नासपीटा... निरबंसिया...सौ रांड़ों का रंडुआ...कोई नेक बंदा मूसली से उस का चेहरा कुचल देता तो मैं पूरे महल्ले को असली घी के पुए खिलाती."

60 की उम्र छू रहे मुंशी फिदा हुसैन



"अम्मां, उस से मुझे चार पैसे मिल जाते हैं, अब आती लक्ष्मी को कैसे लात मारूं?" उस ने सुगरा बीबी से कहा.

सुगरा बीबी से कोई 10 बरस बड़े थे. सुगरा बीबी बेऔलाद बेवा थीं. उन के शौहर चिराग अली रोशनुद्दौला कचहरी में अहलमद थे. तनख्वाह तो खैर जो थी, सो थी, मगर ऊपर की आमदनी से मालामाल थे. 45 की उम्र में चिराग मियां चल बसे थे. लू लगी और देखतेदेखते सब कुछ खत्म हो गया.

सुगरा बीबी अपने मियां को बहुत चाहती थीं. कहते हैं कि वह अपने जमाने में बला की खूबसूरत थीं. मगर मियां के मरते ही रूपरंग उन से ऐसे विदा हो गया, जैसे चिड़ियां सूखे पेड़ से रुखसत हो लेती हैं. 4-5 महीनों में उन के बाल सफेद हो गए...दांत गिरने लगे और सोने सा रंग झुलस कर तांबे जैसा हो गया. उन्हें पेंशन मिलती थी, पास में मियां का छोड़ा सरमाया था. मकान चिराग अली ने अपने जीवन काल में खरीद लिया था. खुद भी दिल की दौलत से मालामाल थीं. महल्ले के आवारा कुत्तों, बिल्लियों, कबूतरों, चिड़ियों से ले कर मुझ जैसे मुफलिस इनसानों तक को वह मुहब्बत के साथ खिलायापिलाया करती थीं.

मुंशी फिदा हुसैन महल्ले की एक अजीम हस्ती थे. वह सब को बड़े फख्र से सीना फुला कर बताया करते थे, "अगर सरकार ए बरतानिया की खिदमत में रहा होता तो आज मेरे पास क्या नहीं होता, मोटर...बंगला...कार...ऊंचा ओहदा...आगे-पीछे खिदमतगारों की रेलपेल मची रहती. लेकिन वतन की मुहब्बत पर मैं ने सब कुछ कुरबान कर दिया. गांधीजी का हुक्म मेरे लिए खुदा का फरमान बन गया. अब तो बस, एक ही तमन्ना है कि नापाक मुल्क से रुखसत हों और मैं आजाद में सांस लूं."

जब सुगरा बीबी फिदा हुसैन की बातें सुनतीं तो आग हो जातीं, कहतीं, " का जाया...आज भी अगर कोई इसे गो मारीसन का नाम भर सुना दे तो मरदू मुंह तारकोल हो जाए."

मुंशी फिदा हुसैन सुगरा बीबी से खाते थे. वह कभी अपनी जबान पर इस को न लाते थे. हमारे ही महल्ले में उन पक्का मकान था. वह चिरकुंआरे थे. मुं सब को निहायत मासूमियत के साथ ब करते, "हजरात, जोरू पालना बड़ा ई का काम होता है. मैं हमेशा शादीब्याह कोसों दूर रहा."

उधर सुगरा बीबी फिदा हुसैन कुंआरेपन का जिक्र छिड़ने पर कहा कर "हमारे जमाने में मांबाप अपनी औलाद इतने दुश्मन भी नहीं हुआ करते थे कि अपनी कानीकुतरी या कालीकलूटी बेटि तक का पल्ला फिदा हुसैन जैसे जलीलों थमा देने की हिमाकत करते."

यों तो मुंशी फिदा हुसैन खुद को बहुत बड़ा देशभक्त मानते थे पर सुगरा बीबी को वह एक आंख नहीं भाते थे. जरा उन का जिक्र आया नहीं कि बीबी की गालियों का पिटारा खुल जाता. आखिर मुंशी से उन की इस दुश्मनी का कारण क्या था?

सन 1946 का जमाना था. फिदा हु 'भारत छोड़ो आंदोलन' के सिलसिले गिरफ्तार हुए, पर जल्दी ही रिहा कर गए थे. तब मैं इंटरमीडिएट में पढ़ता मुंशी फिदा हुसैन के जेल से रिहा होने बाद एक दिन मुझे सुगरा बीबी ने अपने बुलाया. आदत के मुताबिक मुझे ख फुलकियां और मलाई की गिलौरियां खिल फिर कहा, "क्यों रे छुट्टन, क्या सच



"चलो, उठ कर बैठो और लिखो कि मैं अपने नापाक कारनामों पर शर्मिंदा हूं, इसलिए नौकरी से इस्तीफा देता हूं," श्रीमती मारीसन ने कागज व पेन निकाल कर मुंशी को देते हुए कहा.

फिरंगी मुल्क छोड़ कर जा रहे हैं?"

"हां, लगता तो ऐसा ही है."

"अगर वे चले गए तो मुल्क का क्या होगा?"

"होगा क्या, कांग्रेस राज करेगी," मैं ने संक्षिप्त सा उत्तर दिया.

"कांग्रेस यानी कि यह माटी मिला मुस्टंडा फिदा हुसैन?"

"हां, अम्मां."

सुगरा बीबी ने मेरी बलाएं लीं और कहा, "अच्छा किया, जो तू ने मुझे पहले से बता दिया. अब देखना, इस मरदूद को मैं कैसे जूतियां लगवा कर कांग्रेस से निकलवाती हूं."

मुंशी फिदा हुसैन महल्ले के ही नहीं, वरन शहर के नामीगिरामी नेता थे. कांग्रेस के परचे बांटना, देवनागरी में लिखापढ़ी करने का काम मुंशीजी मुझ से लेते थे. एवज में माकूल उजरत देते थे. सो मेरा मुंशीजी के यहां आनाजाना था. बस, फर्क केवल इतना था कि सुगरा बीबी से मेरा एक प्यासी मां की ममता वाला नाता था, जबकि मुंशीजी से मेरा रिश्ता पेशेवराना, यानी नौकर और मालिक या नेता और झंडाबरदार वालंटियर का था.

मुंशीजी नास्तिक किस्म के आस्तिक थे. एक दिन जब मैं उन के कमरे में बैठा चाय पी रहा था, उन्होंने समझाया, "देखो छुट्टन, रंडी के कोठों, पीर, औलियों के तकियों और सियासती मजलिसों में माहौल फर्श से ले कर अर्श तक फरेब में डूबा रहता है. कोठों पर रंडियां पेट जाई बेटियों, तकियों में पीर, औलिए 'खुदा' तथा सियासती मजलिसों में नेता जनता के जज्बातों से पेशा करवाते हैं. जिंदगी में अगर तुम कुछ बनना चाहते हो तो इन तीनों का साथ कभी न छोड़ना. शक्ल चाहे जैसी भी हो, मगर आने वाले दिनों में ये तीनों हुनर ही तुम्हारे काम आएंगे, वरना सारी उम्र जूतियां चटकाते घूमोगे और हासिल कुछ न होगा."

मुंशीजी सुधार, उद्धार एवं परोपकार के बहाने तीनों जगहों पर जाते थे. बरतानिया सरकार का जलाल उतार पर था. पुलिस जानती थी कि मुंशी फिदा हुसैन जैसे लोग आने वाले कल के हाकिम होंगे. सो पुलिस वालों से उन की दांतकाटी यारी हो गई थी. नतीजतन अब चकलों में पुलिस की बदकारियां खत्म हो गईं तथा मुंशीजी का सुधारवाद करवटें लेने लगा था. शहर के तमाम तकियों, चकलों पर मुंशीजी का दबदबा कायम हो गया था. दोनों जगहों पर वह कांग्रेस के सुधारवाद की ऐसी खौफनाक तसवीर पेश करते थे कि सुनने वाले की जान सीने से उठ कर हलक में अटक जाती थी.

पीर, औलियों के लिए कव्वालियां तथा कोठों के लिए गजलें, गालियां वगैरह लिखने का काम मुंशीजी ने पकड़ लिया था. उन दिनों गांवगंवई के शादीविवाहों में तवायफों के मुजरों तथा मुजरों में गालियों का बड़ा जोर होता था. प्रत्येक बड़े आदमी की बरात में तवायफें बड़ी फूहड़, गंदी गालियों वाले गीत गा कर बरातियों व घरातियों, दोनों से खूब सारे इनामोइकराम वसूलती थीं.

अब तक एक तरह से यह बात साफ हो चुकी थी कि अंगरेजों को हिंदुस्तान छोड़ना होगा तथा मुल्क पर कां
करेगी. सो एक बड़े आदमी के रूप
का नेता होने के कारण मुंशी फि
को शादीविवाह की महफिलों में बड़े
के साथ बुलाया जाता था. ऐसे मौ
वह मुझे भी ले जाते थे.

ताअल्लुकेदार सूरजभान सिंह के
पर हुए मुजरे में छोटी व बड़ी नजमा
का रंग जमा दिया. वे लड़की वालों
हो गई थीं, सो उन्होंने लड़के वालों
सुरताल के साथ गालियां सुनाईं...

'बन्ने की अम्मां बड़ी छिनरिया
रुपइया मोल,
बन्ने की भौजी के बीस रुपइया,
ननद अनमोल,
छोटे दरोगा से नैना लड़ाए, कहे ल
रुपइया मोरा मोल.'

इस गाली पर पूरी महफिल झूम
झमाझम चांदी व गिलट के रुपए ब
लगे. मुंशीजी ने भी दरियादिली के साथ
लुटाए.

दूसरी गाली, गाली न हो कर विर
की व्यथा थी, मगर यह भी खूब जमी

'मत मारो तमंचा हवेली में,
सोने की थाली में ज्योना परोसा,
पिया जाए बसा है बरेली में.
मखमल के गद्दे पर तोशक लगा
सजना को बुलाया हवेली में,
कोई जा के खबर दो बरेली में.'

मुजरा खत्म होने के बाद मुंशी फिदा
ने कौमी एकता की गजलें गाईं और
के लिए चंदा बटोरा. रास्ते में 10-10
नोट मुझे थमाते हुए कहा, "कहो
आज क्या समझे?"

मैं कुछ नहीं समझा था, इसलिए
की बात का कोई उत्तर न दिया.

"पहली बात तो यह है कि मह
में गाए गए दोनों गाने मैं ने लिखे थे,
लखनऊ पहुंच कर मुजरे में मिली
रकम दोनों नजमाओं से वसूल लूंगा...
दूसरी बात यह है कि मैं ने कांग्रेस का

बुलंद किया...और तीसरी..."

"अब तीसरी बात मत कहिए," मैं उस महफिल में हिस्सा लेने के लिए स्वयं को कोस रहा था, "हमारे हिंदुओं में एक देवता हुआ करते थे, बावन अवतार. उन्होंने 2 डगों में पूरी धरती नाप ली थी. अगर वह तीसरा डग धरते तो गजब हो जाता. वैसे ही है, आप की तीसरी बात. आप की 2 बातें ही क्या कम हैं, जो तीसरी की जरूरत पड़े."

अगले दिन सुगरा बीबी ने मुझे बुलाया और डांटते हुए कहा, "तो तू नहीं मानेगा?"

"क्यों नहीं मानूंगा?" मैं ने मासूमियत के साथ जवाब दिया.

"मुंशी का साथ नहीं छोड़ेगा...उस दोजख के कीड़े के साथ नाचमुजरे देखेगा?"

"अम्मां, उस से मुझे चार पैसे मिल जाते हैं, अब आती लक्ष्मी को कैसे लात मारूं?"

"कोई और काम कर...उस से भी पूरा न पड़े तो मुझे बता. मगर मुंशी से तोबा कर."

"अच्छा, सोचूंगा," मैं ने बात खत्म करने की गरज से कहा.

"तू सोचता रह, बाकी मैं ने फैसला कर लिया है कि तेरा और उस नामाकूल मुंशी का साथ छुड़ा कर रहूंगी...देखूंगी, कैसे वह मरदूद तुझे रंडी, मुंडियों की सोहबत में डालता है. उस का मुंह न नोंच लूं तो मुझे सुगरा नहीं डोमिनी की औलाद कहना."

इस वार्त्ता के एक महीने बाद मुंशी फिदा हुसैन कांग्रेस छोड़ कर मुस्लिम लीग में शामिल हो गए. यह बात खूब जोरशोर के साथ समाचारपत्रों में छपी. एक ने कहा कि मुंशीजी ने कांग्रेस छोड़ी तो दूसरे ने कहा कि वह कांग्रेस से निकाल दिए गए. फिर उन्हें मुस्लिम लीग भी छोड़नी पड़ी और 1947 में वह पाकिस्तान चले गए.

मुंशीजी की रवानगी के दिन सुगरा बीबी बहुत खुश थीं. चहक कर मुझ से बोलीं, "मैं कहती न थी कि इस मुंशी के बच्चे को मैं गन्ने सा छील कर धर दूंगी. अब बोल, मैं ने फिदा हुसैन को जहन्नुम रसीद कर दिया या नहीं?"

मुंशीजी का कांग्रेस से संबंध विच्छेद, फिर मुस्लिम लीग से सफाई और सुगरा बीबी का दावा कि यह सब मैं ने किया है... मेरी तो खोपड़ी घूम गई. मैं ने सुगरा बीबी के दोनों पैर पकड़ लिए और गिड़गिड़ा कर पूछा, "अम्मां, मुझे भी बताओ कि किस्सा क्या है? तुमने कैसे फिदा हुसैन जैसी तोप के मुंह में कील ठोंक दी?"

सुगरा बीबी ने ठंडी सांस भरी, "भइए, मर जाऊंगी, मगर यह राज किसी को न बताऊंगी कि मैं ने फिदा हुसैन जैसे जल्लाद के कैसे कान कतरे."

"मगर अम्मां..."

"नहीं, बेटा...अब तू बता कि मैं अपने मरहूम शौहर की इज्जत को कैसे बट्टा लगा दूं. राज का राज रहना ही बेहतर है."

धीरेधीरे मेरी आर्थिक स्थिति सुधरी और शादी भी हो गई. सुगरा बीबी ने बेटी की तरह मेरी पत्नी को प्यार किया, उस की



गमी

चारों तरफ हरियाली
कहीं कुछ कमी थी
खुशियों का झोंका
आई चुपके से गमी थी.

–वर्षा दीपक

…लाएं अपने सिर लीं, उसे पुराने जमाने के अपने गहने पहनाए, शादी में उसे जरी का जोड़ा दिया. 2 साल तक उन्होंने मेरी पत्नी के साथ खूब लाड़ लड़ाए. अपना मकान मुंह दिखाई में मय रजिस्ट्री के कागजात के साथ उसे दे दिया. उस के बाद एक दिन हमें बिना कोई तकलीफ दिए दिल का दौरा पड़ने के कारण वह इस दुनिया से कूच कर गईं. हम ने इसलामी विधि से उन का अंतिम संस्कार किया. हम पूरे 40 दिनों तक उन की कब्र पर अगरबत्तियां, मोमबत्तियां जलाते रहे.

41वें दिन मेरी पत्नी ने कहा, "अम्मां बला की बहादुर औरत थीं."

"हां," मैं ने भीगे मन से कहा, "उन के मन में ममता का सागर लहराता रहता था."

मेरी पत्नी ने रूमाल से भीगी आंखें पोंछीं और कहा, "अम्मां ने अपनी मौत के बाद एक बात तुम्हें बताने को कही थी. कहो तो बताऊं?"

मैं हैरानी से उस की ओर देखने लगा.

मेरी पत्नी ने उस रहस्य से परदा उठाना शुरू किया, "अम्मां अपने जमाने में अपूर्व सुंदरी थीं. मांबाप उन के बचपन में गुजर गए थे, सो उन्हें मामामामी ने पाला. मामा बिसातखाने का ठेला लगाते थे तथा मामी कपड़ों पर बेलबूटे बना कर कसीदाकारी कर के डेढ़दो रुपए कमा लेती थीं. दोनों गरीब थे, पैसेपैसे को मुहताज, पर उन्होंने अपनी भानजी सुगरा बीबी की हर जिद, हर शौक पूरा किया. एक मौलवी रख कर उन्हें फारसी, उर्दू की तालीम दिलाई. वह जहीन थीं, सो काम लायक पढ़लिख गईं.

"मौलवी की तालीम तथा निसंतान मामामामी की अच्छी परवरिश ने उन्हें एक स्वाभिमानी महिला बना दिया. 17 साल की उम्र में उन्होंने सुगरा बीबी की शादी चिराग अली के साथ कर दी. चिराग अली साधारण शक्लसूरत के एक नेक इनसान थे, अपनी बेगम पर जान छिड़कते थे. मगर मिजाज से जरा दब्बू, डरपोक किस्म के इनसान थे. वह रोशनुद्दौला कचहरी में अहलमद थे.

"उन दिनों रोशनुद्दौला कचहरी… फिदा हुसैन बड़े बाबू हुआ करते… कचहरी में उन का जबरदस्त दबदबा… की कलम तथा जबान में न जाने कै… था कि कचहरी के सभी गोरे साहब… मुट्ठी में रहा करते थे. अपने गोरे अ… की शह पर जो स्याहसफेद मुंशीजी… थे, करते थे. उन की मरजी के बगैर व… में परिंदा तक पर न मार सकता था…

"एक दिन मुंशी फिदा हुसैन ने… अली को अपने कमरे में बुलवाया और… 'चिराग मियां, जिले का नया हाकिम मा… तुम से सख्त नाराज है. मेरा अंदाजा… अगली पहली तारीख को नौकरी से तु… छुट्टी हो जाएगी.'

"चिराग अली घबरा कर रोने… 'मगर मेरी खता?'

"मुंशीजी बोले, 'वही पु… शिकायत...मारीसन साहब कह रहे थे कि… बिना रिश्वत लिए किसी का कोई काम… करते हो.'

"चिराग अली ने सफाई पेश की,… तो सभी लेते हैं.'

"मुंशीजी ने फटकारा, 'सब की छ… अपनी बात करो. मारीसन साहब मुझ से… रहे थे कि...'

"चिराग अली ने मुंशीजी के दोनों… पकड़ लिए और फूटफूट कर रोने लगे…

"मुंशीजी ने चिराग अली को अपने… से उठा कर कुरसी पर बिठाया. फिर… सोच कर कहा, 'सुना है कि तुम्हारी… मशहूर बावर्ची शेखावत से भी ब… बिरयानी और कबाब बनाती है.'

"चिराग अली अब भी रो रहे थे,… बनाती तो है. वैसे मैं ने शेखावत के… आज तक कभी कुछ नहीं खाया, सो… कह सकता हूं कि उस से बेहतर बनात… या नहीं.'

"मुंशीजी मुसकराए, 'खैर, तु… जानो, पर मैं तुम्हारी बेगम के हुनर…

ानता हूं. कल रात मैं तुम्हारे घर खाना
खाऊंगा...एक अद्धा व्हिस्की का मंगा लेना,
तुझे तुम खुश कर देना, मैं मारीसन को खुश
कर दूंगा. बस, तुम्हारी नौकरी पक्की.'

"चिराग अली ने यह बात अपने साथियों को बताई तो एक ने कहा, 'यह फिदा हुसैन दचलन और कमीनी चीज है. नौकरी प्यारी तो वह जैसा कहे वैसा करो...बाकी वह म्हारी बेगम को छोड़ेगा नहीं. ऐसी हरकत ह बहुतों के साथ कर चुका है.'

"चिराग अली ने सुगरा बीबी के दोनों रण पकड़ कर उन्हें अपनी समस्या सुनाई. मिनट तक वह खामोश रहीं, फिर कुछ ोच कर अपने मियां से कहा, 'जब कचहरी ा पूरा अमला तुम्हें फिदा हुसैन की बात ान लेने का मशवरा दे रहा है तो फिर मैं ी क्या कर सकती हूं. खैर, कल उसे खाने बुलाओ...बल्कि खाने के वक्त तुम चले ाना. ख्वाहमख्वाह खुद को खुद के सामने यों जलील करोगे, आखिर हम कर ही क्या कते हैं...'

"अगले दिन सुगरा बीबी कलक्टर के ाले पर गईं. साहब दौरे पर गए हुए थे. साहब लान में अपने दोस्तों के साथ नस खेल रही थीं. सुगरा बीबी को लान पास खड़े देख कर वह चिल्लाईं, 'कल ना, आज साहब नहीं हैं.'

"सुगरा बीबी ने लपक कर मेम साहब दोनों पैर पकड़ लिए तथा फूटफूट कर लगीं. श्रीमती मारीसन झुंझलाईं, 'पैर ड़ कर अपनी बात कहो.'

"सुगरा बीबी बोलीं, 'हुजूर, आप त हैं और मैं भी औरत हूं. आप औरत के नाते समझ सकती हैं कि हमारा सब कीमती गहना हमारी अस्मत होता है और अस्मत आप के साहब के नाम पर आज बान होने वाली है.'

"खेल खत्म होने के बाद श्रीमती सन ने सुगरा बीबी की पूरी बात सुन कहा, 'शाम को हम भी तुम्हारे घर गे और खाना खाएंगे. वहीं उस सूअर मुंशी को देखेंगे. अपना पता दो और मेरे आने की बात किसी से न कहना.'

"अगले दिन श्रीमती मारीसन समय से चिराग अली के घर पहुंच गईं. वह लंबीचौड़ी 35 साल की बहादुर औरत थीं. उन का कद साढ़े 5 फुट से कुछ ऊपर था. सुगरा बीबी ने उन्हें दालचीनी वाली चाय पिलाई, शाही कबाब खिलाए तथा सूरज डूबतेडूबते भीतर ओसारे में छिपा दिया.

"रात को साढ़े 8 बजे मुंशी फिदा हुसैन आए. दरवाजा खुला था, सो छड़ी से फर्श पर 'ठकठक' की आवाज करते हुए भीतर हो लिए. सुगरा बीबी ने बिना किसी परदे के उन का स्वागत किया. उन्हें देख कर फिदा हुसैन को लगा कि वह 'जन्नत' में पहुंच गए हैं. घर से वह थोड़ी सी पी कर चले थे, लड़खड़ाती आवाज में पूछा, 'चिराग मियां कहा हैं?'

> **सुख**
>
> *सुख, शांति इस बात पर निर्भर है कि आप क्या दे सकते हैं, न कि इस पर कि आप क्या ले सकते हैं.*

"सुगरा बीबी ने सहजता से उत्तर दिया, 'गांव गए हैं, कल सुबह लौटेंगे...फिर जिस लिए आप तशरीफ लाए हैं, उस में उन का क्या काम...'

"मुंशीजी खुश हो गए और बोले, 'माशा अल्लाह, जहीन हो, समझदार हो.'

"इतना कहने के बाद उन्होंने अपनी अचकन उतारी, तांबे के तामलोट में भरे पानी से हाथपैर धोए, कुल्लियां कीं. पाजामा उतारा, झोले से निकाल कर लुंगी पहनी, जूते उतार कर चिराग अली की चप्पलें पहनीं और सेहन में पड़े पलंग पर पसर गए.

"तब सुगरा बीबी ने पूछा, 'बंदी हाजिर है...हुक्म हो...'

"फिदा हुसैन हंसे, 'हुक्का भर लाओ. वाह, कितनी हसीन रात है.'

"इस के बाद पूर्व निर्धारित योजना के अनुसार सुगरा बीबी भीतर चली गईं और जादुई चिराग के जिन्न की तरह श्रीमती

मारीसन मौके पर प्रकट हो गईं, 'कमीने, दोजख के कुत्ते, तुम्हीं मुंशी फिदा हुसैन हो?'

"मुंशीजी चकराए, 'हुजूर, आप...?'

"श्रीमती मारीसन ने अपनी दोनों बांहें फैला कर कहा, 'मैं तुम्हारे कलक्टर की बीबी हूं. आओ, मेरी बांहों में समा जाओ. आज इन्हीं हाथों से मैं तुम्हारा कीमा बनवा कर इस गरीब औरत को खिलवाऊंगी, जिस की अस्मत तुम लूटना चाहते हो.'

"फिदा हुसैन नंगे पैर दरवाजे की तरफ भागे, लेकिन दरवाजे पर कुंडी और कुंडी पर ताला चढ़ा हुआ था. श्रीमती मारीसन ने खुले आंगन में दौड़ादौड़ा कर मुंशीजी को चपतियाना शुरू किया. 5 मिनट की जद्दोजेहद के बाद वह जमीन पर गिर गए. उन की पूरी काया पर बूट की ठोकरें बरसाते हुए उन्होंने कहा, 'तुम खुद त्यागपत्र दोगे या तुम को जूतियां लगवा कर बरखास्त करवाऊं?'

"मुंशी रिरिआए, 'हुजूर, इतनी बड़ी सजा न दें.'

"मेम ने मुंशीजी के दोनों गालों पर 5-5 तमाचे और खोपड़ी पर हथौड़ी की तरह मुक्के ठोंकते हुए कहा, 'बोलो, त्यागपत्र दोगे?'

"मुंशी को लगा, उन के चारों तरफ सब कुछ घूम रहा था. अगर 2 थप्पड़ और लग गए तो वह मर ही जाएंगे. अतः बोले, 'आप कहती हैं तो जरूर त्यागपत्र दे दूंगा. हुजूर यू माई मदर...माई फादर...माई गाड...एवरी थिंग...'

"श्रीमती मारीसन ने अपने बैग से कागज व पेन निकाल कर मुंशी को दिया और कहा, 'चलो, उठ कर कुरसी पर बैठ जाओ और लिखो...'जनाब, कलक्टर साहब...मैं खुदा को हाजिरनाजिर जान कर तसलीम करता हूं कि मैं रिश्वतखोर कर्मचारी हूं. अफसरों का झूठा भय दिखा कर अपने नीचे काम करने वालों की बहन, बीवियों एवं बेटियों के साथ बदफेली करता हूं. अपने नापाक कारनामों पर मैं शर्मिंदा हूं. इसलिए मैं अपनी मरजी से...अपनी नौकरी से सही होशोहवास में इस्तीफा देता हूं.

"सुगरा बीबी, जो कायदे से [illegible] होनी चाहिए, के साथ बदफेली [illegible] कोशिश करते समय मुझे कलक्[illegible] की मेम साहब ने रंगे हाथों पक[illegible] साहब, श्रीमती मारीसन ने इस ग[illegible] को करने की कोशिश करते हुए [illegible] हाथों पकड़ा है. लिहाजा, इन्होंने म[illegible] जूतों से पीटा, जो कि मेरे गुनाहों की [illegible] सजा है."

"इतना लिखवाने के बाद उ[illegible] तहरीर पर फिदा हुसैन के हस्ताक्षर [illegible] फिर तहरीर ले कर मुंशी फिदा हु[illegible] पीठ पर एक करारी लात मारी, जिस[illegible] उन के बदन से अलग हो गई और व[illegible] में आ गए. इस से पहले कि उन [illegible] पर दूसरी लात पड़ती, मुंशीजी दर[illegible] जो अब तक खोल दिया गया था, ते[illegible] रफ्तार से भागे.

"इस के बाद श्रीमती मारीसन[illegible] तहरीर सुगरा बीबी को थमाते हुए क[illegible] कागज इस शैतान मुंशी की मौत का [illegible] है. इस के दम पर तुम जो चाहो, [illegible] करवा सकती हो...बाकी इस शैतान [illegible] कल ही साहब से कह कर नौ[illegible] निकलवाती हूं.'"

इतना कहने के बाद मेरी पत्नी [illegible] "अगले दिन मुंशी ने नौकरी से इस[illegible] दिया. इस के बाद सुगरा बीबी अप[illegible] के साथ आराम से रहती रहीं. उन[illegible] लड़के हुए मगर दोनों पैदा होते ही च[illegible] बाद में वह औलाद के लिए तरसती [illegible] हो गई. बेचारी तुम्हें अपना लड़का [illegible] थीं, मगर धर्म के अंतर के कारण [illegible] बात को दुनिया से बताने में हिचक[illegible] इसी तहरीर को अपना अस्त्र बना क[illegible] धमकी दे कर मुंशी को कांग्रेस, फिर [illegible] लीग तथा अंत में हिंदुस्तान छोड़ने प[illegible] किया."

अपनी पत्नी से पूरी कहानी [illegible] बाद मैं ने कहा, "आमीन, सुगरा बी[illegible] मेरी अम्मां और तुम्हारी सास...जिं[illegible] जिंदाबाद..."

हमारे समाज में कुछ परिवारों में मान्यता है कि कार्तिक ाह की पूर्णिमा की चांदनी में खा गया भोजन करने से शरीर वस्थ व निरोग रहता है, क्योंकि स रात 'अमृत वर्षा' होती है.

इसी अंधविश्वास के लते गत वर्ष हमारे पड़ोस के क परिवार ने खीर बनाई और से पूर्णिमा की चांदनी में रख या.

प्रातः घर के सभी सदस्य ड़े चाव व उत्साह से खीर खाने ठे, परंतु उसे खाते ही सभी को लटियां होने लगीं और सभी मार हो गए. उन्हें तुरंत ही स्पताल ले जाना पड़ा.

बाद में ज्ञात हुआ कि खीर रात्रि को छिपकली का एक टा बच्चा गिर गया था.

–रुनझुन श्रीवास्तव

*

रे एक मित्र के पिता बहुत अंधविश्वासी और रूढ़िवादी दिवाली के दिन लक्ष्मीपूजन उपरांत घर खुला छोड़ने से मी घर में प्रवेश करती है और धनधान्य से संपन्न होता है, ी उन की मान्यता है.

अपनी इसी मान्यता के ते पिछली दिवाली को मीपूजन के पश्चात घर में क्ष्मीवास' के उद्देश्य से उन्होंने के सारे दरवाजे और ड़कियां, यहां तक कि तिजोरी खुली छोड़ दी. स्वयं घर के र आ गए और बच्चों द्वारा जा रहे पटाखों का आनंद लगे.

लगभग आधे घंटे के ात जब वह वापस घर के गए तो उन के होश उड़ गए के तिजोरी खाली पड़ी थी. उन की तिजोरी में रखी मोटी और जेवरों पर हाथ साफ कर चुके थे.

–नितिन अग्रवाल

*

हमारे घर का कोई भी सदस्य जब भी किसी अच्छे कार्य के लिए घर से निकलता है तो मां जाने से पूर्व उसे दही अवश्य खिलाती हैं. यह एक शकुन माना जाता है और कार्य के सफल होने की उम्मीद बंध जाती है.

मुझे फिल्मों में अभिनय करने का शौक है. अतः मैं फिल्म निर्माताओं को पत्र लिखता रहता हूं.

हमारी बेड़ियां

कुछ दिन पूर्व मुझे एक फिल्म निर्माता का पत्र प्राप्त हुआ. मुझे 'स्क्रीन टेस्ट' के लिए मुंबई बुलाया गया था. अतः मैं ने जाने की सारी तैयारी कर ली.

निर्धारित तिथि को मुंबई की ट्रेन पकड़ने के लिए मैं जैसे ही घर से निकलने को हुआ, तभी मां ने कहा कि दही खा कर ही घर से निकलूं. उस समय घर में दही थी नहीं, अतः मां ने मेरे छोटे भाई को दुकान से दही लाने भेजा.

उधर मेरी ट्रेन का समय हो गया था. मैं ने मां से बहुत कहा कि वह मुझे दही खाए बिना ही जाने दें, परंतु वह न मानीं.

लगभग 15 मिनट बाद दही आई और मैं उसे खाते ही स्टेशन की ओर दौड़ा. परंतु ट्रेन जा चुकी थी. मैं हाथ मलता रह गया.

फिर अगले दिन सुबह की गाड़ी से मुंबई के लिए रवाना हुआ, पर वहां पहुंचने पर फिल्म निर्माता ने यह कह कर मिलने से इनकार कर दिया कि, 'जो समय की कद्र नहीं करते, हम उन की कद्र नहीं करते.'

इस तरह फिल्मों में अभिनय का अवसर मेरे हाथ से जाता रहा और दही खिलाने का 'शकुन' मेरे लिए 'अपशकुन' बन गया.

–राज नारायण

*

हमारे मकान मालिक बड़े ही अंधविश्वासी हैं. उन्हें हर कार्य में शकुनअपशकुन देखने की आदत है. उन की एक मान्यता के अनुसार, घर से बाहर जाते समय दाहिना पैर पहले बाहर निकालना शुभ होता है.

पिछले साल बरसात के मौसम में उन के घर के मुख्य द्वार के ठीक सामने वाली नाली पर बनी छोटी सी पुलिया तेज बारिश के कारण टूट गई थी.

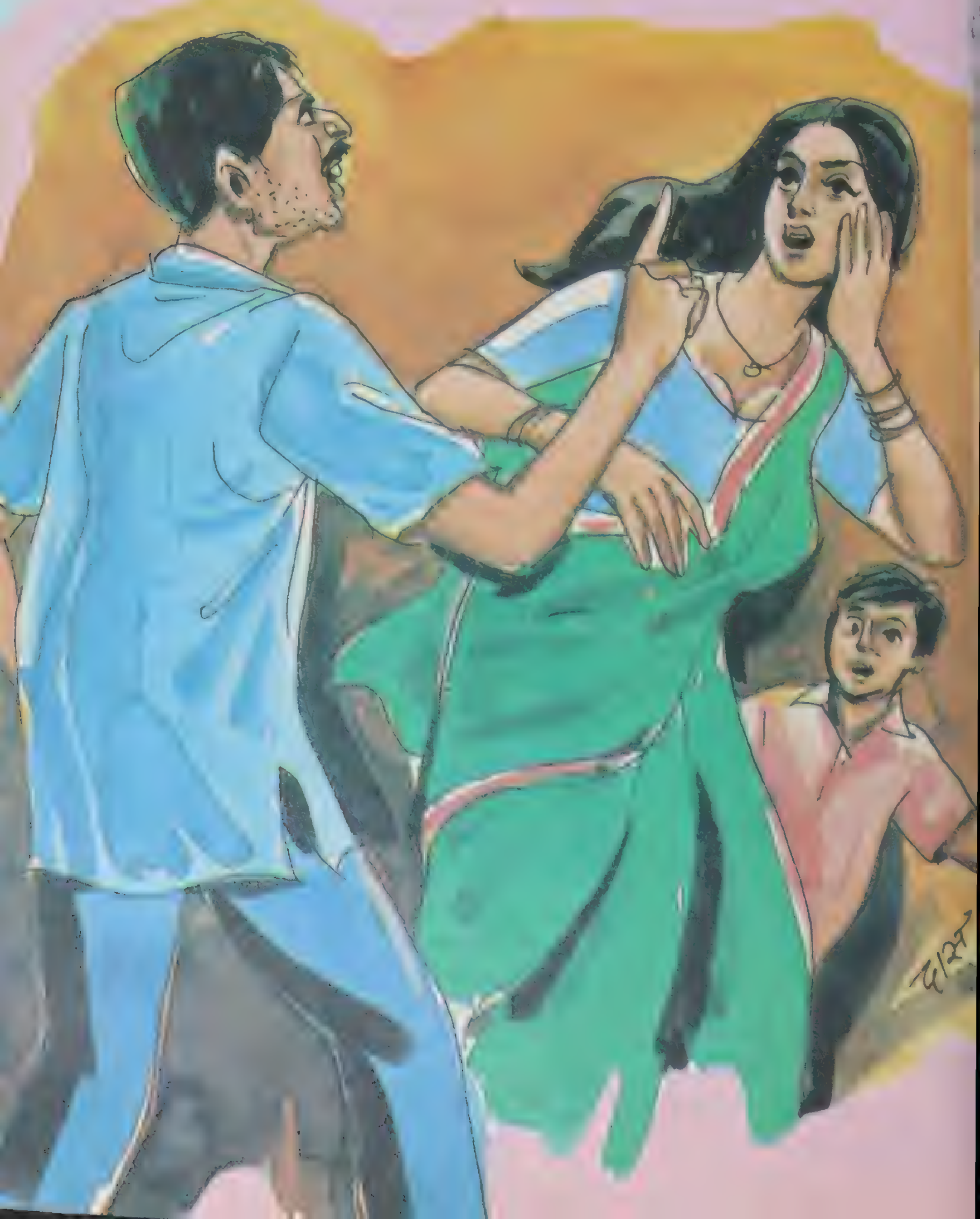
मकान मालिक को किसी काम से बाहर जाना पड़ा, अतः वह साइकिल को हाथों से उठा कर नाली को पार करने लगे. पर अपनी रूढ़िवादिता के चलते बाएं पैर के बजाय दाएं पैर को बाहर रखने की कोशिश करने लगे. इसी कोशिश में वह अपना संतुलन खो बैठे और नाली में गिर कर पैर तुड़वा बैठे.

–आशीष कुमार सिंह ●

इस स्तंभ के लिए आप अपने, अपने मित्रों व संबंधियों के अनुभव भेज सकते हैं. प्रत्येक प्रकाशित संस्मरण पर 50 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. अपने संस्मरण इस पते पर भेजें : सरिता, संपादकीय विभाग, ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

जहां मैं खड़ा था वहां मेरे सामने वाली सड़क आ कर मिलती थी. उस के दोनों ओर दूर तक जाती हुई गुलमोहर के पेड़ों की कतारें जहांतहां फुनगियों पर झूलते हुए अपने लाललाल पुष्प गुंफों के परचम रेशम की तरह लरजती हुई अपने हरेहरे छोटेछोटे पत्तों की हरियाली में सजाए खड़ी थीं. पर धूप में ये पेड़, किसी को भरपूर छाया दे पाने में सर्वथा अक्षम थे. अगलबगल मेरे दोनों ओर अनंत तक जाती हुई सी दिखाई देती, दूसरी सड़क पर अंगूरों के गुच्छों की तरह हरे, पीले लटकते हुए पुष्प गुंफों से अमलतास के पेड़ इस तिराहे का आक[illegible] और भी बढ़ा रहे थे.

पर धनवानों की नवनिर्मित इस ब[illegible] में चारों ओर सुनसान सा ही रहता था. [illegible] सड़कों पर पेड़ों से कुछ फासले पर क[illegible] में खड़ी कोठियों में किसीकिसी खिड़की [illegible] चिड़ियाघर के परिंदों की तरह बेबसी [illegible] झांकते हुए बंद शीशों से मासूम बच्चे [illegible] मन में अपने प्रति अनायास अनुराग ज[illegible] थे. मुझे उन के बारे में कुछ सोचने, क[illegible]



करते थे. मैं जहां से यह सब देख
ां एक बुढ़िया का प्याऊ था. वहां
हर के पेड़ के नीचे पानी के 4
रखे थे. एक चबूतरा बना कर
नी पिलाने के लिए ऊंचा कर के
से भरा सागर था, जिस के इर्दगिर्द
बिखरे पड़े थे. सागर को पकड़े
पिलाने के लिए तत्पर बिछे टाट
ढ़िया विराजमान थी. अदब से मैं
' पुकारता था.

ं के दूसरे हाथ में पंखा था, जिसे
ाते हुए वह ऊंघने भी लगती थी.
यह जगह अब इसलिए और भी
ने लगी थी. क्योंकि बूढ़ी अम्मां
मुझ से वहीं किसी कोठी की

से तेलकंघी कर के प्याऊ पर गया था. कोई बात शुरू होने से पहले मैं ने आसपास ध्यान से देखा कि कहीं कोई जानपहचान वाला तो वहां नहीं है. आखिर जमाना खराब है, क्या पता कौन मेरे बनते काम में भांजी मार दे.

पर वहां ऐसा कोई भी दिखाई न दिया. यद्यपि पेड़ पर टंगे 'बस स्टाप' के बोर्ड के नीचे एक आदमी और एक औरत जरूर खड़े थे, जो शायद बस का इंतजार कर रहे थे.

मैं अपनी साइकिल खड़ी कर के अम्मां के पास आया तो देखा, वह कुछ उदास बैठी है. मन को झटका सा लगा, फिर भी मैं ने कहा, "अम्मां, रामराम. कहो क्या हाल है, चुपचाप बैठी हो? तुम तो सदा खुश दिखाई देती थीं, आज क्या हो गया? क्या रसीली

म भी लौट जाना

कहानी • कुमार

म की नौकरानी से शादी की बात
ी. मैं चाहता था कि अम्मां अब
स मेरी शादी करा दे.

दिनों मुझे अपने हाथ से अपनी
बड़ा खलने लगा था. इसलिए
गांव में फेरी लगा कर गुब्बारों,
कागज की रंगबिरंगी फिरकियों
र जब मैं लौटता तो इस प्याऊ
ही सांस लेता था. जब अम्मां
को पानी पिला चुकती तो मैं उसे
रता.

मुझे बुलाती, पानी पिलाती,
नती और अपनी बातें मुझे सुनाती.
एक दिन मुझे रसीली से पहचान
कराने के लिए खासतौर पर
इसलिए मैं कुछ खास बनठन
ले कपड़े पहन, बालों में अच्छे

नहीं आई, इसलिए..."

वह बोली, "नहींनहीं, यह बात नहीं है. वह तो आई थी और अभीअभी ही लौटी है...पर आज उस के मालिक का लड़का कहीं बिना बताए चला गया है. कुछ पता नहीं चल रहा कि कहां गया. घर वाले सब परेशान हैं, इसलिए वह रुकी नहीं और तुम से भेंट भी न हो सकी. आओ बैठो, पानी पी लो."

मैं ने हौले से कहा, "कहीं चला गया या घर से भाग गया?"

वह बोली, "लोग कुछ ऐसा ही कहते हैं, पर मुझे तो भाग जाने वाला लड़का लगता न था. वह तो बड़ा ही होनहार था, पढ़ाईलिखाई में भी होशियार लगता था."

मैं बोला, "मनसूबे होनहारों के ही बड़े

बूढ़ी अम्मां ने जब से रसीली से उस के विवाह की बात चलाने का जिक्र किया था तब से वह बड़ा खुश था. उसे लग रहा था कि अब उस का अकेलापन दूर हो जाएगा. लेकिन अचानक रसीली के मालिक के बेटे दीपक ने घर से भाग कर उसे उस के अतीत में लौटा दिया.

गणेश होते हैं वह तो बड़ों से मार खा कर और तिरस्कार पा कर भी घर के किसी कोने में पड़े सड़ते रहते हैं, पर टस से मस नहीं होते. कभी मैं भी बड़ा होनहार लगता था."

वह बोली, "सो तो तू आज भी लग रहा है, क्योंकि साफसुथरा रहता है और मेहनत से अपनी रोटी कमाता है," फिर कुछ सोच कर बोली, "तो क्या तू भी घर से भागा हुआ है?"

"सच तो यही है कि कभी मैं भी अपना घर छोड़ कर भाग आया था, पर अब बहुत पछताता हूं."

बुढ़िया मां ने अपना तेवर बदला, बोली, "बड़ा ही पत्थर दिल निकला तू तो, जो अपनी मां पर भी तरस न खाया और घर से भाग आया. पर यह सब हुआ कैसे?"

बुढ़िया मां का बदलता तेवर देख कर मेरा माथा ठनका, पर मुंह से निकल कर बात तो पराई हो चुकी थी. सोचने लगा, कह तो दिया, पर अब अपनी शादी की बात खटाई में न पड़ जाए. यह सोच कर मेरा गला भी सूख सा गया. फिर बोला, "बताता हूं, पर तू पहले पानी तो पिला, प्यास के मारे गला सूखा जा रहा है."

बुढ़िया भी मेरे दिल की बात जान रही थी. उस ने जोर से 'हूं' की और फिर मुसकराते हुए बोली, "बैठ जा और मुझे पूरी बात बता. क्यों भाग आया तू अपने घर से?"

अब नियति मेहरबान हुई थी तो रसीली की खातिर बुढ़िया के आगे मैं ने अपना दिल खोल दिया था, "अम्मां, कोई भी घर से एकाएक नहीं भागता, घर के लोग जब रोजरोज किसी नन्ही सी जान पर जुल्म ढाते हैं, तब कहीं जा कर ऐसी नौबत आती है. जब तक सहा जाए, वह सहता है, जब नहीं सहा जाता तो कोई भी बच्चा भाग जाता है. मेरी कहानी भी कुछ उसी तरह की है...गौ से सुनो...

"हुआ यह कि मैं ने जन्म तो पाय छोटी जात वालों में, इसलिए अच्छे पढ़ेलिखे मांबाप तो क्या मिलते. वे अनपढ़ थे, इसलि मेहनतमजूरी करते थे. मेरी मां को कुछ सम के लिए भले लोगों की कोठी में काम मि गया था तो उन की कृपा से मुझे एक अच स्कूल में दाखिला मिल गया.

"स्कूल में टीचर भी भले मिले, मु चाव से पढ़ाते थे और ऊपर से 10 रुप महीने का वजीफा भी देते थे. फिर कु समय बाद बापू को दारू की लत लग ग वह रोजाना घर में पी कर आने लगे, कलह होने लगा. अब तू ही बता अम्मां, मेरा मन पढ़ाई में क्या लगता? ज्यादा तो मुझे तब हुआ जब बापू मेरे वजीफे रकम भी दारू में उड़ाने लगे.

"बापू की दारू की लत ने मां पर ब और बढ़ा दिया. उस ने ज्यादा घरों में क पकड़ लिया और देर से घर लौटने लगी स्कूल से लौटता तो खाली घर मुझे ख को दौड़ता था. बापू भी देर से आने लगे इसलिए मेरी शाम की चाय, रोटी भी गई. मां जो रूखासूखा रख जाती थी, निगल लेता था.

"धीरेधीरे पढ़ने से मन हटने ल स्कूल जाने से जी चुराने लगा. पढ़ा पिछड़ गया तो क्लास में बेइज्जती होने फिर तो मैं स्कूल से ही भागने लगा.

ब स्कूल न जाने पर मास्टरजी
मुझे बुलाने भेज देते. बच्चे कहीं
पकड़ कर मुझे 'डंडाडोली' बना
ले जाते. वहां मास्टरजी पहले तो
ली सुनाते और जब मुझे गलती
स होता तो समझाते.

मैं भी क्या करता? आखिर कब
वल सकता था? एक दिन अपना
कर के मैं ने कह ही दिया कि



यह रही तुम्हारी रसीली. तुम इसे
ाकुल थे सो जी भर कर देख
बोला और वहां से चला गया.

ा नहीं.

बात का मां को पता चला तो
खी हुई. उस दिन वह कुछ ज्यादा
र लौटी. स्कूल न जाने का बापू
चल गया था, इसलिए वह और
घर लौटे और नशे में धुत्त हुए दरवाजे को खूब जोर का धक्का मार कर, लड़खड़ाते हुए घर में घुसे.

"मां हड़बड़ा कर उठी और उन्हें गिरने से बचाया, लेकिन उन्होंने आवदेखा न ताव, उस पर हाथ उठा दिया और बोले, 'हरामजादी, मुझे हाथ लगाती है. खबरदार, जो मुझे हाथ लगाया. ये तेरे गंदे हाथ काट कर रख दूंगा. जाने कहांकहां किनकिन लोगों के बिस्तर गरमाती है और फिर उन की जूठन हमें ला कर खिलाती है.'

"मां से यह न सहा गया, उसे भी क्रोध आ गया, बोली, 'अरे, इतना इज्जतदार है तो कहीं जा कर डूब मर चुल्लू भर पानी में. तू क्या जाने, मैं यह घर कैसे चलाती हूं. तू तो अपनी मजदूरी की रोज दारू पी कर आ जाता है. कभी फूटी कौड़ी का भी इस घर में कुछ ले कर आया है, जो यों मर्दानगी दिखाता है? क्यों नहीं संभालता खुद अपने घर को? अरे, तुझे तो इस औलाद का भी दर्द नहीं. तेरी वजह से इस की पढ़ाई छूट रही है. मैं भी चाहती हूं घर में रहूं, बच्चे की खुद टहल करूं. मुझे भी शौक है तू घर में आए तो बिंदी, सुर्खी लगा कर, सजधज के तेरा स्वागत करूं. तू ने क्यों लगा ली यह दारू की लत?'

'चुप रह नामुराद, मुझे गाली देती है...मेरी दारू को गाली देती है?' बापू हाथ तो पहले ही छोड़ चुके थे, अब यह कहते हुए, मां के ऊपर डंडा उठा कर लपके. मुझ से यह न देखा गया, मैं ने उन से डंडा छीन

कर दूर फेंक दिया और रोती हुई मां से लिपट कर खुद भी रोने लगा. हमें रोता देख कर बापू और चौड़े हो गए और लातघूंसे चलाने लगे.

"जब मुझे चीखतेचिल्लाते देखा तो वह सकपका गए. उन्होंने लातघूंसे तो चलाना बंद कर दिया, पर मां को बालों से पकड़ लिया और घर से बाहर घसीटते हुए बोले, 'निकल यहां से कलमुंही...मुझे नहीं चाहिए तेरी जैसी छिनाल, जो जगहजगह मेरी नाक कटवाती फिरे.'

"इस हाथापाई में मां का लाया हुआ खाना बिखर गया था. मैं ने मां को छुड़ाने के लिए बापू के हाथ में काट खाया. मां उन से छूट तो गई, पर फिर घर में न रुकी. घर छोड़ कर जाते हुए उस ने एक बार मेरी तरफ भी नहीं देखा. वह फिर न लौटी. नतीजा यह हुआ कि मैं यों ही भूखा पड़ापड़ा छत और दीवारों को घूरता रहा. फर्श पर बिखरी हुई दाल, रोटी को कुत्ते चाट गए थे.

"आखिर मेरी भूख ने फिर एक दिन मुझे चोरी करने को मजबूर कर दिया. चोरी न करता तो प्राणपखेरू ही उड़ जाते. मैं ने एक चाय वाले लाला के केक, बिस्कुट चुराए और जी भर के खाए.

"एक बार तो यों पेट भर लिया पर दूसरी बार में धर लिया गया. लाला एकदम जल्लाद था, मुझे पुलिस मे देने की बात करता था. यह सुन कर मेरे रोंगटे खड़े हो गए. फिर किसी तरह मैं वहां से जान बचा कर भाग निकला. तब से ये गुब्बारे और खिलौने बेच रहा हूं."

वह तरस खाती हुई बोली, "बड़े दुख देखे तू ने भी..."

"पूछ न अम्मां, कलेजा छलनी हुआ पड़ा है. कौन है अपना, जिसे यह दिल चीर कर दिखाऊं. एक तू मिल गई है तो आ कर दुखसुख की कर लेता हूं. यह भी शुक्र है कि मैं उस बुरे वक्त में भी बुरी संगत में न फंसा, वरना न मालूम क्या हाल होता. यही संतोष की बात है. मेरी मां जैसी तू मिल ग[ई] है...रसीली भी मिल जाएगी...मगर तू चाहेगी तो..."

मैं ने देखा, मेरी दास्तान सुन कर अम्मां का मुंह खुला का खुला रह गया. वह मुझे दीदे फाड़फाड़ कर देखे जा रही थी. मैं ने पूछा, "अब तू ही बता, जो कुछ मेरे साथ हुआ, उस में मेरा क्या दोष है? घर तो छूट गया, पर दिल से उस की याद नहीं जाती. अब तो सोच लिया है, घर बसा कर पहले मां को ढूंढूंगा और उसे अपने पास अपने साथ ही ला कर रखूंगा."

बुढ़िया मेरी बातों पर पसीज गई थी. बोली, "यह तो सच बात है कि मांबाप का प्यार ही औलाद को घर के खूंटे से बांधे रखता है. उन के प्यार में ही जब कमी आती है तो ऐसी नौबत आती है."

मौका पा कर मैं ने पूछा, "पर दीपक को क्या हुआ? वह तो भले घर का भल[ा] बेटा था, क्यों चला गया? ऊंचे घरों में त[ो] हमारे घरों जैसी कोई बात भी नहीं होती तो फिर उस के चले जाने की क्या वज[ह] थी?"

बुढ़िया बोली, "कब्र का हाल मुरदा [ही] जानता है. रसीली तो कुछ ऐसे बताती [थी] कि दीपक के मांबाप हर वक्त उस के सि[र] पर सवार रहने लगे थे कि यह करो, वह [न] करो, खेल क्यों रहे हो, पढ़ते क्यों नहीं. उसे घर से निकलने नहीं देते थे और बा[हर] से कोई बालक उस के साथ खेलने आ जा[ता] तो उस के सामने भी उस का पानी उता[रना] शुरू कर देते थे, झिड़कियां देते थे. [...] मुंहजोरी करने को सिर उठाता तो उस [...] हाथ भी उठा देते थे. अति करने से वह [...] नजर से देखने लगा था.

"ऐसे ही डांटडपट कर एक दिन उन्[होंने] उसे पढ़ने बैठा दिया तो वह किताब उठा [...] उन्हें देर तक घूरता रहा. फिर पढ़ने बैठ [...] लेकिन जब रसीली पास से गुजरी तो [...] मार कर उस से झगड़ने लगा. मां ने आ[...] हाथ छुड़ाया तो बिफर गया. इस पर [...]

की लताड़ पड़ी तो किताब मुंह के आगे रखेरखे ही एक कोने में बैठाबैठा सो गया."

मैं बोला, "वे गलत करते थे. हमेशा यों ही सताते होंगे, तभी तो वह भाग गया. एकलौते बच्चे के साथ तो बड़ों को भी घर में बच्चा बन कर रहना पड़ता है...उस के साथ खेलना पड़ता है, बैठ कर पढ़ाना भी पड़ता है.

"बच्चों का मन तो लाड़प्यार व मीठीमीठी बातों से अच्छेबुरे की पहचान करवा कर बदला जाता है. पढ़ने में मन लगाने के लिए बच्चे को शाबाशी देना जरूरी होता है, तभी वह बड़ों की इज्जत करता है और उन से हिलामिला रहता है," कुछ रुक कर मैं ने बुढ़िया से पूछा, "पर अम्मां, जिस की खातिर तू इतनी परेशान है उस दीपक को पहचानती भी है, कभी देखा है, उसे?"

वह बोली, "क्यों नहीं, बेटा, मैं उसे खूब पहचानती हूं. पहलेपहल उसे रसीली के साथ आते देखा था. वह बस्ता कंधे पर लिए उसे स्कूलबस में चढ़ाने आती थी. पर आज सवेरेसवेरे, स्कूल जाते हुए मैं ने उसे अकेला ही देखा था. 5-7 किलो का बस्ता उस की पीठ पर लदा था. ऐसा लगता था, गए दिन की रात को भी उस ने खाना नहीं खाया होगा.

"मैं ने कहा, 'बेटा, बस्ता नीचे रख दो, तब पानी पीओ.' तब उस ने बस्ता नीचे रख दिया. पानी पीने के लिए हाथ बढ़ाया तो मुझ से न रहा गया, पूछ ही लिया, 'सवेरे से कुछ खाया है कि नहीं? लगता है, आज नाश्ता नहीं मिला?'

"यह सुन कर वह कुछ मायूस हुआ और गरदन झुका ली. मैं ने उसे अपने पास बैठा लिया और चने की पोटली खोल कर उस के आगे रख दी और कहा, 'थोड़ाबहुत खा लो, तब पानी पीना, वरना पेट में दर्द हो जाएगा,' सकुचाते हुए उस ने 4-6 चने खाए और पानी पीया. मुट्ठी भर चना मैं ने उसकी जेब में डाल दिया.

"जब दिन में रसीली आई, तब उस से



खफा

एक छोटी सी बात पर
खफा हो गई मैं तुम से
मनाने भी नहीं आओगे
ऐसी उम्मीद न थी तुम से.

–केशव कूल

मुझे असली बात का पता चला. 2 दिन पहले स्कूल में किसी ने दीपक की किताब चुरा ली थी और वीडियो गेम खेलने के लिए बाजार में बेच दी. इस पर मातापिता दीपक से बोले कि तुम ने किताब बेच कर खेल खेला है और रात से उस की रोटी बंद कर दी. उसे समझाने की जगह उन्होंने उस पर अति कर दी."

मैं बोला, "देख अम्मां, इसलिए तो तू उदास होना मत कि आज तू ने मुझे रसीली से मिलवाया नहीं...आज न सही, कुछ दिन बाद बात बन ही जाएगी. पर उस से जब भी इस विषय पर बात हो तो तू यह जरूर तय कर लेना कि शादी के बाद वह मेरे साथ मेरी झुग्गी में ही रहेगी. इसलिए कोठी, बंगलों की बात भूल जाए, हां..."

इस पर वह बोली, "शादी तुझ से होगी तो वह रहेगी भी तेरे साथ ही, पर इतना बता दे कि तू उस का इस कोठी का काम तो नहीं छुड़वा देगा?"

मैं बोला, "वह क्यों छुड़वाऊंगा...

साथसाथ दोनों कमाएंगे तो अच्छा सा घर भी बना लेंगे. आगे उस की मर्जी पर है, काम छोड़ना चाहे तो छोड़ भी दे. मैं कोई दबाव नहीं डालूंगा. काम करेगी तो मैं खुद ही उसे अपने धंधे पर जातेजाते छोड़ जाया करूंगा और लौटते हुए अपनी साइकिल पर बैठा कर ले जाया करूंगा. यह भी उस से ठीक कर ही लेना."

मेरी इस बात पर बुढ़िया मुसकराई. पर इस से पहले कि वह कुछ कह पाती, मैं ने बात का विषय बदला और कहा, "अम्मां, यह तो बता, तू ने दीपक का घर भी देखा है, उस के मांबाप के बारे में भी कुछ जानती है?"

बुढ़िया ने हंसी दबाते हुए कहा, "तेरी शादी तो पक्की हो जाए, फिर तुझे उस का घर भी पूछ कर बता दूंगी."

बुढ़िया की मसखरी से मेरा मन गुदगुदाने लगा. मैं ने मुसकराते हुए कहा, "अरे, वह बात नहीं है, अम्मां. घर नहीं देखा तो दीपक के आने न आने की खबर कैसे मालूम हुई, मैं यही सोच रहा हूं."

बुढ़िया बोली, "कहां राजा भोज, कहां गंगू तेली. हम छोटे लोगों की लगावट बड़े घरों से एकतरफा ही रहती है...और फिर मेरा काम तो यहां राहगीरों को पानी पिलाना है. इसलिए मेरा प्याऊ ही मेरी लक्ष्मण रेखा है. मैं इस से आगे की नहीं सोचती." फिर कुछ सोच कर आगे बोली, "पर तुझ से एक बात मनवानी है, मुझे. तू 'हां' कहे तो कहूं?"

मैं ने 'हां' कह दी तो बोली, "तेरे बच्चे बड़े हों तो तू उन के साथ ऐसा बरताव मत करना. उन्हें कभी भूखा मत सुलाना...और उन्हें खूब अच्छे से पढ़ानालिखाना. जो तुझ पर बीती है, उसे खुद ही मत भूल जाना. थोड़ीबहुत बीतती तो सभी पर है, पर लोग अपनी बात भूल जाते हैं, इसलिए उन के बच्चे यों घरों से भाग जाते हैं."

इतने में एक बस ने जोर से ब्रेक लगाई, जिस से हमारी बातचीत थम सी गई. कुछ यात्री बस में चढ़े और 2-3 उतरे.

मैं बोला, "अम्मां, पर मुझे एक बात बता, जहां मैं अपने खिलौने बेचता हूं, उस गांव की बड़ीबड़ी हवेलियों में आंगन के पेड़ पर पड़े झूले, सावन के गीत, औरतों की सामूहिक खिलखिलाहट, शोरगुल...ये सब, जहांतहां चुपचाप अनगिनत उठती हुई दीवारों से बंटे हुए घरों में कहां गुम हो गए?

"इस नई खानाआबादी ने आदमी को बेशक चाहे कुछ सुकून दिया हो, पर बच्चों को उन की आजादी, खुलेपन और अनगिनत रिश्तों से बेहिसाब मिलने वाले प्यार को देने वाला आंगन बांट कर उन पर कहर ढाया है. परियों की कहानियां घर की चारदीवारी में बंद रखे टीवी में सिमट कर रह गई हैं...ऐसे हालात से मजबूर, हमारे बच्चों के अकेलेपन को दूर करने का आखिर आदमी के पास क्या इलाज है?

"उधर गांव के नुक्कड़ पर चौधरी की चौपाल, चौपाल में चौधरी और उस की जमी हुई महफिल, सुलगी हुई चिलम, कठपुतली के खेल, रामलीला, स्वांग, वीरों की गाथाएं और मास्टरजी के किस्से, कहानियां आखिर न जाने कहां खो गए.

"आज गांव हो या शहर, हर कोई बच्चों के पीछे पड़ा है. पर अकेले तो कोई बच्चा खेल भी नहीं सकता, तो फिर पढ़ेगा कैसे? मैं अब समझ गया हूं कि बच्चों को घर में पढ़ाते समय मांबाप को उन के पास जरूर बैठना चाहिए. पर मैं तो इतना पढ़ालिखा हूं नहीं. अगर मैं बच्चों की मदद के लिए बैठा भी तो आजकल की नई पढ़ाई में से उन्हें क्या बता पाऊंगा?"

वह बोली, "साइंस का जमाना है, इतनी दूर की न सोच."

मैं चुप था, पानी पर मलाई तो जम गई थी, पर रसीली नहीं आई थी.

मुझे चुप देख कर बुढ़िया बोली, "क्या हुआ, क्या सोचने लगा?"

मैं चौंका और कुछ सोच कर बोला, "जहां मैं आजकल अपने गुब्बारे, खिलौने

वता हूं, उधर कोई स्मैक पीने वाला लड़का
नी मां के लच्छे चुरा ले गया और बेच
या. मांबाप पर दोतरफा मार पड़ रही है.
बेचारे काम छोड़ कर उस की टहल कर
हैं. वहां और तो कोई ऐसा नहीं, वह
केला न जाने कहां किस के चक्कर में
गया है."

हि बोली, "जहां देखने वाला कोई न हो,
च्चे का पैर घर से बाहर निकल ही जाता
वह मोम की तरह होता ही है, जैसा
हौल मिल जाए, उसी मुताबिक ढल जाता
"

"अच्छा किया, जो तू ने मुझे यह बता
ा. अब मैं अपनी शादी के बाद अम्मां
ढूंढ़ ही लाऊंगा. आखिर उसे भी तो मेरे
चे खिलाने का बहुत शौक होगा."

पर अब भी
ली न आई थी और
एकएक कर के
या के आगे मन की
गांठें खोले जा रहा

तभी एक और
वहां आ कर रुकी.
2-3 यात्री बस से
कर प्याऊ की
बढ़ रहे थे.
लिए अब घर लौटने
अवसर मिला तो मैं
ना नहीं चाहता था,
कि रसीली से
नासामना होने की
द नजर नहीं आ
थी.

पर जिस का कोई
होता, उसे अपने
के लिए किसी न
के तलवे तो
ही पड़ते हैं. तभी
देर से मैं वहां
या से मगजपच्ची किए जा रहा था. फिर भी बात न बनी तो बुढ़िया को 'रामराम' कर के अपनी झुग्गी में लौट आया.

ऐसे चर्चे यों तो रोजाना की जिंदगी में आम होते हैं, पर उस दिन की चर्चा से दिल के सब पुराने जख्म हरे हो गए थे. अपने घर से अलग होने के दिन की याद कर के मुझे यह बात सालती रही कि आखिर मेरे घर से भागने में मेरा अथवा मेरी मां का क्या दोष था? इस के अतिरिक्त दीपक के घर से चले जाने की बात सुन कर तो मन इतना खिन्न हुआ कि मैं अगले 3 दिनों तक गुब्बारे बेचने भी न जा सका.

मेरा मन रसीली में अटका था, वरना उस बालक के घर से भागने की बात मुझे अपनी रोटी कमाने से क्या रोकती. उधर जब से बुढ़िया ने रसीली की बात चला दी थी,



मुझे सड़क पर चलते हुए अपना सिर उठा कर इधरउधर नजर भर कर देखने में भी शर्म आने लगी थी. आखिर किसी के देखते मेरी नजर रसीली पर जा टिकी तो लोग क्या कहेंगे?

चौथे दिन जब गुब्बारे बेच कर लौटा तो मैं ने बाजार से एक धूप का चश्मा खरीद कर पहन लिया और फिर पहुंचा बुढ़िया के प्याऊ पर. अपनी साइकिल खड़ी कर के मैं ने कहा, "अम्मां, रामराम. कहो, खुश तो हो?"

"रामराम, बेटा. आज तो बहुत खुश हूं. आ, बैठ. ले...लड्डू खा," बुढ़िया लड्डू निकालती हुई बोली, "रसीली लाई थी, दीपक जो लौट आया है."

मैं ने लड्डू चाव से खाया. फिर बोला, "अच्छा हुआ, वरना तेरे दीपक ने तो मुझे भी उदास कर दिया था."

"मैं ने यह लड्डू तेरी खातिर 3 दिन से संभाल रखा है, पर तू नहीं आया. कहां भटकता रहा, कोई और ठिकाना ढूंढ़ लिया क्या? वैसे किसी सड़कछाप से संबंध होता भी कितने दिन का है?"

"अम्मां, आ कर करता भी क्या...कितने दिन हुए आते और झक मारते. तू भी रोज सब्जबाग दिखाती रहती है...रसीली से बात ही नहीं होती. आज तो चाहे शाम तक बैठना पड़े, मैं उस से मिल कर ही जाऊंगा. पर तेरा दीपक कहां चला गया था, उस की सुना?"

वह बोली, "और कहां जाता...अपने मामामामी का लाड़ला था, सो उन्हीं से अपने मांबाप की शिकायतें लगाने चला गया था.

"रसीली, दीपक को भी आज यहां लाई थी. वह कह रहा था, 'मेरे मातापिता अब अच्छे हो गए हैं,' उस ने खुशी की बात मुझे और बताई कि उस के पिता ने खत लिख कर रसीली के बाप को बुलवाया है. तेरी बात करने की खातिर."

"वह क्यों, अम्मां. अभी तो न मैं ने रसीली को देखा, न उस ने मुझे, फिर शादी की बात चलाने की क्या जल्दी थी?" मैं ने हैरानी से पूछा.

अम्मां ने तब याद दिलाया, "उस दिन वे लोगलुगाई जो खड़े रहे, बस स्टाप पर, वही दीपक के मातापिता थे. उन्होंने हमारी बातें अपने कानों सुनी थीं."

इस पर मैं ने विस्मय से कहा, "तब तो हम दोनों से बड़ी भूल हुई. वे उधर खड़े सुनते रहे और हम इधर बैठे ऊलजलूल न जाने क्याक्या बतियाते रहे."

बुढ़िया बोली, "तो क्या हुआ...बातें ही तो की थीं, किसी को कोई गाली तो न दी थी. लेकिन वे तुम्हारी बातें सुन कर बहुत खुश हुए. तारीफ करते हुए खत में लिखा है कि तुम रसीली के लिए सब तरह से ठीक लगते हो."

अपनी तारीफ सुन कर कुछ लाज सी लगी. पर मैं मन ही मन बड़ा खुश था कि जिंदगी में पहली बार किसी ने मेरी तारीफ की. फिर पता चला, रसीली आई तो थी, पर मुझ से बिन मिले दौड़ गई. यह सुन कर मेरा माथा ठनका कि कहीं बुढ़िया ने अपना समय काटने के लिए मुझे खिलौना तो नहीं बना रखा है.

मैं तुनक कर खड़ा हुआ और बोला, "अच्छा, अम्मां, रामराम," फिर पीछे मुड़ा. मैं यह भेद न जान पाया कि जब शादी की मरजी है तो रसीली क्यों नहीं आई? तिराहे पर मुड़ा तो झटपट किसी ने मेरी साइकिल कैरिअर से पकड़ ली और मुझे रोक कर अपना परिचय दिया, "मैं दीपक हूं, भैया. क्या रसीली से मिले बगैर जा रहे हो?"

उस की बात सुन कर मेरा दिल जोरजोर से धड़कने लगा. मैं ने दोनों हाथ जोड़ कर उसे 'रामराम' की तो उस ने मेरे हाथों को अपने हाथों में छिपा लिया और बोला, "रसीली हमारी नौकरानी जरूर है, पर मेरी मां को उस की शादी की बड़ी चिंता है. हालांकि मां खुद घर में कम रहती है, पर उस बेचारी पर आती हुई जवानी से वह न जाने क्यों खौफ सा खाने लगी है?"

यह कहतेसुनते हम जैसे ही अगले पेड़ नीचे पहुंचे, दीपक ने उस पेड़ के पीछे कर खड़ी हुई रसीली को एकाएक के से मेरे आगे खड़ा कर दिया और ा, "लो भैया, यह रही तुम्हारी रसीली. प्याऊ वाली अम्मां को कह रहे थे कि ने इसे देखा नहीं है, सो जी भर के देख अच्छी तरह एकदूसरे से पूछताछ कर बाद में न पछताना. शादी के बाद तो दूसरे से निभाना ही पड़ता है," यह कह दीपक वहां से चला गया.

रसीली, जैसा उस का नाम था, मुझे वैसी ही लगी. आंखें चार हुईं और वह ी नजर में ही मुझे भा गई. हम दोनों ने तक एकदूसरे को खूब नजर भर के देखा न जाने मुझ में हिम्मत कहां से आई, पूछा, "रसीली, तू प्याऊ पर आ कर से क्यों नहीं मिली थी?"

नजर चुराते हुए बोली, "इतना भी नहीं ी...प्रेम चदरिया अति झीनी होती है और गली अति संकरी," फिर उस ने मुझे भर के देखा और यों देखतेदेखते वह ाले लग गई.

उस की इस बात से तो मुझे उस पर भी प्यार आया. मैं बोला, "तू तो बड़ी दार निकली, मैं ही बुद्धू था जो तेरी र प्याऊ पर बैठा, प्यासा का प्यासा " कहतेकहते मैं ने भी रसीली को अपनी में भर लिया. यों प्रेम के मधुर रस में हुए उस के हाथ मेरे हाथों में थे. हम के ऊपर पीलेपीले अमलतास के पुष्प की छत्रछाया थी. इधरउधर सड़क के ओर दूर तक उन्हीं पीले फूलों के न से बिछे थे.

रसीली जब यों मेरे गले लगी खड़ी थी जाते हुए दीपक की पीठ मेरे सामने पक ने उस निर्जन सड़क पर अभीअभी ी को अपने साथ ला कर मुझ से ऐसे झिझक मिलाया था, जैसे मेरी उस की पुरानी जानपहचान हो. उम्र में तो वह नों से कितना ही छोटा था, लेकिन मालिक का बेटा होने की हैसियत से अपने स्तर में वह हम दोनों से जरूर बड़ा था. हमें आपस में मिला कर शायद उस ने वही बड़प्पन निभाया था.

संयोग से उस आनंद की स्थिति में भी मेरा मन न जाने अपने किस अतीत को नाप रहा था. आंखों में, घर के भागने से ले कर अपने घर लौट जाने की चाहत तक का लंबा अंतराल था. अब जाना कि सुख के ऐसे क्षणों में भी हर किसी को अपने बिछुड़े हुए की याद कैसे आती होगी. पलभर ऐसे ही मेरा मन भटकता रहा.

मैं यह सोच रहा था कि यह क्या बात है कि मेरे भागने से कभी कहीं एक घर तिनकातिनका बिखर गया था, तो आज यहां दीपक के जा कर लौट आने से उस के कितने अपनेपरायों की खुशियां लौट आई हैं.

> जबान
>
> *अगर आप का पैर फिसल जाए तो आप संभल सकते हैं, लेकिन आप की जबान फिसल जाए तो आप कभी उबर नहीं सकते.*

रसीली मेरी बांहों में कसमसाने लगी थी. पहले प्यार के पहले मिलन में अपनी बांहों को इतनी जल्दी ढीला तो मैं भी नहीं करना चाहता था, अतः पूछा, "रसीली, अभी मन नहीं भरा क्या? तेरी मालकिन को तेरी चिंता हो रही होगी."

वह बोली, "अब चिंता काहे की, उन की चिंता तो तुम्हारे कारण आज दूर हो गई...फिर काहे की जल्दी है. जिस कंधे से हम लिपटे हैं वह तो अब हमारा है...फिर क्यों छुड़ाते हो अभी, कुछ तो ठहरो."

मैं ने कहा, "एक कंधा क्या, मैं तो सारा का सारा तेरा हूं. मेरा मन भी कहां करता है तुझ से जुदा होने को...चाहता हूं, बस ऐसे ही तुझे बांहों में लिए खड़ा रहूं. पर यह तो देख कि हम फुटपाथ पर खड़े हैं. तू औरत जात, ऊपर से जमाना खराब...वैसे मैं तो तेरा हो ही चुका हूं और तेरा रहूंगा."

सरिता व मुक्ता में प्रकाशित
लेखों के महत्त्वपूर्ण रिप्रिंट

सैट नं.-7

- कर्म सिद्धांत और समाज की रचना
- मुसलिम समाज में फैल रही बुराइयां
- क्या हिंदू बहादुरी से लड़े?
- हिंदू धर्म ने बचाया या पिटवाया
- वैष्णो देवी मंदिर का सरकारीकरण
- वृंदावान में भीख मांगने का लाइसेंस
- भारतीय मसीही एवं तलाक कानून
- रूढ़िवादिता का स्थूल प्रतीक नारियल
- आत्मा द्वारा भगवान के साक्षात दर्शन
- मुसलिम युवतियां
- आत्मा
- मुसलिम युवक भी दहेज मांगते हैं
- मुसलिम स्त्रियों की त्रासदी
- भगवान व धर्म
- प्राचीन भारत में खगोल विज्ञान
- विश्व प्रणेता शक्ति कहां है?
- जन्मपत्री नहीं संस्कार मिलाएं
- लोभ या भय दिखा कर धर्म का प्रचार
- परदा
- धार्मिक अंधविश्वास का शिकार बूनो
- ईसाइयत के नाम पर
- भगवान मजबूरी का दूसरा नाम
- सती प्रथा के बीज हिंदू शास्त्रों द्वारा ही बोए गए हैं
- किस्सा फर्रूखाबाद की संतोषी माता का
- फर्रूखाआद की संतोषी माता: आ. व. आ. के उत्तर
- उपनिषद
- मोरारि बापू का रामचरितमानस
- क्या हम अपना राष्ट्रीय स्वाभिमान खो बैठे हैं?
- हिंदू धर्म और धार्मिक सहिष्णुता
- अपनी समस्याओं के लिए क्या महिलाएं जिम्मेदार नहीं.

मूल्य 20 रु.

कृपया मूल्य मनी/पोस्टल आर्डर द्वारा पेशगी भेजिए.
वी.पी.पी. नहीं भेजा जाएगा.

प्राप्ति स्थान : दिल्ली बुक कंपनी
एम-12, कनाट सरकस, नई दिल्ली-110001

VV: SMR: 95: R4-B

इस पर रसीली ने एक लंबी चैन की सांस ली और बोली, "हम जब मियांबीवी हैं, तो फिर चाहे सड़क हो या फुटपाथ, हमें काहे का डर?"

"तो तुझे मुझ पर पूरा भरोसा है?"

"भरोसा न होता तो चाहत और इतनी नजदीकियां आज कहां होतीं?"

रसीली की बात में दम था. भरोसे और चाहत के बल पर ही हर घरगृहस्थी फलतीफूलती है और आबाद रहती है.

रसीली ने पूछा, "पहले मिलन की इस बेला में भी क्या तुम खाली हाथ हो, कुछ भेंट नहीं लाए?"

इस पर मैं कुछ सकपकाया और स्वयं से कहा, 'यह तो मैं ने न किसी से सीखा था, न मुझे किसी ने बताया और न ही इस का मुझे खुद ध्यान आया कि रसीली के लिए कुछ भेंट भी लानी थी.'

यों तो खिलौने, गुब्बारे, कितना सामान मेरी साइकिल पर बंधा हैंगर में टंगा था, पर रसीली के योग्य कुछ न था. फिर अचानक मेरा हाथ अपनी आंखों पर गया और मैं ने अपना चश्मा हाथ में ले कहा, "बता कि मैं क्या भेंट लाया हूं?"

उत्सुकता में रसीली मेरे कंधे से हट कर बोली, "दिखाओ?"

तब मैं ने वह चश्मा उस की आंखों पर लगा दिया. आखिर आड़े वक्त में अपनी आंखों की लाज ही काम आई.

रसीली ने चश्मा पहना और गद्गद हो कर बोली, "तुम कितने अच्छे हो."

उस शाम हम दोनों साथसाथ चल रहे थे और अपने अरमानों की दुनिया बसाने के लिए चलते जा रहे थे.

यदि रसीली न मिलती तो मुझ गरीब की जिंदगी में रस ही कहां था. मैं अपने जैसे हर भगोड़े को यह कहना चाहता था कि मैं तो अपनी उजड़ी हुई दुनिया बसाने और जिंदगी में बहार लाने के लिए तनमन से अपने घर लौट रहा हूं, हो सके तो तुम भी लौट जाना...तुम भी लौट जाना. ●

काफी कितनी काफी है?

लेख • राजेंद्र कुमार राय

काफी को पेय के रूप में सब से पहले कब पीना आरंभ किया गया, इस का कहीं उल्लेख नहीं मिलता. माना जाता है, सर्वप्रथम इस के गुणों को इथियोपिया के कुछ ईसाइयों ने पहचाना. 15वीं शताब्दी के अंत तक काफी का प्रचारप्रसार दुनिया के कई भागों में हो गया था. इस का वानस्पतिक नाम 'काफिया अरेबिका' है और यह 'रुबिएसी' कुल (फैमिली) का पौधा है.

हृदय रोग के संदर्भ में काफी को सदा से ही संदेह की दृष्टि से देखा जाता रहा है. कई शोधकर्ताओं ने शरीर पर काफी के विभिन्न प्रभावों का अध्ययन किया है. शोधकर्ताओं के एक दल का कहना है कि यदि एक व्यक्ति प्रतिदिन 5 प्याले या इस से अधिक काफी पीता है तो उसे हृदय की बीमारियां होने का खतरा उत्पन्न हो जाता है. यह 40 सालों तक किए एक शोध अध्ययन का



काफी की चुस्कियां थके मांदे व्यक्ति में ताजगी और स्फूर्ति का संचार करती हैं परंतु कई बार इस की अधिकता शरीर के लिए मुसीबतों का सबब भी बन सकती है क्योंकि इस में अगर गुण भी हैं तो दोष भी...

परिणाम है. इस शोध अध्ययन में व्यक्तियों की कई बातों पर ध्यान रखा गया, जैसे काफी पीने या धूम्रपान की आदत और उन के रक्तचाप एवं कोलेस्टेराल की मात्रा.

समस्त कारणों को मद्देनजर रखते हुए यह पाया गया कि केवल काफी अधिक हृदय की बीमारियों को उत्पन्न करने के लिए उत्तरदायी है. इस रिपोर्ट के अनुसार, दिन में अधिक से अधिक 2 प्याले काफी पीना ही काफी है. कुछ शोधकर्ताओं के अनुसार हृदय की बीमारियों के अलावा अधिक काफी पीने के कुछ दुष्प्रभाव भी हैं. एक अध्ययन के अनुसार, काफी के सेवन से रुधिर में कोलेस्टेराल बढ़ जाता है.

एक अन्य शोध अध्ययन के अनुसार, काफी के 10 प्याले प्रतिदिन पीने से बेचैनी, चिंता, अनिद्रा, दस्त व सिरदर्द आदि की शिकायत हो जाती है. काफी पीने से आमाशय की श्लेष्मा झिल्ली उत्तेजित हो जाती है. इस से अल्सर से पीड़ित व्यक्तियों में बेचैनी काफी बढ़ जाती है. वैज्ञानिकों का मानना है कि पित्ताशय और अग्नाशय का काफी सेवन से संबंध है. यह श्वसन संस्थान को भी उत्तेजित करती है, जिस से श्वयस (अस्थमा) में अल्पकालिक लाभ होता है. काफी, शराब, अफीम व भांग जैसे मादक पदार्थों के प्रति विष (एंडीडोट) के रूप में बहुत लाभकारी है.

सिडनी में चल रहे एक शोधकार्य में वैज्ञानिकों ने सुबहसुबह सो कर उठने पर काफी की चुस्कियां लेने के बाद अपने को तरोताजा महसूस करने के अनुभव को अपने अध्ययन का विषय बनाया है. सिडनी के सेंट विसेंट अस्पताल के गरवान रिसर्च फाउंडेशन के वैज्ञानिकों को आशा है कि इस अध्ययन से उन्हें मिरगी जैसे दिमाग के रोगों के संबंध में महत्त्वपूर्ण जानकारी हासिल करने में सफलता मिलेगी.

शरीर के अनेक अभिग्राहकों (रिसेप्टर्स) पर काफी के प्रमुख तत्त्व कैफीन के प्रभाव के अध्ययन से ऐसी महत्त्वपूर्ण जानकारी प्राप्त हुई है, जिस से वैज्ञानिकों को मस्तिष्क के अनेक रहस्यों को जानने में सहायता मिल रही है. इन शोधकर्ताओं को यह गौरव प्राप्त हुआ है कि उन्होंने सर्वप्रथम मानव मस्तिष्क के अभिग्राहकों का क्लोन बनाने, यानी प्रयोगशाला में उन की प्रतिलिपि तैयार करने में सफलता प्राप्त की है. मस्तिष्क के कार्य करने और शरीर के अन्य भागों को कार्य करने के लिए निर्देश देने में इन अभिग्राहकों की प्रमुख भूमिका है. आशा है, इस अध्ययन से वैज्ञानिकों को मस्तिष्क की विभिन्न तंत्रिका गतिविधियों पर व्यापक जानकारी प्राप्त करने में सफलता मिलेगी.

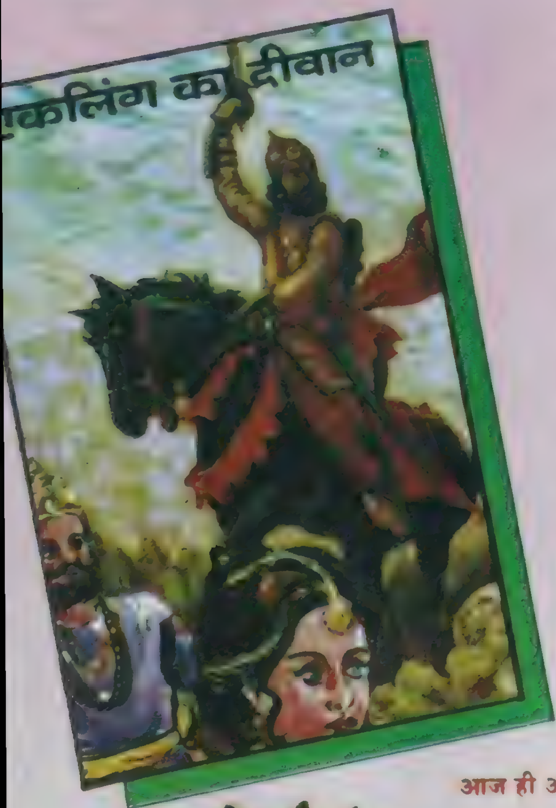
इन वैज्ञानिकों का कहना है कि 2 प्याले फिल्टर काफी पीने से (इस में लगभग 250 मिलीग्राम कैफीन की मात्रा होती है) हमारे तंत्रिका तंत्र लगभग 4 घंटे तक उत्प्रेरित रहते हैं. लेकिन पूरे दिन में 1,000 मिलीग्राम कैफीन का सेवन चिंता, चिड़चिड़ापन, सिरदर्द, अनिद्रा व मांसपेशियों में कंपकंपाहट आदि को जन्म दे सकता है.

कई व्यक्तियों को काफी से एलर्जी भी होती है. कुछ शोधकर्ताओं का मानना है कि काफी व चाकलेट आदि का सेवन माइग्रेन को जन्म दे सकता है. काफी शरीर में शर्करा विभक्त करने में भी उत्प्रेरक का कार्य करती है.

वस्तुतः काफी पीना लाभप्रद भी है और हानिकारक भी. यह आप पर निर्भर करता है कि आप कितनी काफी को काफी मानते हैं. उचित मात्रा में इस का सेवन औषधि की तरह उपयोगी है. ●

विश्व साहित्य

एकलिंग का दीवान



आखिर हम हजारों वर्षों तक पराधीनता की जंजीरों में क्यों जकड़े रहे? क्या हम में वीरता, साहस या आत्मबल की कमी थी? या फिर वे कौन सी कमजोरियां थीं जिन्होंने हमें पिसते रहने को मजबूर कर दिया?

इस रोचक ऐतिहासिक उपन्यास में हिंदू समाज को एक सूत्र में पिरोने के प्रयास को बड़े प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया गया है जिसके पठन के बगैर हिंदू समाज के बारे में ज्ञान अधूरा है.

आज ही अपने पुस्तक विक्रेता से लें या हमें लिखें :

दिल्ली बुक कंपनी

एम 12, कनॉट सरकस, नई दिल्ली-110001 फोन . 3321313

मूल्य : रु. 55

विशेष छूट कूपन-यहां से काटिए
अग्रिम राशि भेजने पर मूल्य
रु. 49
डाक खर्च सहित

राशि भेजने पर पुस्तक मूल्य 49 रुपए तथा डाक व्यय वी. पी. पी. द्वारा 5 रुपए या
राशि भेजने पर डाक व्यय तथा बाकी मूल्य वी. पी. पी. द्वारा.





पिछले कई महीनों से सोने की कीमतों में आई कमी विश्व सर्राफा बाजार के माहौल का नतीजा है. कई देशों द्वारा सोने का मोह त्यागने और अंतर्राष्ट्रीय बाजार में सोने की निरंतर गिरती कीमतों ने अब इसे एक बुरे निवेश के रूप में ला खड़ा किया है.

लंदन के स्वर्ण बाजार में 1995 के मध्य में सोने की कीमत 500 डालर प्रति औंस थी, जो अब गिर कर 295 डालर प्रति औंस से भी कम रह गई है. इसी तरह भारत में फरवरी 1996 तक जिस 10 ग्राम स्टैंडर्ड

लेख ● जगदीश चावला

पनी चमक खोता सोना

के भाव 5,255 रुपए थे, वही सोना
ले साल के अंत में 3,910 रुपए प्रति
ग्राम के भाव से बेचा जाता रहा.

सोने की कीमतों में आई इस गिरावट
बारे में विशेषज्ञों का कहना है कि विश्व
ार में इस की दरों में आई गिरावट का
कारण तो सोने के उत्पादन में हुई वृद्धि
उस की खपत में आई गिरावट है. वर्ष
6-97 में जहां सोने का विश्व उत्पादन
प्रतिशत तक बढ़ा, वहीं पर इस की खपत
प्रतिशत की गिरावट भी देखी गई.

जिन देशों में सोना पहले खूब खरीदा
था, वहां बाद में खपत की कमी हो
अमेरिका में 8 प्रतिशत, यूरोप में 10
प्रतिशत, जापान में 42 प्रतिशत, सऊदी अरब में 9 प्रतिशत तथा सिंगापुर व हांगकांग में 7 प्रतिशत की कम खपत दर्ज की गई. अमेरिका में स्वतंत्रता दिवस पर भी सोने की होने वाली रिकार्ड खरीदारी इसलिए नहीं हो सकी कि वहां के लोग तब इंटरनेट पर मंगल ग्रह पर उतरने वाले अंतरिक्ष यान 'मास पाथ फाइंडर' और 'रोबोट सोजोर्नर रोबर' द्वारा भेजे गए विस्मयकारी मंगल के चित्रों को देखने में व्यस्त रहे.

स्वर्ण भंडार के एकतिहाई हिस्से पर काबिज दुनिया भर की सरकारों के बैंक, जिन्हें सेंट्रल बैंक कहा जाता है, भी अपने आरक्षित सोने की ताबड़तोड़ बिक्री में जुटे रहे. यूरोपीय बैंकों में इस समय 33,000 टन सोने का संचित भंडार है, पर 1996 में 64 सेंट्रल बैंकों ने 25 अरब मूल्य का सोना स्वर्ण बाजार में बेच दिया. नीदरलैंड ने 4 किश्तों में 300 टन सोना बेचा, जिस से उस के स्वर्ण भंडार में 20 प्रतिशत की कमी आई.

इसी तरह अमेरिका व दक्षिण अफ्रीका के बाद आस्ट्रेलिया, जो सोने का सब से बड़ा आपरेटर कहलाता है, के आस्ट्रेलियन सेंट्रल बैंक ने भी अपने 247 टन सोने में से 167 टन खुले बाजार में उतार दिया. जरमनी और बेल्जियम भी अपना सोना बेचने की नीति पर उतर आए. मांग और आपूर्ति के नियमानुसार



आमतौर पर सोने को दीर्घकालीन संपत्ति माना जाता रहा है लेकिन पिछले कुछ समय से अंतर्राष्ट्रीय बाजारों में इस की कीमतों में आई भारी गिरावट ने इसे कमजोर निवेश के रूप में ला खड़ा किया है. इस गिरावट का कारण है खपत में कमी. क्या वास्तव में सोना अपनी चमक खोता जा रहा है?

ज्यादा आपूर्ति में इस की मांग कम रह गई और दामों में गिरावट का रुख बना रहा.

सोने के गिरे दामों की एक वजह यह भी है कि अब पश्चिमी निवेशकों के लिए

सोने की खरीद में आवश्यक जानकारियां

सोना एक ऐसी धातु है जिस का जेवर के रूप में इस्तेमाल कर लोग गर्व का अनुभव तो करते हैं, इसे एक अच्छा निवेश भी समझते हैं. यदि किसी व्यक्ति के पास सोना है तो वह अपनेआप को आर्थिक रूप से सुरक्षित महसूस करता है, इसलिए लोग सोने को अचल संपत्ति की तरह संजो कर रखते हैं. किंतु उन्हें तब बड़ा धक्का लगता है जब कभी जरूरत पड़ने पर वे सोने से बने अपने जेवर बेचना चाहते हैं और दुकानदार उस की कीमत क्रय मूल्य से भी कम आंकता है. तब उन्हें लगता है कि जेवर के रूप में सोना एक अच्छा निवेश नहीं हो सकता. इसलिए आवश्यक है कि सोना खरीदते समय कुछ सावधानियां बरतें, जिस से खरीद में लगाए गए धन को नुकसान से बचाया जा सके.



शुद्धता

सोना खरीदते समय सब से पहली और आवश्यक सावधानी होती है उस की शुद्धता की पहचान. हालांकि सोने की शुद्धता को परखने के लिए कोई भी ऐसा पैमाना नहीं निर्धारित है, जिस के आधार पर सोने को देखते ही उस की शुद्धता की मात्रा का अंदाजा लगा लिया जाए. इस के लिए दुकानदार पर ही भरोसा करना पड़ता है. इस के अलावा जेवरों के पीछे सोने की शुद्धता से संबंधित कैरेट अंकित होते हैं, जिस के आधार पर शुद्धता का अंदाजा लगाया जा सकता है.

24 कैरेट का सोना विशुद्ध सोना माना जाता है. किंतु इस सोने से बना जेवर इतना नरम और लचीला होता है कि आसानी से टूट जाता है. इसलिए जेवरों में थोड़ी कठोरता लाने के लिए सोने में चांदी तथा तांबे जैसी धातुओं के मिश्रण मिलाए जाते हैं. इस मिश्रण की मात्रा जितनी ही अधिक होगी, सोने में शुद्धता का प्रतिशत उतना ही कम होगा. बाजार में क्रमशः 22, 21, 20, 19, 18 आदि कैरेट के जेवर उपलब्ध होते हैं. जो जेवर जितने ही अधिक कैरेट का होगा उस में सोने की मात्रा भी उतनी ही अधिक होगी. जैसे 22 कैरेट के जेवर में सोने का प्रतिशत होगा. $22/24 \times 100 = 91.6$ प्रतिशत इसी फार्मूले के आधार पर कैरेट के आधार पर सोने की प्रतिशत मात्रा निकाली जा सकती है. इसी प्रतिशत मात्रा के आधार पर क्रय तथा विक्रय निर्धारित किए जाते हैं.

इतनी अहमियत नहीं रखता. उन का
व डालर की ओर बढ़ा है. सोने के
विक संग्रहकर्ता स्विस बैंक रहे हैं,
ा अब उन्होंने भी अपना संचित सोना
का मन बना लिया है.

पश्चिम के लोगों को ब्लूमबर्ग
शियल सर्विसेज के किए अध्ययनों की
ात भी समझ में आ चुकी है कि सोना
के मुकाबले अब एक कमजोर निवेश

की श्रेणी में उतर आया है. इस संस्था का अध्ययन कहता है कि यदि किसी व्यक्ति ने 1980 में सोने पर 1,000 डालर खर्च किए तो उसे उस सोने की वापसी रकम 400 डालर के करीब ही मिल पाएगी और यदि वही पैसा उस समय शेयरों पर लगाया होता तो अब तक उन के दाम 12,000 डालर तक के हो गए होते. इसे यों भी समझा जा सकता है कि अमेरिका में 1980 में सोने की कीमतें

तथा चमक

*कई दुकानदार लोगों को सोने के रंग
चमक के आधार पर उस की शुद्धता
ारे में समझाने का प्रयास करते हैं. किंतु
की शुद्धता का अंदाजा रंग के आधार
नहीं लगाया जा सकता. यदि सोने में
जाने वाले मिश्रण में तांबे की मात्रा
क तथा चांदी की मात्रा कम होगी तो
का रंग लाल होगा. यदि मिश्रण में
की मात्रा अधिक होगी, तांबे की मात्रा
होगी तो जेवर का रंग सफेद तथा
कदार होगा. सफेदी लिए हुए चमकदार
ों को अच्छा माना जाता है.*

ुद्धता और मूल्य निर्धारण

*यह सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण बिंदु होता है.
खरीदते समय प्रायः लोग सोने के
नत मूल्य के आधार पर ही जेवर का
भी भुगतान कर देते हैं. किंतु ऐसा नहीं
चाहिए. यदि कोई जौहरी ऐसा करता
उसे टोकना चाहिए. क्योंकि जेवर में
हुए मिश्रण का मूल्य सोने के मूल्य के
र नहीं होता. इस के लिए आप को
ए कि जेवर पर अंकित कैरेट के आधार
ोने का मूल्य निर्धारित कर लें फिर उस
टांके मिश्रण का वजन भी निकाल
कर उस में मजदूरी जोड़ कर ही भुगतान
हर बड़ी और अच्छी दुकानों में बिकने
जेवरों पर कैरेट, टांके का वजन तथा
ाई चार्ज) का टैग लगा होता है.*

*सोने की शुद्धता के आधार पर मूल्य
र्धारण निम्न प्रकार से किया जाता है:
यदि 24 कैरेट सोने का मूल्य 4,000
है तो 1 कैरेट का मूल्य होगा*

4,000/24=167.00 रुपए (लगभग). इसी प्रकार 22 कैरेट का मूल्य होगा 22×167.00=3,674.00 रुपए. इसी प्रकार क्रमशः 21, 20, 19 तथा 18 कैरेट का मूल्य निकाला जा सकता है.

शुद्धता की परख कैसे करें

सोने की शुद्धता का प्रतिशत परखने के लिए कोई भी निश्चित पैमाना निर्धारित नहीं है जिस के आधार पर देखते ही सोने की शुद्धता को परखा जा सके. इस के लिए अव्वल तो दुकानदार के ऊपर तथा जेवरों के ऊपर अंकित कैरेट पर ही विश्वास किया जा सकता है. और यदि फिर भी किसी प्रकार की धोखाधड़ी का अंदेशा लगता हो तो दिल्ली में 4 ऐसी प्रयोगशालाएं हैं, जहां सोने की शुद्धता का प्रतिशत पता लगाया जा सकता है. इस के लिए जेवर में से थोड़ा सा सोना काटिए और उस का वजन कर के प्रयोगशाला में भेज दीजिए. उसे पिघला कर शुद्धता का प्रतिशत पता लग जाएगा. इस के लिए 40 से 50 रुपए का मामूली भुगतान करना पड़ता है. इन प्रयोगशालाओं के पते निम्नलिखित हैं :

- *श्रीराम इंस्टीट्यूट फार इंडस्ट्रियल रिसर्च, 19, यूनिवर्सिटी रोड, दिल्ली-7, फोन : 7257267.*
- *आर.के. चंद्रभान मुल्तानी असेरी लेबोरेटरी, 1169, कच्चा बाग, चांदनी चौक, दिल्ली, फोन : 2514612.*
- *मुल्तानी असेरी लेबोरेटरी, 1246, कच्चा बाग, चांदनी चौक, दिल्ली, फोन : 2510719.*
- *मुल्तानी टंच सेंटर, 2483/8, बीडन पुरा, करोल बाग, नई दिल्ली, फोन : 5722743.*

अपने सर्वोच्च बिंदु पर थीं, जो अब 295 डालर प्रति औंस से भी नीचे आ चुकी हैं. जबकि पिछले एक साल में वहां शेयरों की कीमतें दोगुनी होने का उछाला ले रही हैं.

भारत में सोने की दरों का लगातार नीचे गिरने का पहला कारण तो उपर्युक्त अंतर्राष्ट्रीय गतिविधियां ही हैं, पर इस के अलावा भी कुछ अन्य कारण हैं. यहां सरकारी नीतियों की बदौलत भी सोने की घरेलू उपलब्धता में वृद्धि हुई है. सरकार द्वारा अनिवासी भारतीयों को अपने साथ 10 किलो तक सोना विदेशों से लाने की छूट देने के बाद यहां 7 बैंकों तथा 4 अन्य एजेंसियों को सोना, चांदी और प्लेटिनम आयात करने की अनुमति दी गई.

इस उदारीकरण के तहत अब भारतीय कीमतें भी अंतर्राष्ट्रीय कीमतों के साथ जुड़ गई हैं. यहां भी सोना खरीदना कोई अच्छा

यदि आप किसी ऐसे शहर में हैं जहां शुद्धता जानने के लिए कोई प्रयोगशाला नहीं है तो आप को चाहिए कि जेवर में से थोड़ा सा सोना काट कर उस में से 2 भाग कर के वजन कर के 2 जौहरियों को पिघला कर शुद्धता परखने हेतु भेज दें. फिर प्राप्त रिपोर्टों के आधार पर आप को स्वत: शुद्धता का प्रतिशत पता चल जाएगा. 1% कम या अधिक की शुद्धता तो क्षम्य होती है.

किंतु प्राय: ग्राहक शुद्धता परखने के लिए इतने झंझटों में पड़ना नहीं चाहते और किसी भी दुकानदार से जेवर खरीद लेते हैं. किंतु यह गलत है. यदि सोने की शुद्धता परखने में आप सक्षम नहीं हैं तो आप को चाहिए कि कुछ निम्नलिखित सावधानियां बरतें, नहीं तो फिर बाद में पछताने के सिवाय कुछ नहीं बचेगा.

● *पहली बात तो यह कि कभी भी जेवर को निवेश न समझें. आप के धन के निवेश हेतु दूसरे बहुत से साधन मौजूद हैं, उन का इस्तेमाल करें. सामान्य उपयोग के लिए ही जेवर रखना बेहतर होता है. जेवरों के माध्यम से अपनी समृद्धि का प्रदर्शन और झूठा घमंड परेशानी में डाल सकता है.*

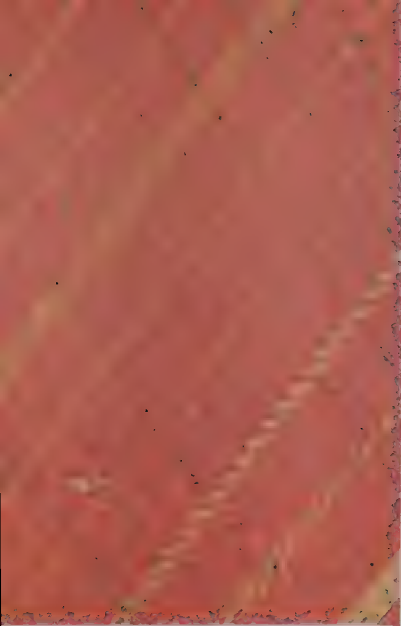
● *जेवर किसी विश्वसनीय तथा प्रमाणित जौहरी की दुकान से ही खरीदें. छोटेमोटे दुकानदारों के पास धोखाधड़ी की विशाल संभावनाएं होती हैं, वहां न तो जेवर में शुद्धता की सुनिश्चित गारंटी होती है और न ही सही सूचनाओं का आश्वासन. इस तरह से आप उन छोटेमोटे दुकानदारों से जेवर खरीद कर एक प्रकार से धोखाधड़ी को भी बढ़ावा देते हैं. बड़े दुकानदारों के पास ठगे जाने की संभावनाएं कम होती हैं.*

● *जेवर खरीदते समय दुकानदार से पक्की रसीद लें, जिस पर जेवर के बारे में पूरा विवरण लिखा हो. प्राय: दुकानदार कच्ची रसीदें दे देते हैं, ऐसे में आप उन से अशुद्धता की शिकायत नहीं कर सकते.*

● *प्राय: जेवरों के पीछे दोहरे कैरेट अंकित होते हैं जैसे 22/20, 20/18. इस का अर्थ होता है कि खरीदते समय आप को 22 कैरेट का मूल्य देना होगा जबकि बेचते समय आपको उसी जेवर का 20 कैरेट का मूल्य प्राप्त होगा. इस तरह दोहरे कैरेट वाले जेवर न खरीदें.*

● *कम जोड़ अथवा टांके वाले जेवर खरीदें. क्योंकि जेवर को जोड़ते समय किसी अन्य धातु का प्रयोग किया जाता है जिस से जेवर का वजन प्रभावी होता है. बेहतर है कि हमेशा कैडमियम से जुड़ा जेवर खरीदें, क्योंकि कैडमिजम एक ऐसा पदार्थ है जो जेवर को जोड़ने के पश्चात उड़ जाता है. जेवरों के पीछे भी कैडमियम (KDM) लिखा होता है, देखना न भूलें.*

ये कुछ छोटीछोटी सावधानियां बरत कर आप सोने की खरीद में लगे अपने धन को तो सुरक्षित रख ही सकते हैं, साथ ही धोखाधड़ी तथा गलत उत्पादनों को भी रोक सकते हैं. और आप के ही प्रयत्नों द्वारा सुधारा जा सकता है. क्योंकि यदि कोई दुकानदार 1,000 लोगों को जेवर बेचता है और उस में से कोई एक आदमी अशुद्धता संबंधी शिकायत करता भी है तो वह उस के जेवर का पैसा वापस कर देता है. लेकिन फिर भी उस ने धोखा दे कर 999 लोगों से जितना लाभ कमाया है उस की अपेक्षा वह धनराशि बहुत कम होती है. इस प्रकार चाहिए कि हर व्यक्ति सोना खरीदते समय सतर्कता बरते.



ाबित नहीं हो रहा है. 1997 से अब
ई रिकार्ड गिरावट से सोने में जहां
ों के मुकाबले 10 से 12 प्रतिशत
े निरंतर निवेश की जो रफ्तार बनी
वह भी घट कर 3 प्रतिशत तक
ई.

इसे यों भी कह सकते हैं कि यदि
1990 में 1,000 रुपए का सोना
वह 1,120 रुपए में बिकेगा, यानी
त से भी कम रिटर्न पर, इसी तरह
पैसा तब इक्विटी में निवेश किया
ा तो वह आज 1,900 रुपए पर
माना जाता और बैंकों में वह राशि
2,200 रुपए हो चुकी होती.

कीमतों में गिरावट का कारण

े की कीमतों में आई गिरावट का
ण स्वैच्छिक आय घोषणा योजना
आई एस) भी है, जिस के चलते
न रखने वालों की मेहरबानी अब
खत्म सी हो गई है. वे लोग भी
ाए सोने पर 30 प्रतिशत कर दे
ब सक्रिय पूंजी के रूप में बाजारों
ाए हैं या लाने की तैयारी में जुटे

ए को परिवर्तनीय बनाने के लिए
मिति ने अपनी सिफारिशें सरकार

भारत में आभूषणों के लिए सोने का महत्त्व आज भी जस का तस है लेकिन पश्चिमी देशों में सोना बुरे निवेश की श्रेणी में आ चुका है.

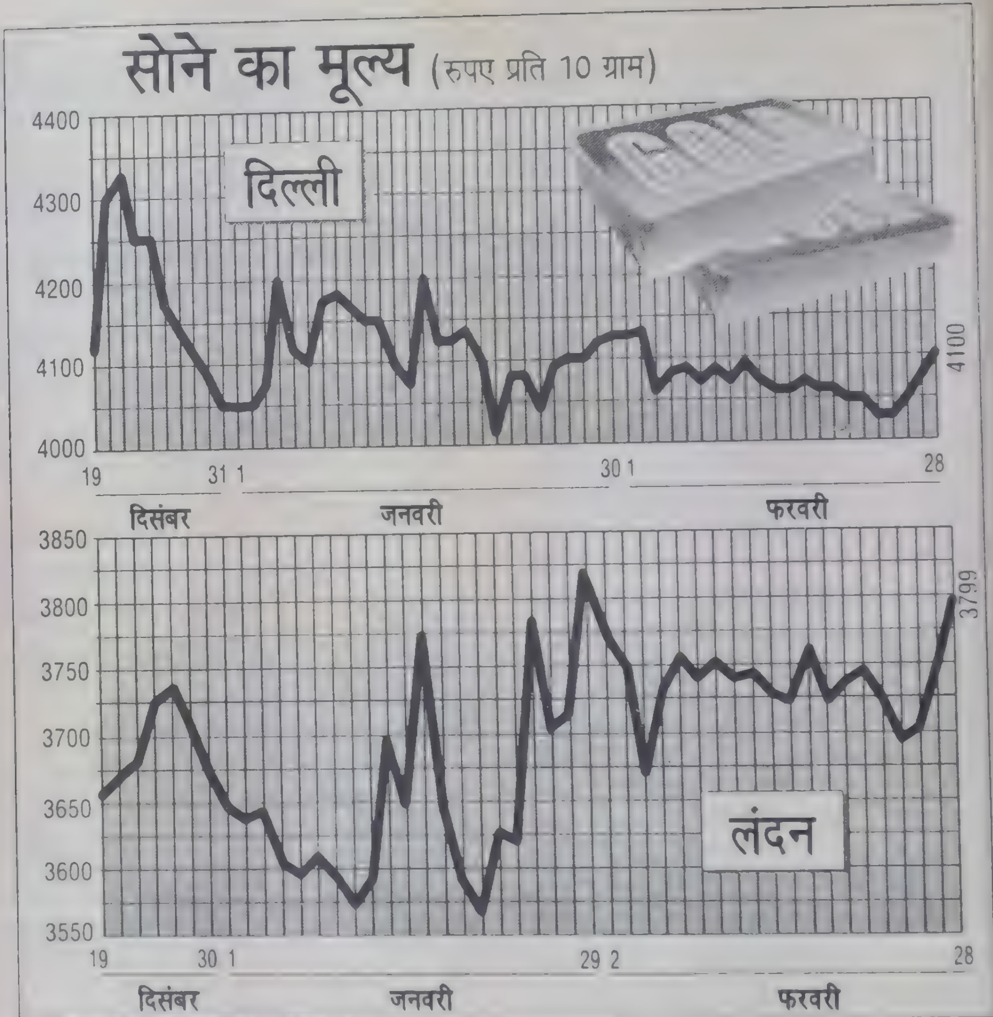
को सुझाई थीं. उन में यह कहा गया था कि सोने के आयातनिर्यात को निर्बाध बनाने के लिए अभी जो प्रति 10 ग्राम सोने के आयात पर 200 रुपए की सीमा शुल्क का प्रावधान है, उसे भी खत्म किया जाए और सरकार सोने के आवागमन की मात्रा निर्धारित न करे. यदि सरकार इन सिफारिशों को मान लेती है तो भी यहां सोने की गिरी कीमतें ज्यादा ऊंची न हो पाएंगी.

आभूषणों के लिए सोने का महत्त्व आज भी जस का तस है, लेकिन पश्चिमी देशों में एक बचत माध्यम या रिजर्व संपत्ति की हैसियत में अब सोने की पहले जैसी अहमियत नहीं रही. वहां अब सोना बुरे निवेश की श्रेणी में आ चुका है.

भारत में दूसरे निवेश विकल्पों की जानकारियां न रहने से यहां मंदी में भी सोना खरीदने का आकर्षण कम नहीं हुआ है. शादीब्याह के मौकों पर सोने में नरमी का रुख देख कर भी लोगों ने सोना खरीदना बंद नहीं किया.

भारतीयों में सोने के प्रति लगाव

परंपरागत तौर पर भारतीय महिलाएं सोने को एक दीर्घकालिक संपत्ति मानती हैं, इसलिए यहां अचल संपत्ति और शेयरों का आकर्षण भी सोने को मात देने की स्थिति में नहीं है. अभी तक आम भारतीयों का यही सोच है कि प्रतिकूल स्थितियों में सोने को बेचने से उस के तात्कालिक दाम तुरंत मिल जाते हैं जबकि शेयर तभी बेचे जा सकते हैं जब उन का बेहतर मूल्य प्राप्त हो. इसी तरह अचल संपत्ति या भूखंड भी जब चाहें, तब नहीं बेचे जा सकते. यहां अभी भी दुलहनों और गृहिणियों में सोने को शरीर पर ढोए रहने की मानसिकता में कोई परिवर्तन नहीं आया है. इसलिए गिरावट के दिनों में भी यहां जौहरियों के यहां सोना खरीदने वालों



की कतारें ही लगी देखी गईं.

पिछले साल दुनिया भर में सोने की मांग 2,807 टन थी, जबकि वास्तविक खनन से सोने का उत्पादन 2,350 टन ही रहा. भारत में सोने की मांग 1997 के पहले 9 महीनों में भी इस के रिकार्ड 535 टन तक ही रही, जिस से साबित होता है कि यहां लोगों को अभी भी सोने से कितना प्यार है. जहां दुनिया के दूसरे देश अनुमानतः 2,500 टन सोने का उत्पादन करते हैं और जिस में भारत केवल 1 टन ही सोना पैदा करता है, वहां सोने की सर्वाधिक खपत भी कोई कम विस्मयकारी नहीं है. यह जानते हुए भी कि अब सोने पर किया गया निवेश ज्यादा लाभकारी नहीं रहा बल्कि इस में स्वर्णाभूषणों के चोरी होने तथा बिक्री के समय उस पर भारी कटौती के नुकसान भी शामिल हैं, यहां सोने के भावों में ज्याद गिरावट या उछाल की कोई संभावना दिखा नहीं देती.

सोने का भविष्य क्या होगा? इस के जवाब में अर्थशास्त्रियों का मानना है कि ज प्रायः सभी बैंकों का सोना खुले बाजार आएगा तो इस के दाम और भी गिरेंगे. त सोने की मांग सिर्फ आभूषणों तक ही सीमि हो कर रह जाएगी. अभी सोने की लड़खड़ा मांग के मध्य जिन के पास सोना है, वे अप को रईसी का प्रतीक कह सकते हैं. पर ज हकीकत में सोने पर निवेश की अहमिय गिर जाएगी और यह रिजर्व भंडारों से च्य हो जाएगा, तब सोना भी दूसरी धातुओं जै हो कर रह जाएगा.

दिन दहाड़े

मार्केट पटना में हमारी
ब्रीफकेस, अटैची, बैग
की दुकान है. मेरे बड़े
उस दुकान को संभालते
कभीकभी उन की
स्थिति में मैं भी काउंटर
बैठ जाता हूं.

एक दिन एक बुजुर्ग आए
अपनी बेटी की सगाई में
के लिए 2-3 अच्छे और
ूत ब्रीफकेस लेने की इच्छा
त की.

मैं ने उन्हें कई अच्छे
केस दिखाए. अच्छी तरह
रख कर उन्होंने 2 ब्रीफकेस



कर लिए और उन्हें एक
रखने को कहा. फिर मुझ
00 रुपए का छुट्टा मांगा.

मेरे पास छुट्टा नहीं था.
मैं ने कारण पूछा तो वह
की ओर इशारा करते हुए
"आटोरिकशा वाला खड़ा
से किराए के 85 रुपए देने

इतना सुन मैं ने उन्हें सीधे
रुपए का नोट थमा दिया.
ने कर वह आटोरिकशा की
बढ़े और एकाएक पता
कहां ओझल हो गए.

मैं ने बाहर जा कर जब
वाले से पूछा तो उस ने
कि वह तो किसी सवारी
री दुकान पर नहीं लाया.
ो काफी देर से खड़ा
की प्रतीक्षा कर रहा है.

मुझे समझते देर न लगी कि मैं दिनदहाड़े ठगा जा चुका हूं.

–हेमंत कुमार सिन्हा

*

घटना इंदौर की है. मैं स्कूल की छुट्टियों में अपने मामाजी के घर गई हुई थी. उन के पड़ोस में एक मध्यवर्गीय निसंतान वृद्धा रहती हैं.

एक दिन वह अम्मांजी बाजार से घर वापस आ रही थीं कि रास्ते में 2 युवकों ने उन्हें रोक कर कहा, "अम्मांजी, हमारे सेठ बड़े ही धर्मात्मा और दानी हैं. आज पूर्णिमा है और प्रत्येक पूर्णिमा को वह गरीबों और जरूरतमंदों को कपड़े इत्यादि बांटते हैं. अगर आप को भी कुछ चाहिए तो हमारे साथ चल सकती हैं."

भोलीभाली अम्मांजी चलने को तैयार हो गईं.

वे दोनों उन्हें एक आटो पर बिठा कर साथ ले गए. रास्ते में उन्होंने कहा कि वह अपने कान के सोने के टाप्स उतार दें अन्यथा सेठजी उन्हें गरीब नहीं समझेंगे. अम्मांजी ने टाप्स उतार दिए और बातों ही बातों में उन युवकों ने उन से वे टाप्स ले भी लिए.

वे उन्हें एक बड़े से भवन के पास ले गए और बोले, "आप अंदर जा कर सेठजी से उपहार ले आइए...हम आप को इसी आटो से वापस उसी जगह छोड़ देंगे."

अम्मांजी आटो से उतर कर भवन के अंदर चली गईं. उन के अंदर जाते ही वे दोनों युवक भी नौ दो ग्यारह हो गए.

–पद्मा शर्मा

*

मैं रेलगाड़ी से घर जा रहा था. मेरे पास 2 पान थे. जब मैं पान खाने लगा तो बगल में बैठे व्यक्ति ने यह कह कर मुझ से पान मांगा कि 'अगले स्टेशन पर मैं आप को इस के बदले में पान ला कर



दे दूंगा.' इस पर मैं ने उसे पान दे दिया.

अगले स्टेशन पर वह व्यक्ति उतर कर मेरे लिए पान ले आया. जब मैं ने वह पान खाया तो थोड़ी देर बाद ही बेहोश हो गया.

जब आंख खुली तो वह व्यक्ति मेरे सामान सहित फरार हो चुका था.

–शंभु कुमार जायसवाल ●

इस स्तंभ के लिए आप अपने, अपने मित्रों व संबंधियों के अनुभव भेज सकते है. प्रत्येक प्रकाशित संस्मरण पर 50 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. अपने संस्मरण इस पते पर भेजें. संपादकीय विभाग, सरिता, ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

प्यार का बंधन

कहानी ● नीरज

इंजन ने सीटी दी और गाड़ी धीरेधीरे प्लेटफार्म छोड़ने लगी. मैं ने सूटकेस सीट के नीचे खिसकाया और उदास सा सीट पर बैठ गया.

पिछले 3 वर्षों में यह पहला मौका था, जब मैं बुझे मन से ससुराल जा रहा था, वरना जब भी लखनऊ जाना होता, मेरा मन पुलकित हो उठता, ससुराल तो बस ससुराल ही होती है. आहा, दामाद की क्या खातिरदारी होती है. पलपल स्नेह लुटाते साससुसर,



'जीजाजी...जीजाजी' कह कर आगेपीछे घूमते सालेसालियां, हुक्म पर हाजिर हाथ बांधे खड़े नौकर, पकवानों से सजी मेज, दरवाजे पर घूमने के लिए तैयार खड़ी गाड़ी, और मुसकान बिखेरती, कई दिनों के विछोह के बाद मिलने के लिए आतुर सजीधजी पत्नी. सच, दामाद बनने का मजा ही कुछ और है.

पर इस बार तो छवि मुझ से झगड़ कर मायके गई थी, इसलिए मुझे लग रहा था कि अब शायद ससुराल में इतनी गरमजोशी से मेरा स्वागत नहीं होगा. मैं सोचने लगा. छवि उन की नाजों में पली लाड़ली बेटी है. उस ने वहां जा कर मेरी और घर वालों की खूब शिकायतें की होंगी. ऐसे में जाहिर है, उस के मातापिता को बुरा लगा ही होगा. वैसे छवि को मेरे यहां कोई खास असुविधा तो नहीं थी, पर कुछ तो उस की नासमझी और कुछ संयुक्त परिवार में रहने का अनुभव न होने के कारण वह अब तक हमारे घर में सामंजस्य न बैठा पाई थी.

छवि के मातापिता पढ़ेलिखे और आधुनिक विचारों के थे. छवि भी समझदार और विनम्र थी. लेकिन संयुक्त परिवार में



स्वच्छंद और आधुनिक विचारों वाली छवि अपनी संयुक्त परिवार वाली ससुराल के परंपरावादी कायदों के खिलाफ थी. दूसरी ओर अंशुल को बुजुर्गों के प्रति उस की बेअदबी सहन न थी. इसी झगड़े ने दोनों को अलग कर दिया. परंतु इस एक वजह से पतिपत्नी के बीच बंधा प्यार का बंधन क्या टूट गया?

रहने वाली बहू को बुजुर्गों के प्रति जिन अदबकायदों की जानकारी होनी चाहिए, वह उस में नहीं थी. एकल परिवार में रहने के कारण वह स्वच्छंद प्रकृति की थी. [illegible] भी पुलिस अफसरों के बच्चों में थोड़ी [illegible]नमिया ठसक तो होती ही है.

शादी के बाद शुरू के दिनों में ही जब वह बातबात पर खिलखिला कर हंस पड़ती तो मुझे कहना पड़ता, 'शी...आहिस्ता हंसो, आहिस्ता बोलो. तुम अभी नई दुलहन हो. यों 'खीखी' करोगी तो रिश्तेदार बातें बनाएंगे.'

मेरा कमरा दूसरी मंजिल पर था. सीढ़ियां हाल में से ही हो कर जाती थीं. जब छवि खटखट करती फुरती से सीढ़ियां चढ़तीउतरती तो अनायास ही सब का ध्यान उस ओर खिंच जाता. दरवाजा जोर से बंद करती तो बाकी खिड़की, दरवाजे झनझना उठते.

ऊपर खिड़की में से जब वह मुझे आवाज लगाती, 'अंशुल, जरा इधर आना,' तो मैं ताऊजी और पिताजी के सामने शर्म से पानीपानी हो जाता. कमरे में जा कर मैं उसे समझाता, 'छवि, कृपया तुम सब के सामने मुझे नाम ले कर आवाज मत दिया करो. हमारे यहां पति को उस के नाम से संबोधित करना बुरा माना जाता है. अकेले में चाहे तुम मुझे कुछ भी कह कर पुकारो, कोई दिक्कत नहीं.'

तब उस का मुंह फूल जाता, 'तो क्या मैं तुम्हें गंवार औरतों की तरह 'ए जी,' 'ओ जी' कहूं?'

'क्या हर्ज है? प्रवीण भैया और भाभी [illegible] तो एकदूसरे को कभी नाम ले कर आवाज नहीं देते...बल्कि वे तो बुजुर्गों के सामने कभी आपस में हंसीमजाक भी नही करते, और यह ठीक भी है. बतियाने के लिए अपना कमरा ही काफी है. बड़ों के सामने चुहलबाजी करना और सारा दिन 'हीही', 'ठीठी' करना बेअदबी है.'

'उफ...कौन से जमाने में जी रहे हो, तुम...थोड़ा 'माडर्न' बनो, यार.'

'यह आधुनिकता नहीं बेशर्मी है. जो आधुनिकता हमें हमारी संस्कृति और परंपराओं से तोड़े, उस पर लानत है.'

शुरूशुरू में तो छवि यह सोच कर मेरी हर बात सहर्ष मान लेती थी कि यह नाटक थोड़े ही दिन चलना है. लेकिन 2 महीने बीतने पर ही वह झुंझलाने लगी थी. रोज सुबहशाम उसे याद दिलाना पड़ता कि उसे बड़ों के चरण स्पर्श करने हैं. सुबह 5 बजे मैं उसे जगाता, 'उठो छवि, घर के सब लोग जाग गए हैं.'

वह झुंझला उठती, 'जाग गए हैं तो जाग जाने दो. मुझे नींद आ रही है...मुझे सोने दो.'

'उठ भी जाओ डार्लिंग, बहुओं का दे[र] तक सोना शोभा नहीं देता,' मेरे आग्रह प[र] वह बेमन से किसी तरह बिस्तर छोड़ती.

सिर पर पल्लू ढकने में भी उसे बहु[त] कोफ्त होती. हमारे घर में बहुओं का सि[र] उघाड़ कर घूमना अच्छा नहीं माना जाता[.] मेरी मां, ताई और वृद्धा दादी तक हमेश[ा] सिर ढके रहती हैं. सच कहूं तो मुझे स्व[यं] भी सिर ढके अदब से रहने वाली बहुएं [ही] गरिमामयी लगती हैं.

छवि अपने साथ लाए सलवारसूट,
स, गाउन और नाइटी वगैरह को बड़ी
रत भरी निगाहों से देखती. हनीमून के
रान ही वह उन्हें पहन सकी थी. उस के
द से वे अलमारी में ही बंद थे. मैं उसे
ल्ली देने का प्रयास करता, 'इन्हें संभाल
 रख लो, जब अगली बार हम घूमने
नेंगे, तब तुम इन्हें पहन लेना या फिर
यके जाओ, तब वहां पहन कर अपना
क पूरा कर लेना.'

छवि एक निःश्वास छोड़ कर मुंह फेर
ी. सवा साल तक तो मां ने उसे दुलहन
 बनाए रखा था. रिवाज के मुताबिक उसे
ल भर तक सुनहरी काम वाले कपड़े ही
नने थे. लेकिन उसे उन कपड़ों में बहुत
ानी महसूस होती. वह उकता कर कहती,
क, कितनी उबाऊ जिंदगी है. कोई मजा
, कोई रोमांच नहीं. कोई निजी जिंदगी
. बस, नहाधो कर गुड़िया की तरह सज
 बैठे रहो.'

दरअसल हमारे परिवार के बारे में 'करोड़पति' शब्द सुन कर उस ने यह कल्पना की थी कि हम लोग फिल्मी रईसों जैसे होंगे. 5-7 गाड़ियां होंगी, 3-4 विदेशी कुत्ते होंगे. दरवाजे पर दरबान पहरा देता होगा. रोज पार्टियां और शोरशराबा होता होगा. जाम टकराए जाते होंगे. घर में 'स्वीमिंग पूल' होगा और मैं अर्थात उस का 'हब्बी' कीमती सूट पहन कर रोज शाम को क्लब में डांस करने जाता होऊंगा.

लेकिन ससुराल में आने के बाद वह जैसे आसमान से गिरी. हम लोग दिखावे से दूर, नियमित दिनचर्या वाले सीधेसादे व्यवसायी हैं. सादा लिबास पहनते, शुद्ध शाकाहारी भोजन करते. झाड़ूपोंछा, बरतन वगैरह के लिए तो घर में नौकर है. पर खाना घर की महिलाएं ही बनाया करती हैं. न कभी ताऊजी पिताजी ने ऊलजलूल चीजों में रुपए जाया किए, न ही मुझे और प्रवीण भैया को फुजूलखर्ची पसंद है.



"हम अंशुल को जरूर डांटते, अगर सचमुच उस की कोई गलती होती," पिता ने छवि को प्यार से समझाया.

घर में हालांकि किसी चीज की कमी नहीं, आलीशान कोठी है, खूबसूरत बगीचा है, कीमती साजोसामान है. 5-6 नौकर हैं, 2 कारें हैं. छवि के पास ढेरों साड़ियां हैं और हीरों के तो कई सेट हैं क्योंकि हम लोग हीरों के जेवरों का ही धंधा करते हैं.

पिताजी के जमाने में भी दुकान यद्यपि बहुत अच्छी चलती थी पर वह जीवन भर एक ही दुकान तक सीमित रहे. मैं ने काम संभालने के बाद व्यवसाय बहुत बढ़ा लिया था. कुशल कारीगरों और अच्छी मशीनों के द्वारा मेरा काम खूब चमक गया था. देश के अन्य शहरों से ही नहीं विदेशों से भी आर्डर मिलने लगे थे.

मुझे कामधंधा छोड़ कर रोजरोज घूमना अच्छा नहीं लगता था. पर चूंकि छवि को घूमना पसंद था, इसलिए मैं मुनीम को दुकान सौंप कर जबतब उसे घुमाने ले जाता. जब वह एक हाथ में घड़ी और एक में ब्रेसलेट पहने बाहर जाने लगती तो दादी मां उसे टोके बिना न रहतीं, 'यह क्या बहू, हाथ नंगे रखना कहां से सीखा है? थोड़ा तो शकुनअपशकुन माना करो.'

वह उलटे पैरों लौट कर चूड़ियां पहन कर आती. उस के हाथों पर जब मां की दृष्टि पड़ती तो उसे समझाने लगतीं, 'यह प्लास्टिक की चूड़ियां मत पहना करो, बेटी, सुहाग कांच की चूड़ियों से माना जाता है.'

'ओफ्फोह मां, अब जाने भी दो. चूड़ियां पहनने से मतलब है, चाहे किसी भी चीज की बनी हों,' मैं बात को संभालने की कोशिश करता.

'अच्छा भई, जैसी तुम लोगों की मरजी,' कह कर मां तो काम में लग जातीं पर छवि का मूड बिगड़ जाता. रास्ते भर फिर उस का मुंह सूजा ही रहता.

'कितने दकियानूस हैं तुम्हारे घर वाले, दुनिया कहां से कहां पहुंच रही है और तुम लोग कुएं के मेढक बने हुए हो,' वह तल्ख स्वर में कहती.

'यह पुरानपंथी नहीं है, छवि. आधुनिक होना अच्छी बात है पर अपने रीतिरिवाजों और परंपराओं का पालन भी हमें करना चाहिए वरना हम अपनी पहचान खो देंगे.'

'भाड़ में गई परंपराएं. मुझ से नहीं होते ये सब झमेले. सारे दिन बातबात पर टोका जाता है, ऐसे मत हंसो...ऐसे मत बोलो...ऐसे मत उठो...ऐसे मत बैठो...यह मत पहनो...यह मत ओढ़ो...वह भी कोई घर है?

'जिस घर में हम गा नहीं सकते, खिलखिला नहीं सकते, खेलकूद नहीं सकते, मनचाहा पहन नहीं सकते, उस घर में कोई कैसे जीए?' वह रोने लगती तो मैं काफी देर तक उसे मनाने की कोशिश करता रहता.

रोज घूमने जाने पर 4-6 महीने तो हमें किसी ने कुछ न कहा, किंतु एक दिन ताऊजी ने मुझे टोक ही दिया, 'मुन्ना, रोजरोज नौकरों के भरोसे दुकान छोड़ना अच्छी बात नहीं है, बेटा. अपने धंधे की तरफ ध्यान दो और छुट्टी के दिन ही घूमने जाया करो.'

मुझे तो उन की बात का बुरा न लगा पर छवि का मुंह फूल गया. कमरे में आ कर वह बड़बड़ाने लगी, 'ये लोग कौन होते हैं हमारे निजी मामलों में दखल देने वाले. तुम भी सुन कर चुपचाप चले आए. कह नहीं सकते थे कि अब मैं कोई बच्चा नहीं हूं, अपना अच्छाबुरा सब समझता हूं.'

'नहीं, छवि, मैं ताऊजी को इस तरह का जवाब नहीं दे सकता. वह जो कुछ भी कहते हैं, हमारे भले के लिए ही कहते हैं. उन्हें पलट कर जवाब तो आज तक कभी पिताजी ने भी नहीं दिया, फिर मैं क्या चीज हूं,' मैं ने बात वहीं खत्म कर दी.

संयुक्त परिवार में बच्चों को हर गलती के लिए टोकते रहना बड़ों की आदत होती है. बच्चे चाहे कितने भी बड़े हो जाएं, बुजुर्गों की निगाहों में वे बच्चे ही रहते हैं. मुझे और प्रवीण भैया को रोज किसी न किसी बात के लिए डांट खानी पड़ती. लेकिन मैं उन की बात का कभी बुरा न मानता क्योंकि उन की डांट में प्यार की मिठास छिपी होती थी. पर इस से छवि के अहम को ठेस सी

लगती थी.

एक दिन तो मैं छवि से नाराज हो गया. दीदी के ससुर किसी काम से जयपुर आए हुए थे. जब भी हमारे यहां कोई खास मेहमान आता तो कीमती टी सेट और भोजन के लिए खूबसूरत, महंगे डिनर सेट का इस्तेमाल किया जाता. जब वह भोजन कर के रुखसत हो गए तो मां ने छवि को आवाज लगाई, 'बहू, यह क्राकरी तुम संभाल कर रसोई में ले जाओ और खुद ही धो कर अलमारी में रख दो. ये नौकर तो मुए कोई काम तसल्ली से नहीं करते. हबड़तबड़ में एक प्लेट भी अगर टूट गई तो पूरा सेट बिगड़ जाएगा.'

मां की बात सुन कर छवि ने बुरा सा मुंह बनाया और उठ कर अपने कमरे में चली गई. मां बेचारी भौचक्की सी उसे जाते हुए देखती रहीं. उन्होंने खुद ही प्लेटें, डोंगे उठाए और रसोई में जा कर धोने लगीं.

मुझे छवि की वह हरकत बहुत नागवार गुजरी. कमरे में जा कर मैं ने कठोर स्वर में कहा, 'छवि, मां ने क्या कहा, तुम ने सुना नहीं?'

'सुन लिया,' वह रुखाई से बोली.

'तो फिर यहां क्यों चली आई?'

'मुझ से नहीं होता यह सब. मैं ने अपने पिता के घर कभी ठीकरे नहीं मांजे...यहां इतने नौकर किसलिए हैं?'

'ये काम नौकरों के भरोसे नहीं छोड़े जाते. एक बरतन भी टूट गया तो क्या सेट खराब नहीं हो जाएगा?'

'एक बरतन टूट जाएगा तो कोई आसमान नहीं टूट पड़ेगा. घर में बीसियों सेट हैं.'

'बीसियों सेट हैं तो क्या तोड़ने के लिए हैं. तुम्हें पता है यह कितनी महंगी और नाजुक क्राकरी है. तुम्हारी तरह मां अगर नौकरों के भरोसे रही होतीं तो ये सेट कभी के टूट गए होते.'

'ओफ्फोह...तुम लोग तो हरदम एकएक पैसे की चीज के लिए रोते रहते हो. क्राकरी न हुई जी का जंजाल हो गई. ऐसा करोड़पति



कर लेने दो

घड़ी दो घड़ी मुझे
प्यार कर लेने दो
आई शाम है सुहानी
शृंगार कर लेने दो.
–बृजेश कुमार गुप्ता

घर किस काम का जिस में न दिमाग को चैन है, न शरीर को आराम. दुनिया के सामने रईस बनते हो और घर में मामूली कपप्लेटों के नुकसान को रोते रहते हो...हुंह.'

'ये मामूली कपप्लेट नहीं हैं, मैडम. बाजार में जा कर एक बार इन की कीमत पूछो. मगर तुम से बहस करना बेकार है. कभी अपने बाप के यहां ये चीजें देखी होतीं, तब न...' मैं ने तैश में कहा.

'देखो अंशुल, हर बात में मेरे बाप का नाम मत लिया करो.' छवि का चेहरा तमतमा गया, 'रईस हो तो अपने घर के हो, समझे? अगर बरतन ही मंजवाने थे तो किसी अफसर की खूबसूरत पढ़ीलिखी बेटी से शादी करने की जरूरत ही क्या थी? कोई गांव की गंवार लड़की लाए होते, अपनी मां और ताई जैसी.'

'छवि, जबान को लगाम दो,' मैं चीख पड़ा.

हमारे झगड़ने की आवाजें सुन कर मां भागी आईं, 'अरे मुन्ना, क्या हो गया है

क्यों बिना बात लड़ रहा है?'

मुझे पकड़ कर वह नीचे ले गईं. फिर देर तक समझाती रहीं, 'मुन्ना, ऐसी छोटीछोटी बातों को तूल नहीं देना चाहिए. बहू अगर काम नहीं करना चाहती तो न सही...इस में नाराज होने की कौन सी बात है. अब मैं उसे डिनर सेट धोने के लिए कभी नहीं कहूंगी. यह मुई क्राकरी हमारी खुशियों से बढ़ कर तो नहीं है.'

मैं जवाब में कुछ न बोला. जब भी हम पतिपत्नी में तकरार हो जाती तो मां हमेशा छवि का ही पक्ष लेतीं और मेरी गलती बता कर मुझे चुप करने की कोशिश करतीं. मैं उन की मजबूरी समझता था. मां नहीं चाहती थीं कि बात आगे बढ़े और घर बिखरने की नौबत आए. अपने एकलौते पुत्र से बिछुड़ने की कल्पना ही उन्हें भयभीत कर देती और वह छवि की हर बेअदबी को खून का घूंट पी कर अनदेखा कर जातीं.

> **बुद्धिमान पिता**
>
> *वही पिता बुद्धिमान है जो अपने बच्चे को जानता है.*

फिर एक दिन तो मैं अपना आपा खो ही बैठा. उस दिन दिवाली थी. मैं घर पर ही था. शाम को हम ने दीए जलाए, पटाखे चलाए फिर सपरिवार लक्ष्मीजी का पूजन किया. लेकिन छवि ने पूजन में भाग न लिया. नास्तिक होने के कारण उस की पूजापाठ में कोई रुचि नहीं थी. जब भी हमारे यहां कोई पूजा या हवन वगैरह होता, वह रजस्वला होने का बहाना कर के अपने कमरे में पड़ी रहती. पूजन के बाद हम ने बड़ों के चरण स्पर्श किए.

'बहू दिखाई नहीं दे रही. क्या उस की तबीयत ठीक नहीं है?' ताऊजी ने सहज भाव से पूछा.

'जी, कह तो रही थी कि सिर में दर्द है,' मैं ने बहाना बनाया.

छवि के कारण अकसर मुझे शर्मिंदा होना पड़ता था. झुंझलाया सा मैं सीढ़ियां चढ़ कर अपने कमरे में पहुंचा. वह बिस्तर पर तकिए के सहारे अधलेटी हो कर पत्रिका पढ़ रही थी.

'छवि, नीचे सब दिवाली मना रहे हैं और तुम यहां बैठी हो.'

'मुझे इन सब चीजों में दिलचस्पी नहीं है.'

'हद करती हो...नास्तिक होने का यह मतलब तो नहीं कि हम तीजत्योहार मनाना ही छोड़ दें. पूजा चाहे तुम मत करो पर बड़ों के चरण स्पर्श तो कर सकती हो. क्या सोचते होंगे, सब लोग...थोड़ा तो लिहाज रखो.'

'शर्म या लिहाज आंखों का होता है, अंशुल. मैं फालतू के ढकोसलों में यकीन नहीं करती. सुबहशाम की यह कवायद मुझ से नहीं होती,' उस ने तीखे स्वर में जवाब दिया.

छवि के तेवर देख कर मेरा पारा चढ़ गया, 'यह कवायद तुम अकेली तो नहीं कर रही हो...हम सब भी तो करते हैं. न जाने तुम्हें पैर छूने में इतना जोर क्यों पड़ता है. पढ़ीलिखी या खूबसूरत क्या यहां तुम ही एक हो? नयना भाभी क्या पढ़ीलिखी नहीं हैं, वह क्या खूबसूरत नहीं हैं या संपन्न घर की नहीं हैं...वह भी तो सुबहशाम सब के पैर छूती हैं.'

'नयना भाभी क्या करती हैं और क्या नहीं, मुझे इस से कोई मतलब नहीं. हर इनसान का जीने का अपना तरीका होता है. वह अपने ढंग से जी रही हैं और मैं अपने ढंग से जीना चाहती हूं.'

'नहीं, यहां तुम्हारा ढंग नहीं चलेगा.' मेरा स्वर कठोर हो गया, 'अगर तुम्हें अपने ही तरीके से जीना था तो शादी करने की जरूरत ही क्या थी? शौक से रहतीं अपने बाप के यहां और जो जी चाहता वह करतीं. यहां तुम्हारी मरजी नहीं चल सकती. यहां तुम उसी ढंग से रहोगी जैसे सब लोग रह रहे हैं.'

'जिस ढंग से तुम्हारे घर के लोग रह रहे हैं वैसे रहना मेरे बस की बात नहीं,' छवि का स्वर आवेश में ऊंचा हो गया, 'एक

का रोना होता तो मैं मन मार कर रो मगर जिंदगी तो इस ढंग से नहीं गुजारी सकती. मैं अपना घर चाहती हूं, अपना जिस में मैं अपनी मरजी के मुताबिक सकूं, जब मरजी हो सोऊं, जब मरजी ठूं, जो जी चाहे बनाऊं, जो जी चाहे जब जी चाहे नहाऊं और जब जी चाहे

म ने मुझे सब कुछ दिया है...पर एक ावार जिंदगी नहीं दी तो क्या दिया? हीरेमोतियों को क्या मैं चाटूं? तुम्हें यही चिंता रहती है कि घर वाले क्या गे या क्या कहेंगे. तुम ने कभी यह ह तो नहीं की कि मैं क्या सोचती हूं रा दिल क्या कहता है. मेरी जिंदगी मेरी है और इसे अपने ढंग से जीने का पूरापूरा हक है. अगर तुम मुझे उसी ढंग ना चाहते हो, जिस ढंग से तुम्हारी मां ताई रहती आई हैं तो फिर तुम्हारा यह पति घर तुम्हें ही मुबारक हो.'

छवि ने कड़वे स्वर में कहा और ारी से कपड़े निकाल कर सूटकेस में लगी. मैं कुछ क्षण हतप्रभ सा उसे रहा, फिर एक निश्वास छोड़ कर रे सीढ़ियां उतर कर हाल में सोफे पर कर बैठ गया. घर के बाकी लोग अपने कामों में लगे थे.

थोड़ी देर बाद छवि सूटकेस हाथ में सीढ़ियां उतरने लगी.

मां ने अचरज से पूछा, 'अरे बहू, कहां ी हो?'

छवि ने कोई उत्तर न दिया.

मां, इसे जाने दो,' मैं ने ठंडे स्वर में

पागल हुआ है क्या...दिवाली जैसे पर घर की लक्ष्मी कहीं जाती है रोक न इसे,' मां ने अधीरता से कहा.

नहीं,' मैं दृढ़ता से बोला.

मुन्ना, तेरे दिमाग को क्या हुआ है. फर तू ने झगड़ा कर लिया. लड़ने के तेरे पास और कोई काम भी है या नहीं. जा, मना कर ले आ इसे,' मां मुझे झकझोरती हुई बोलीं.

'मैं नहीं जाऊंगा,' मैं ने चिल्ला कर जवाब दिया. छवि तब तक दरवाजे के बाहर हो चुकी थी. हमारी बातचीत सुन कर बाकी लोग भी हमारे नजदीक आ गए.

'क्या हुआ, चाची?' प्रवीण भैया ने पूछा.

'इसी से पूछ बेटा, न जाने इस ने बहू से क्या कह दिया है. वह सूटकेस ले कर घर से चली गई है.'

'तू बिलकुल बेवकूफ है मुन्ना, तुझ में दिमाग नाम की चीज नहीं है,' प्रवीण भैया मुझे डांटने लगे, 'इस तरह के तमाशे करना क्या अच्छा लगता है...कोई देखेगा तो क्या कहेगा? आधी रात को बहू अकेली घर से गई है... ऊंचनीच हो गई तो उस के मांबाप को जवाब देना मुश्किल हो जाएगा.'

'जा बेटा, मना कर ले आ उसे. कहासुनी तो मियांबीबी में चलती ही रहती है. यों तिल का ताड़ थोड़े न बनाया जाता है. लोग हंसेंगे...घर की इज्जत मिट्टी में मिल जाएगी,' ताऊजी मुझे समझाने लगे.

'मैं नहीं जाऊंगा, ताऊजी,' मैं ने दुखी स्वर में कहा, 'इस लड़की के साथ मैं नहीं निभा सकता. जो लड़की मेरे बुजुर्गों का सम्मान नहीं कर सकती, उस के लिए मेरे दिल में कोई जगह नहीं. आज दिवाली जैसे त्योहार पर भी वह बड़ों के पैर नहीं छू सकती, ऐसी बदतमीज बीवी की मुझे जरूरत नहीं,' कह कर मैं उठने लगा.

'मुन्ना, ऐसी मामूली बात को इतना तूल नहीं देना चाहिए,' पिताजी ने मेरा हाथ पकड़ कर वापस मुझे सोफे पर बैठा दिया, 'पैर न छूने से हम छोटे तो नहीं हो जाएंगे. तुम लोग हमारे पैर छुओ या न छुओ, तुम हमारे प्यारे बच्चे हो और रहोगे. इतनी सी बात के लिए क्या तू पत्नी से नाता तोड़ लेगा? जा, अभी उसे वापस ले कर आ.'

'नहीं, हरगिज नहीं. बात सिर्फ इतनी सी नहीं है. वह अलग रहना चाहती है और

यह नहीं हो सकता. मैं उस की खातिर अपने परिवार को नहीं छोड़ सकता. वह जाना चाहती है तो जाए...मैं उस के बिना जी लूंगा,' कह कर मैं उठा और अपने कमरे की तरफ चल दिया.

हार कर फिर प्रवीण भैया और भाभी ही छवि को लेने रेलवे स्टेशन गए थे. पर लाख समझाने पर भी वह न लौटी.

उस घटना को 4 माह बीत चुके हैं. न तो छवि ने अपने सकुशल पहुंचने की सूचना भेजी, न मैं ने ही उस का हालचाल जानने का कोई प्रयास किया. मेरे घर वाले अलबत्ता उस के मातापिता को जबतब फोन करते रहते थे.

सब के समझानेबुझाने और काफी जोर देने पर अब मैं छवि को लेने जा रहा हूं. हमेशा तो मैं कार से ही लखनऊ जाता हूं. पर इस बार मैं जानबूझ कर रेल से जा रहा हूं. मुझे पता है कि छवि को बसों और रेलों में धक्के खाना पसंद नहीं है, मगर मैं उस की पसंद और नापसंद की परवाह क्यों करूं. क्या उस ने मेरे जज्बातों की परवाह की थी कभी.

गाड़ी लखनऊ पहुंची तो मैं बुझे मन से नीचे उतरा. रास्ते भर टैक्सी में बैठा मैं यही सोच कर परेशान होता रहा कि ससुराल पहुंचने पर सब के सूजे हुए चेहरों का सामना कैसे करूंगा, घर पहुंचा तो सब से पहले मेरी सास सामने दिखीं. हमेशा की तरह पुलकित होते हुए वह मेरी तरफ बढ़ीं, "अरे अंशुल, तुम...आओ बेटा, टैक्सी से कैसे आए? गाड़ी खराब पड़ी है क्या?"

"जी," मैं ने उन के पैर छुए तो उन्होंने स्नेह से मेरे सिर पर हाथ फेरा.

"अरे प्रभु, सूटकेस अंदर ले जाओ," उन्होंने नौकर को आवाज दी. फिर वह मुझे भीतर ले गईं. मेरे मन को यह सोच कर तसल्ली मिली कि चलो, माताश्री के मिजाज तो दुरुस्त हैं.

"अरे संतोषी, पानी लाना. रामरतन, तुम 2 प्याले काफी बनाओ," उन्होंने पल भर में नौकरों को कई आदेश दे डाले. मेरे सालेसाली मुझे देख कर चहकने लगे और 'जीजाजी जीजाजी' कहते मुझ से देर तक बतियाते रहे.

उन सब का व्यवहार देख कर मुझे आश्चर्य हो रहा था. मन ही मन सोचने लगा, ये सब तो ऐसे पेश आ रहे हैं जैसे कुछ हुआ ही नहीं. क्या छवि ने इन्हें झगड़े वाली बात नहीं बताई? शायद ऐसा ही हुआ है.

मुझे आए हुए काफी देर हो गई थी, पर अभी तक छवि कहीं नजर नहीं आई थी.

मैं ने झिझकते हुए अपनी सास से पूछ ही लिया, "छवि कहां है?"

"यहीं है," उन्होंने मुसकरा कर कहा, "छवि, इधर आना जरा," उन्होंने आवाज लगाई.

"क्या काम है?" पास वाले कमरे से आवाज आई.

"अंशुल बुला रहे हैं...इन का मन नहीं लग रहा."

"क्यों? इतने सारे लोग हो तो मन बहलाने के लिए," तीखे स्वर में जवाब आया.

मेरी सास फिर कुछ नहीं बोलीं. मैं ने भी फिर छवि के बारे में कोई बात न की.

शाम को मेरे ससुर आफिस से लौटे तो उन का व्यवहार भी सहज था. मुझे यकीन हो गया कि छवि ने हमारे बीच हुए झगड़े का जिक्र शायद नहीं किया है. मेरे मन का बोझ हलका हो गया और छवि के प्रति रोष भी कम हो गया.

लान में बैठ कर हम सब देर रात तक गपबाजी करते रहे. रहरह कर मेरी निगाह अंदर की तरफ उठ जाती कि शायद कहीं छवि नजर आ जाए, पर उस ने दर्शन ही नदिए. रात के भोजन के समय भी वह उपस्थित न हुई, न ही मेरे शयनकक्ष में आई.

सुबह नाश्ते के समय मेरे ससुर स्वयं जा कर उसे बुला कर लाए. गरदन झुकाए वह चुपचाप आ कर कुरसी पर बैठ गई.

देर हलकीफुलकी बातें होती रहीं.
चीत के दौरान मेरे सवसुर ने मेरी तरफ
हुए पूछा, "आज पिकनिक का प्रोग्राम
लें?"

"जी नहीं, मैं आज लौटना चाहता हूं."

"अरे, इतनी जल्दी?"

अभी काम बहुत ज्यादा है. मेरा जल्दी
ना जरूरी है. 12 बजे की ट्रेन से निकल
गा."

"लेकिन दीदी की तो कोई तैयारी की
हीं है," अदिति बोली.

"तैयारी कर के करना भी क्या
यपुर जाना ही किसे है," छवि ने
कार भाव से कहा तो मेरे हाथ का कौर
में ही रह गया.

"कैसी बच्चों जैसी बातें करती है.
क्या अकेले लौटेंगे?" मेरी सास थोड़ा
ा कर बोलीं.

"इन्हें पता है कि मैं वहां रहना नहीं
, फिर यह मुझे लेने आए ही क्यों?"
ने सपाट लहजे में जवाब दिया.

कुछ देर के लिए मौन छा गया. मेरी
ही फिर बोलीं, "देख छवि, अब तू
नहीं है. इतनी पढ़ीलिखी हो कर भी
जैसी हरकतें करती है."

"पढ़ीलिखी हूं, यही तो दुख है. गंवार
तो मजे से इन के घर में रह लेती."

"तुम्हें वहां दिक्कत क्या है, बेटी?
खासा संपन्न घर है...भरापूरा परिवार
सयों नौकर हैं. अंशुल जैसा समझदार
. और क्या चाहिए?" मेरे ससुर बोले.

"पैसा ही जिंदगी में सब कुछ नहीं
कुछ चीजें ऐसी भी होती हैं जो पैसे
दी नहीं जा सकतीं. अंशुल जैसे भी
स्वीकार हैं. पर इन के कुनबे के साथ
रे बस की बात नहीं. यह अपने बुजुर्गों
ज्ञाकारी बेटे हैं और जब तक संयुक्त
में रहेंगे, यह सिर्फ बेटे ही बने रहेंगे.
पति बन कर रहे हैं, न कभी रह
"

'यही तो तुम्हारी नासमझी है, छवि."

मेरे ससुर उसे समझाने लगे, "जो लड़का 26 बरस तक अपने घर में बेटा बन कर रहा वह शादी होते ही सिर्फ पति बन कर कैसे रह सकता है? और उसे ऐसा करना चाहिए भी नहीं. कितनी परेशानी उठा कर मांबाप बच्चों को पालते हैं, खूनपसीने की कमाई उन पर खर्च कर के उन्हें पढ़ातेलिखाते हैं, अपनी पूंजी लुटा कर उन्हें कामधंधे से लगाते हैं. कितने अरमानों से उन की शादियां करते हैं. उस के बाद अगर बेटा सिर्फ बीवी का हो कर रह जाए तो क्या गुजरती है उन के दिलों पर, तुम अनुमान नहीं लगा सकतीं. संयुक्त परिवार में रहने के अगर कुछ नुकसान हैं तो कुछ फायदे भी तो हैं."

"मुझे तो कोई फायदा नजर नहीं आता. मैं तो सबकी नौकरानी बन कर रह गई हूं. सारे दिन बूढ़ेबुढ़िया पलंग पर बैठे बातें करते रहते हैं और आर्डर करते रहते हैं, 'बहू, यह कर देना', 'बहू, वह कर देना'...इतना भी नहीं सोचते कि हमारे खेलनेखाने के दिन हैं. खुद घर में मौजमस्ती करते रहते हैं और अंशुल सारा दिन दुकान पर जुटे रहते हैं...इतनी भी फुरसत नहीं कि कभी किसी हिलस्टेशन पर ही घूम आएं," छवि ने कड़वे स्वर में कहा.

एक फांसी, किंतु संयोग से!

कई बार खेलखेल में भी कोई संयोग से फांसी का शिकार बन सकता है. कुछ ऐसा ही हादसा हुआ. 11 वर्षीय निलोफर के साथ. मुंबई के जोगेश्वरी इलाके में रहने वाली निलोफर कुछ दिन पहले अपनी 2 बहनों–3 वर्षीय गुलाबाशा व 2 वर्षीय सामीरी–के साथ घर की छत से टंगी रस्सी से खेल रही थी और सीढ़ी पर चढ़ कर बारबार रस्सी के फंदे को गले में डाल रही थी कि अचानक निलोफर के गले में फंदा कस गया. फंदा कसते ही उस की चीख निकली तो घर के बाहर पड़ोसियों से बात कर रहे, उस के मातापिता दौड़े आए और तत्काल उसे अस्पताल ले गए लेकिन रास्ते में ही उस की मौत हो गई.

छवि के पिता मुसकरा कर बोले, "तुम्हें अपने ससुर के आराम करने का बुरा नहीं मानना चाहिए. उन के अब आराम करने के ही दिन हैं. जिंदगी भर उन्होंने मेहनत की. उन की बदौलत ही आज तुम्हारे घर में लक्ष्मी बरस रही है. अब अगर वह बेटे को काम सौंप कर आराम कर रहे हैं तो इस में बुराई क्या है.

"जीवन भर काम कर के इनसान के हाथपैर थक जाते हैं. आज उन के थके हैं कल तुम्हारे भी थकेंगे. क्या तुम यह चाहोगे कि तुम्हारे जवान बेटेबहू ऐश करें और तुम अपने अशक्त हाथपैरों से काम करते रहो."

छवि ने पिता की बात का कोई उत्तर न दिया. वह ही फिर आगे बोले, "अभी तुम गुस्से में हो इसलिए तुम्हें लग रहा है कि तुम अंशुल के बिना रह लोगी. लेकिन एक दिन ऐसा भी आएगा जब तुम्हें अपनी गलती का एहसास होगा. परंतु तब तक बहुत देर हो चुकी होगी. तुम अपने पति और ससुराल वालों की नजरों से गिर जाओगी. फिर जब कभी भी वापस जाओगी तुम्हें घर में वह प्यार और सम्मान नहीं मिलेगा जो अब तक मिलता आया है."

"मैं लौट कर कभी नहीं जाऊंगी. अगर आप को मेरी रोटियां भारी पड़ रही हैं तो मैं आप पर बोझ बन कर नहीं रहूंगी...कमा कर खा लूंगी."

"सवाल रोटियों का नहीं है, सवाल तुम्हारे सुखद भविष्य का है. मायके में पड़ी रहने वाली लड़की को कोई भी अच्छी निगाहों से नहीं देखता. हम तुम से जाने के लिए कभी न कहते, यदि तुम्हारे साथ सचमुच कोई ज्यादती की गई होती...तुम पर कोई अत्याचार किया गया होता.

"तुम अपना घर छोड़ना चाहती हो, महज इसलिए कि तुम्हें वहां साड़ी पहन कर सिर ढकना पड़ता है या बड़ों के पैर छूने पड़ते हैं अथवा सुबह जल्दी उठना पड़ता है. पतिपत्नी का रिश्ता इतनी मामूली सी बातों के लिए नहीं टूटना चाहिए."

"आप मेरी ही गलतियां निकालते रहेंगे या इन्हें भी कुछ कहेंगे," छवि ने रोषपूर्वक कहा.

उस के पिता खुल कर मुसकराए, "हम अंशुल को जरूर डांटते, अगर सचमुच इन की कोई गलती होती. गलतियां तुम करो और दोष हम इन्हें दें, यह तो अच्छी बात नहीं है. जिस तरह से तुम अपने साससुर से प्यार और सम्मान पाना चाहती हो, उसी तरह अंशुल भी हम से अपनेपन की आस रखते हैं. यह घर जितना तुम्हारा है, उतना ही अंशुल का भी है. तुम हमारी बेटी हो, इस का यह मतलब तो नहीं कि हम तुम्हारी हर बात का आंख मींच कर समर्थन करें और अंशुल को बेवजह डांटें."

छवि का मुंह फूल गया. गुस्से में उस ने नाश्ते की प्लेट आगे सरका दी. कुछ देर हम सभी चुपचाप बैठे रहे. थोड़ी देर बाद सास ने अपनी छोटी बेटी से कहा, "अदिति, तू दीदी के कपड़े सूटकेस में रख दे. अभी तो 9 ही बजे हैं. ट्रेन छूटने में 3 घंटे बाकी हैं, तब तक हम खरीदारी कर लेते हैं. चल छवि, तू मार्केट चल कर अपने लिए साड़ियां पसंद कर ले."

"मुझे नहीं चाहिए साड़ीवाड़ी...रखिए अपने चिथड़े अपने पास. मैं क्या यहां साड़ियां लेने आई थी. भेजना चाहते हैं न आप मुझे...मैं जा रही हूं," वह उठ कर बाहर चल दी.

मेरे साससुसर बेचारे असहाय से उसे जाते हुए देखते रहे. मेरी सास ने उसे कई बार पुकारा, पर वह न रुकी.

घर में सन्नाटा छा गया. मेरे सालेसाली उठ कर अपनेअपने कमरों में चले गए. मेरी सास अपने आंसुओं को रोकने का प्रयास करती बरतन समेटने लगीं.

"पिताजी आप जैसे समझदार मांबाप के घर में ऐसी जिद्दी और नासमझ बेटी कैसे पैदा हो गई," मैं ने सहानुभूति के स्वर में पूछा.

"यह लाड़प्यार का नतीजा है," व

हुए स्वर में बोले, "हमारे जमाने में घरों ई बच्चे हुआ करते थे. छोटी उम्र में ही मेदारियां कंधे पर आ पड़ने के कारण कम उम्र में ही परिपक्व हो जाया करते अब कम बच्चे होने की वजह से मातापिता जिम्मेदारियों का बोझ खुद ही उठाते सलिए बच्चे बड़ी उम्र तक भी बच्चे ही रहते हैं. उन्हें दुख सहने की या विधाजनक स्थिति का सामना करने की त नहीं होती."

"अब यहीं बैठे रहोगे या उसे वापस भी ोगे?" मेरी सास बोलीं.

"वह वापस आने वाली नहीं है. आखिर किस की है, तुम्हारी ही न?"

"तो क्या उसे ऐसे ही विदा करोगे?" सास का स्वर भीग गया.

"और क्या करें...उस का सूटकेस ले अगर समझाने ापस आ जाएगी ने आएंगे, नहीं ी तो फिर इन को ट्रेन में बैठा हम लोग लौट ."

मेरी सास और ने जल्दीजल्दी स में छवि के भरे. फ़िर हम जीप में बैठ कर स्टेशन की तरफ हुए. जीप मेरे ही चला रहे थे. को उन्होंने बैठने के लिए या था.

"अंशुल, क्या में ऐसी कोई सी संस्था है, वि गायन और वगैरह का कर सके?" उन्होंने पूछा.

"जी, संस्थाएं तो कई हैं, पर मेरे घर के लोग पुराने खयालों के हैं. वे बहू का नाचनागाना शायद पसंद नहीं करेंगे," मैं ने नम्रतापूर्वक कहा.

"इस में हरज ही क्या है. ये तो कला है. तुम्हें पता है, छवि बहुत अच्छा नृत्य करती है. उसे अभिनय का भी बहुत शौक है."

"जी, 1-2 बार उस ने जिक्र तो किया था."

"दरअसल खाली बैठे रहने के कारण छवि इतनी चिड़चिड़ी हो गई है. अगर किसी रचनात्मक कार्य में लग जाए तो उस का समय भी कट जाएगा और मानसिक तनाव भी नहीं रहेगा."

"मुझे तो कोई एतराज नहीं, पर मेरे पिताजी शायद इस के लिए अनुमति नहीं देंगे," मैं ने धीमे स्वर में कहा.



"तुम्हें चाहिए कि उन्हें समझाओ," वह स्नेहपूर्वक बोले, "बड़ों की इज्जत करना अच्छी बात है, बेटा, मगर इज्जत करने का यह मतलब नहीं कि अपनी जिंदगी से खुशियां खत्म कर ली जाएं और मन मसोस कर जीया जाए."

"जी," मैं ने सहमति में सिर हिलाया.

"छवि जिद्दी और नासमझ है, मैं मानता हूं, मगर तुम्हें चाहिए कि अपने घर वालों के साथसाथ पत्नी की खुशियों का भी खयाल रखो. परंपराओं और रीतिरिवाजों का पालन करना अच्छा है, मगर थोड़ा सा जमाने के हिसाब से बदलाव भी लाना जरूरी है."

"जी, आप ठीक कहते हैं," मैं ने सहमति व्यक्त की.

पूरे रास्ते छवि के पिता मुझे प्यार से समझाते रहे. उन्होंने मेरी भूलों की ओर संकेत करते हुए कई सुझाव भी दिए. मैं ध्यान से उन की बातें सुनता रहा.

रेलवे स्टेशन आ गया था. हम लोग जीप से नीचे उतरे. अंदर जा कर देखा, छवि गुमसुम सी एक बेंच पर बैठी है. उस ने अश्रुपूर्ण नेत्रों से मेरी तरफ देखा तो मेरे अंदर कुछ पिघलने सा लगा. मेरे सासससुर ने उसे मनाने का बहुत प्रयास किया, पर उस ने किसी की बात का कोई जवाब न दिया.

हार कर मेरे ससुर बोले, "चलो, हम लोग भी यहीं बैठ जाते हैं. गाड़ी आने में तो अभी 2 घंटे बाकी हैं. अंशुल, तुम ने आरक्षण तो नहीं करवाया होगा."

"जी नहीं, आरक्षण अब रहने दीजिए. ट्रेन के सफर में छवि को बहुत परेशानी होती है. हम लोग टैक्सी से चले जाएंगे."

"टैक्सी से इतनी दूर जाना तो बहुत महंगा पड़ेगा."

"कोई बात नहीं, छवि का सफर तो आराम से कटेगा," न जाने मुझे छवि पर प्यार क्यों आने लगा था.

"ठीक है...तो फिर टैक्सी मंगवा लेते हैं," उन्होंने ड्राइवर के साथ मेरे साले को टैक्सी स्टैंड भेजा.

थोड़ी ही देर बाद टैक्सी आ गई. छवि बिना किसी से कुछ बोले चुपचाप टैक्सी में जा कर बैठ गई. ड्राइवर ने उस का और मेरा सूटकेस उठा कर डिग्गी में रखा. चलने से पहले मैं ने अपने सास‌ससुर के पैर छुए तो मेरी सास रो पड़ीं.

"छवि का ध्यान रखना, बेटा. तुम्हारे घर की खुशियां लौटाने के लिए हम आज उस के आंसुओं को अनदेखा कर रहे हैं. अगर तुम भी लापरवाही बरतोगे तो फिर कैसे जीएगी."

"आप चिंता मत करिए. मैं छवि को अब कभी नहीं रोने दूंगा. उसे दुखी कर के मैं सुखी कैसे रह सकता हूं," मैं ने उन्हें आश्वासन दिया तो उन्होंने स्नेह से मेरे सिर पर हाथ फेरा.

टैक्सी चल पड़ी. उन्होंने हाथ हिला कर 'बाय' कहा तो मेरा मन उन के प्रति श्रद्धा से भर उठा.

पत्नी के मातापिता यदि ऐसे समझदार हों तो भला कौन सा ऐसा बेवकूफ दामाद होगा जो पत्नी के दुखदर्द का खयाल नहीं रखेगा. समस्या तब पैदा होती है जब मांबाप बेटी की गलत बातों का भी पक्ष ले कर दामाद को प्रताड़ित करते हैं. छवि के मातापिता ने अगर उस का पक्ष ले कर मुझे भलाबुरा कहा होता तो मैं निश्चय ही नाराज हो जाता. उस स्थिति में या तो मैं छवि को साथ लाए बिना ही लौटता या लाता भी तो बेमन से.

लेकिन उन्होंने समझदारी से काम लेते हुए पहले अपनी ही बेटी को उस की गलतियां बताईं. उस के बाद जब उन्होंने मेरी और मेरे घर वालों की त्रुटियों की ओर संकेत किया तो मुझे जरा भी बुरा न लगा.

मैं ने छवि की ओर देखा वह खोई नजरों से खिड़की से बाहर झांक रही थी और रूमाल से आंसू पोंछती जा रही थी. मैं ने उसे खींच कर अपने सीने से लगा लिया. उस क्षण मुझे छवि पर बहुत प्यार आ रहा था. ●


ननमुन....
— पंकज गोस्वामी
भी प्रकार के
कुत्ते
हो बिकते हैं
कुत्तों का
अखाड़ा
मेरे दादा दादीजी को रखना है..उनके लिए उपयुक्त कोई कुत्ता दीजिए
आपकी आवश्यकता को ध्यान में रखकर यह कुत्ता ले जाइए
क्या खास बात है इसकी
इसके मुंह में भी दांत नहीं हैं।

AN INVITATION TO PHOTOGRAPHERS

PROFESSIONALS & AMATEURS

WIN PRIZES WORTH Rs. 3,000 EVERY MONTH

Alive Photographic Competition

FIRST PRIZE Rs. 1,000

SECOND PRIZE Rs. 600

THIRD PRIZE Rs. 350

7 CONSOLATION PRIZES OF Rs. 150 EACH

RULES & CONDITIONS

1. The competition is open to all photographers: amateurs and professionals.
2. Anybody can submit any number of photographs. They must be accompanied by the coupon given below.
3. Photographs should be in 12cmX18cm (5" X 7") size, in colour.
4. Every photograph must have the tag in front/back mentioning; (1) Name and address of the entrant (2) Title (3) Location (4) Camera used.
5. In case of single person photographs, all photographs must be accompanied by a certificate by the entrant that he has obtained permission of the person photographed and in case any dispute arises, he will be respon -sible for any damage/loss caused to the publishers in this matter.
6. A certificate that the photograph is entirely an original work and has not been published or utilized in any manner anywhere else previously must accompany every entry.
7. In case of prize winning entries, complete copyright in terms and rules will rest with the publishers of ALIVE.
8. ALIVE magazine does not undertake any responsibility for any loss or damage to the photographs in transit or otherwise.
9. Proper sized stamped and self-addressed envelope must accompany the entries for the return of unaccepted photographs; otherwise they will not be returned.
10. In case of any dispute, Delhi Courts only will have jurisdiction in this matter.

To the Photo Competition Editor
ALIVE MAGAZINE, NEW DELHI

I am sending along with this coupon ______ photographs for ALIVE PHOTOGRAPHIC COMPETITION

I agree to all the terms and conditions of the competition and certify that the photographs sent are my personal work and have not been published or utilized in any manner anywhere else previously

Name (In block letters) ____________________

Address ____________________ City ____________________

State ____________ Pin Code ____________ Country ____________

Address your entries to:
Photographic Competition
ALIVE MAGAZINE
Delhi Press Building
Rani Jhansi Marg,
New Delhi-110 055.

सर्द सन्नाटा

समय के उड़ते परिंदे
ने ठहर कर
ये कहा–
बातें दीवारों से करो कि
सर्द सन्नाटा
जरा कम हो सके.
रात के बुझते दीए
ताकीद ये
करते गए
जाल
सपनों के बुनो कि
सर्द सन्नाटा
जरा कम हो सके.
सिमटे सितारों
ने चमक कर
आसमां से
ये कहा–
हम को गिनो कि
सर्द सन्नाटा
जरा कम हो सके.
और
सन्नाटे में डूबी
सर्द होती रात ने
मुड़ कर कहा छोड़ो उदासी
छोड़ो उदासी
कुछ लिखो कि
सर्द सन्नाटा
जरा कम हो सके.

–मृदुला प्रधान





त्र मिलते ही प्रिय सुधींद्र, तुरंत 20 हजार रुपए भेज दो. तुम्हें जान कर खुशी होगी कि हम ने सुबीर की तय कर दी है. कल बहू की गोद भी ाए हैं. शादी अगले माह की 14 तारीख . रुपए जल्दी भेजना, खरीदारी करनी

सास का पत्र पा कर सन्नो सन्न रह गई. या उन के लिए बैंक का खाता है कि अपना आदेशरूपी चेक भेजा, रुपया हालत में उन तक पहुंचना ही चाहिए. अपने घर वालों की हमेशा मदद करते ते हैं. मां ने इतना भी नहीं सोचा कि



आक्टोपस के घेरे से

कहानी ● नीलम कुलश्रेष्ठ

टे की सगाई करने से पहले एक बार से पूछ लिया होता. सन्नो अंदर से अपमानित महसूस कर रही थी. वैसे ी ने उसे कब पूछा है, लेकिन घर बड़ा निर्णय होने जा रहा है, तो कम बड़े बेटे के नाते सुधींद्र को तो ी चाहिए था.

ाम को उस ने सुधींद्र को घर आते उम्मीद से सास का पत्र थमाया कि पढ़ते ही आगबबूला हो उठेंगे कि ड़ा कदम उठाने से पहले मां ने उन से तो पूछ लिया होता. रुपए भेजना तो दूर, शायद वह शादी में भी न जाएं. क्योंकि सुधींद्र मां से पूछे बिना एक कदम नहीं चलते हैं...सन्नो के विषय में, बच्चों को स्कूल जाने के विषय में...कपड़ों के चुनाव में निर्णय मां ही करेंगी.

सुधींद्र ने जैसे ही मां का पत्र पढ़ा उस के चेहरे पर चमक आ गई, "वाह, सुबीर की सगाई हो गई."

"और मांजी ने हमें पूछा भी नहीं," वह कुछ रोंआसे स्वर में बोली.

"इस में पूछने की क्या बात है? सुबीर को लड़की पसंद आ गई होगी. हमारे यहां लड़के की पसंद ही देखी जाती है."

"और बड़े भाईभाभी का मान कुछ नहीं होता आप के यहां?"

"तुम औरतों की आदत होती है बहकाना, जहर घोलना. अगर सगाई हम से पूछे बिना कर ली है तो कौन सा पहाड़ टूट पड़ा?"

"लेकिन आप 20 हजार रुपयों का इंतजाम कहां से करेंगे...? पहले ही इतना

रुपया आप घर भेज चुके हैं."

"कहीं से भी करूं, चोरी करूं, डाका डालूं तुम्हें उस से क्या?" सुधींद्र फिर अपनी पुरानी औकात पर लौट आए. पहले उसे गाली देने लगे, धीरेधीरे उन गालियों का शिकार उस के घर वाले होने लगे.

वह चुपचाप आंसू बहाती रसोई में चली गई. शादी के 10 वर्ष बाद भी इस आदमी से कोई सुरक्षा महसूस नहीं करती. हर समय असुरक्षा की भावना से तनावग्रस्त रहती. सुधींद्र के घर के वातावरण को तो वह अपनी शादी के पहले सप्ताह बाद ही समझ गई थी, बल्कि कहना चाहिए ऐसे बदबूदार वातावरण को देख कर आश्चर्यचकित रह गई थी कि ऐसे भी लोग दुनिया में हैं. लेकिन करती भी क्या...शादी तो हो चुकी थी. मांग के सिंदूर को पोंछने का, बिछुए उतारने का साहस उस जैसी आम भारतीय लड़की में कहां था.

सन्नी अपनी ससुराल का अजीब माहौल देख कर सन्न रह गई थी. अपनी सास व ननद के गलत आचरण को वह पति को दिखाना चाहती थी मगर सफल न हो सकी. फिर उस ने देवरानी से मिल कर ऐसी योजना बनाई कि उसे कामयाबी हासिल हो ही गई.

वह रोई भी अपने रिश्ते के जीजाजी के प्रस्ताव पर जिन्होंने अपनी मौसी के बेटे के घर उसे फंसा दिया था.

'चाचाजी, लड़का तो हीरा है हीरा. ऐसा गऊ सा सरकारी अधिकारी कहां मिलेगा. छोटा परिवार है. मौसी के 2 बेटे व 1 बेटी है. आप की सन्नी वहां राज करेगी.' रोमेश जीजाजी ने उस की शादी की भूमिका बांधी थी.

तब उस का अनछुआ मन हमेशा उन की बाज आंखों से कांपता रह जाता था. ताई के यह दामाद जैसे ही घर में आते, सीधे उस के कमरे में घुसते चले आते थे. उस के हाथ की किताब छीन कर सामने कुरसी पर तन कर बैठ जाते, 'कभीकभी तो साली साहिबा हम आते हैं. और आप हैं कि किताबों में डूबी रहती हैं.'

'जीजाजी, अगले सप्ताह मेरी परीक्षाएं हैं. मुझे पढ़ने दीजिए,' वह झुंझलाती.

'किताबों की पढ़ाई में क्या रखा है? जिंदगी की पढ़ाई के बारे में कुछ सीखना है तो अपने जीजाजी से सीखो,' वह मुसकरा कर एक आंख दबा देते.

सहमी हुई सी सन्नी उठ कर कमरे के बाहर चली जाती. वह जब भी मौका देखते, बात करतेकरते कभी उस की पीठ तो कभी कंधे पर हाथ मार देते. वह उन से बेहद तंग थी.

होली के दिन तो उन्होंने हद कर दी थी. सब लोग छत पर होली खेल रहे थे. ताई के घर की छत व उन के घर की छत आपस में सटी हुई थी. वह मुंडेर फांद कर उन की छत पर आ गए थे उस की पिचकारी का रंग खत्म हो गया था. वह चुपके से सब की नजर बचाती छोटी प्लास्टिक की बालटी व पिचकारी ले कर नीचे आ गई थी. स्नानगृह की बड़ी टंकी में बालटी डुबो कर रंग भरने लगी. तभी रोमेश जीजाजी ने आ कर उस के गालों पर अपने दोनों हाथ रगड़ते हुए गुलाल मल दिया. फिर उस की कमर में हाथ डाल कर फुसफुसाए, 'सालीजी, आज तो हम से असली होली खेल लीजिए.'

उन की पकड़ से वह बड़ी मुश्किल से छूट पाई. उन के लिजलिजे स्पर्श से उस का तनबदन जला जा रहा था. पता नहीं कहां से



ने आते ही मेरे कान भरने शुरू कर ? तुम क्या जानो बड़े घर की बेटियां सर अपने मित्रों के साथ सैर करने, नों में खाना खाने जाती हैं," सुधींद्र ने को डांटते हुए कहा.

त आ गई कि उस ने एक जोरदार चांटा के गाल पर जड़ दिया, 'आप की यह कहने की हिम्मत कैसे हुई?'

वह स्नानगृह से निकल कर बाहर जाने तो पीछे से उन्होंने उस की बांह को लिया, 'सालीजी, आप का यह थप्पड़ गल में तब तक दर्द करता रहेगा जब कि मैं आप को बरबाद न कर दूं.'

सुधींद्र का रिश्ता उन्हीं जीजाजी ने था. उस का दिल आशंका से बुरी ड़कता रहा था, लेकिन उस के मांबाप के घर की शानोशौकत व उस के र पर इतने रीझ गए थे कि उन्हें लग रहा था कि उस की शादी के लिए बस यही एक उपयुक्त घर है. मां को उस ने होली वाली जीजाजी की धमकी भी बताई थी, लेकिन मां पर तो सुधींद्र के घर की रईसी का भूत सवार था. उन्होंने उसे ही झिड़का था, 'होली को रंगबिरंगे माहौल में यह बात कह गए होंगे. देखा नहीं है बुजुर्गों को कितना सम्मान देते हैं, कितना मीठा बोलते हैं.'

'मां, वह उन लोगों में से हैं जिन की जहरबुझी जीभ पर शक्कर की परत चढ़ी होती है.'

'यह तेरा वहम है.'

उस की शादी के 1 सप्ताह बाद मेहमान घर से जा चुके थे. सुधींद्र उस के पास बेखबर सो रहे थे. लेकिन उस की आंखों में नींद नहीं थी. कभी वह इस करवट लेटती तो कभी उस करवट. बारबार उस की नजर दीवार पर टंगी घड़ी की छोटी सूई पर जा अटकती जो खिसकती जा रही थी. जब 2 बज गए तो उस से रहा नहीं गया. वह उठ कर बैठ गई. उस ने तीसरे नंबर के कमरे में झांक कर देखा, रूही उस की ननद अपने बिस्तर पर नहीं थी.

रात के 2 बज गए हैं और घर की युवा लड़की अभी तक लौटी नहीं है, यह सोच कर उस के माथे पर पसीने की बूंदें चुहचुहा आईं. वह समझ नहीं पा रही थी कि सुधींद्र को जगाए या नहीं. फिर तय किया कि पहले अपनी सास के पास चली जाए. वह भी रूही के घर न आने से चिंतित व बदहवास होंगी.

उस ने सास के कमरे का धीरे से दरवाजा खोला तो नाइट लैंप की रोशनी में वह यह देख कर हैरान रह गई कि सास बड़े पलंग पर दोनों पैर फैलाए गहरी नींद में सो रही थीं. शायद उन्हें पता नहीं होगा कि रूही अभी तक घर नहीं लौटी है वरना एक मां हो कर इतनी चैन की नींद वह कहां सो पातीं, यह सोच उस ने उन के पास जा कर धीरे से पुकारा, 'मांजी...मांजी.'

'क्या है...?' वह उस की आवाज से

उनींदी सी उठ बैठीं.

'मांजी, रात के 2 बज रहे हैं लेकिन रूही अभी तक घर नहीं लौटी है.'

'इतनी सी बात के लिए मेरी नींद खराब की,' कह वह फिर असलाई सी आंखें बंद कर के करवट बदल कर सो गई.

शायद नींद में उस की बात समझ नहीं पाई, मन ही मन यह सोच उस ने फिर कोशिश की, 'मांजी, रात के 2 बज गए हैं, रूही अभी तक घर वापस नहीं आई है.'

'उफ, तू क्यों अपनी और मेरी नींद खराब करती है? जा कर आराम से सो. सुबह आ जाएगी.'

'आप भूल रही हैं कि वह अपने दोस्त अतुल के साथ फिल्म देखने गई थी,' उस ने उन का कंधा हिलाते हुए फिर जगाया.

सास ने पलंग पर लेटेलेटे ही जवाब दिया, 'फिल्म दिखाने के बाद अतुल उसे खाना खिलाने होटल ले गया होगा. खाना खाने के बाद वे वहीं रुक गए होंगे, तेरी तरह हनीमून मनाने...सुबह तक लौट आएंगे.'

'क्या?' एक मां अपनी बेटी के लिए आसानी से ऐसी बात कह सकती है? सोचते हुए उसे लगा कि जमीन घूम रही है.

बिस्तर पर आ कर भी उसे नींद नहीं आ रही थी. पहले मन हुआ कि सुधींद्र को झंझोड़ कर जगाए और उसे अपनी मांबेटी के इस रूप के बारे में बताए पर फिर वह यह सोच कर रुक गई कि उस की नींद तो खराब हो गई है, क्यों वह सुधींद्र की भी नींद खराब करे. अतएव वह रात भर बेचैन हो करवटें बदलती रही.

रूही सुबह 9 बजे के करीब लौटी. वह उस समय खाने की मेज पर नाश्ते की प्लेट लगा रही थी. रूही ने आते ही बड़ा पर्स मेज पर पटक दिया व बोली, 'शुभ प्रभात. कहिए, कैसी रात कटी?'

मन हुआ कि पूछे आप बताइए ननदजी, रात कैसे और कहां कटी? पर वह खून का घूंट पी कर रह गई.

रूही मां की तरफ मुड़ती हुई बोली, 'मैं थक गई हूं...अपने कमरे में सोने जा रही हूं.'

'बेटी, नाश्ता तो करती जा,' मां ने बड़े प्यार से उस से कहा.

'मां, अतुल के साथ नाश्ता कर के आ रही हूं,' कहती हुई वह ऊंची हील के सैंडलों की खटखट करती चली गई.

मांबेटी की बेहयाई पर उधर उस का खून जला जा रहा था. उस का मन नहीं कर रहा था कि वह जाती हुई रूही की तरफ देखे.

दिन भर वह बेचैन रही. उस घर की एकएक चीज से उसे नफरत हो रही थी. जब किसी तरह उसे दोपहर में सुधींद्र के साथ एकांत मिला तो उस ने झिझकते हुए पूरी घटना उसे सुना दी.

वह पूरी घटना सुनते ही आगबबूला हो उठा, 'तुम ने आते ही मेरे कान भरने शुरू कर दिए? तुम क्या जानो बड़े घर की बेटियां अकसर अपने मित्रों के साथ सैर कर के होटलों में खाना खाने जाती हैं, इस का यह मतलब तो नहीं है कि वे वहीं रुक भी जाती हैं.'

उस की डांट से वह रोंआसी हो उठी, 'मैं सच कह रही हूं...रूही रात में घर पर नहीं थी.'

'चलो, इसी समय मां के पास चलो,' वह उस का हाथ पकड़ कर लगभग घसीटते हुए उसे मां के कमरे में ले गया. मां कुरसी पर बैठी किसी विदेशी फैशन पत्रिका में उलझी हुई थीं.

सुधींद्र ने उत्तेजित स्वर में पूछा, 'मां, यह कह रही है कि रूही रात भर घर पर नहीं थी.'

'हां, नहीं थी.'

'क्या?' वह चीखा.

'हां, अतुल उसे उस की सहेली अश्विनी के घर छोड़ गया था. वह वहीं रुक गई थी.'

'ओह,' लगा उस के अंदर का तूफान एकदम थम गया हो. वह व्यंग्य से सत्री की तरफ देख कर बोला, 'अब तो तुम्हें अपनी

मैं तुम्हारी सूरत देखते ही तुम्हारी तकलीफ समझ गई थी...” सन्नी ने शुचि का सिर सहलाते हुए कहा.

त का जवाब मिल गया?'

"लेकिन मांजी तो..."

सास उस की बात काट कर जोर से हंस , 'मैं ने ही बहू से मजाक में कह दिया कि रूही अतुल के साथ ही रुक गई है लिए बेचारी हैरान थी,' फिर वह अपनी रसी से उठ कर उस के सिर पर हाथ राती हुई बोलीं, 'बहू, मेरी बातें गंभीरता मत लिया करो. मेरी तो मजाक करने की दत है.'

दूसरे दिन सुधींद्र अपने आफिस चला था, सुबीर कालिज, रूही अपने कमरे सुधबुध खोए सो रही थी. नटवर सिंह को ा व रुपए पकड़ा उस की सास ने बाजार दिया व अपने कमरे में से जोर से चीखीं, हू.'

'जी,' वह सिटपिटाती हुई वहां पहुंच

'तुम ने आते ही अपने रंग दिखाने शुरू दिए."

'आप ने मुझ से कुछ कहा व इन से और कहा.'

'जबान लड़ाना बंद करो. इस घर में ा है तो आंखें एवं मुंह बंद कर के रहो. तो मुझ से बैर कर के यहां रह नहीं ोगी...मेरा बेटा इतना आज्ञाकारी है कि तुम्हारे मायके पटक आएगा.'

उन के कर्कश स्वर से वह कांप कर ाई. उन की आंखों में ऐसी हिंस्र दृढ़ता चमक थी कि उसे लगा वह जो चाहेंगी, के ही रहेंगी. वह अपने कमरे में जा कर पर तकिए पर सिर रख कर सिसक अपनी मां से जा कर भी कुछ नहीं कह ी है. वह तो संयुक्त परिवार की खूंटे ंधी गाय भर है. पिताजी जैसेतैसे 3 ों में से एक उसे ही ब्याह पाए हैं. अपनी नी कहे तो किस से कहे.



शादी के बाद वह अजीब उलझन में पड़ गई थी. ससुराल के अजीब माहौल में घुटती रहती थी. कभी ननद घर से गायब है तो कभी देवर. सुधींद्र टूर पर होते तो सास के कमरे में उन के दोस्तों के साथ ताश की बाजी जमती. जबजब वह उन लोगों के लिए चाय, नाश्ता ले कर जाती तो ताश के पत्तों के ऊपर से झांकती उसे तोलती उन की भूखी आंखों से उस का रोयांरोयां सिहर जाता. हर बार कोई न कोई उस के सौंदर्य को देख टिप्पणी करता. कोई कहता, 'आप बहू चुन कर लाई हैं.'

कोई कहता, 'इन की क्या पारखी नजर है.'

'नए सांचे में ढली प्रतिमा है इन की बहू.'

कोई कहता, 'काश, आप की बहू को ताश खेलने का भी शौक होता तो कम से

कम इन के पास भी हमें बैठने का मौका मिलता.'

वह जल्दी से चाय की ट्रे से प्याले मेज पर लगा वहां से हट जाना चाहती.

तभी कोई पीछे से पुकारता, 'सन्नीजी, एक गिलास पानी ले आइए...'

उस की सास इतरातीं, 'आप लोग मेरी बहू को बहुत तंग करते हैं.'

उन्हीं की उम्र की एक सहेली सिगरेट का धुआं उड़ाते हुए बोली, 'जब आप की बहू है ही इतनी खूबसूरत तो लोग तो तंग करेंगे ही.'

सब बेहूदी हंसी हंस पड़े.

अकसर सुबीर भी गए रात नशे में लड़खड़ाते लौटता. वह सुधींद्र को समझाती, 'अभी वह कालिज में पढ़ रहा है. अभी से उस के ऐसे रंगढंग हैं, तो वह बाद में क्या करेगा?'

'तुम क्यों मेरे भाई की चिंता करती हो? अपनी युवा उम्र में सभी मजा करते हैं. मामाजी ने कह दिया है कि बी.काम. के बाद उसे अपनी फैक्टरी में लगा लेंगे."

हर तरफ से बदबू ही बदबू, उस का दम घुटता रहता था. घर जाती तो मांबहनों के सामने बड़े घर की सुखी बहू होने का नाटक करती.

एक बार उन्हीं जीजाजी ने उसे अकेले कमरे में देख कर व्यंग्य से पूछा, 'क्यों सालीजी, खुश तो हैं न?'

'क्यों नहीं,' उस ने अपने सोने की चूड़ियों से भरे हाथों से अपने जूड़े को सहलाया, 'आप ने मेरे लिए इतना खानदानी रईस घर जो तलाशा है.'

अपना तीर खाली जाते देख वह जल उठे. अत: एक और जहर बुझा तीर उन्होंने छोड़ा, 'रूही अपने दोस्तों के साथ तुम्हें होटल नहीं ले जाती है?'

उस ने अपना नियंत्रण नहीं खोया, 'रूही जाने और उस के दोस्त. शाम को तो मैं और सुधींद्र रोज घूमने चले जाते हैं.'

'और मौसीजी तो अपने दोस्तों के साथ ताश खेलने और सिगरेट पीने तुम्हें अवश्य बैठाती होंगी?'

उन के वार को उस ने पूरी तरह निरस्त कर दिया, 'जीजाजी, इतने सालों से आप मुझे देख रहे हो, क्या आप ने मुझे ताश खेलते या सिगरेट पीते देखा है? घर के कामों से मुझे फुरसत नहीं मिलती कि इधरउधर ताश खेलती फिरूं. फिर सुधींद्र ने कह दिया है कि मैं उन की मां व बहन के लफड़ों में न पड़ूं. मैं आप का किस तरह शुक्रगुजार करूं जो आप ने इतना भरापूरा घर मेरे लिए चुना है.'

उस के भरपूर व सुखी गृहिणी के अभिनय पर जीजाजी बुरी तरह हारे हुए कमरे से बाहर निकल गए तो वह मन ही मन बड़बड़ाई कि मैं तुम जैसे कमीने के सामने अपने आप को लज्जित नहीं होने दूंगी.

दिल पर कुछ भी बीते पर समय तो धीरेधीरे खिसकता रहता है. 4 वर्षों में वह ताशा व विक्की की मां बन गई थी. उन की परवरिश में उस ने अपनेआप को पूरी तरह व्यस्त कर लिया था. पर उस की रूह यह सोच कर कांप जाती थी कि जब उस के बच्चों की समझ की आंखें इस वातावरण को समझने लगेंगी तो क्या होगा? इस घर का कलुषित वातावरण उन पर कुछ असर न डाले, यह हो ही नहीं सकता था कि एक शहर में रहते हुए मां के अंधभक्त पति को वह दूसरे मकान में रहने के लिए नहीं कह सकती थी. उस को कोई नौकरी करने नहीं देता था. नहीं तो वह स्वयं अलग रहने की व्यवस्था कर सकती थी.

उस की बेटी, बोलना भर सीखी थी. बातों का मतलब न समझते हुए भी कभी दादी की नकल उतारती तो कभी बुआ की.

'बहू, मैं जरा ब्यूटी पार्लर जा रही हूं, मेरा कोई फोन आए तो कह देना ताश की बाजी रात के 8 बजे जमेगी.' नन्ही ताशा उस का भारीभरकम पर्स कंधे पर लटका कर दादी की नकल उतारती 10 कदम चलती लेकिन फिर गिर पड़ती.

वह हंसतेहंसते लोटपोट हो जाती
न एक दिन तो उस ने हद ही कर दी
उस की ड्रेसिंग टेबल के सामने बैठ पता
कब उस ने 2-3 रंग की लिपस्टिक होंठों
पोत ली. आंखों के ऊपर काजल पेंसिल
काली लाइनें खींच लीं. फिर केशों को
रा कर उस के सामने आ गई, 'मम्मी,'
कर उस ने एक हाथ सिर पर मारा,
भूल गई. मम्मी नहीं, भाभी. मैं जरा
स के साथ होटल खाना खाने के लिए
रही हूं. हो सकता है रात को वहीं रुक
,' कहते हुए ताशा ने बाईं आंख दबाई.

भी हैरान हो उस का मुंह देखती रह गई.
उसे मारने वाले उठे हुए हाथ को उस
ह सोच कर बड़ी मुश्किल से रोका कि
अभी समझती ही कहां है कि वह क्या
रही है.

संयोग से सुधींद्र का दूसरे शहर
ांतरण हो गया था.

वह अब भी मांबहन के हाथ की
तली बना हुआ था. जब भी वह रुपए
ीं, वह तुरंत भेज देता. जब उसे अपने
बुलाती तो दौड़ा चला जाता. सत्री को
जीवन में एक ही तसल्ली थी कि वह
बच्चों को अपने संस्कारों के हिसाब
ल रही थी. अब अचानक ही देवर की
का कार्ड मिलने से वह हतप्रभ थी.

देवर की शादी में भावनाशून्य
तली सी वह सब काम करती रही.
क सास रिश्तेदारों के सामने साड़ियों
लात्मक पैकिंग, मेवे से बना ताजमहल
खाती जैसे स्वयं उन्होंने ही बनाया हो.
ून के घूंट पी कर रहती.

शादी के दिन मंच पर अन्य कुरसी पर
अपनी सुंदर सुकुमार देवरानी को देख
स का दिल भर उठा. पता नहीं इस
को वह कैसे झेल पाएगी, वह मन
सोच रही थी. रिसेप्शन के दूसरे दिन
बच्चों की परीक्षा का बहाना कर के
चली आई. सुधींद्र को अभी 4 दिन
ौर रुकना था.



हमेशा

होती नहीं खुशियों की बरसात हमेशा
मिलती नहीं दुखों की सौगात हमेशा
बनती नहीं बिगड़ी हुई बात हमेशा
रहते नहीं एक से हालात हमेशा.

–ओम प्रकाश बजाज

वह प्रतिदिन की अपनी दिनचर्या में व्यस्त हो गई. सुधींद्र ने पी.एफ. में से कितना पैसा निकाल कर देवर की शादी में फूंका, उस ने जानने की कोशिश भी नहीं की. शादी को अभी 15 दिन ही बीते होंगे कि एक दोपहर को जब वह बच्चों को पढ़ा रही थी कि अचानक मुख्यद्वार को जोरजोर से पीटने की आवाज सुनाई दी. उसे आश्चर्य हो रहा था कि कौन है यह, जो घंटी न दबा कर द्वार पीट रहा है.

"कौन बदतमीज है?" बड़बड़ाते हुए उस ने द्वार खोला तो सामने देवरानी को खड़ा पा हैरान रह गई. वह लाल रंग की साड़ी में खड़ी थी, कुछ घबराई, कुछ बौखलाई. उस के तेवर देख कर वह गिड़गिड़ाई, "दीदी, माफ करना, बिना आप को खबर दिए घर आ गई."

"इस में माफी की क्या बात है? घबराहट में तुम घंटी बजाना भूल गई थीं... मैं समझ रही थी कि पता नहीं कौन दरवाजा पीट रहा है...अंदर आओ न."

अंदर आते ही वह उस से लिपट कर रोने लगी, "दीदी."

उस ने उस का सिर सहलाते हुए कहा, "मैं तुम्हारी सूरत देखते ही तुम्हारी तकलीफ समझ गई थी...सफर से आई हो, पहले हाथमुंह धो लो."

थोड़ी देर बाद सन्नी ने उस के हाथ में काफी का प्याला पकड़ाते हुए पूछा, "अब बताओ, क्या बात है?"

वह सिसकने लगी, "आप सचसच बताइएगा कि आप ने उस नर्क को कैसे सह लिया? आप उन दोनों जैसी नहीं लगती हैं."

उस के मुंह से आह निकल गई, "बस, पूछो मत. मैं तुम्हारी तरह हिम्मत वाली नहीं थी कि घर से निकल कर कहीं जाती...वहीं घुटती रही."

"मैं उस घुटन को सह नहीं पा रही इसलिए आप के पास भाग आई. मां के पास नहीं गई, क्योंकि मेरी सब जगह बदनामी हो जाती. कभी रूही गायब रहती है तो कभी मांजी. सुबीर मेरे पास नशे में धुत्त पड़े रहते हैं. जब सुबह उन्हें कुछ कहती हूं तो हमेशा मुझे ही डांटते हैं कि वे अपनी सहेलियों के यहां रुक गई होंगी. इस घर में मुझे सिर्फ आप पर ही भरोसा होता है."

"इस समस्या का कुछ न कुछ हल तो सोचना ही होगा. मुझे तो यही सोच कर घृणा होती है कि ऐसे परिवार की हम बहू बनीं जहां की स्त्रियां चरित्रहीन हैं."

उसी शाम को सुबीर का फोन आया कि कहीं शुचि उन के यहां तो नहीं आई. उस ने अपनी बातों से उन के क्रोध को शांत किया व बहाना बनाया कि उस ने ही चुपचाप उसे पत्र डाल कर बुलाया है. उस की तबीयत कुछ खराब है.

सुधींद्र के आफिस जाने के बाद दोनों इसी उधेड़बुन में लगी रहतीं कि किस तरह अपने पतियों को उन दोनों की असलियत का विश्वास दिलाएं. कोई रास्ता नहीं सूझ रहा था.

फिर एक दिन सन्नी ने कहा, "बच्चों की छुट्टियों के बाद हम लोग घर आएंगे, तब मैं कुछ न कुछ हल अवश्य ढूंढ़ूंगी. तब तक तुम अपने को संयत रखना. अपनी घृणा व गुस्सा किसी पर जाहिर मत होने देना."

शुचि से उस ने वायदा किया था इसलिए वह ससुराल पहुंच ही गई. जैसे ही उस ने घर में कदम रखा, सास ने ताना मारा, "तो महारानीजी आ रही हैं. कह कर तो गई थीं कि साल भर बाद आऊंगी."

"अपना घर है. हम लोग कभी भी आ जा सकते हैं."

"चलो, यह घर अपना तो लगा."

सुधींद्र भी विजयी आवाज में बोला, "आ गई अक्ल ठिकाने."

कौन किस की अक्ल ठीक करता है, यह तो समय बताएगा, सन्नी ने मन ही मन सोचा.

तीसरी रात को ही सुधींद्र हर कमरे में सन्नी को तलाश कर हार चुका था. बच्चों से पूछा तो उन्होंने जवाब दिया, "हमें नहीं मालूम. क्या हमारी मम्मी खो गई हैं?"

बच्चे भी घबरा कर सन्नी को स्नानगृह, रसोईघर, यहां तक कि स्टोर व पलंग के नीचे ढूंढ़ने लगे. जब वह नहीं मिली तो वे रोंआसे से सुधींद्र के साथ शुचि के कमरे की तरफ चल दिए. वह अपने कमरे में कोई किताब पढ़ रही थी. सुधींद्र को देखते ही वह पलंग से उतर कर नीचे खड़ी हो गई.

"क्या आप बता सकती हैं कि सन्नी कहां है?"

"जी हां, उन की किसी सहेली ने उन्हें खाने पर बुलाया था, वह रात में वहीं रुक जाएंगी."

सुधींद्र का पारा सातवें आसमान पर जा पहुंचा, "वह रात में घर से बाहर रुकेगी और वह भी बिना मुझे बताए."

शुचि को उस के तमतमाते चेहरे को देख कर हंसी आ रही थी. लेकिन वह चुपचाप उस के गुस्से का मजा लेने लगी. मन हुआ कि कहे, जब मां व बहन राতरात भर गायब रहती हैं, तब कुछ असर नहीं

. बीवी एक दिन बाहर रुक गई तो
न घूमने लगी. पर ऊपर से वह शांत भाव
ोली, "आप घर में नहीं थे तभी उन की
नी का फोन आया था. उन्होंने कहा था
ाप को संदेश दे दूं. भाई साहब, गलती
है. मैं किताब में ऐसी डूब गई कि आप
बताना ही भूल गई."

दरअसल सन्नो उसी शहर में रह रही
की मां के यहां रुक गई थी.

न्नो के घर आते ही उसे देख कर सुधींद्र
पारा चढ़ गया. वह स्लीवलेस व लोकट
उज में उसे पहली बार देख रहा था. केशों
भी उस ने घुंघराला बनाया हुआ था. वह
देखते ही जोर से गरजा, "रात भर कहां
"

"अपनी सहेली के यहां," उस ने पर्स
पर फेंकते हुए, बिलकुल रूही की अदा
हा.

"रात भर मुझे बिना बताए क्या कहीं
ा अच्छा लगता है?"

"क्यों, जब रूही व मांजी घर से बाहर
सकती हैं तो मैं क्यों नहीं रुक सकती.
को मैं बता कर गई थी."

"पहले तो इस शहर में तुम्हारी कोई
ी नहीं थी...अब ऐसी कौन सी सहेली
ो गई जिस पर तुम्हें प्यार उमड़ आया?"

उस ने उस के गले में देवरानी व सास
ामने बेशर्मी से बांहें डाल दीं, "सारी,
प को बताना ही भूल गई थी कि बीना,
रे साथ पढ़ती थी, अब इसी शहर में
ई है."

"क्या करती हो, शर्म नहीं आती?"
उस की हरकत से झेंपता हुआ वहां
गया.

सास, जो उस के ससुर की कमाई को
में उड़ा रही थी, ने बुरा सा मुंह बनाया,
पर निकल रहे हैं."

तीसरे दिन रात साढ़े 12 बजे सुबीर
के कमरे का दरवाजा पीट रहा था. उस
बूझ कर सुधींद्र को जगाया, "बाहर
दरवाजा पीट रहा है, जरा देखिए तो."

सुधींद्र ने चादर मुंह पर तान ली, "तुम देख लो न."

"न बाबा न, इस समय तो वह शराब के नशे में होता है. मुझे उस से डर लगता है."

सुधींद्र को अलसाते हुए दरवाजा खोलना पड़ा.

"भैया, क्या शुचि भाभी के पास है? सारे घर में उसे ढूंढ़ आया हूं."

"हम लोग तो सो रहे हैं. यहां तो वह नहीं है."

तब तक सन्नो भी उठ कर दरवाजे तक आ गई थी. फिर उबासी लेते हुए बोली, "मुझ से कह कर गई थी कि वह अपनी किसी कानन सहेली के यहां रुकने वाली है."

"कानन के यहां? लेकिन वह तो बहुत

> **बहाना**
>
> *बहाना तो झूठ से भी ज्यादा बुरा और खौफनाक होता है, क्योंकि बहाना माने सुरक्षित झूठ.*

बदनाम औरत है."

"भई, हमें क्या पता? उस का संदेश हम ने आप तक पहुंचा दिया है," उस ने कहते हुए दरवाजा बंद कर लिया.

पलंग पर लेटने के कुछ क्षण बाद उसे लगा कि गुस्से में सुबीर ने खाने की प्लेट जमीन पर पटक दी है.

अब तो नियम ही बन गया था. एक दिन सन्नो गायब रहती तो एक दिन शुचि.

एक रात जैसे ही सन्नो ने कहा कि शुचि कानन के यहां रुक गई है, सुबीर गुस्से में अपनी मोटर साइकिल निकाल कर उसे वापस लेने चल दिया. 1 घंटे बाद वह फिर उस का दरवाजा खटखटा रहा था, "भाभी, मैं कानन के यहां हो कर आया हूं, शुचि वहां नहीं है."

सन्नो जानती थी कि वह अपनी मां के यहां है फिर भी बनते हुए बोली, "तो हम लोगों को क्या पता कि वह कहां है, कहां नहीं है. जो उस ने बोला था, मैं ने आप को

बता दिया."

दूसरे दिन सुधींद्र भी दिन में सन्नी की सहेली बीना के घर की तलाश में चल दिया. रिंग रोड पर उस ने कितना तलाशा पर बीना का मकान नहीं मिला.

शाम को चाय पीने के बाद खाने की मेज पर सन्नी व शुचि गप्पें लगा रही थीं. उस की सास व ननद खरीदारी के लिए गई थीं. दोनों भाइयों ने बच्चों को बाहर खेलने के लिए भेज दिया. नटवर सिंह को माल रोड से मिठाई लेने भेज दिया व उन दोनों को घेर लिया.

सुबीर अधिक गुस्से में था. वह शुचि पर दहाड़ा, "तुम कानन का बहाना कर के कहां जाती हो?"

"मैं तो उसी के यहां जाती हूं."

"मैं कल तुम्हें वहां देखने भी गया था."

"तुम से उस ने मजाक कर ने के लिए छिपा दिया था."

"और तुम बता रही थीं, सन्नी, कि बीना रिंग रोड पर रहती है. पर वहां तो कोई बीना नहीं रहती?" सुधींद्र ने पूछा.

"आप ने ठीक से ढूंढ़ा नहीं होगा. और हां, आप हमें क्यों टोकते रहते हैं....हमारी सहेलियां हैं, उन से मिलने तो हम कभीकभी जाएंगी ही."

"लेकिन यह किस ने कहा है कि रात में भी वहीं रुको?"

"जब सासजी व रूही अपनी सहेलियों के यहां रुक सकती हैं, तो हम क्यों नहीं रुक सकतीं?"

सुधींद्र चिल्ला कर बोला, "हमें उन से मतलब नहीं है. हम तुम्हारी बात कर रहे हैं."

"उन से मतलब क्यों नहीं है? सास तुम्हारी मां हैं, रूही तुम्हारी सगी बहन है."

"यदि वे बेहूदी हरकतें करती हैं तो इस का यह मतलब तो नहीं है कि तुम भी उन की नकल करो."

"हमारा भी मन होता है कि हम भी घर से बाहर रुक कर आराम करें."

"मैं यह दावे से कह सकता हूं कि तुम किसी भी दिन कानन के यहां नहीं रुकीं," सुबीर बोला.

सुधींद्र भी सन्नी से बोला, "तुम्हारी बीना नाम की कोई सहेली इस शहर में नहीं है. मैं भी दावे के साथ कह सकता हूं," उस ने इतनी जोर से मेज पर हाथ मारा कि उस का हाथ झनझना गया. वह मन ही मन सोच रहा था कि यदि मां और बहन बाहर किसी के यहां न रुकती होतीं तो वह इन दोनों को ऐसी सजा देते कि ये जिंदगी भर याद करतीं पर मां एवं बहन के कारण उन्हें अपना गुस्सा नियंत्रित करना पड़ रहा है.

"अब तुम दोनों सोचते रहो कि हम कहां थीं. अभी तो हम दोनों रसोईघर में जा रही हैं," यह कह कर वे दोनों वहां से खिसक लीं. दोनों ने रसोईघर में पहुंच कर खूब कस कर एकदूसरे से हाथ मिलाया. उन का नुकीला तीर बिलकुल निशाने पर लगा था.

"दीदी, आज फिर मैं मां के घर चली जाऊं?" शुचि ने पूछा.

"नहीं, आज रहने दो. फिर देखा जाएगा. अभी इतनी खुराफात ही काफी है."

दूसरे दिन नाश्ते के बाद सुधींद्र मुंह फुलाते हुए बोला, "एक घंटे में सामान पैक कर लो. हम लोग आज ही वापस चल रहे हैं."

"अरे, अभी तो बच्चों की छुट्टियां काफी हैं और फिर बीना ने मुझे आज फिर खाने पर बुलाया है."

"बीना...बीना...बस भी करो. हमें आज ही चलना है."

वह मन ही मन मुसकराती सामान पैक करती रही. जैसे ही वह आंगन में सूख रहे तौलिए को उठाने आई तो लगा सुबीर कमरे में सुधींद्र से कुछ कह रहा है, "भैया, अब तक तो हम ने मां और रूही के बारे में कुछ सोचा नहीं था. आप ही बताइए यह कौन बरदाश्त कर सकता है कि उस की बीवी हर तीसरे दिन घर से रात मे

ब रहे?"

"पहले मैं भी इन बातों को गंभीरता नहीं लेता था. मैं ने मां से इस के बारे बात की थी लेकिन वह तो रूही का ही ले रही थी."

"परसों मैं ने भी उन से बात की थी. तो कह रही थीं कि इस में बुराई की बात है."

"बात इतनी आगे निकल गई है कि रूही को नियंत्रित करना ही होगा, कहीं की शादी तय करनी होगी."

"आप सही कह रहे हैं. अब तक तो ठीक था लेकिन शुचि भी रूही को देख पता नहीं कैसेकैसे ऊलजलूल कपड़े ने लगी है...बातें बनाने लगी है."

"पर तू तो बहुत आधुनिक बनता था. क्या हो गया?"

सुबीर झेंपता हुआ बोला, "आधुनिक लड़कियों के लिए हूं, लेकिन पत्नी तो के रूप में ही अच्छी लगती है."

"पता नहीं दोनों को क्या होता जा रहा है, इसलिए मैं तो आज ही वापस जा रहा हूं."

"आप की तो अभी छुट्टी बाकी हैं?"

"सब रद्द कर दूंगा."

"भैया, मैं भी सोच रहा हूं कि यहां से बाहर चला जाऊं. मामाजी अपनी कंपनी का आफिस लुधियाना खोलना चाह रहे हैं. मैं वहां चला जाऊंगा, यही इस समस्या का हल है."

उधर तौलिया उतारते हुए सन्नी बेहद खुश थी कि वह उन दोनों की आंखों से परदा हटाने में सफल रही...वे रूही व मां की बेहूदगी समझने लगे हैं...एक दिन वे उन का असली रूप भी देख लेंगे. कम से कम अब तो वे ससुर का बेपनाह पैसा होते हुए भी सुधींद्र का अर्थिक शोषण नहीं कर पाएंगी. फिर वह यह सोच कर मुसकरा दी, जब उन दोनों को यह पता लगेगा कि हम दोनों रात में इधरउधर नहीं भटकती थीं, बल्कि शुचि की मां के घर रहती थीं तो उन की नाराजगी भी दूर हो जाएगी. ●

वश्व साहित्य

ुकी निगाहें

मशुदा की तलाश में जुटे डटेक्टिव शशि और उस की क्रेटरी की तीखी नोकझोंक हास्यपूर्ण घटनाओं पर ाधारित एक अभूतपूर्व सूसी उपन्यास.



मूल्य
रु. 16

विशेष छूट कूपन-यहां से काटिए
अग्रिम राशि भेजने पर मूल्य
रु. 14
डाक खर्च सहित

. द्वारा पुस्तक को मंगवाने पर मूल्य का 25% भेजना अनिवार्य. डाक व्यय अतिरिक्त.

जमीन बिकाऊ है

कहानी ● साधना राकेश



सुबह का अखबार पढ़ते हुए दीनानाथ की नजर जमीन बिकाऊ है के कालम पर ठहर गई. उन्होंने पत्नी को आवाज देते हुए कहा, "सुमन, सुनती हो, आज दफ्तर से लौटने में देर हो जाएगी...घबराना मत."

"कहां जाना है?" पति का टिफिन तैयार करते हुए सुमन ने रसोईघर से ही पूछा.

"एक जगह जमीन बिकाऊ है...वही देखने जाऊंगा."

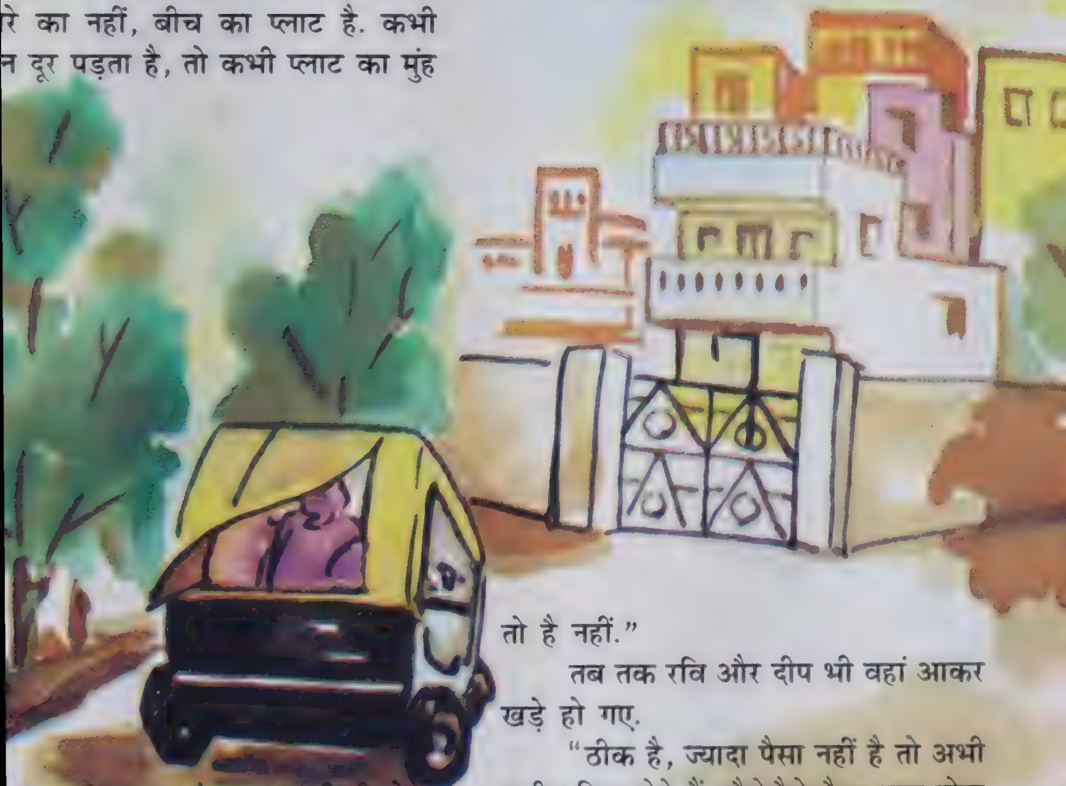
"कहां पर है...क्या दाम है...शहर से कितनी दूर है, आसपड़ोस कैसा है. सभी कुछ पता कर लेना."

"बस, शुरू हो गई...अभी जमीन देखी

और इतने सारे सवाल कर दिए," उठते
दीनानाथ ने पूछा, "बच्चे कहां हैं?"

"रवि कालिज गया है और दीप
स्सग की तैयारी कर रहा है," फिर वह
: बड़बड़ाने लगीं, 'इन लड़कों को तो
करनाधरना है नहीं, हमारे साथ के सभी
ं ने मकान बनवा लिए हैं...एक तुम हो
'

"लेकिन अगर हमारा मकान नहीं बन
तो इस का कारण तुम ही हो. तुम्हें
जमीन ही पसंद नहीं आती. कभी
गी, जमीन कम है, कभी कहोगी कि
रे का नहीं, बीच का प्लाट है. कभी
न दूर पड़ता है, तो कभी प्लाट का मुंह



दिशा में खुलता है...अब इतनी मीनमेख
द तो हमें जमीन मिलने से रही. तुम
तो बनाबनाया फ्लैट ले लें?"

"रहने दो...न जमीन अपनी, न छत...
ऐसा मकान किस काम का...चार दिन बाद
ही प्लास्टर झड़ने लगता है."

दीनानाथ को लगा, अब पत्नी का
भाषण लंबा खिंच जाएगा. सो वह चुपचाप
नहाने के लिए गुसलखाने में चले गए और
पानी का नल पूरा खोल दिया, ताकि पत्नी
की बड़बड़ाहट सुनाई न दे. शाम को दीनानाथ
लौटे तो सुमन को बताया कि वह प्लाट देख
आए हैं. किनारे का प्लाट है, अच्छी कालोनी
है, लेकिन थोड़ा महंगा जरूर है.

"तो रहने दो, हमारे पास ज्यादा पैसा
तो है नहीं."

तब तक रवि और दीप भी वहां आकर
खड़े हो गए.

"ठीक है, ज्यादा पैसा नहीं है तो अभी
जमीन लिए लेते हैं, जैसेजैसे पैसा जमा होता
जाएगा, मकान बनवाते जाएंगे," दीनानाथ ने
सुझाव दिया.

*मन मकान बनवाना चाहती थी तो अपनी खुद की पसंद की
जमीन पर. लेकिन जमीन खरीदते वक्त उस में कोई न
ई नुक्स निकल ही आता. यही कारण था कि उस का परिवार
बरसों से किराए के मकान में रह रहा था. आखिरकार उस
मकान की ख्वाहिश पूरी तो हुई मगर बहुत ही विचित्र ढंग से.*



"अरी, अपने घर में भी आओगी या बाहर ही खड़ी रहोगी," दीनानाथ हाथ में फूलों की माला लिए हुए सुमन से बोले.

"नहीं, यह ठीक नहीं है. इस तरह से मकान बनवाने में कई चीजें चोरी हो जाती हैं. सरला का घर ऐसे ही कई सालों में बना था. रातोंरात कोई दरवाजा उखाड़ ले जाता, कोई चारदीवारी की ईंटें," सुमन ने फिर तुक्का जोड़ा.

"तो फिर क्या करें?" बड़बड़ाते हुए दीनानाथ उठ गए.

दोनों लड़कों ने आंखोंआंखों में कुछ इशारा किया और पिता के पीछेपीछे चल दिए.

दीनानाथ ने नौकरी की शुरुआत बड़े बाबू के ओहदे से की थी और धीरेधीरे ऊन बनाने वाली फैक्टरी के सहायक उत्पादन मैनेजर हो गए थे. सेवानिवृत्त होने का समय पास आ रहा था. वह चाहते थे कि अपने जीवन काल में मकान जरूर बना लें, वरना किराए का मकान उन्हें या उन के बच्चों को कब तक ढोता रहेगा. हर माह किराए के लिए दी जाने वाली रकम उन्हें खलती, पर पत्नी की मीनमेख की आदत से अच्छी से अच्छी जमीन भी हाथ से निकल जाती. वर्षों से यही होता आ रहा था. जो भी उन के यहां आता या वह किसी से मिलते, यह जरूर कहते, 'भाई साहब, कोई प्लाट हो तो बताइए...अब अपनी छत के नीचे रहना चाहते हैं.'

लेकिन जब कोई उन्हें जमीन बताता या दिखाता तो पत्नी की शंका, 'झगड़े की तो नहीं है, कभीकभी एक ही जमीन की दलाल 2-3 रजिस्ट्री करवा देते हैं, या यह तो बड़ी महंगी है,' उठने लगती.

कुछ समय बाद जब वही जमीन और महंगी हो जाती तब वह भी अपना बजट बढ़ा लेतें, पर उस समय उन्हें उस दाम पर भी वह जमीन न मिल पाती. धीरेधीरे लोगों ने सोचना शुरू कर दिया कि इन्हें लेनादेना नहीं है, बस पूछते रहते हैं. सो लोगों ने जमीन के बारे में बताना बंद कर दिया.

अब घर में कुछ अलग ही खिचड़ी पकने लगी. जमीन की बात उठे महीनों हो गए थे. सुमन ने कई बार दीनानाथ से पूछा, पर वह यह कह कर टाल देते, 'देखेंगे...'

लड़के भी अकसर घर के बाहर ही रहते. उन के लौटने का कोई समय ही न होता. सुमन खीजतीं कि इन तीनों को क्या हो गया है. जमीन वगैरह देखना एकदम से

द कर दिया है. कहीं सचमुच उन का मकान बन सका तो? बेटी तो ससुराल गई, पर नों लड़कों के लिए कम से कम एक कान तो बनवा ही देना चाहिए.

एक दिन सुबह सुमन उदास बैठी सब्जी ट रही थीं. दीनानाथ बाबू जल्दी उठ कर का नाश्ता कर के बाहर चले गए थे. नों बेटे भी जल्दी उठ गए थे, बड़ा बेटा लिज चला गया. छोटा कुछ देर में निकला, र आ कर बोला, "मां, मैं कहना भूल ...आज मेरे दोस्त की मंगनी है, सभी को ाया है. दिन का खाना भी वहीं है. पिताजी तर से वहीं आ जाएंगे...भैया भी आ एंगे. तुम मेरे साथ चलोगी...मैं बस अभी या."

"मुझे कहीं नहीं जाना," सुमन बोलीं.

"अरे मां, तुम सुनील को इतना चाहती उस की सगाई में नहीं चलोगी."

"लेकिन तूने पहले तो कुछ बताया , एकदम से कैसे चल सकती हूं. घर का काम पड़ा है."

"देखो मां, खाना वहीं है...इस कारण ा बनाना नहीं है. रही साफसफाई, वह कर लेगी. चाबी बगल में चाची को दे गे, तुम बस तैयार हो, मैं अभी आया."

बुझे मन से सुमन तैयार होने लगीं. ल, दीप का पक्का दोस्त था. उसे वह चाहती थीं, इस कारण बेटे की बात न सकीं.

आटोरिकशा से जब बेटा, मां को ले नीचे उतरा तो मकान के बाहर काफी गहमी थी. मकान फूलों की लड़ियों से या गया था. लेकिन वह बिलकुल नया रहा था.

"क्यों रे, सुनील का नया घर बना हालांकि सुमन सुनील के घर कभी गई थीं, पर उस का घर एकदम नया लग था. अब उन्हें अचानक यह भी याद कि सुनील घर आताजाता रहता है और चाची' करता रहता है, पर उस ने मंगनी की बात कभी नहीं बताई. निमंत्रण देने भी स्वयं नहीं आया, सिर्फ बेटे के कहने पर वह कैसे चली आईं?

तभी उन्हें सुनाई दिया, "अरी, अपने घर में भी आओगी या बाहर ही खड़ी रहोगी," उस के पति फूलों की माला लिए सामने खड़े थे. बड़ा बेटा भी माला लिए हुए था. कई परिचित लोग भी वहां उपस्थित थे.

"क्या कहा...मेरा घर...?" वह आश्चर्य से पूरा वाक्य भी न बोल पाईं.

"हांहां, तुम्हारा घर, लेकिन इसे बनवाने का श्रेय तुम्हारे इन दोनों नालायक बेटों को जाता है. अंदर आ कर देखो...पसंद है न?"

"मां, इस का मुंह भी पूरब की तरफ है और प्लाट भी किनारे का है," बड़ा बेटा बोला और माला मां के गले में डाल दी.

"मां, हमारी गल्ती तो है, जो हम ने तुम्हें अंधेरे में रखा. पर हम तुम्हें आश्चर्यचकित कर देना चाहते थे," छोटा बेटा डरतेडरते बोला.

सुमन अंदर ही अंदर हर्ष, आश्चर्य और अप्रत्याशित सुखद घटना से रोमांचित हो रही थीं और सोच रही थीं, 'इन बच्चों और पति पर गुस्सा करूं या गले से लगा लूं?. ●

दूध का जला...

कहावत है, 'दूध का जला छाछ को भी फूंकफूंक कर पीता है', यह कहावत सिद्ध हुई है दिल्ली के उपहार सिनेमा अग्निकांड से. जब से यह भयंकर अग्निकांड घटित हुआ है लापरवाही बरतने वाले लोग तो सावधान हुए ही हैं, सिनेमा मालिक और भी ज्यादा सतर्क हो गए हैं और इस का प्रमाण है दिल्ली का ही अनुपम–4 मल्टीप्लेक्स सिनेमा. इस सिनेमाघर में सिगरेट तक तो पीना मना है ही, 24 घंटे सिनेमा से थोड़ी ही दूरी पर अपने फायर ब्रिगेड की व्यवस्था भी बनाए रखी है.

वैसे सावधानी बरतना या सतर्क रहना अच्छी बात तो है किंतु फायदा तभी है जब ये सावधानी सदैव बरती जाए न कि कुछ ही दिन.

मरुभूमि कुरजां पक्षी के कलरव से गूंजी

लेख ● अशोक कुमार यादव

थार के रेगिस्तान में जोधपुर जिले में फलौदी तहसील मुख्यालय से 5 किलोमीटर दूर स्थित छोटा सा खीचन गांव अपने अंक में अनेक ख़ूबियों को समेटे देशीविदेशी सैलानियों को बरसों से आकर्षित कर रहा है. खूबसूरत कुरजां पक्षी के 7 माह के प्रवासकाल में खीचन आबाद सा हो जाता है. इस गांव को 'पक्षी चुग्गाघर' कहा जाए तो कोई अतिशयोक्ति नहीं है.

खीचन में प्रतिवर्ष सितंबरअक्तूबर माह में प्रवासकाल पर आने और मार्च माह के अंत तक अपने वतन लौट जाने वाले कुरजां पक्षी को अंगरेजी में 'डेमोसाइल क्रेन' कहा







लाल पत्थरों से बनाई गई खीचन की हवेलियों का कलात्मक सौंदर्य देखते बनता है.



है. राजस्थानी बोली में 'कुरजां' के संबोधित किए जाने वाले इस सारस के पक्षी को यहां का वातावरण बहुत या है. 6-7 हजार की संख्या में कुरजां के आगमन और इन के कलरव से चन गांव गूंज उठता है. कुरजां के हजारों देशीविदेशी सैलानियों का भी मघट लगा रहता है.

क्षिण अफ्रीका और दक्षिण यूरोप से

क्षी झाड़ या ओट में रहने की बजाय ा कर खुले मैदानों में रहना पसंद करता

हजारों की संख्या में कुरजां के प्रतिवर्ष खीचन पहुंचने का एक ही राज है कि इन को यहां की जलवायु अनुकूल लगती है. कंकड़पत्थर खाने वाली कुरजों को यहां पर्याप्त मात्रा में कैल्शियम युक्त मिट्टी मिल जाती है. यहां की रेतीली भूमि इस को दलदली महसूस होती है. कुरजों को खीचन के चुग्गाघरों से ज्वार, बाजरा, गेहूं, मतीरे के बीज आदि भरपेट खाने को मिल जाते हैं और तालाबों से पानी भी मिल जाता है.

कजाकिस्तान से आने वाली कुरजां ताशकंद, काबुल, पाकिस्तान होती हुई लगभग साढ़े 4 हजार से 6 हजार किलोमीटर तक की यात्रा तय कर यहां पहुंचती हैं. वैसे कुरजां का मूल स्थान यूरोप का दक्षिणीपश्चिमी भूभाग, काला सागर, पोलैंड, वारसा, यूक्रेन, कजाकिस्तान, उत्तरीदक्षिणी अफ्रीका और मगोलिया है. अफ्रीका से आने वाली कुरजां अल्जीरिया, लीबिया, बसरा, फारस, अफगानिस्तान और पाकिस्तान होते

हुए राजस्थान व गुजरात राज्यों के विभिन्न इलाकों में आती हैं.

राजस्थान के मारवाड़ प्रदेश में कुरजां को विरहिणियों का संदेशवाहक पक्षी माना गया है. कुरजां को देखते ही उन यौवनाओं के दिलों की धड़कनें बढ़ जाती हैं, जिन के पति उन्हें छोड़ कर कहीं दूर परदेस चले गए हैं. नवयुवतियां कुरजां को रोज बड़े प्यार से चुग्गा डालती हैं और गाती हैं, 'कुरजां री म्हारा भंवर मिला दी जे रे...' कुरजां पर मारवाड़ में और भी कई लोकगीत प्रचलित हैं.

कुरजां के लिए खीचन में लंबाचौड़ा चुग्गाघर बना हुआ है. गांव के बैंक में 'पक्षी चुग्गाघर' नाम से खाता भी खुला हुआ है. मारवाड़ के प्रवासी बंधु देशविदेश के विभिन्न भागों से इस चुग्गाघर के लिए राशि भिजवाते रहते हैं. इस चुग्गाघर में प्रतिदिन 5 से 6

भटक जाने पर ये उसे ढूंढ़ निकालती हैं व संदेश देने के लिए एक विशेष आवाज से सभी को सूचित करती हैं.

हलके सलेटी, भूरे रंग की कुरजां की चोंच हलके हरे रंग की होती है और गले के नीचे सीने तक काले मुलायम पंख होते हैं. इस की आंख के पीछे भी सफेद पंख होते हैं. यह लगभग 3 फुट ऊंचाई की और वयस्क होने पर 4 से 6 किलोग्राम वजन की होती है. कुरजां प्रायः कतार में उड़ती हैं. मुखिया का अनुगमन सभी पक्षी करते हैं. अनुशासनप्रिय कुरजां आकाश में अंगरेजी के 'वी' अक्षर की आकृति बनाते हुए कतारबद्ध चलती हैं. प्रवास के दौरान मादा कुरजां आगे चलती हैं. बीच में, बाएं और पीछे नर कुरजां रहते हैं. ये जमीन से 900 मीटर तक की ऊंचाई पर 40 से 60 किलोमीटर प्रति घंटा

जोधपुर जिले का खीचन गांव सितंबरअक्तूबर माह में कुरजां पक्षी के कलरव से गूंज उठता है. दक्षिण अफ्रीका और दक्षिण यूरोप से हजारों की संख्या में आए सारस प्रजाति के इस खूबसूरत पक्षी को देखने सैलानियों का जमघट लगा रहता है.

क्विंटल ज्वार, गेहूं, बाजरा, मतीरे के बीज आदि कुरजां के लिए डाले जाते हैं. हर साल प्रवासी कुरजां की तादाद बढ़ने से अब यह चुग्गाघर छोटा पड़ने लगा है.

चुग्गाघर से दाना चुगने के बाद ये सूखी नदी, तालाब और मिट्टी के ढेरों पर क्रीड़ा करती नजर आती हैं. संध्या में दाना चुगने के बाद विश्राम के लिए ये पास के खुले मैदान में चली जाती हैं.

कुरजां कुटुंब में ही रहती हैं और प्रायः झगड़ा नहीं करतीं. अत्यंत डरपोक एवं संदेहशील यह पक्षी किसी मकान, झाड़ या ओट में नहीं ठहरता, बल्कि खुले मैदानों में रहता है. कुरजां अन्य पक्षियों से भी नहीं घुलतीमिलतीं. ये अन्य पक्षियों से लड़तीझगड़ती भी नहीं हैं. अपने प्रियजनों के

की रफ्तार से उड़ते हुए लंबा रास्ता तय करती हैं. इन की टांगें 15 से 20 इंच लंबी होती हैं, उड़ान के दौरान इन की गरदन सीधी रहती हैं.

कुरजां वर्ष में मात्र एक बार गर्भ धारण करती है और अप्रैलमई में अंडे देती है. यह एक बार में 2 अंडे देती है, जो भूरे, पीले रंग के होते हैं तथा उन पर लाल कत्थई रंग के चकत्ते होते हैं. कुरजां का प्रजनन खीचन में नहीं होता, पर ये गर्भ यहीं से धारण कर के जाती हैं.

खींचन गांव के 35 वर्षीय भीखम सिंह राजपुरोहित ने कुरजां के खीचन की ओर खिंचे चले आने की रोचक बात बताई. उन्होंने बताया कि साढ़े 3 सौ वर्ष पहले बसे खीचन में कुरजां पक्षी इस के बनने से पहले से आ



चन की हवेलियों में कुशल शिल्पियों द्वारा गई नक्काशी का शिल्प पर्यटकों को बस अपनी ओर खींचता है.

हैं. राजपुरोहित द्वारा बसाए गए इस गांव शुरू से ही शिकार वर्जित रहा है.

'कुरजां संरक्षण एवं अनुसंधान केंद्र' म कराने के लिए प्रयासरत खीचन के सुरेंद्र सिंह व हुकम सिंह राजपुरोहित ने या कि उन्होंने खीचन के आसपास की बीघा भूमि को 'कुरजां अभयारण्य' के अधिसूचित कराया है. कुरजां का मांस शरीर के अनुकूल नहीं होता. इतना है कि कुरजां यदि किसी खेत में जा बैठ जाए तो समझो कि समूची फसल द हो गई. इस के बावजूद खीचनवासियों कुरजां पक्षी प्रिय है.

रेल तथा बस मार्ग से जुड़े खीचन गांव सरी विशेषता है, यहां की 2 दर्जन से कलात्मक हवेलियां. 6-7 दशक पूर्व के ही कुशल शिल्पियों द्वारा लाल पत्थरों से बनाई गई इन हवेलियों का सौंदर्य देखते बनता है. इन हवेलियों को विभिन्न परिवारों ने अकाल के समय लोगों को मजदूरी देने की दृष्टि से बनवाया था. इन हवेलियों को बनवाने वाले सभी परिवार अब देशविदेश के विभिन्न स्थानों पर जा कर बस गए हैं, अतः ये हवेलियां अब सूनी पड़ी हैं. सन 1933 में बनी इंद्रचंदजी रावतमल जी गोलेच्छा की हवेली बहुत ही सुंदर है. अन्य हवेलियों में भी नक्काशी का सुंदर काम हुआ है. इन हवेलियों का शिल्प सौंदर्य पर्यटकों को बरबस अपनी ओर खींचता है.

खीचन गांव इसलिए भी प्रसिद्ध है, क्योंकि यहां के नाथजी के धूणा पर पागल कुत्ते के काटे हुए व्यक्ति का पुख्ता इलाज होता है. खीचन में कई मंदिर भी देखने लायक हैं. दादाबाड़ी तथा महादेवजी की बगीची भी यहां का आकर्षण है.

खीचन में आखातीज, होली, गणगौर, घुड़ला, बड़ी तीज आदि त्योहार भी पारंपरिक ढंग से जोरशोर के साथ मनाए जाते हैं. ●

कर समस्याएं

करीब 3 बीघे रकबे की जमीन मेरी पत्नी के नाम से वर्ष 1958 में उस के पिता ने खरीद कर दी थी. जमीन खरीदने के बाद सन 1961 में पत्नी की मृत्यु के बाद वह जमीन मेरे नाम से हुई, जिस का उपयोग हम खेती के रूप में करते रहे हैं. वर्ष 1996 में उस जमीन का एक कोलोनाइजर के साथ 25 लाख में इस शर्त के साथ अनुबंध किया कि वह उसे विकसित करा कर 2 वर्षों में बेच कर हमें रकम अदा करेगा. कृपया बताने की कृपा करें कि उस जमीन से प्राप्त रकम पर आयकर अथवा संपत्तिकर या अन्य किसी प्रकार का सरकारी कर देना पड़ेगा.

–रामविलास, नई दिल्ली

क्योंकि आप ने जमीन पर कोलोनाइजर के साथ अनुबंध किया है तो यह एक प्रकार का व्यापारिक अनुबंध है, इसलिए इस से उत्पन्न होने वाली आय पूर्णतया व्यापारिक आय गिनी जाएगी, जिस पर आय कर देना होगा. जब तक आप जमीन के मालिक रहेंगे, ऐसी खुली जमीन पर आप को संपत्ति कर भी देना होगा.

*

(1) मैं एक पेंशनभोगी हूं. (2) मैं ने अपने प्रोवीडेंट फंड व ग्रेच्यूटी का पैसा भारतीय यूनिट ट्रस्ट व सावधि बैंक जमा योजना में निवेश किया हुआ है. (3) मेरी उम्र लगभग 69 वर्ष है. मेरी आय के स्रोत हैं : (1) पेंशन (2) भा.यू. ट्रस्ट से प्राप्त मासिक डिवीडेंट (3) सावधि पर देय ब्याज, जो मैं न लेता हूं और न ही मेरे खाते में जमा होता है. मूलधन ब्याज पुनः निवेश करता रहता हूं. मेरा निवेदन है : (1) वर्ष 1996-97 व 1997-98 में करमुक्त सकल आय की सीमा (2) सकल आय में कटौतियों का विवरण व धनराशि (3) वरिष्ठ नागरिक व पेंशन भोगी की विशेष छूट यदि कोई हो एवं (4) फार्म 15 एच देने के बावजूद बैंक ने सावधि जमा धनराशियों पर देय ब्याज पर स्रोत पर कर कटौती कर ली है. क्या यह कटौती वैध है या अवैध? आयकर रिटर्न भरने का दिशा निर्देश (वर्ष 1996-97 एवं 97-98) देने की कृपा करें.

–बी.के. निगम, कानपुर

आप वरिष्ठ नागरिक भी हैं और आप के वित्तीय वर्ष 1996-97 एवं 1997-98 से संबंधित कर निर्धारण वर्ष हुए 1997-98 एवं 1998-99. इन दोनों वर्षों के लिए करमुक्त आय की सीमा 40,000 रुपए है. भारतीय यूनिट ट्रस्ट से प्राप्त डिवीडेंट और सावधि ब्याज पर प्रतिवर्ष मिलने वाला ब्याज, चाहे उसे आप अंत में ही लें, दोनों कर योग्य हैं. लेकिन धारा 80 एल के अंतर्गत आप को अधिकतम 15,000 रुपए की छूट मिलेगी.

बैंक के द्वारा जो कटौती की गई है, वह आयकर नियमों के अनुसार ही होगी, क्योंकि आप ने अपनी आमदनी की रकम नहीं बताई है, इसलिए उस की वैधता के बारे में कोई उत्तर नहीं दिया जा सकता है. हां, आप को अपनी आयकर की रिटर्न अवश्य भरनी चाहिए. यदि आप की सकल आय 1,20,000 रुपए तक है तो कर निर्धारण वर्ष 1997-98 के लिए आप को धारा 88बी के अंतर्गत वरिष्ठ नागरिक होने के कारण 40 प्रतिशत की कटौती देय कर में से प्राप्त होगी. लेकिन कर निर्धारण वर्ष 1998-99 के लिए आप को 10,000 रुपए तक की अधिकतम राशि आयकर छूट के रूप में प्राप्त होगी. इस प्रकार यदि आप की कुल करयोग्य आय केवल 1 लाख रुपए रहती है तो आप को कर निर्धारण वर्ष 1998-99 में कोई भी आयकर नहीं देना पड़ेगा.

पेंशनभोगी व्यक्ति को अपनी सकल पेंशन पर $33^1/_3$ प्रतिशत कटौती मिलेगी. ऐसी कटौती की अधिकतम रकम कर निर्धारण वर्ष 1997-98 के लिए 15,000 रुपए है और कर निर्धारण वर्ष 1998-99 के लिए 20,000 रुपए है. यदि यही पेंशन फैमिली पेंशन के रूप में प्राप्त होती है तो अधिकतम कटौती धारा 57 के अंतर्गत कुल 12,000 रुपए और 15,000 रुपए क्रमशः इन 2 वर्षों के लिए है. ●

कर सलाहकार **रामनिवास लखोटिया**

इस स्तंभ में हमारे पाठकों के कर संबंधी प्रश्नों का उत्तर दिया जाता है. अपने प्रश्न इस पते पर भेजें:

कर समस्याएं, सरिता, झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-110055

लेख ● अपर्णा मनोज मजूमदार व डा. एस. के. मजूमदार

बच्चे तो बच्चे ही होते हैं, कब क्या कर बैठें, कुछ कहा नहीं जा सकता. चाहे घुटनों के बल चलने की उम्र हो या ागनेदौड़ने की, हर पल उन पर निगाह खना जरूरी होता है. कुतूहलवश बच्चे का न हर चीज की जानकारी हासिल करना ाहता है, इसलिए वह चीजों को छू कर, ा कर, पटक कर या फेंक कर गौर से खता है. ऐसे में कभीकभी आकस्मिक दुर्घटना भी हो जाती है.

हमेशा विषैली, विस्फोटक, धारदार और घातक चीजों को बच्चों की पहुंच से काफी दूर रखना चाहिए. बच्चों के प्रति मातापिता की लापरवाही का अंदाजा इस



न चीजों को बच्चों से दूर रखें

बात से लगाया जा सकता है कि भारत में प्रतिवर्ष 10 हजार से अधिक बच्चे दुर्घटनाओं में मौत का शिकार हो जाते हैं.

घर में ऐसी अनेक चीजें रखी होती हैं, जिन की ओर मातापिता द्वारा बिलकुल ध्यान नहीं दिया जाता, लेकिन बाद में उन्हें पछताना पड़ता है. कपूर, अभ्रक, पारा, अम्ल (एसिड), सिरका, फिटकरी, रंगरोगन, स्याही, मच्छर भगाने के मैट, मच्छर भगाने की अगरबत्ती, कीड़ेमकोड़े भगाने की दवा, फिनाइल, नेप्थोलीन की गोली और डिटाल जैसी विषैली चीजें व दवाइयां बच्चों के मुंह में जाने से घातक परिणाम होता है. ऐसी चीजों का इस्तेमाल करने के बाद हमेशा संभाल कर रखना चाहिए, जिस से कि ये बच्चों के हाथ न लगें. यदि ऐसी चीजों की बहुत आवश्यकता न हो तो घर पर बिलकुल रखें, इस का विशेष ध्यान रखें. ऐसी वस्तुओं को बच्चों की पहुंच से काफी दूर रखें. स्विच बोर्ड काफी ऊंचाई पर हो, जिस से कि बच्चों के हाथ वहां तक न पहुंच सकें.

औषधि बच्चों की त्वचा व शरीर को नुकसान पहुंचा सकती है. औषधि हमेशा ऐसे स्थान पर रखें, जहां बच्चों का हाथ न पहुंचे. बच्चे द्वारा ओषधि खा लेने या निगल लेने से कभीकभी जानलेवा स्थिति से भी सामना हो जाता है. इसलिए आप को चाहिए देरसवेर घर में काम आने वाली आम ओषधियां, जैसे, टिंचर, बाम, आयोडीन, सिरदर्द, पेटदर्द आदि की गोलियां बच्चों की नजरों से दूर रखें. शराब, बियर, ब्रांडी, तंबाकू, सिगरेट, बीड़ी, भांग, अफीम आदि किसी भी प्रकार की नशीली चीज भी बच्चों की पहुंच से दूर रखनी चाहिए. सिगरेट और बीड़ी के टोटे

छोटे बच्चे जिज्ञासावश घर की हर चीज को छू कर देखना चाहते हैं. कई बार इसी कोशिश में घातक वस्तु तक उन के हाथ में पहुंच जाती है. अतः सावधानी बरतें. कहीं ऐसा न हो कि आप के बच्चे दुर्घटना का शिकार बन जाएं.

भी न रखें.

आग से संबंधित चीजें भी बच्चों की पहुंच से दूर रखनी चाहिए. लालटेन, चिमनी, लाइटर, मोमबत्ती, लैंप, स्टोव, गैसबत्ती, माचिस, ऐश ट्रे आदि से बच्चा झुलस सकता है. आग से बहुत बड़ी दुर्घटना घट सकती है. यहां तक भी हो सकता है, मकान जल जाए या आप का बेटा आग की भेंट चढ़ जाए.

घर में रखे पेट्रोलियम पदार्थों के प्रति भी लापरवाह नहीं रहना चाहिए. पेट्रोल, डीजल, मिट्टी का तेल, मोबाइल, स्पिरिट आदि सदैव बच्चों की पहुंच से दूर रखें. इसी तरह माचिस, बारूद, गंधक, पटाखे, बंदूक, पिस्तौल, बुलेट आदि विस्फोटक सामग्री बच्चों के हाथ लगने से गंभीर दुर्घटना घट सकती है. विद्युत सामग्री, मिक्सी, आइरन, टेबल फैन, वाटर हीटर, गीजर, कुकिंग हीटर आदि को भी बच्चों के हाथ न छू घर में जहांतहां न फेंकें, बच्चों के हाथ लगने पर वह उन्हें खा भी सकते हैं.

अकसर माताओं की लापरवाही से ही बच्चों के साथ दुर्घटनाएं घटती हैं. साधारणतः मांएं सब्जी की टोकरी के प्रति लापरवाही बरतती हैं. बच्चे सब्जी से खेलते रहते हैं और सूरन, अरुई, बंडा आदि खा लेते हैं, जिस से उन के मुंह, गले आदि में छाले हो जाते हैं. इस से कभीकभी काफी परेशानी का सामना करना पड़ता है. कच्चे आम, पके आम, केले के कस मुंह तथा शरीर के किसी स्थान पर लग जाने पर संक्रमण हो जाने का भय रहता है. टोकरी में रखे कटहल पर गिर जाने से बच्चे के कोमल शरीर पर घाव हो सकते हैं. इसलिए बच्चों को सब्जी की टोकरी से भी दूर रखना चाहिए.

सब से अधिक बच्चों के ही जलने के समाचार सुनने को मिलते हैं. रसोई में गरम



सौंदर्य प्रसाधनों का रासायनिक पदार्थ हानिकारक होता है. अतः इन्हें बच्चों से दूर रखें.

, पानी, चाय, काफी, भात, दाल, सब्जी, म बरतन, स्टोव गैस आदि से बच्चों को ाए रखें. कभीकभी रसोई में रखे मसाले डब्बे, मिर्ची पाउडर, नमक आदि उन के ा लग जाते हैं और वे उन्हें अपने मुंह, क, आंखों में लगा लेते हैं. इस से कभीकभी फी परेशानी का सामना करना पड़ता है. बात का भी ध्यान रखें कि कहीं बच्चा , गेहूं, चावल, सरसों, सोयाबीन आदि तो नहीं खेल रहा. बच्चे खेलते हुए उन्हें नी, नाक व कान में भरने लगते हैं.

मां मेकअप करती रहती है और बच्चे र्य प्रसाधनों से खेलते रहते हैं. कभीकभी न्हें मुंह में डाल लेते हैं. बच्चों को सौंदर्य धनों से भी खेलने नहीं देना चाहिए, कि ये रासायनिक पदार्थों से बने होते हैं, बच्चों के पेट में जा कर हानि पहुंचाते काजल, लिपस्टिक, आलता, बिंदी, क्रम पाउडर, परफ्यूम आदि को बच्चों की ा से दूर रखना चाहिए.

बच्चे किसी भी चीज को मुंह में डाल हैं. कभीकभी वह चीज मुंह के रास्ते में पहुंच जाती है तो कभीकभी गले में क कर रह जाती है. तब बच्चे का दम जाता है. कंचे, बटन, औषधि की गोली, सिक्के, लूडो की गोटी आदि बच्चे के न लगने दें, कोई चीज दिखते ही उसे बच्चे के हाथ से छीन लें.

बच्चे को यथासंभव घर पर अकेला न छोड़ें. अकेले सड़क पर न जाने दें, सड़क पार करते समय विशेष ध्यान रखें. बाजार में घूमते समय बच्चे के प्रति सतर्क रहें. कहीं आप सामान खरीदने में व्यस्त हों और आप का बच्चा कहीं और चल दे. बच्चे को रस्सी व गले में फंदा बना सकने वाली चीजों के साथ भी खेलने नहीं देना चाहिए. बच्चे प्लास्टिक की थैली को सिर पर डाल कर खेलते रहते हैं. कभीकभी इस से भी बच्चे का दम घुट जाता है. बाथरूम में बने बाथटब में बच्चे को अकेले न नहाने दें तथा छत पर बनी पानी की टंकी के आसपास भी बच्चों को खेलने न दें.

ऐसी अनेक चीजें हैं, जिन की ओर आमतौर पर ध्यान नहीं दिया जाता, लेकिन बाद में पछताना पड़ता है. प्लास्टिक, रबड़ बैंड, तेज धारदार व नुकीली चीजें, टूटी चूड़ियां, कांच का सामान, चाकू, आईना, आलपिन, हेयरपिन, शेविंग क्रीम, गम, बूट पालिश, साबुन, शैंपू, नील, पतंग की डोर, चूना, आदि चीजें कभीकभी बच्चों के लिए काफी नुकसानदेह साबित होती हैं. अपने प्यारे, दुलारे और सलोने बच्चे पर अपनी सुरक्षात्मक निगाह हर पल रखें, जिस से कि सदैव किसी भी आकस्मिक दुर्घटना की संभावना से बच सकें.

यदि आप का बच्चा किसी दुर्घटना का शिकार हो गया है या उस ने शरीर को नुकसान पहुंचाने वाली किसी जहरीली चीज को खा लिया है तो रो या चिल्ला कर वक्त बरबाद न करें. धैर्य से काम लें और बच्चे को तुरंत प्राथमिक चिकित्सा दें, जिस से कि बच्चे की जान बच सके.

प्राथमिक चिकित्सा के समय साहस,

फुरती, संयम व विवेक से काम लें. दुर्घटनाग्रस्त बच्चे को खुले में लिटा दें. आसपास भीड़ व शोरगुल न होने दें.

तंत्रमंत्र, घरेलू नुसखों व नीम हकीम के चक्कर में न पड़ें. इस बात का भी ध्यान रखें कि प्राथमिक चिकित्सा पूर्ण चिकित्सा नहीं है. इस के साथ योग्य चिकित्सक को भी दिखाना जरूरी है.

बच्चे द्वारा जहरीली चीज खा लेने पर क्या करें?

	सामान्य लक्षण	प्राथमिक चिकित्सा	सावधानी
कपूर	सिर चकराना, उलटी होना, पेट में दर्द, बड़बड़ करना, आंखों से दिखाई न देना, हाथपैरों में ऐंठन, झटके, श्वास लेने में कठिनाई होना, पक्षाघात.	शीघ्र उलटी कराएं. शरीर के पास गरम पानी की बोतलें रखें.	शीघ्र डाक्टर को दिखाएं.
पारा	आवाज बैठ जाना, मुंह सूखना, पेट में दर्द, जलन, खून के दस्त होना, पेशाब बंद हो जाना, उलटी होना, शरीर का तापमान गिर जाना, नाड़ी कमजोर व बेहोशी.	राई के पानी से उलटी कराएं. दूध, अंडे की सफेदी, घी, तेल पिलाएं.	नमक के घोल से उलटी न कराएं. शीघ्र डाक्टर के पास ले जाएं.
तेजाब	मुंह, गले, पेट में जलन व दर्द, प्यास, आंख की पुतली का फैल जाना, श्वास लेने में परेशानी, खून की उलटी होना.	साबूदाना या चावल को पानी में मथ कर पिलाएं. घी, अंडे की सफेदी, चूने का पानी, दूध, नीबू का रस पानी में मिला कर पिलाएं पानी में चाक मिट्टी डाल कर पिलाने से अधिक लाभ मिलता है.	भूल कर भी उलटी न कराएं. शीघ्र डाक्टर को दिखाएं.
सीसा	गला सूजना, अत्यधिक प्यास लगना, पेट में दर्द, दबाने पर आराम लगना, सिरदर्द, कब्ज, ऐंठन, पक्षाघात.	उलटी कराएं. जौ का पानी, दूध, अंडे की सफेदी दें.	शीघ्र डाक्टर के पास ले जाएं.
पोटाश	मुंह से थूक बहना, चक्कर, उलटी, शरीर शिथिल, मलमूत्र अपनेआप निकल जाना, आंखों की पुतलियां फैल जाना.	राई के पानी से उलटी कराएं. 1-2 चम्मच व्हिस्की पिलाएं.	शीघ्र डाक्टर को दिखाएं.
एल्कोहल	चेहरा लाल हो जाना, तुतलाना, पैरों में लड़खड़ाहट, अंटसंट बकना, उलटी, बेहोशी, शरीर शिथिल.	उलटी कराएं, ठंडेपानी की धार सिर पर डालें, चाय, काफी पिलाएं.	सामान्य न होने पर डाक्टर को दिखाएं.

	सामान्य लक्षण	प्राथमिक चिकित्सा	सावधानी
तिया (नौसादर)	पेट में दर्द, मरोड़, प्यास लगना, घबराहट, बड़बड़ करना, पेशाब बंद हो जाना, खून के दस्त होना.	उलटी कराएं. दूध में अंडे की सफेदी फेंट कर पिलाएं, दूध में घी मिला कर पिलाएं.	डाक्टर के पास ले जाएं.
बाकू	मुंह, गले व पेट में दर्द व जलन, चक्कर, उलटी, बेहोशी, शरीर में ऐंठन.	उलटी कराएं, सिर पर ठंडे पानी की पट्टी या बर्फ रखें.	सामान्य न होने पर डाक्टर के पास ले जाएं.
ंच	मुंह कट जाना, पेट में दर्द, खून का दस्त या खून की उलटी होना.	पके केले, उबले आलू, दलिया, सूखा भात, खिचड़ी, अंडे की सफेदी दें. प्यास अधिक लगने पर बर्फ चूसने दें.	शीघ्र डाक्टर को दिखाएं.
दूर	गला बैठ जाना, मतली, घबराहट, पेशाब में जलन.	उलटी कराएं. दूध में घी मिला कर पिलाएं. अदरक व नमक मुंह में रख कर चूसने दें.	डाक्टर के पास ले जाएं.
ंग	सुधबुध खो बैठना, सिर चकराना, बड़बड़ करना, हंसना, चिल्लाना, झटके लगना, अनिद्रा, पुतली का फैल जाना.	उलटी कराएं. सिर पर ठंडे पानी की धार डालें, नीबू का रस, खट्टी चीजें खाने को दें. माथ पर ठंडे पानी की पट्टी रखें.	सामान्य न होने पर डाक्टर को दिखाएं.
ूरा	चेहरा लाल हो जाना, चाल में लड़खड़ाहट, प्यास, पुतलियों का फैल जाना, चक्कर, बेहोशी.	उलटी कराएं. दूध में मिसरी डाल कर पिलाएं. गरम पानी, काफी भी दे सकते हैं. सिर पर ठंडे पानी की धार डालें.	शीघ्र डाक्टर को दिखाएं.
ोल, ्री तेल	छाती में दर्द, उलटी, गले में जलन, श्वास लेने में परेशानी, दौरा पड़ना, दस्त लगना, खांसी, शरीर में ऐंठन, बेहोशी.	फैस्टर आयल पिलाएं.	भूल कर भी उलटी न कराएं. शीघ्र डाक्टर के पास ले जाएं.
पीन	श्वास लेने में परेशानी, बेहोशी, पुतलियों का सिकुड़ जाना.	उलटी कराएं, दूध को पानी में मिला कर पिलाएं.	डाक्टर को दिखाएं.
ा से ने	शरीर में फफोले पड़ना, श्वास लेने में कठिनाई, बेहोशी.	कपड़े ढीले कर दें. शरीर पर चिपके वस्त्र को निकाल दें, ठंडे पानी की धार डालें, नारियल का तेल लगाएं.	बेहोश होने पर कंबल से ढक दें, डाक्टर को शीघ्र दिखाएं.

	सामान्य लक्षण	प्राथमिक चिकित्सा	सावधानी
बिजली का करेंट लगने पर	सदमा, घबराहट, भयभीत होना, जल जाना, बेहोशी.	खुली हवा में लिटाएं, श्वास रुक जाने पर कृत्रिम श्वास दें, गरम दूध या चाय पिलाएं. बेहोश होने पर ठंडे पानी के छींटे मारें तथा रीढ़ की हड्डी पर बर्फ रगड़ें.	भूल कर भी शरीर पर तेल न रगड़ें. शरीर में गरमी लाने के लिए ब्रांडी पिलाएं.
हड्डी टूटने पर	तेज सूजन व दर्द, वह हिस्सा हिला न सकना.	अखबार के कागज से टूटे स्थान को बांध दें. अधिक हिलाएंडुलाएं नहीं.	शीघ्र डाक्टर को दिखाएं.
डूबने पर	पेट में पानी भर जाना, बेहोशी, शरीर शिथिल.	कपड़े ढीले कर दें, नाक, मुंह में लगा कीचड़ साफ कर दें, मुंह में कोई लकड़ी फंसा कर पेट के बल लिटा कर शरीर को ऊपर की ओर खींचें. बच्चा छोटा होने पर दोनों पैर पकड़ कर उलटा करें.	ठंडा दूध, शरबत, आइसक्रीम आदि न दें. शीघ्र डाक्टर को दिखाएं.
नाक में कोई वस्तु जाने पर	नाक में सूजन, नाक में बारबार हाथ लगाना, श्वास लेने में परेशानी.	सामने दिखाई देने पर चिमटी से खींच कर निकालें. पिसी मिर्ची, नसवार, तंबाकू आदि सूंघने दें, जिस से उसे छींकें आएं और उन के साथ वह वस्तु बाहर निकल जाए.	अधिक खींचतान न करें या हिलाएं-डुलाएं नहीं, इस से वह वस्तु ऊपर चढ़ सकती है. डाक्टर को दिखाएं.
कान में कोई वस्तु जाने पर	सिर में दर्द, चक्कर उलटी, बेहोशी.	पिचकारी में पानी भर कर पानी की तेज धार डालें. दिखाई देने पर चिमटी से खींच कर निकालें.	अधिक हिलाएं-डुलाएं नहीं डाक्टर को दिखाएं.
गले में कोई वस्तु अटक जाने पर	'ओंकओंक' करना, गला पकड़ना, छटपटाहट, दम घुट जाना.	उंगली डाल कर निकालने की कोशिश करें. सिर को नीचे कर पीठ पर ठोंकें. बच्चा छोटा होने पर पैर पकड़ कर उलटा कर पीठ व कंधे के पास थपथपाएं. गले में अटकी चीज पेट में चली गई हो तो सूखा भात, डबल रोटी, केले आदि खिलाएं.	धारदार चीज होने पर खुद न निकालने की कोशिश करें. शीघ्र डाक्टर को दिखाएं.
आंख में कोई वस्तु पड़ जाने पर	आंखों में जलन, दर्द, पानी बहना, आंखें लाल हो जाना.	ठंडे पानी से आंखों को धोएं, आंख को फैला कर साफ कपड़े से उस वस्तु को निकाल लें. कच्चा दूध आंख में डालें.	आंखों को रगड़ें नहीं. आंखों के डाक्टर को दिखाएं.

बहनों का लेनदेन

लेख ● रेणु 'दीप'

हमारा समाज एक पुरुष प्रधान समाज . परिवार में जहां त्रों को परिवार का परिहार्य अंग माना ाता है, वहां सदियों पुत्रियों को दूसरे श को चलाने ली सत्ता के रूप मानने की रिपाटी चली आ ी है.

जब बेटी, तापिता या

भाई के घर आती है, उसे कुछ न कुछ उपहार देने की परंपरा पुरातन काल से ही चली आ रही है. विवाह के समय परिवार से उसे दहेज के साथ विदा किया जाता है. लेकिन विभिन्न अवसरों, जैसे रक्षाबंधन, भैयादूज के बहाने भी उसे छोटीबड़ी समयानुकूल भेंट अवश्य दी जाती है.



परंपरागत रूप से पिता की संपत्ति में बेटी का अधिकार नहीं होता, किंतु आज के बदलते युग में कानूनन पुत्री का भी पिता की संपत्ति में बराबर का अधिकार होता है. इस बदले परिदृश्य में बहनों की भागीदारी के प्रति भाइयों का क्या नजरिया है, यह जानने के लिए एक परिचर्चा आयोजित की गई. इस के जरिए हम आप के समक्ष कुछ भाइयों के विचार रखने जा रहे हैं :

"क्या आप बहनों को विवाह के बाद विभिन्न अवसरों पर, परंपराओं के बहाने भेंट, उपहार देते रहना चाहते हैं?" इस प्रश्न के उत्तर में अभियंता के पद पर कार्यरत प्रदीप गुप्ता ने कहा, "बचपन में जहां भाईबहन पिता कि आंगन में लगभग एक अधिकार से पलते हैं, वहां विवाह के बाद परिदृश्य पूरी तरह से बदल जाता है. बहन महज एक मेहमान के रूप में पिता या भाई के घर कभीकभी आ पाती है. अपनी बहन को अपनी हैसियत के अनुरूप भेंट देना हर भाई की दिलीतमन्ना होती है. अतः जब भी किसी अवसर पर मेरी बहन मेरे घर आती है, मैं उसे भेंट स्वरूप कोई न कोई उपहार अवश्य देना चाहूंगा. हां, यह उपहार मेरी आर्थिक स्थिति के अनुरूप ही होगा."

एक भाई होने के नाते पिता की संपत्ति में बहनों की भागीदारी के बारे में अपने विचार व्यक्त करते हुए प्रदीपजी ने कहा, "पिताजी की संपत्ति में बहन की हिस्सेदारी शतप्रतिशत जायज है, बशर्ते पिता के पास अपनी संतान के बीच बंटवारे के लिए काफी जमीनजायदाद या धन हो. यदि कोई पिता अपनी बेटी के विवाह में खर्च की हुई राशि से कहीं अधिक चलअचल संपत्ति पुत्र या पुत्रों के लिए छोड़ते हैं, और यदि वे अपनी इच्छा से अपनी संपत्ति का कुछ हिस्सा अपनी पुत्री के लिए छोड़ना चाहते हैं तो यह उन का जायज अधिकार है

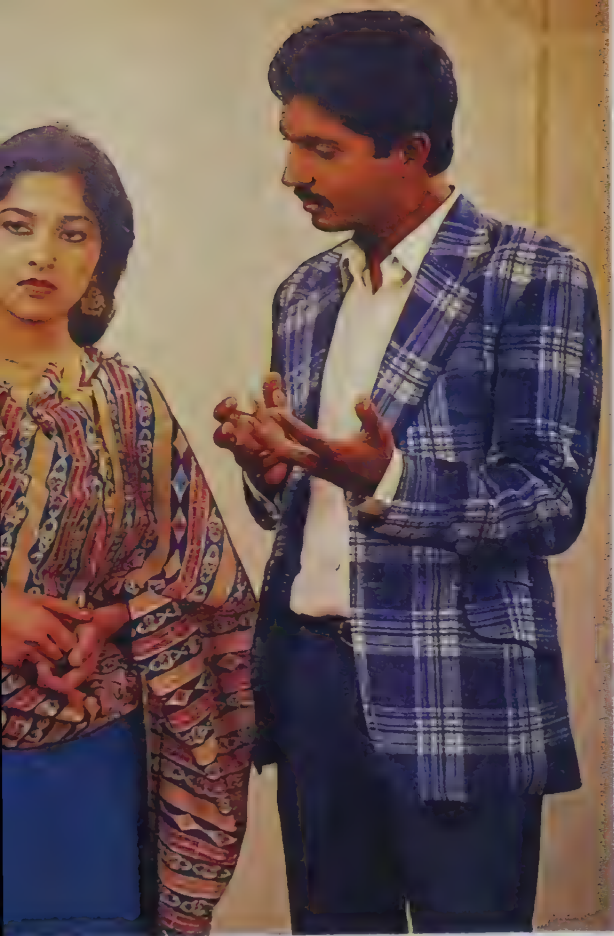
"समय के बदलाव के साथ आज जहां एक औसत भारतीय के दिमाग में पुत्री का पलड़ा पुराने समय से कुछ भारी हुआ है, उसी के साथसाथ पिता की संपत्ति पर पुत्री के अधिकार का वजन भी बढ़ता महसूस होने लगा है.

"बहनों का यह सोच होता है कि पिता की सारी संपत्ति तो भाई को गई ही अगर भेंट या उपहार के बहाने कुछ धन झटके में मिल जाए तो क्या बुरा है. क्या यह सोच गलत है या सही?"

इस प्रश्न के उत्तर में उन्होंने कहा, "भेंट या उपहार को विशुद्ध आर्थिक लाभ के नजरिए से तोलना बहनभाई के रिश्ते के स्नेहिल व स्वस्थ संबंध को बिगाड़ने के बराबर होगा. मैं फिर कहूंगा कि एक भाई के रूप में मैं अपनी बहन को जो भी उपहार दूंगा, उस की मेरे लिए एक भावनात्मक अहमियत होगी. यदि मेरी बहन उस उपहार को आर्थिक लाभ के रूप में तोलेगी तो यह मुझे कभी अच्छा नहीं लगेगा."

"क्या आप बहनों को विवाह के बाद विभिन्न अवसरों, परंपराओं के बहाने कुछ भेंट, उपहार, धन देते रहना चाहते हैं?" इस प्रश्न के उत्तर में राजस्थान विश्वविद्यालय में कार्यरत के.सी. शर्मा ने कहा, "विवाह के बाद भी मैं अपनी बहनों को विभिन्न अवसरों और परंपराओं के बहाने कुछ न कुछ भेंट या उपहार अवश्य देना चाहूंगा. यह मेरे मन को अच्छा लगता है. हां, यह बात जरूर है कि मैं यह नहीं चाहूंगा कि बहन को दिया जाने वाला उपहार मेरी आर्थिक स्थिति पर

बदलते परिदृश्य में अब विवाहित पुत्री को भी कानूनन पिता की संपत्ति में पुत्रों की तरह बराबर का अधिकार है. बहनों की इस भागीदारी के प्रति भाइयों का क्या नजरिया है, आइए जानें...



यदि बहन भाई के दिए उपहार को आर्थिक लाभ के रूप में तोलेगी तो रिश्ते की मिठास में कड़वाहट आ ही जाएगी.

…क प्रतिकूल असर डाले."

एक भाई होने के नाते पिता की संपत्ति …बहनों की हिस्सेदारी के बारे में अपनी … बताते हुए उन्होंने आगे कहा, "यदि …न दे कर बहन का विवाह हुआ है तो मेरे …ाव से पिता की संपत्ति में उस की …सेदारी नहीं होनी चाहिए. भारतीय समाज …हेज प्रथा के प्रचलन के संदर्भ में पिता … संपत्ति में बहनों की भागीदारी कुछ …नी सी लगती है, क्योंकि बेटी के विवाह …औसत मध्यवर्गीय पिता के लिए बेटी का … जुटाना बहुत मुश्किल होता है. यदि … परिवार में बेटियां ज्यादा होती हैं तो … के हिस्से में शायद ही कुछ आता है. …ान परिवारों में तो बेटी के विवाह में … धन लगा दिया जाता है कि इस हिस्से …स को अधिकार देने का प्रश्न ही नहीं …ा.

"बहन यदि भाई से धन झटकने के … महंगे उपहार की मांग करती है तो यह सही नहीं है. उपहारों के प्रति धन झटकने की प्रवृत्ति बहनभाई के रिश्ते की स्नेहिल गरिमा पर कुठाराघात करती है. मैं यह कभी नहीं चाहूंगा कि मेरी बहन मेरे द्वारा दिए गए उपहारों को आर्थिक लाभ के संदर्भ में तोले. बहन का यह रवैया मेरे मन को बहुत कचोटेगा."

"क्या आप बहनों को विवाह के बाद विभिन्न अवसरों या परंपराओं के बहाने उपहार वगैरह देते रहना चाहते हैं?" इस प्रश्न के उत्तर में जयपुर के रत्न व्यवसायी पांडिराज ने कहा, "मैं विभिन्न अवसरों तथा परंपराओं के बहाने अपनी बहन को अपनी आर्थिक क्षमता के हिसाब से भेंट, उपहार अवश्य देना चाहूंगा. मेरे विचार से उपहारों का आदानप्रदान रिश्तों के बीच स्नेह अभिव्यक्ति का प्रतीक होता है."

एक भाई होने के नाते पिता की संपत्ति में बहनों की हिस्सेदारी के बारे में अपने विचार व्यक्त करते हुए पांडिराज ने कहा, "हिंदू परिवार में पिता की संपत्ति में बहनों की हिस्सेदारी की बात कुछ असामान्य सी लगती है. किसी भी परिवार में बहन, बेटी का एक महत्त्वपूर्ण स्थान होता है और उस के विवाह पर मातापिता तथा भाई अधिक से अधिक धन व्यय करना चाहते हैं, ताकि वह ससुराल में सुखी रह सके. अतः यदि कानूनी तौर पर बहन को पिता की संपत्ति में हिस्सा मिलने जा रहा है तो उस अवस्था में भाई के मन में उस के विवाह में अधिक खर्च करने में कुछ संकोच आ सकता है, मुख्यतः किसी मध्यम श्रेणी के परिवार में, जहां सीमित संपत्ति है.

"बहनभाई का रिश्ता जिंदगी भर का

होता है. उपहार के बहाने बहनों की धन झटकने की प्रवृत्ति बहनभाई के प्यार भरे संबंधों में कटुता ही लाएगी."

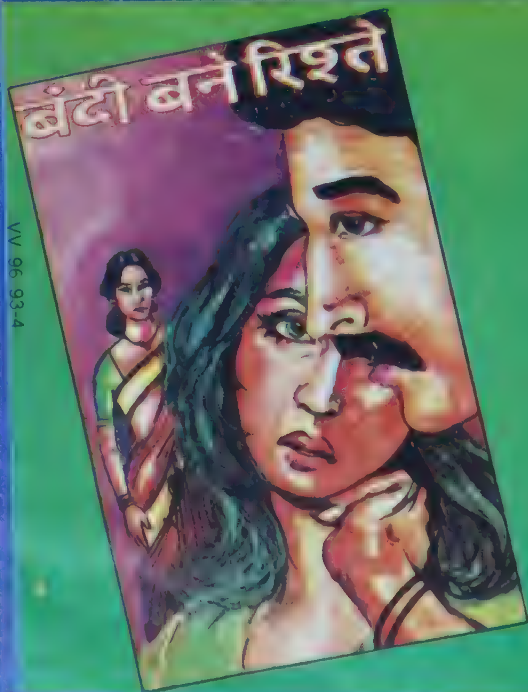
तिरपाल उद्योग में कार्यरत गुवाहाटी के रमाकांत सिंघल से जब यह पूछा गया कि क्या वे बहनों को विवाह के बाद विभिन्न अवसरों, परंपराओं के बहाने उपहार देते रहना चाहते हैं तो उन्होंने जवाब दिया, "भारतीय संस्कृति में बहन, बेटी को हमेशा मौकेबेमौके कुछ भेंट वगैरह देने की परंपरा रही है. एक भाई होने के नाते मैं जब भी अपनी बहनों से मिलता हूं स्नेहवश उन्हें कुछ न कुछ देने की इच्छा हो आती है."

पिता की संपत्ति में बहनों की हिस्सेदारी के विषय पर अपने विचार प्रकट करते हुए उन्होंने आगे कहा, "एक पिता के लिए पांचों उंगलियां बराबर होनी चाहिए और पिता को अपनी संपत्ति में विवाहित पुत्री का हिस्सा जरूर रखना चाहिए. आजकल के बेटे विवाह के बाद मांबाप का उतना खयाल नहीं रखते, जितना कि विवाहित बेटियां रखती हैं. जब पुत्रों से मातापिता कोई चाह नहीं रखते तो फिर अपनी संपत्ति में पुत्री का हिस्सा क्यों नहीं?

समय का चक्कर किसी के बस में नहीं होता. कौन जानता है, कल विवाहित पुत्री किसी घोर परेशानी में पड़ जाए. ऐसी अवस्था में पिता की संपत्ति में पुत्री की भागीदारी काम में आ सकती है. मेरा यह विश्वास है कि अच्छे संस्कारों में पली पुत्री आवश्यकता न होने पर कभी भी पिता की संपत्ति में अपना हिस्सा नहीं लेगी. वह स्वयं ही अपना हिस्सा बाद में अपने भाइयों को दे देगी.

"यदि बहन उपहार के बहाने पिता की संपत्ति को झटके में हथियाने का रवैया रखती है तो इस से बहनभाई के रिश्ते में खटास आने की संभावना रहेगी. उपहार के बहाने पिता की संपत्ति में भागेदारी करने की इच्छा रखने वाली बहन को मैं कभी दिल से नहीं चाह पाऊंगा. उस के प्रति मेरे मन में कड़वाहट अवश्य आ जाएगी." ●

विश्व साहित्य



मानवीय भावना, करुणा और व्यथा के साथ महानगरीय रिश्तों के स्वरूप और उन के आपसी संबंधों पर आधारित मानवीय संवेदनाओं को दर्शाता एक अनूठा कहानी संग्रह.

बंदी बने रिश्ते

मूल्य रु. 30

आज ही अपने पुस्तक विक्रेता से लें या हमें लिखें :
दिल्ली बुक कंपनी एम 12, कनॉट सरकस, नई दिल्ली 110001 फोन : 3321313

विशेष छूट कूपन-यहां से काटिए
अग्रिम राशि भेजने पर मूल्य
रु. 27
डाक खर्च सहित

पूर्ण अग्रिम राशि भेजने पर पुस्तक मूल्य 27 रुपए तथा डाक व्यय वी. पी. पी. द्वारा 5 रुपए या 25% अग्रिम राशि भेजने पर डाक व्यय तथा बाकी मूल्य वी. पी. पी. द्वारा.

क बार मेरे एक मित्र हमारे घर आए. एकदूसरे का गलक्षेम पूछने के बाद मैं ने से नाश्ता करने का आग्रह या. किंतु उन्होंने यह कह कर कर दिया कि मंगलवार का है.

जब मैं ने उन से कहा कि ले तो आप व्रत नहीं रखते थे र एकाएक यह सब क्यों शुरू दिया, तो वे बोले, "अभी छले सप्ताह से ही रखना शुरू या है, क्योंकि मंगल भारी हो है."

यह सुनते ही पास बैठी 8 वर्षीय बेटी तत्परता से ली, "भारी तो होना ही था, पाथ फाइंडर जो पहुंच गया



उस का यह जवाब सुन हम उस के वैज्ञानिक कोण को उस की आयु से रह गए.

–कुमारेश शर्मा राकेश

*

कक्षा 7 की अध्यापिका हूं. एक बार अपनी कक्षा के को भारत के विभिन्न संतों बारे में बता रही थी.

एकाएक मैं उन से पूछ "क्या आप में से कोई बता है कि रामानुज कौन थे?"

"लक्ष्मण," एक बच्चे ने से उत्तर दिया.

–सुनंदा सिन्हा

बात मेरे चाचाजी की शादी की है. विवाहोपरांत सभी रिश्तेदार, नवविवाहित चाचा और चाची को घेर कर बैठे हुए थे. हंसीमजाक का माहौल बना हुआ था.

वहीं मेरी बूआ का 9 वर्षीय पुत्र राहुल, जो बड़ा वाक्पटु है, भी बैठा हुआ था. वह अपनी वार्षिक परीक्षा में प्रथम श्रेणी में पास हुआ था.

चाचाजी को जब यह पता चला तो वह जोश में आ कर राहुल से बोले, "बताओ बेटे, तुम प्रथम आने की खुशी में क्या लोगे?"

इतना सुनते ही वह तपाक से बोला, "मामाजी, मैं तो नई

बच्चों के मुख से

मामी ही लूंगा."

उस का इतना कहना था कि वहां बैठे सभी रिश्तेदार जोर से हंस पड़े और चाचाजी झेंप गए.

–अंजना अग्रवाल

*

मेरी 3 वर्षीय बिटिया चानू बेहद चंचल और बातूनी है. उसे जब कोई काम करने का मन नहीं होता तो वह स्पष्ट इनकार न कर के कोई प्यारा सा बहाना बना देती है.

एक दिन वह पलंग पर लेटी हुई थी कि तभी उस की दादी ने उसे मुख्यद्वार का दरवाजा बंद करने को कहा, जिसे उस ने अनसुना कर दिया और वैसे ही लेटी रही.

उसे जब फिर से कहा गया तो लेटेलेटे ही बोली, "चानू तो सो गई."

उस की इस प्यारी सी शरारत पर मैं हंसे बिना न रह सकी.

–मीनाक्षी गर्ग

*

मेरी 4 वर्षीय बेटी बालों में तेल लगवाने से बहुत कतराती है. एक दिन मैं ने उसे समझाया, "बेटे, तेल लगवा लो, इस से बाल लंबे होंगे, बुद्धि तेज होगी, विद्या आएगी," तब उस ने तेल लगवा लिया.

अगले दिन जब वह खेल रही थी तो उस का पांव उस की पुस्तक पर पड़ गया.

इस पर मैं ने कहा,



"पुस्तक को उठा कर माथे से लगा लो, वरना विद्या नहीं आएगी और बुद्धि भी जाती रहेगी."

"तो मम्मी, आप फिर से मेरे सिर में तेल लगा देना," उस ने भोलेपन से जवाब दिया.

–वीना मदान

इस स्तंभ के लिए आप अपने बच्चों, मित्रों व संबंधियों के बच्चों के मुख से कही गई बात भेज सकते हैं. प्रत्येक प्रकाशित संस्मरण पर 50 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. अपने संस्मरण इस पते पर भेजें : संपादकीय विभाग, सरिता, ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

क्यों बिखर रहा है

लेख ● महेश्वरदयालु गंगवार

आज हमारे समाज की पहचान हैं आतंकवाद, अपहरण, बलात्कार, हत्या, चोरी और डकैती. इन सब के ऊपर है राजनीति और नौकरशाही में नीचे से ऊपर तक फैला भ्रष्टाचार.

जिस समाज में एक अठन्नी के लिए नृशंस हत्या कर दी जाए, जमीन के एक टुकड़े के लिए भाई भाई की, बेटा बाप की जान ले लेता हो, 2-3 साल की अबोध बालिकाएं आए दिन बलात्कार की शिकार बनती हों, दिनदहाड़े हत्या कर के लूट लिया जाता हो, राजनीति कुख्यात अपराधियों की मुट्ठी में बंद हो गई हो, निर्दोष लोगों की हत्याएं कौतुक का विषय बन गई हों, पुलिस



समाज

हाथों मुजफ्फरनगर जैसे बर्बर कांड होते उस समाज के पतन का अनुमान सहज लगाया जा सकता है.

लेकिन जब नेता, नौकरशाही और ाज का एक बड़ा तबका ऐसी घटनाओं कानून तथा व्यवस्था का मामला और ति का खेल बता कर अपनी जिम्मेदारी ाथ झाड़ लेता हो, तो यह माना जाना चाहिए कि स्वाधीनता के 50 वर्ष हम ने यों ही बिता दिए.

राष्ट्रीय भावना से ओतप्रोत होने की जगह हम पतन के इस गर्त में कैसे पहुंच गए हैं? यह प्रश्न आज हमारे मानस को मथने लगा है. आर्थिक दबाव और विषमता को इस का कारण बताया जाता है. यह एक कारण हो सकता है, लेकिन एकमात्र कारण नहीं. समाज व्यवस्था ठीक हो, अनुकरण के लिए नैतिक आदर्श हों तो आर्थिक दबाव झेला जा सकता है, लेकिन विघटनशील सामाजिक व्यवस्था और पतनशील नैतिक मूल्यों को आर्थिक संपन्नता से पटरी पर नहीं लाया जा सकता.



समाजीकरण हमारी सभ्यता की बुनियाद रहा है. कुछ नैतिक मूल्य हमारी सांस्कृतिक चेतना के प्रेरणा स्त्रोत रहे हैं. हम ने व्यष्टि में भी समिष्ट को देखा है. किंतु मौजूदा व्यवस्था ने व्यक्ति को इकाई मान कर समाज को खंडखंड कर दिया है. ऊपर से आर्थिक विषमता, जिस ने लोगों के बीच भेदभाव को इतना गहरा कर दिया है कि अब गांव, महल्ले की तो छोड़िए, व्यक्ति का अपने पड़ोसी से भी कोई सरोकार नहीं रह गया है. सब को अपनीअपनी पड़ी है.

हाल ही में दिल्ली की एक सड़क पर मांबेटी लुटेरों से जूझती रहीं, लेकिन तमाशा देखने के लिए वहां जुड़ आई भीड़ में एक भी माई का लाल ऐसा नहीं निकला जो आगे बढ़ कर लुटेरों को ललकारता.

हम इतने असंवेदनशील, स्वार्थी और अपने तक ही सिमटेसिकुड़े क्यों हो गए हैं? अपने परिवार तथा पड़ोसी के सुखदुख में भागीदार क्यों नहीं बन पा रहे हैं? क्यों हम अन्याय को चुपचाप सहने के आदी हो गए हैं? 'परदुख कातर' का हमारा विरुद कहां बिला गया है? प्यार और भाईचारे की हमारी उद्दाम भावना क्यों नष्ट हो गई है? इन प्रश्नों के उत्तर हमारी वर्तमान सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक व्यवस्था में ढूंढ़े जा सकते हैं.

एक जमाना था जब किसी एक की बेटी पूरे गांव, महल्ले की बेटी होती थी. गरीब की बेटी के विवाह का खर्च पूरा गांव बांट लेता था. आज स्थिति यह हो गई है कि एक बाप ने अपनी सौतेली बेटी के विवाह का बोझ उठाने के बजाय पूरे परिवार का विनाश कर देना बेहतर माना.

यह उलटी गंगा क्यों बहने लगी? कहीं यह इसलिए तो नहीं हुआ कि प्रगतिशील दिखने की झोंक में उन जीवन मूल्यों को पुराना कह कर ठुकरा दिया गया जो हमारी सामाजिक व्यवस्था की रीढ़ बने हुए थे, लेकिन हम समाज को उन का विकल्प नहीं दे पाए.

आज भौतिक सुख, समृद्धि जुटाने की होड़ में आदमी अंधा हो कर दौड़ रहा है. हर कोई दूसरे को पछाड़ कर आगे निकल जाना चाहता है, इस उम्मीद में कि शायद कभी अंधे के हाथ बटेर लग जाए. अगर कोई इस होड़ से बाहर रह कर सादा जीवन बिताना चाहता है, तो 'मजबूरी का नाम महात्मा गांधी' कह कर उस का उपहास उड़ाया जाता है.

आज हमारे समाज से आपसी भाईचारे की भावना निरंतर मिटती जा रही है, जिस के कारण बलात्कार, हत्या आदि घटनाएं अखबारों की सुर्खियां बनने लगी हैं. इस के बावजूद न तो समाज सेवी संस्थाएं इस ओर ध्यान दे रही हैं और न ही राजनीतिबाजों के कानों पर जूं रेंग रही है. ऐसे में सामाजिक पतन की यह प्रक्रिया रुके भी तो कैसे?

इस होड़ का एक चिंतनीय पहलू यह भी है कि संपन्न वर्ग के अनापशनाप खर्च से होड़ करने के लिए आर्थिक दृष्टि से विपन्न तबके के लोग भी घर फूंक तमाशा देखना चाहते हैं. नतीजतन वे भी दोनों हाथों से धन बटोरने में जुट जाते हैं और इस के लिए अनुचित से अनुचित उपाय अपनाने में भी संकोच नहीं करते. फिर भी जब वे अपने प्रयास में सफल नहीं होते तो एकदम टूट जाते हैं. यह टूटन अंततः पारिवारिक और सामाजिक संबंधों पर खाक डाल देती है.

हमारे नेता इस स्थिति को अनदेखा कर अर्थपूजा में संलग्न हैं. हर घटना को वे कानून और व्यवस्था का परिणाम मानते हैं. अपना

ल्लू सीधा करने के लिए वे समाज में कलह ा बीज बो रहे हैं. वे समस्या की तह में ा कर समाधान नहीं खोजते. समाज को घटित कर के अपना हित साधने में तो भी लगे हुए हैं, किंतु उसे जोड़ने के काम सब कतरा रहे हैं.

आतंकवाद, अपहरण, बलात्कार, त्या, डकैती आदि की घटनाएं समाचारपत्रों ी चटपटी खबरें तो बनती हैं, किंतु उन पर ोई गंभीर बहस नहीं छिड़ती. कोई संस्था संगठन इन की तह में जा कर ऐसे उपाय हीं सुझाता, जिन पर अमल कर के ऐसी टनाओं पर अंकुश लगाया जा सके. माजिक संगठन सारा उत्तरदायित्व सरकार माथे मढ़ कर अपनी जिम्मेदारी से हाथ ाड़ लेते हैं. नेता और नौकरशाह इन्हें कानून र व्यवस्था का मामला कह कर रफादफा र देते हैं. अनेक घटनाओं में तो नेताओं, करशाहों के निजी स्वार्थ होते हैं. ऐसे मलों की फाइलें बंद करने में देर नहीं ाती.

सामाजिक संबंध को विकृत करने में वोट की राजनीति ने अहम भूमिका निभाई है. वोट पाने के लिए नेता और राजनीतिक दल किसी भी हद तक जा सकते हैं. इस के लिए वे राष्ट्रहित की बलि भी दे सकते हैं. उन के लिए तो वोट बैंक बरकरार रहना चाहिए. समाज टूटे तो टूटे, राष्ट्रहित को क्षति पहुंचे तो पहुंचे, उन्हें इस से कुछ लेनादेना नहीं. उन को सरोकार तो सत्ता की कुरसी हथियाने से है. समाज से उन का सरोकार तो दिखावा भर है. कुरसी उन की जिंदगी है, जिसे पाने के लिए वे कुछ भी कर सकते हैं.

नेता कुरसी दौड़ छोड़ कर समाज और राष्ट्र हित में संलग्न हों तो ढेर सारी समस्याओं का समाधान सहज ही हो सकता है. इसी तरह समाज के जिम्मेदार लोग अगर समाज को जोड़ने में जुट जाएं तो सामाजिक पतन की प्रक्रिया को रोकने में मदद मिल सकती है. किंतु यह हो कैसे? यही आज का यक्ष प्रश्न है. ●

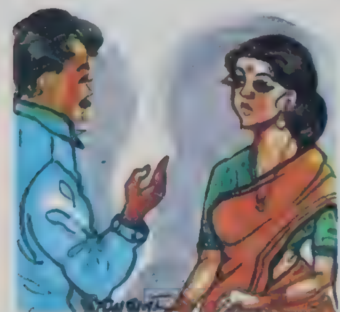


मेरे भैया काफी दिनों से कोई मकान खरीदने की सोच रहे थे. अतः एक दिन भाभी को साथ ले कर वह प्रापर्टी डीलर के पास गए. प्रापर्टी डीलर ने उन्हें मकान दिखा दिया.

घर लौट कर भाभी बोलीं, "और सब तो ठीक है, मकान भी काफी अच्छा है, पर सुना है, उस में कोई 'बला' रहती है."

इस पर भैया ने जवाब दिया, "कोई बात नहीं, हम फिर भी वही मकान लेंगे. तुम देखना, हमारे वहां जाते ही वह बला खुदबखुद घर छोड़ कर भाग जाएगी."

भाभी ने चकित हो कर पूछा, "कैसे?" तो भैया तपाक



से बोल पड़े, "क्योंकि जिस तरह एक म्यान में दो तलवारें एक साथ नहीं रह सकतीं, उसी तरह एक मकान में 2 'बलाएं' इकट्ठी नहीं रह सकतीं."

यह सुन सभी ठहाका लगा कर हंस पड़े और भाभी खीजती रहीं.

–पवन ग्रोवर

*

शादी के कुछ ही दिन बाद मैं अपने पति के साथ पुरी (उड़ीसा) घूमने गई.

मेरे पति बहुत चंचल हैं और मुझे छेड़ने के लिए हमेशा कोई न कोई शरारत करते रहते हैं. एक दिन सुबह होटल के कमरे में फोन आया कि मेरे पति समुद्र में डूब गए हैं और उन की लाश किनारे पर पड़ी है. मेरे पैरों तले जमीन खिसक गई और मैं बदहवास सी समुद्र की ओर भागी.

समुद्र के किनारे एक लाश पड़ी थी और उस के इर्दगिर्द काफी भीड़ जमा थी. फिर क्या हुआ, कुछ न पता चला और जब मुझे होश आया तो मैं ने स्वयं को होटल के कमरे में पाया. सिराहने बैठे मेरे पति मेरा माथा सहला रहे थे. तभी पिछली सारी घटना तेजी से मेरे मस्तिष्क में उभर आई और मैं जोरजोर से रोने लगी. किंतु तभी ध्यान दिया कि मेरे पति तो मेरे पास ही बैठे हैं.

अब तो खुशी से मेरी आंखों से आंसू बहने लगे और मैं उन्हें

ये पति

मारने लगी, फिर उन से लिपट गई. जब आंसुओं का बहना बंद हुआ तो रूठ कर एक कोने में बैठ गई और तभी मानी जब इन्होंने आगे से ऐसी शरारत फिर कभी न करने का वादा किया.

दरअसल पिछली रात एक मछुआ मछली पकड़ते समय समुद्र में डूब गया था और वह लाश उसी की थी. मेरे पति को जब इस बात का पता चला तो उन्होंने मौके का फायदा उठाने के चक्कर में मेरे साथ एक भयानक मजाक कर डाला.

–सुनीता सामंत

*

मेरे जीजाजी बहुत विनोदी स्वभाव के हैं तथा बातबात पर मजाक में ही दीदी की खिंचाई करते रहते हैं.

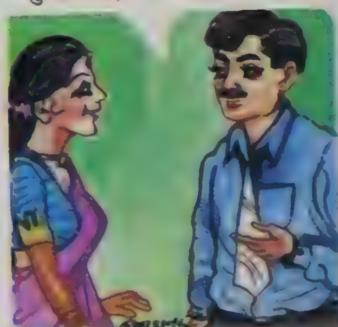
ऐसे ही एक दिन दोनों के बीच इसी तरह से नोंकझोंक चल रही थी कि दीदी ने जीजाजी से कुछ कह दिया. इस पर जीजाजी तपाक से बोले, "तुम्हारी यह बात मैं अभी 'सरिता' के स्तंभ 'ये पत्नियां' के लिए भेजता हूं."

यह सुन दीदी घबरा गईं और जीजाजी से माफी मांगने लगीं.

–अविनाश

*

मेरे भैया बहुत मजाकिया व हाजिरजवाब हैं. एक दिन जैसे ही वह आफिस से घर आए तो भाभी शिकायत करती हुई बोलीं, "सुनो जी, आप की माताजी



हमेशा मुझ पर सुबहशाम गरजती, बरसती रहती हैं. आखिर कब तक ऐसा चलेगा?"

भैया फौरन बोल पड़े, "भई मैं कोई मौसम विशेषज्ञ तो हूं नहीं, जो तुम्हें इस बारे में कुछ बता सकूं."

इतना सुनते ही भाभी गुस्सा छोड़ हंसने लगीं.

–अखिलेश सिंह ●

इस स्तंभ के लिए आप अपने, मित्रों व संबंधियों के अनुभव भेज सकते हैं. प्रत्येक प्रकाशित संस्मरण पर 50 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. अपने संस्मरण इस पते पर भेजें: सरिता संपादकीय विभाग, ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.


पेश है
इस्तेमाल में आसान
में भी आसान
INTERNATIONAL PACK
Captain Cook
PREMIUM
SALT
पकाने का नया अंदाज़,
, और ऐसा ढंग, जिसे
ाने अपनाया, नए कैप्टन
यम के साथ. ज़्यादा
दा शुद्ध. ज़्यादा
मक. सुंदर
कैन में. बस
लिए और
का फ्लो. जी
और नया
प्रीमियम दोनों.
ौर-तरीकों को
कहिए- अलविदा.
प्टन कुक प्रीमियम नमक
अंतर्राष्ट्रीय कैन में
कैप्टन कुक प्रीमियम नमक नियमित सॉफ्ट पैक में भी उपलब्ध :
'हाउसहोल्ड टिप्स' पर मुफ्त जानकारी
स सैल, डी सी डब्ल्यू होम प्रॉडक्ट्स लि., निर्मल 19 वीं मंजिल, मुंबई 400 021 या फोन करें 022

सफर के साथी स्वादिष्ट व्यंजन

त्रिवेणी मठरी

सामग्री : 1 छोटा चम्मच अजवाइन पिसी, 2 कटोरी मैदा, 1 कटोरी सूजी, 1 कटोरी तेल (मोयन के लिए), $1\frac{1}{2}$ छोटे चम्मच नमक, 1 बड़ा चम्मच भुना चिड़वा, 1 बड़ा चम्मच भुना साबूदाना, 1 बड़ा चम्मच भुने तिल या मूंगफली, $\frac{1}{2}$ प्याला चुकंदर का रस, $\frac{1}{2}$ प्याला हरी सब्जियों का रस, $\frac{1}{2}$ प्याला दही ताजा, पर्याप्त मात्रा में तेल तलने के लिए.

समय : 30 मिनट.

कितने व्यक्तियों हेतु : 5.

विधि : मैदे व सूजी को छान कर मिला लें. मोयन व $\frac{1}{2}$ चम्मच नमक डाल कर एकसार कर लें.

3 भागों में बराबर बांट कर एक हिस्सा चुकंदर के रस से, एक हिस्सा हरी सब्जियों (बथुआ आदि के पानी) से व एक हिस्सा सादा पानी या दही से गूंध कर तैयार कर लें.

भुनी सामग्री को भी अलगअलग दरदरा पीस लें व एक चम्मच नमक बराबरबराबर मिला कर भरावन तैयार कर लें.

तीनों रंगों की लोइयां अलगअलग बना कर भरावन भर कर दबा दें. फिर एक के ऊपर एक पानी की सहायता से चिपका दें. दबा कर तेल में करारा होने तक तल लें. सफर में ले जाएं खराब नहीं होती.

करेला मुट्ठियां

सामग्री : 350 ग्राम करेले, $\frac{1}{2}$ छोटा चम्मच हलदी, $\frac{1}{2}$ छोटा चम्मच धनिया (पिसी), $\frac{1}{4}$ छोटा चम्मच लाल मिर्च पिसी, $\frac{1}{3}$ छोटा



त्रिवेणी मठरी

च चना मसाला, ½ छोटा चम्मच अमचूर, छोटा चम्मच नमक, 2 बड़े चम्मच तेल.

मुठ्ठियों के लिए : 2 बड़े चम्मच बेसन, 2 चम्मच मक्की का आटा, 2 बड़े चम्मच गेहूं आटा, ½ छोटा चम्मच हलदी, ½ छोटा च अमचूर, 1 छोटा चम्मच धनिया पाउडर, छोटा चम्मच लाल मिर्च पाउडर, ½ छोटा च नमक, 2 बारीक कटी हरी मिर्चें, 1 बड़ा च बारीक कटी हरी धनिया, तलने के लिए प्त मात्रा में तेल.

कितने व्यक्तियों हेतु : 5.

बनाने में लगने वाला समय : 25 मिनट.

विधि : करेलों को छील कर बारीकबारीक लंबा काट लें. छिलकों व बारीक कटे करेलों नमक लगा कर अलगअलग धूप में रख दें. घंटे बाद धो कर निचोड़ लें.

बारीक कटे करेलों का ¼ भाग ले कर नों के छिलकों में मिलाएं. उस में बेसन, दोनों र के आटे व सारे मसाले डाल कर थोड़ा गूंध लें. इस की छोटीछोटी मुठ्ठियां बना हलकाहलका तल लें.

एक कड़ाही में 2 बड़े चम्मच तेल गरम उस में सारे सूखे मसाले डाल कर बाकी बारीक कटे करेलों को छौंक लें.

हलका सा पानी का छींटा दे कर ढक कर 5 मिनट तक मंदी आंच पर पकाएं. इस में तली हुई मुठ्ठियां भी डाल दें. करेलों के गल जाने और पानी के सूख जाने पर थोड़ा भून लें और आंच पर से उतार लें.

बारीक कटी हरी धनिया व हरी मिर्च डालें. सफर में पूरी या पराठें के साथ ले जाएं.

–कृष्णा वर्मा

आंवले की सोंठ

सामग्री : 500 ग्राम आंवला, 500 ग्राम चीनी, 500 ग्राम गुड़, ½ कटोरी कटे छुहारे, 1 गांठ सोंठ, 50 ग्राम किशमिश, 50 ग्राम कद्दूकस किया सूखा नारियल , 1 छोटा चम्मच इलायची पाउडर, 1 छोटा चम्मच काला नमक, 2 छोटे चम्मच भुना जीरा.

सजाने हेतु सामग्री : नारियल.

बनाने में लगने वाला समय : 15-20 मिनट.

विधि : आंवलों को साफ धो कर उस का गूदा चाकू से उतार लें और गुठली अलग कर दें. 1 गिलास पानी में आंवले डालें व नमक मिला



करेला मुठ्ठियां

कर प्रेशर कुकर में 3 सीटियां आने तक पकाएं. फिर ठंडा कर लें. पानी से निकाल कर आंवले (पानी फेंके नहीं) मिक्सी में बारीक पीस लें. भारी पेंदी के बरतन में पिसे आंवले, चीनी, गुड़ व बचा पानी मिला कर चला लें और आग पर चढ़ा दें. चीनी, गुड़ मिल कर अच्छी तरह पक कर आंवले गाढ़े होने लगें तो सोंठ पीस कर मिला दें. फिर सभी कटे मेवे, इलायची पाउडर, जीरा डाल कर मिलाएं व गरमगरम जार व शीशी में भर कर रख लें. 3-4 हफ्तों तक भी यह चटनी खराब नहीं होगी. सफर में भी ले जाई जा सकती है. यह चटनी स्वाद व स्वास्थ्य के लिए लाभकारी है.

केले की चाट सब्जी

सामग्री : 500 ग्राम कच्चा केला, $\frac{1}{4}$ छोटा चम्मच नमक सफेद, चुटकी भर काला नमक, 1 छोटा चम्मच चाट मसाला, 1 चम्मच सूखा धनिया पाउडर, 2 हरी मिर्चें कटी हुईं, थोड़ा सी हरी धनिया, 1 नीबू या अमचूर.

सजाने हेतु सामग्री : हरी मिर्च, धनिया पत्ती.

कितने व्यक्तियों हेतु : 2.

बनाने में लगने वाला समय : 5-6 मिनट.

विधि : कच्चे केले को साफ धो कर प्रेशर कुकर में उबाल लें. उबले केलों को ठंडा कर के सफर में ले जाने के लिए साबुत ही पैक कर लें साथ में सभी मसाले रख लें.

इच्छानुसार खाने के समय केले का छिलका उतार कर अंदर की गिरि को चाकू से काट लें. (हाथ से मसल कर भी प्रयोग में लाया जा सकता है) और खाएं. उसी समय छिलका उतारें. ऊपर से सभी मसाले छिड़क कर नीबू का रस निचोड़ दें और पूरी, परांठे या रोटी के साथ खाएं और खिलाएं. यह चाटनुमा सब्जी सेहत व स्वाद के लिए अच्छी रहती है. सफर के समय साथ रखने में भी सरलता रहती है.

नोट : दोहरा स्वाद लेने के लिए दूसरी ओर इसी विधि को अपना कर उतारे गए छिलकों की सब्जी भी तैयार की जा सकती है, जो कि





आंवले की सौंठ

ों के साथ अति स्वादिष्ठ लगती है.

कच्चे केले की भुजिया

सामग्री : 500 ग्राम कच्चा केला, ½
री तेल, 1 छोटा चम्मच हलदी पाउडर, 4
चम्मच धनिया पाउडर, ½ छोटा चम्मच
मिर्च पाउडर, 2 हरी मिर्चें, सरसों भर हींग,
छोटा चम्मच गरम मसाला, 2 नीबू का रस,
त तेल तलने के लिए.

सजाने हेतु सामग्री : हरी पत्तियां (धनिया पुदीना).

कितने व्यक्तियों हेतु : 3.

बनाने में लगने वाला समय : 5-7 मिनट.

विधि : केलों को पानी से धो कर प्रेशर कुकर में उबाल लें. ठंडा करें. केलों को पर्याप्त तेल में साबुत ही सुनहरा तल कर ठंडा कर लें. फिर पैक कर लें. सफर में ले जाने के लिए तेल को गरम कर के उस में हींग व हलदी भून लें और शीशी में पैक कर लें. शेष मसाले व सामग्री को सूखा ही रख लें. खाने के समय चाकू से छिलके सहित तले हुए केलों को बारीकबारीक काट लें व सभी मसाले बुरक लें. नमक मिलाएं और हलदीयुक्त तेल छिड़क कर मिला लें. नीबू का रस निचोड़ कर (रस इच्छानुसार निचोड़ें) पूरी के साथ स्वादिष्ठ भुजिया खाएं और खिलाएं.

नोट : तेल व नीबू का प्रयोग आवश्यकतानुसार करें. इस भाजी को अधिक तेल में घर से पका कर भी सफर में ले जाया जा सकता है. यह 24 घंटे तक खराब नहीं होती.

–सर्वेश मिश्रा

इमली जीरा

सामग्री : 1 गुच्छी पुदीना, 1 गुच्छी हरी धनिया, अदरक का ½ टुकड़ा, ½ छोटा चम्मच



नमक, $\frac{1}{2}$ छोटा चम्मच जीरा, 2 छोटे चम्मच चीनी, 50 ग्राम इमली, 1 प्याला पानी, 20 ग्राम गुड़, कुटी हुई बर्फ.

विधि : पुदीना, हरी धनिया काट लें व अदरक अच्छी तरह छील लें और बारीक काट लें. अब मिक्सी में धनिया, पुदीना, अदरक, नमक, जीरा, चीनी, 1 प्याला पानी डाल कर बारीक पीस लें. 1 प्याला पानी में इमली भिगो दें. फिर उसे छान लें. अब गुड़ को बारीक कूट लें. छनी हुई इमली में गुड़ व पुदीना मिला कर धीमी आंच पर पकाएं. जब वह पक जाए और गाढ़ी हो जाए, तब उस में थोड़ा सा नमक डालें. अच्छी तरह मिला कर ठंडा कर के शीशी में भर लें. सफर में ठंडे पानी में मिला कर पीएं.

–अमिता दीक्षित

सफरी समोसा

सामग्री : 2 कटोरी आटा, 1 कटोरी मक्खन, $\frac{1}{2}$ कटोरी गुनगुना पानी, $\frac{1}{2}$ छोटा चम्मच नमक आटे के लिए, $\frac{1}{4}$ छोटा चम्मच नमक मखानों के लिए, 1 बड़ा चम्मच देशी घी, 50 ग्राम मखाने, 5-7 काली मिर्च के दाने, $\frac{1}{4}$ छोटा चम्मच लाल मिर्च पाउडर, $\frac{1}{4}$ छोटा चम्मच गरम मसाला पाउडर, $\frac{1}{4}$ छोटा चम्मच अमचूर पाउडर, पर्याप्त तेल तलने के लिए.

कितने व्यक्तियों हेतु : 4.

बनाने में लगने वाला समय : 20 मिनट.

विधि : मखानों को देशी घी में तल लें.





सफरी समोसा

इमली जीरा

फिर नमक, काली मिर्च मिला कर मिक्सी में दरदरा कर लें. शेष मिर्च, मसाला अमचूर मिला कर एकसार कर लें. भरावन के लिए पीठी तैयार है.

आटे को छान कर नमक व मक्खन मिला कर एकसार कर के गरम पानी से सख्त गूंध लें. आटे की छोटीछोटी गोलियां बना कर पूरियां बेलें. बीच से आधी काट कर पानी से दोनों किनारे चिपका कर तिकोना बना कर तैयार भरावन भरें. पानी लगा कर बंद कर दें. इसी तरह सभी समोसे भरने के बाद पर्याप्त घी या तेल में तल लें. ठंडे होने पर डब्बे में भर कर रखें. चाय, काफी या चटनी के साथ सफर में समोसों का स्वाद लें. ये समोसे जल्दी खराब नहीं होते. अधिक समय तक इन का स्वाद लिया जा सकता है.

–सर्वेश मिश्रा

गुली की गुझिया

सामग्री : 1 कटोरी गेहूं का आटा, 1 कटोरी मैदा, $^1/_2$ कटोरी कटा मिलाजुला मेवा (गिरि, चिरौंजी, किशमिश, काजू, पिस्ता आदि), तलने के लिए घी, गुझिया बनाने वाला सांचा, $^1/_2$ कटोरी पिसी चीनी.

कितने व्यक्तियों हेतु : 4.

बनाने में लगने वाला समय : 15 मिनट.

विधि : गेहूं के आटे को सख्त गूंध लें. अब उस की मोटीमोटी पूरियां बना कर तल लें. पूरियों को बारीक तोड़ कर सुखा लें फिर मिक्सी में बारीक पीस लें.

उस में पिसी चीनी, मेवा डाल कर मिला लें. मैदे में थोड़ा मोयन डाल कर आटा गूंध लें. उस की छोटीछोटी पूरियां बनाएं तथा सांचे में डाल कर उस में पूरी द्वारा बनाई गई गुली भर कर सांचे को अच्छी तरह दबा कर बंद कर दें.

कड़ाही में घी डाल कर गुझिया तल लें तथा मेहमानों को परोसें. यह गुझिया 10-12 दिनों तक खराब नहीं होगी.

–रेनू दीक्षित ●



गुली की गुझिया

कहानी ● दिनेश पालीवाल

अंधेरा जब बहुत होता है तो कम उजाला भी कम नहीं लगा करता. इस कसबाई शहर में डा. जयकांत ने अगर बहुत कुछ खोया है तो कुछ पाया भी है. खोया यह कि इस शहर के साधनहीन अस्पताल में उन की पत्नी की मृत्यु ब्रेन हैमरेज से हो गई. डाक्टर होते हुए भी और अपने पास गाड़ी रखते हुए भी वह विवश हो गए. मौत ने वक्त नहीं दिया कि उसे बचा पाते. इस से मुंबई में बस गया उन का लड़का और दिल्ली में अपने पति के साथ रह रही लड़की बेहद नाराज हैं कि वह ऐसे वाहियात शहर में आए ही क्यों? अगर सरकार ने उन का तबादला कर ही दिया था तो उन्हें इस्तीफा दे देना चाहिए था. लखनऊ में सारे साधन मौजूद हैं, वहां मां को बचाया जा सकता था. पर उन का सोचना कुछ दूसरा ही है.



उन का तबादला जानबूझ कर दंड-
प इस कसबाई शहर में किया गया था.
से गलती यह हुई थी कि वह उस दिन
आवश्यक आपरेशन कर रहे थे, जब
ीं मंत्रीजी का बुलावा पहुंचा. उन्होंने
सहायक से कह दिया कि मंत्रीजी को
में बैठा दें, आपरेशन के बाद ही उन
लाकात हो सकेगी. हालांकि आने से
मंत्रीजी ने फोन कर दिया था. उन की
में कोई छोटी सी फुंसी हो गई थी,
वह निकलवाना चाहते थे. जयकांत ने
दिया था कि आ जाएं, देख कर निकाल
पर तब तक एक गोली लगा व्यक्ति
तकक्ष में आ गया, जिस का तुरंत उचित
शुरू न किया जाता तो वह मर सकता

प्रदेश के एक मंत्री को प्रतीक्षा करवाना
स कयामत हो गया. पौन घंटे बाद जब
डा. जयकांत टांके लगा कर आपरेशन कक्ष
से निकले और अपने कक्ष में पहुंचे तो
मंत्रीजी एकदम बरस पड़े, 'तू अदना सा
डाक्टर अपने आप को समझता क्या है?
जानता है, मैं कौन हूं? प्रदेश की सरकार...
प्रदेश का भग्यविधाता, करोड़ों लोगों का
मालिक...उन का माईबाप.'

आदत के अनुसार वह मुसकराए,
'जरूर होंगे माईबाप, मुझे इस से कहां
इनकार है. आप कृपया क्रुद्ध न हों, शांति
से बैठें. अभी आप की नाक की फुंसी देखता
हूं.'

'मुझे नहीं दिखानी अब कोई फुंसीवुंसी,
मुझे अब तेरे जैसे नालायक डाक्टर को...
सबक सिखाना है. ऐसी जगह तेरा तबादला
कराऊंगा कि होश ठिकाने आ जाएंगे,'
बलबलाते हुए क्रुद्ध मंत्रीजी कक्ष से बाहर
निकल गए.

सी. एम. ओ. साहब दौड़े हुए आए,
'आप को मंत्रीजी को पहले देखना चाहिए
था.' जयकांत ने अपनी समस्या बताई तो वह



बोले, 'आप को यह बताने की जरूरत है कि देश में एक साधारण आदमी की जान बचानी जरूरी नहीं है, वी. आई. पी. को सब से पहले देखना चाहिए? ये लोग नाराज हो जाएं तो कुछ भी कर सकते हैं. साधारण आदमी नाराज हो कर हम ताकतवर डाक्टरों का क्या बिगाड़ लेगा?'

'सर, यह आप की सोच हो सकती है,' डा. जयकांत बोले, 'मैं ऐसे नहीं सोचता. मेरे लिए मेज पर बेहोश पड़ा मरीज सिर्फ मरीज होता है...न वह साधारण होता है, न वी. आई. पी.. मंत्रीजी बेवजह नाराज हुए हैं.'

'परिणाम भुगतना पड़ सकता है. आप को यहां का बड़ा सर्जन माना जाता है. अगर कहीं ऊटपटांग जगह तबादला कर दिया तो आप की प्रतिभा को जंग लग जाएगा. आप कुछ ही दिनों में सब भूल जाएंगे क्योंकि वहां कुछ करने को ही नहीं मिलेगा. इस प्रदेश में इतने साधनहीन अस्पताल हैं कि बिजली तक नहीं मिलती, गैस की लालटेनों में आपरेशन करने होते हैं, वहां आपातकक्ष में आक्सीजन का सिलेंडर तक उपलब्ध नहीं होता, मरीज बेमौत मरता है.'

जयकांत मुसकरा दिए थे, 'मैं तबादले से आतंकित नहीं हूं, सर, जहां भेज देंगे, वहां चला जाऊंगा... रहूंगा तो सर्जन ही...चपरासी तो नहीं बना देंगे. अगर बना भी देंगे तो भी रहूंगा तो आदमी ही, कोई जानवर तो बनने से रहा.'

'आप समझ नहीं रहे...बीवीबच्चों का सवाल है. हम लोग उम्र के उस दौर में पहुंच गए हैं, जब हमें भी किसी दिन आपात चिकित्सा की जरूरत पड़ सकती है. ऐसे अस्पतालों में हम भी साधनहीनता के शिकार हो सकते हैं.'

लेकिन जयकांत भी जिद पर अड़ गए थे. उन्होंने किसी की परवाह नहीं की. जैसे ही तबादले का आदेश आया, चुपचाप सामान पैक किया और यहां चले आए. पत्नी और बच्चों ने ऐतराज किया और कहा कि इस्तीफा दे दें. पर वह माने नहीं. वह सत्ता मद में चूर एक अहंकारी मंत्री के गलत फैसले की चुनौती को बिना किसी हिचक के स्वीकार करने का मन बना चुके थे.

> डा. जयकांत ने परिवार वालों की इच्छा के विरुद्ध कसबाई शहर में अकेले ही रहने का फैसला कर लिया था. ऐसी तनहाइयों में वहां पूर्व प्रेमिका का अचानक मिल जाना उन के लिए बेहद सुखद था. चाहे परिस्थितियां बदल गई थीं पर बीते वक्त की छाया वर्तमान पर पड़ रही थी.

लड़का मुंबई में एक व्यापारिक संस्थान में ऊंचे पद पर था. उस की उन्हें अब चिंता नहीं थी. लड़की की पिछले साल शादी कर चुके थे और दामाद का अपना नर्सिंगहोम था. दामाद ने ही कहा था, 'यहां दिल्ली में चले आइए. अपने नर्सिंगहोम से जुड़ कर आप लाखों कमाएंगे.' पर वह टाल गए. उन्हें लड़की, दामाद के पास रहना कुछ जंचा नहीं. सोचा, रिश्तों में एक दूरी, एक परदा बीच में रहना ही चाहिए.

पत्नी काफी नाराज थी, बल्कि तनावग्रस्त भी, 'आप अपनी जिद के आगे किसी की नहीं सुनते, यह आप की बुरी आदत है.'

'सवाल आदत का नहीं, सही और गलत का है', वह बोले, 'एक मंत्री का जीवन भी महत्त्वपूर्ण हो सकता है, पर उस की छोटी सी समस्या किसी सामान्य आदमी की जान से अधिक बड़ी हरगिज नहीं हो सकती... यह मंत्रियों को भी समझना चाहिए. आखिर

इन्हीं साधारण लोगों के वोट से जीतते हैं और मंत्री बनते हैं. वे मालिक नहीं हैं... भाग्यविधाता होने का उन्हें झूठा गर्व है. मैं न की उतनी ही परवाह करूंगा, जितनी एक साधारण मरीज की.'

उन की पत्नी इसी जिद का शिकार हो ई. एक रात रक्तचाप बहुत बढ़ गया. जितनी वाएं वहां उपलब्ध हो सकती थीं, सब का हारा लिया, पर वह कुछ नहीं कर पाए. ड़की, दामाद को खबर की. वे गाड़ी से वा ले कर दिल्ली से चल भी दिए, पर जब क यहां पहुंचे, ब्रेन हैमरेज से पत्नी की मृत्यु चुकी थी. लड़का और लड़की इस घटना इतने नाराज हुए कि उन्होंने उन से लगभग बंध ही तोड़ लिए.

पर एक अच्छाई यह हुई कि इस छोटे कसबाई शहर में जनता का उन्हें बेहद प्रेम और विश्वास मिला. वह हर वक्त मरीजों को उपलब्ध रहते. अपने सीमित सरकारी साधनों के बावजूद वह जिस की जितनी मदद कर सकते थे, कर रहे थे. नतीजा यह हुआ कि वह शहर के इनेगिने लोगों में गिने जाने लगे. हर जगह लोग उन्हें अपने आयोजनों में विशेष अनुरोध के साथ बुलाया करते थे.

डा. जयकांत रिटायर होने वाले थे. उन्होंने जब यह फैसला किया कि वह इसी शहर में बसेंगे और यहीं अपने लिए एक छोटा सा बंगला बनवाएंगे तो लड़की, दामाद और लड़के ने बहुत विरोध किया, बल्कि उन्हें खब्ती और पागल तक घोषित कर दिया. पर वह माने नहीं. उन्होंने कसबे के सब से अच्छे क्षेत्र में बड़ा सा प्लाट ले कर अपना छोटा बंगला बनवाना शुरू कर दिया.

बंगला बनवाने में शहर के लोगों का उन्हें भरपूर सहयोग मिल रहा था. जिस से जो काम कह देते, वह खुशीखुशी उसे करने लगता. इसी सिलसिले में उन्हें अकसर पैसा निकालने के लिए बैंक जाना पड़ता था. बंगला बनवाने में पैसा काफी खर्च हो रहा

ना कई पल उन की तरफ देखती रही. उस ी नजरों में वही पहले वाली चमक दिखाई रही थी.



था, हालांकि उस में वह सिर्फ 4 कमरे बनवा रहे थे, बाकी सारी जमीन बगीचे के लिए छोड़ रहे थे, जिस में वह अपने मनपसंद पेड़पौधे लगाने की योजना बना रहे थे.

एक दिन जब वह बैंक से पैसा निकालने पहुंचे तो मैनेजर के कक्ष में किसी महिला को बैठा देख चौंके, फिर सोचते हुए काउंटर की तरफ बढ़ गए. चेक दे कर टोकन ले लिया. उन्होंने संकोच के बावजूद क्लर्क से पूछ लिया, "कोई नई मैनेजर आ गईं क्या...?"

"जी," क्लर्क ने कहा, "कोई श्रीमती मीनाजी हैं, लखनऊ से यहां 'कालेपानी' की सजा भोगने के लिए भेजी गई हैं."

'श्रीमती मीना'... 'लखनऊ'... ये 2 शब्द देर तक उन के दिमाग में बजते रहे. न जाने किस अज्ञात शक्ति से संचालित हो कर वह अपनेआप ही मैनेजर कक्ष में पहुंच गए, "आप को किस अपराध के लिए कालेपानी की सजा दी गई है, जो यहां भेजा गया है...?" वह सामने बैठी महिला की तरफ देख कर बोले.

महिला की बगल में खड़ा चपरासी कुछ रजिस्टरों में दस्तखत करवा रहा था. जब महिला ने नजर ऊपर उठाई तो सहसा चौंक गई, "अरे आप...यहां...?"

"क्यों, मैं यहां नहीं हो सकता क्या?" वह मुसकरा रहे थे.

मीना ने रजिस्टर चपरासी की तरफ खिसका दिए, "बाद में ले कर आना... साहब से बातें करनी हैं," उस ने उठ कर उन का स्वागत किया और बगल में पड़े गद्दे वाले सोफे पर बैठाया, "आप तो पहले..."

"हां, था वहां, पर एक मंत्रीजी नाराज हो गए तो यहां भेज दिया. तब से सरकार मुझे भूल ही गई और मैं ने भी कोई कोशिश नहीं की कि यहां से कहीं और भेजा जाए. अब यहीं मकान बनवा रहा हूं, उसी के लिए पैसा निकालने आता रहता हूं, आप कब आईं...?"

"बस, सप्ताह भर समझ लें," मीना मुसकराई. "कालेपानी की सजा इसलिए भुगतने को राजी हुई कि हम ने भी लखनऊ में एक मकान लिया है, उस की किस्तें चुकानी कठिन हो रही थीं. तरक्की की शर्त यह रखी गई कि इस कसबाई शहर में आना पड़ेगा. सो चली आई."

"जगह इतनी बुरी नहीं है, जितनी बदनाम है," डा. जयकांत बोले, "यहां के लोग बहुत अच्छे हैं. बस, छोटी जगह होने से छोटेछोटे नेताओं का भी रोजमर्रा के कामों में दखल रहता है. वैसे कोई कठिनाई नहीं होगी."

"मैं तो यहां आने से पहले बहुत डर रही थी. अब तक कई बार तरक्की लेने से इनकार कर लखनऊ डटी रही. पति और बच्चे वहीं थे, इसलिए कहीं और जाना नहीं चाहा. पिछले दिनों एक मकान खरीदा तो पैसे की कमी पड़ गई. बच्चे सब बड़ी कक्षाओं में पढ़ रहे हैं. उन का भी खर्च है, कैरियर का सवाल है. पढ़ाई रुक नहीं सकती, मजबूरन तबादला स्वीकार किया...तनख्वाह बढ़ गई तो किस्तें आसानी से चुका सकूंगी..." मीना बोली, "पति और बच्चे भी इस जगह के नाम से डरे हुए थे. सब का खयाल था, यह बहुत बुरी जगह है. यहां कोई आदमी सुरक्षित नहीं है. दिनरात चोरियां, डकैतियां, हत्याएं, बलात्कार होते रहते हैं... मैं भी सुनती रहती थी."

"यहां कहां रह रही हैं?" डा. जयकांत ने पूछा.

"इस बैंक के पिछवाड़े ही बैंक मैनेजर के लिए 3 कमरों का एक फ्लैट है, उस में रह रही हूं. अभी तक तो सब ठीक निभ रहा है, आगे देखा जाएगा," वह हंसी, "बच्चे और पति अकसर रात को फोन पर पूछते हैं, सब ठीक है न? और मैं उन्हें आश्वस्त करती हूं कि सब ठीक है."

"तो मैं आप को आश्वस्त करता हूं, आगे भी सब ठीक रहेगा," डा. जयकांत हंसने लगे तो मीना ने उन से टोकन ले लिया, "आप यहीं बैठें, पैसा यहीं मंगाए देती हूं," कह कर चपरासी के लिए घंटी दबाई.

रासी के आने पर उसे टोकन पकड़ा
या, "साहब का पैसा यहीं ला कर दो."

कुछ देर मौन रहने के बाद डा. जयकांत ले, "तुम बिलकुल बदली नहीं, मीना... ने बड़े बच्चे हो गए और तुम ज्यों की हो..." वह न जाने क्यों 'आप' से 'तुम' उतर आए थे.

मीना का चेहरा सुर्ख हो गया, "अपनी हीं कहेंगे आप... वैसे ही हैं, जैसे 20-25 ल पहले थे..."

"हमारे बनते हुए मकान पर आप कब नेंगी...?" जयकांत बोले, "जब कहें, गाड़ी कर लेने आ जाऊंगा..."

विषय टालने के लिए मीना ने बच्चों र पत्नी की जानकारी लेनी शुरू कर दी. जयकांत ने सब बता दिया. पत्नी की यु की बात सुन कर उसे भी धक्का लगा, ब भी आप इस जगह को अच्छा बता रहे इस मनहूस जगह ने तो आप की गृहस्थी ाड़ दी..."

"मीना, तुम तो मेरी तरह ही विज्ञान छात्रा रही हो. हम विज्ञान वाले लोग इन कयानूसी बातों में विश्वास नहीं रखते. कोई ह मनहूस नहीं होती. आखिर इस जिले भी लाखों लोग रहते हैं... मनहूस होती तो तक सब मर गए होते," वह हंसते रहे, , यहां के अस्पतालों में साधन कम हैं, ार में जरूरी दवाएं हर वक्त उपलब्ध रहतीं. इसी वजह से मेरी पत्नी की मृत्यु गई. इस में इस जगह का क्या कुसूर? क यहां मुझे दूसरे शहरों की अपेक्षा दा अपनापन मिला."

"अपनापन मिला...?" मीना चकित "क्या कह रहे हैं? हम ने तो सुना है, का एक गुंडा नेता बहुत बदतमीज है... सी भी अफसर का सरेआम अपमान करना की आदत में शामिल है... किसी मंत्रीजी नजदीकी है."

"वह सब अपनी जगह है," जयकांत , "वह नेता अकसर मेरे पास आते रहते उन के काम करता रहता हूं...बहुत खुश



दिन

आशा से उठता है
दोपहर को उलझता है
शाम को दम तोड़ कर
रात में सुलगता है.

–शिखा चंद्रा

हैं. नागों को वश में करने का हुनर संपेरों को आना ही चाहिए...," वह जोर से हंसे, "तुम जरा भी परेशान मत होना...जब तक मैं हूं, तुम्हारी तरफ कोई आंख उठा कर भी नहीं देखेगा."

"सिवा आप के," मीना खुल कर हंसी. चपरासी पैसे ले आया था, जिन्हें उन्होंने हाथ में लिए बैग में रखा तो मीना ने कहा, "गिन तो लीजिए..."

"मीना ने मंगवाए हैं, गिनने की क्या जरूरत है?" वह मुसकराए, "तो बताइए, कब चल रही हैं, हमारे मकान तक? मैं चाहता हूं, वहां आप जल्दी ही आएं, जिस से अगर कहीं कोई बदलाव समझ में आए तो उसे करवा सकूं..."

"कल शाम को ठीक रहेगा...?" मीना ने उन की तरफ देखा.

"ठीक है, मैं 5 बजे यहीं से तुम्हें ले लूंगा," कहते हुए डा. जयकांत उठ खड़े हुए.

दूसरे दिन शाम 5 बजे डा. जयकांत अपनी गाड़ी ले कर बैंक के सामने पहुंचे तो

मीना सीधी अपने कक्ष से निकल कर उन के पास आ गई, "पुरानी आदत नहीं गई आप की, वक्त के पहले भी आप इतने ही पाबंद थे," वह उन की बगल में बैठती हुई मुसकराई, "कितनी दूर है?"

"पूरे शहर को गाड़ी से पार करने में कुल 15 मिनट लगते हैं. बड़े शहरों जैसी दूरियां यहां नहीं हैं, न बस्तियों के बीच, न दिलों के बीच."

रास्ते में एक जगह गाड़ी रोक कर उन्होंने ठंडे का आदेश दिया तो मीना सकुचाई. इस पर वह बोले, "वहां कुछ मिलेगा नहीं... अगर मीनाजी का स्वागत न किया तो वह समझेंगी कि कैसा अव्यावहारिक व्यक्ति हूं. घर लिवा ले गया और ठंडागरम भी नहीं पिलाया..."

"मीना आज तक आप से कभी कोई शिकायत कर पाई है, जो आज करेगी?" वह झेंपती हुई मुसकराई.

चलती हुई गाड़ी में डा. जयकांत ने टेप बजा दिया, 'कोई लौटा दे मेरे बीते हुए दिन...'

मीना सुनते ही चौंक पड़ी. उस के चेहरे पर लालिमा उभर आई. जयकांत ने टेप बंद कर दिया, "रहने दो मीना...तुम सोचोगी, पता नहीं क्यों यही गीत लगा कर तैयार रखा था... जबकि बहुत दिनों से सचमुच मैं ने टेप बजाया ही नहीं..."

"बीता हुआ समय कौन लौटा सकता है भला," मीना बोली, "क्या नदी में बहते हुए पानी को लौटाया जा सकता है?"

"बांध बना कर उसे थामा तो जा ही सकता है," वह मुसकराए, "खैर, यह सब छोड़ो...कुछ अपने बारे में बताओ, कहां रहीं, कैसी कटी जिंदगी?"

कुछ देर तक वह अपने बारे में बताती रही, "आप से शादी करना चाहती थी, पर मांबाप राजी नहीं हुए...जाति बीच में बाधक बनी रही. हालांकि आप मेडिकल में आ गए थे, वे ललचा भी रहे थे कि लड़का अच्छा रहेगा, पर हिम्मत नहीं जुटा सके. अपनीअपनी कमजोरियां होती हैं जयकांत... लोग उन कमजोरियों से ऊपर नहीं उठ पाते."

"तुम ने भी तो हिम्मत नहीं की, अगर करती तो आज मैं अकेला क्यों होता...? पत्नी से शायद इतनी ही दूर का संबंध था. इस वक्त जब आदमी को औरत की सब से ज्यादा जरूरत होती है, मैं अकेला रह गया..."

"आप को लड़के या लड़की के पास चले जाना चाहिए था...यहां बेकार मकान बनवा रहे हैं."

"अपनीअपनी स्थितियां होती हैं. लड़की व दामाद के पास रहना मुझे पसंद नहीं है. लड़के के पास मुंबई में बहुत बड़ा फ्लैट नहीं है. व्यर्थ उस के पास जा कर उन दोनों के बीच बाधा बनूं, वे लोग कसमसाएं, यह मुझे आज नहीं तो कल खलने लगेगा. इसलिए बहुत सोचसमझ कर यह फैसला किया है..."

"बीमार पड़ जाएं तो देखरेख को कोई घर का व्यक्ति तो होना ही चाहिए," मीना बोली तो वह एक पल को उस की तरफ देख फिर सामने सड़क पर देखने लगे, "घर का हो कर भी कोई क्या कर लेता है, जब मौत आती है न...? मैं पत्नी के पास था... और माना हुआ सर्जन हूं मैं...पर कुछ न कर सका. हमारे सामने, देखतेदेखते उस की मृत्यु हो गई. इसलिए यह सब सोचना व्यर्थ है. अपना अंतिम समय मैं लोगों की सेवा करते हुए बहुत शांति और संतोष के साथ गुजारना चाहता हूं. मुझे जितना यहां लोगों का प्यार मिला है, वह मेरे लिए सचमुच बहुत महत्त्वपूर्ण है. फिर इस घनघोर अंधेरे में भी तो एकाध रोशनी होनी चाहिए, मीना...वह मामूली रोशनी ही इस अंधेरे में काफी ज्यादा महसूस होगी. जरा इन अंधेरे में डूबे लोगों की नजर से इस सारी स्थिति पर सोचो तो तुम्हें इस का महत्त्व पता चलेगा...," डा. जयकांत कहते रहे.

"आज लोग दूसरों के लिए नहीं सिर्फ अपने लिए जीते हैं. इस आपाधापी में दूसरों के बारे में कौन सोचता है?" मीना मकान को देख कर उन के साथ एक जगह अधबने

मरे में बैठी थी. एक तरफ 2 दीवारें खड़ी, दूसरी तरफ दीवारें नहीं थीं.

आज ही क्यों, अपने बारे में तो लोगों हमेशा ही सोचा होगा, फिर भी कुछ लोग रों के बारे में ही सोचते रहें, काम भी ते रहें. जरा सोच कर देखो, बुद्ध के बारे .क्या नहीं था उन के पास? लेकिन सब छ छोड़ कर चले गए कुछ ऐसा खोजने लिए, जिस से दूसरों का जीवन सुखी हो, ति मिले. मैं यह नहीं कहता कि शरीर त्वपूर्ण नहीं है, कि शरीर की जरूरतें त्वपूर्ण नहीं हैं, कि आदमी को तपना हिए, अपनी इच्छाओं, कामनाओं को ना चाहिए, कि अपनी प्राकृतिक चाहत गला घोटना चाहिए. पर मीना, अपने र के बाहर भी एक दुनिया होती है, वित लोगों की दुनिया, जिस में हमारेतुम्हारे ही हजारोंलाखों लोग होते हैं, उन के दर्द बांट कर देखो कभी, उन के साथ ना और दुखी होना सीखो तो पता चलेगा गी वही नहीं है, जो तुम अपने लिए जी हो, वह भी है जो दूसरों के लिए जीने हो...और उस दूसरी जिंदगी में ज्यादा द, ज्यादा संतोष अनुभव होगा..."

मीना मुसकराती हुई उन्हें काफी देर ताकती रही, "यहां कहां रहते हैं ...?" सहसा उस ने पूछा.

"अस्पताल में ही क्वार्टर मिला हुआ सैसे ही यह मकान बन कर तैयार हो ा, यहां आ जाऊंगा."

मीना उठ कर खड़ी हो गई, "चलिए, खाना आप मेरे साथ खाइए."

"आज नहीं, कल," वह बोले, "आज अपने रसोइए से खाना बनाने के लिए आया हूं, वह बनाना शुरू कर चुका मैं अन्न की बरबादी में विश्वास नहीं . इस देश में लाखोंकरोड़ों को यह अन्न वक्त खाने को नहीं मिलता, इस दायी अन्न की बरबादी मुझे नापसंद

"कल सही, पर अपनी पसंद भी बताइए," मीना मुसकराती रही.

"जो मीना को पसंद होगा, वह मुझे भी होगा," वह हंसे, "बस, मिर्चमसाले मैं नहीं खाता..."

जयकांत जब मीना को वापस बैंक के क्वार्टर तक पहुंचाने गए तो कुछ पल उस के दरवाजे पर रुके रहे, "मीना, लगता ही नहीं है कि हमारे बीच बरसों लंबा फासला रहा है. लगता है, कल तुम मुझे विश्वविद्यालय में मिली थीं और हम गोमती किनारे शहीद पार्क और हजरतगंज में घूमते रहे हैं... क्वालिटी में आइसक्रीम, रंजना में चिकन और मेफेयर में अंगरेजी फिल्में....क्यों?"

"गुजरे हुए समय को फिर से जीने का अपना सुख है. जाने क्यों आज बरसों बाद तुम्हारे साथ रही तो वह सब बरबस भीतर कहीं ताजा हो आया, जो कभी हमारे बीच था. हालांकि उम्र के इस मोड़ पर आ कर वह सब अब बेमानी हो गया है...पर लगता है, बीता हुआ समय भी सही मायनों में कभी बीतता नहीं है."

पत्नी का असली साम्राज्य तो घर ही है, और इस साम्राज्य की राजधानी है रसोईघर.

"पत्नी के रहते हुए भी तुम कई बार याद आईं और उस की मृत्यु के बाद भी. कई बार मन में आया, तुम्हें खबर करूं... पर फिर सोचा, न करूं, क्या लाभ. पता नहीं तुम्हारे पति और बच्चे क्या सोचें, इसलिए चुप रहा."

"ऐसा शायद मेरे साथ भी हुआ," मीना बोली, "पहला प्यार लड़की कभी भुला नहीं पाती. सारी जिंदगी उस की टीस भीतर बनी रहती है. एक महीन फांस की तरह दिल में गड़ी जबतब कसकती रहती है. पति और बच्चों के साथ जबजब मैं उन जगहों पर गई, जहां तुम्हारे साथ घूमती रही थी, सच मानो तुम बहुत याद आए...लगता रहा, कोई और संग नहीं है, सिर्फ तुम ही साथ हो. क्यों

होता रहा ऐसा, मैं आज तक नहीं समझ पाई."

सब्जी ले कर बैंक का चपरासी आ गया था. जयकांत और नहीं रुके. वह चले आए, पर सारे रास्ते मीना के बारे में ही सोचते रहे...क्या सचमुच अतीत मरता नहीं है? उस के कड़वेमीठे स्वाद जीभ पर हमेशा ताजा बने रहते हैं?

'यह मीना कौन है...?' एक बार जयकांत की पत्नी को मीना के पत्र अलमारी में रखे हुए मिल गए थे. डा. जयकांत ने उन्हें जानबूझ कर बहुत छिपाने की कोशिश भी नहीं की थी. वे मुसकराए थे, 'मेरा अतीत.'

'और वर्तमान कौन है...?' पत्नी की भौंहें तन गई थीं.

'तुम,' वह हंस दिए थे, 'विश्वास रखो, अब हमारे बीच कुछ नहीं है. उस के मांबाप मेरे साथ उस की शादी करने को राजी नहीं हुए. हमारे बीच जाति की बाधा थी, इसलिए तुम से शादी हो गई.'

'क्या भरोसा कि वह आप का पीछा नहीं करेगी?' पत्नी ने शंका की.

'क्यों करेगी, जबकि उसे पता है, वह मेरी नहीं बन सकती? खासी पढ़ीलिखी और समझदार लड़की है, क्यों अपने पांव पर अपने हाथों कुल्हाड़ी मारेगी?'

'आप जबजब उस के सामने पड़ेंगे, उस के घाव हरे हो उठेंगे. पुराना दर्द फिर जीवित हो उठेगा. कसक कभी जाती नहीं, जनाब,' वह मुसकराई.

'यह तो वक्त ही बताएगा,' वह हंस दिए, 'तुम से शादी की है तो ईमानदारी से तुम्हारा हो कर रहूंगा.'

'आदमी यदि गंगा में गरदन तक धंस कर भी कसम खाए, तब भी औरत को उस पर विश्वास नहीं करना चाहिए,' पत्नी ने कहा था.

दूसरे दिन शाम को वह मीना से बोले "पत्नी को तुम्हारे मामले में कभी शिकायत का मौका नहीं दिया."

"मैं ने भी अपने पति को किसी तरह का संदेह नहीं होने दिया...हालांकि मन में अरसे तक मैं तुम्हारी बनी रही थी," मीना ने कहा, "क्यों होता है ऐसा कि हम आसानी से अपने प्रिय दिन भुला नहीं पाते...?"

"पत्नी को मुझ से दूसरी शिकायतें रहीं...खास कर मेरे सोच को ले कर. उस के मातापिता ने एक डाक्टर लड़के से उस की शादी इसलिए की थी कि वह नाम के साथसाथ बहुत नामा भी कमाएगा...पर मैं सिर्फ नामे के पीछे नहीं भागा...जरूरतमंद लोगों का सही इलाज और सही आपरेशन सरकारी अस्पताल में ही किया. दूसरे पैसा कमाऊ डाक्टरों की तरह प्राइवेट नर्सिंग हाउसों से संपर्क नहीं रखा कि मरीज से कह देता कि वहां जाओ, वहां आपरेशन अच्छा करेंगे...लोगों ने तो मुझे बेवकूफ कहा ही, मेरी पत्नी और बच्चों ने भी मुझे खब्ती और सिरफिरा समझा...इसलिए मेरे पास पहले भी पैसा बहुत नहीं था, अभी भी नहीं है... तुम्हारे बैंक में खाता है...देख लेना. जो है, बस इतना ही है...जीवन भर की कमाई."

"बैंक के पुराने कर्मचारियों से आप के बारे में पूछा था. बहुत सम्मान है आप का यहां...इस शहर में. सब आप की बहुत इज्जत करते हैं...यह क्या कम है?" मीना मुसकराई, "वरना कौन किस की परवाह करता है. बैंक के लोगों का भी आप के बारे में बहुत अच्छा खयाल है."

खाने के बाद वह काफी लेते थे. मीना ने उन के लिए काफी बनाई तो वे बोले, "अब तुम कब आओगी मेरे साथ रात के भोजन पर...? इस बस्ती का सब से अच्छा एक ही होटल है...अपनी मीना को वहीं खिला सकता हूं."

"होटल में क्यों...घर पर क्यों नहीं...?" मीना ने नयन नचाए.

"घर पर रसोइया जो खाना बनाता है, वह अपनी मीना को खिलाना मैं पसंद नहीं करूंगा. मैं तो किसी तरह खाता हूं, क्योंकि खाना है और पेट भरना है."

"आप के घर आ कर मैं ही बनाऊं, ?" मीना मुसकराई.

"तब दावत का क्या लाभ? यहां भी ीं बनाओ और वहां भी तुम्हीं? यह भी ई दावत हुई, यार...?" वह 'यार' कह कर यं एक पल को झेंप गए. पर जीभ से सला शब्द वापस तो आ नहीं सकता था. ा कई पल उन की तरफ देखती रही. उस नजरों में वही पहले वाली चमक दिखाई ही थी.

लगभग 2 सप्ताह तक मीना से उन की ाकात न हो सकी. एक बार बैंक गए भी, उस दिन मीना अपने कक्ष में दिखाई न उन्होंने पूछताछ नहीं की, क्योंकि बैंक में सब जानते थे. सोचा, पता नहीं पूछने कौन क्या अर्थ लगाए.

जब मीना मिली तो उन्होंने पूछा, "कहां ?"

"लखनऊ चली गई थी," वह बोली, पर अभी सबकुछ व्यवस्थित नहीं हुआ ालांकि लड़की सब देखतीभालती है, पर भी बच्चों के चलाए घर नहीं चलते..."

"यह क्यों नहीं कहतीं कि पति महाशय जरूरत पड़ रही थी," वह शरारत से ुराए तो मीना बुरी तरह झेंप गई. वह क चुप रही, फिर बोली, "आप डाक्टर उम्र का भी खयाल नहीं करते."

"शरीर की सचाइयों को जानते हैं हम र लोग," वह उसी तरह हंसते रहे.

"और अगर यही बात मैं आप के लिए कहूं तो...?"

"तब भी सच होगा," वह बोले, "औरत की जरूरत किसे नहीं महसूस होती? जो कहे कि मुझे नहीं होती, तो समझो वह झूठ कहता है," एक पल रुक कर वह आगे बोले, "सच कहूं...जब से तुम्हें यहां देखा है, तब से यह जरूरत एक प्यास का रूप ले कर मन में व्याप्त हो गई है..."

"क्यों ऐसी बातें कर के अपनेआप को परेशान करते हैं," मीना बोली, "आप भी जानते हैं और मैं भी कि इन बातों का अब कोई मतलब नहीं है. फिर क्यों झूठी मृगतृष्णा में हम प्यासे हिरन की तरह रेगिस्तान की तपती रेत पर भटकें?"

वह चुप हो गए. दोनों होटल में खाना खा रहे थे. खाने के बाद आइसक्रीम मंगाई गई.

"याद है, मीना...क्वालिटी में हम लोग एक ही आइसक्रीम मंगाते थे और एक को ही दोनों बारीबारी खाते थे?"

"आप उन दिनों को क्यों बारबार बीच में ले आते हैं? मैं भी हाड़मांस की बनी औरत हूं. भले इस आइसक्रीम की तरह अपनेआपको ठंडा रखे रहने की कोशिश करती हूं, पर... पर आदमी के होंठों की तपिश तो इसे पिघला ही देगी. जयकांत... मेरे भीतर की औरत की परीक्षा मत लो. मैं उस परीक्षा में फेल हो जाऊंगी. मेरी विनती मान लो और चुप हो जाओ," मीना सिर झुकाए बैठी रही, चुप लजाती, सकुचाती सी. ●

अविस्मरणीय अनुभव

Honeymoon Inn हनीमून इन

मसूरी ✆ (0135) 632378, 631778

की रानी' पर बने इस होटल के हरेक कमरे से आप दून घाटी की झिलमिलाती रोशनी का मनमोहक दृश्य देख सकते हैं.

आकर्षण ☆ 24 आरामदायक कमरे-कालीन व केबल टी.वी. से युक्त ☆ माल रोड के मुख्य स्थान पर स्थित ☆ घर जैसा स्वादिष्ट भोजन ☆ होटल में कार पार्किंग की सुविधा

तात्कालिक आरक्षण के लिए संपर्क करें :

ईज : 71, निम्न भूतल, विश्व व्यापार केंद्र, बाबर रोड, नई दिल्ली-110001 फोन : 3711142, 3352179 फैक्स : 3351359

मंगलम, A-50, विकास मार्ग, दिल्ली-92 फोन : 2459136, फैक्स : 11-2202959

"पूरे देश में मेरी फिल्म पर बहस हो"

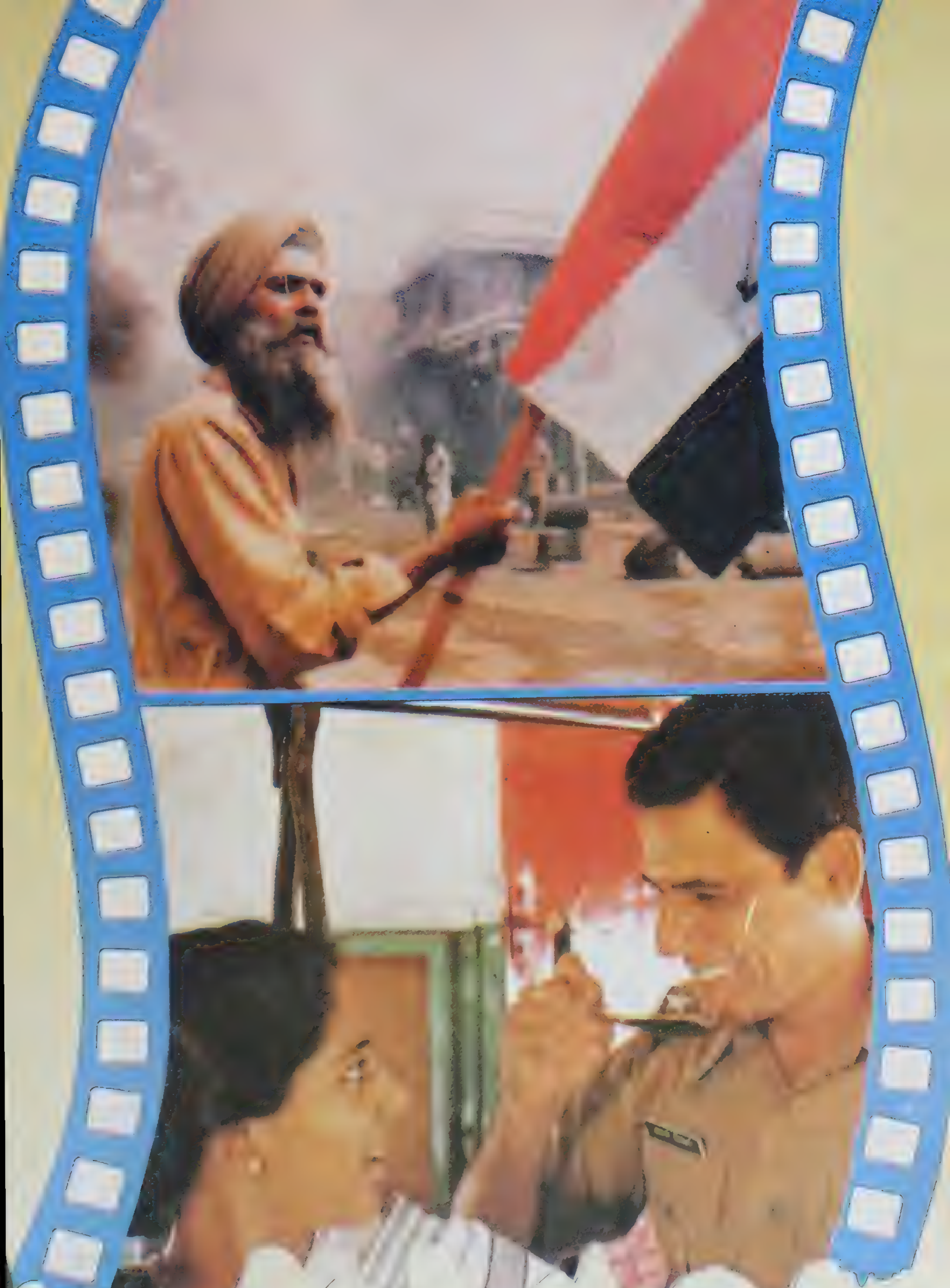
-गोविंद निहलानी

लेख ● शांति स्वरूप त्रिपाठी

सामाजिक जागृति के लिए फिल्मों को एक मजबूत और सार्थक हथियार मानने वाले फिल्म सर्जक गोविंद निहलानी उन निर्देशकों में से हैं जो हमेशा अलग तेवर और मिजाज की फिल्में बनाते रहते हैं. साहित्यिक रुचि के गोविंद निहलानी की हर फिल्म में साहित्य के साथसाथ वर्तमान समाज की विसंगतियां व त्रासदियां भी मौजूद रहती हैं. साहित्य को परदे पर उतारने की उन की अपनी एक अलग और मौलिक शैली है. इन दिनों वह अपनी नवीनतम फिल्म 'हजार चौरासी की मां' को ले कर चर्चा में हैं.

प्रख्यात बंगला साहित्यकार महाश्वेता देवी के उपन्यास पर आधारित फिल्म 'हजार चौरासी की मां' को पिछले दिनों नई दिल्ली में संपन्न भारत के 29वें अंतरराष्ट्रीय फिल्म समारोह में 'भारतीय पैनोरमा खंड' के अंतर्गत दिखाया गया. पूरे फिल्म समारोह





गोविंद निहलानी : सार्थक फिल्मों के एक कामयाब निर्देशक.

के दौरान यह एक सर्वाधिक चर्चित फिल्म रही. इसी फिल्म समारोह में गोविंद निहलानी से लंबी बातचीत हुई.

1962 में बतौर कैमरामैन अपने कैरियर की शुरुआत करने वाले गोविंद निहलानी ने

बतौर कैमरामैन अपने फिल्मी सफर की शुरुआत करने वाले गोविंद निहलानी अपनी अलग शैली व मिजाज की फिल्मों के लिए जाने जाते हैं. उन की फिल्मों में साहित्य की झलक तो मिलती ही है समाज की त्रासदियों को भी उकेरा जाता है. प्रस्तुत हैं उन से की गई बातचीत के प्रमुख अंश.

सर्वप्रथम सहनिर्माता के रूप में 'शांतता, कोर्ट चालू आहे' फिल्म का निर्माण किया था. फिर 'आक्रोश' से उन्होंने निर्देशन के क्षेत्र में दस्तक दी. अपनी इस पहली ही फिल्म के लिए 1981 में उन्होंने 'स्वर्णमयूर' का पुरस्कार हासिल किया. इस से पहले 1979 में फिल्म 'जुनून' के लिए वह सर्वश्रेष्ठ छायाकार (कैमरामैन) का पुरस्कार हासिल कर चुके थे.

'आक्रोश' के बाद 'विजयेता', 'अर्धसत्य', 'पार्टी', 'आघात', धारावाहिक 'तमस', 'दृष्टि', 'रुकमावती की हवेली', 'द्रोहकाल', 'संशोधन' जैसी फिल्मों का निर्देशन व निर्माण किया. पर वह कभी भी न तो मुख्य धारा के सिनेमा से ही जुड़े और न ही पूर्णरूपेण समानांतर सिनेमा से ही जुड़े, बल्कि उन्होंने अपनी फिल्मों को कलात्मक दृष्टि से भिन्न रखते हुए यह प्रयास भी किया कि उन की फिल्में दर्शकों के एक 'विशेष वर्ग' तक पहुंच कर सामाजिक जागरण का भी काम करें. उन्होंने हर बार साहित्य को अपनी फिल्मों का आधार बनाया.

फिल्म 'गांधी' में वे दूसरी यूनिट के निर्देशक व कैमरामैन थे. 1983 में 'अर्धसत्य' के लिए श्रेष्ठ हिंदी फिल्म का राष्ट्रीय पुरस्कार, 1995 में 'दमस्कस फिल्म महोत्सव' में 'द्रोहकाल' के लिए उन्हें सर्वश्रेष्ठ निर्देशक का पुरस्कार मिला. इतना ही नहीं, 1989 में वह मांट्रियल फिल्म महोत्सव के निर्णायक मंडल के सदस्य भी थे.

गोविंद निहलानी ने फिल्म 'आक्रोश' में आदिवासियों के शोषण की व्यथा को उकेरा था, तो 'द्रोहकाल' में किन हालात में एक युवक आतंकवादी बनता है, उसे अपने वास्तविक रूप में दर्शाया था, जबकि 'हजार चौरासी की मां' में वह व्यक्तिगत जीवन तथा व्यक्तिगत रिश्तों में राजनीति के प्रभाव के साथसाथ उस मां की पीड़ा को भी रेखांकित कर रहे हैं, जिसे अपने बेटे के मरने के बाद पता चलता है कि वह नक्सलवादी था.

प्रस्तुत हैं, गोविंद निहलानी से की गई बातचीत के अंश...

बतौर निर्देशक 17 साल के कैरियर में आप एक बार फिर 'हजार चौरासी की मां' को ले कर चर्चा में हैं. इन 17 सालों में आप ने जो मुकाम हासिल किया, उसे ले कर क्या सोचते हैं?

मैं ने कभी भी पीछे मुड़ कर नहीं देखा. मैं ने अपनेआप को सतत काम में ही व्यस्त रखा. मैं किस मुकाम पर पहुंच रहा हूं, इस बारे में भी कभी नहीं सोचा. अपने कैरियर का विश्लेषण करने के लिए भी मेरे पास वक्त नहीं है. फिलहाल 'हजार चौरासी की मां' के प्रदर्शन, 'तक्षक' के निर्देशन तथा 2 अन्य विषयों को ले कर व्यस्त हूं.

आप ने महाश्वेता देवी के उपन्यास पर 'हजार चौरासी की मां' बनाने का निर्णय किन कारणों के तहत किया?

मैं ने कलकत्ता में इसी उपन्यास पर आधारित श्याम जालान का एक नाटक देखा था, जिस ने मुझे प्रभावित किया. तब मैं ने सोचा कि इसे परदे पर लाऊं, पर बात आगे नहीं बढ़ी. एक दिन इसी उपन्यास को अंगरेजी भाषा में पढ़ा तो तुरंत फिल्म बनाने के लिए प्रेरित हो गया, क्योंकि उपन्यास को पढ़ने के बाद मुझे हर इनसान के व्यक्तिगत जीवन तथा व्यक्तिगत रिश्तों में राजनीति का प्रभाव नजर आया. वैसे उपन्यास में कथा 1972 में

त्म हो जाती है, पर फिल्म में मैं इसे वर्तमान क ले कर आया हूं. मेरी हर फिल्म के र्माण के पीछे कोई न कोई घटना भी रणास्रोत रही है. जब मैं 'हजार चौरासी की ां' पर फिल्म बनाने की बात सोच ही रहा ा कि उसी दौरान बिहार में चंद्रशेखर नामक क नवयुवक की दिन दहाड़े की गई हत्या मेरे अंदर कुछ ज्यादा ही जोश भर दिया.

आप को क्यों लगता है कि लोग 'हजार ौरासी...' को देखेंगे?

हम इस फिल्म में भले ही 1972 की ात कर रहे हैं, मगर हालात लगभग वही , उन में कहीं कोई बदलाव नहीं आया है.



या बच्चन के साथ गोविंद निहलानी : ़ल्म 'हजार चौरासी की मां' के जरिए एक की पीड़ा को रेखांकित करने की कोशिश.

ालिए फिल्म देखते वक्त लोग खुद को ड़ा हुआ महसूस करेंगे. दूसरी बात, इस में वनात्मक पक्ष कुछ ज्यादा ही उभरा हुआ

आप की फिल्म में मां अंत में 'एक्टिविस्ट' हो जाती है. इसी तरह पिता का किरदार भी बदल जाता है. आखिरकार फिल्म के अंत में किरदारों में यह बदलाव क्यों? उपन्यास में तो ऐसा नहीं है?

मेरी ढाई घंटे की फिल्म में पात्र जहां से चले, अंत तक वहीं रहे तो फायदा क्या हुआ? पात्र, यानी कि किरदार का विकास होना जरूरी है. फिर चाहे यह विकास नैतिक द्वंद्व के कारण हो या मानवीय द्वंद्व के कारण. मेरी फिल्म तो पात्रों की विकास यात्रा तथा जीवन के निकट से उबरने पर आधारित होती है. मैं ने फिल्म में उपन्यास को बढ़ाया है तो इन्हीं बातों को ध्यान में रख कर. और यह विस्तार महाश्वेता देवीजी की अनुमति से ही किया है.

सुजाता चटर्जी के पति की भूमिका में अभिनेता अनुपम खेर हैं. उन के किरदार में भी अंत में बदलाव आता है. शुरू में चटर्जी ही पूरे परिवार पर हावी रहते हैं, पुरुष प्रधान समाज जो है. पर वह अंदर से डरपोक, कायर हैं तथा ढुलमुल नीति वाले इनसान हैं. पर ज्योंज्यों सुजाता का कद बढ़ता है, त्योंत्यों उन में बदलाव आता है. ऐसा दिखाने के पीछे मेरा मकसद औरत की जीत को रेखांकित करना भी रहा. जहां तक मां (सुजाता चटर्जी) के 'एक्टिविस्ट' होने का सवाल है तो यह संकेत उपन्यास में है कि उन के व्यक्तित्व में बदलाव आया. अब हमें तो इस बदलाव को भी परदे पर दिखाना ही था.

इसी तरह मैं ने नक्सलवादी कार्यकर्ताओं की मीटिंग का दृश्य भी जोड़ा है, जिसे महाश्वेताजी ने ही लिख कर दिया.

देखिए, इतना सब करने के पीछे मेरा मकसद यह भी था कि मेरी फिल्म उस काल विशेष का इतिहास मात्र बन कर न रह जाए, मैं तो चाहता हूं कि इस फिल्म को ले कर पूरे देश में बहस हो, जिस से सभी लोग इतिहास के एक उत्तेजक दौर से परिचित हो सकें.

आप नक्सलवाद को किस रूप में देखते हैं?

यह हमारे देश के इतिहास का वह दौर था, जब आजादी के बाद के समाज को ले कर सपने देखे जा रहे थे. सभी का तरीका अलग था. कोई समाजवादी, कोई पूंजीवादी, कोई मार्क्सवादी, तो कोई हिंदूवादी तरीके से ऐसे सपने देख रहा था. नक्सलवाद ऐसे लोगों का आंदोलन था, जिन्हें विश्वास था कि समाज को बदल कर ही बेहतर रूप दिया जा सकता है. गांवों से 'ग्रासरूट' पर बदलाव की प्रक्रिया शुरू की गई. इस आंदोलन से संभ्रांत व पढ़ेलिखे लोग भी जुड़े हुए थे. नक्सलवादियों ने प्रजा को ही बदलने की बात की. वह हमारे देश का महत्त्वपूर्ण दौर था और एक महत्त्वपूर्ण पीढ़ी थी. वह आंदोलन अभी भी खत्म नहीं हुआ है. छोटेछोटे समूह अब भी लड़ रहे हैं. मेरे मन में तो उस युवक के प्रति सम्मान है. मेरी यह फिल्म यदि लोगों में यह चेतना पैदा कर सके कि खुद के बाहर की दुनिया से वे निजात नहीं पा सकते तो मुझे खुशी होगी.

इस फिल्म के माध्यम से क्या संदेश देना चाहते हैं?

पूरी फिल्म में कई स्तरों पर संदेश है. सब से बड़ा संदेश तो यही है कि कोई भी व्यक्ति मानवीय जीवन पर राजनीति के प्रभाव को अनदेखा नहीं कर सकता. मेरी नजर में राजनीति बहुत खराब है. फिर भी मैं यह मानता हूं कि राजनीति से हर इनसान किसी न किसी रूप में जुड़ा होता है या प्रभावित होता रहता है. इसी के साथ परिवार के हर सदस्य के बीच संवाद की निरंतरता को बरकरार रखने की भी बात की गई है. इस में एक मां की पीड़ा भी शामिल है.

कहा जा रहा है कि अब आप भी व्यावसायिक सिनेमा की तरफ मुड़ रहे हैं, उसी के परिणामस्वरूप 'तक्षक' का निर्माण कर रहे हैं?

समय के साथ थोड़ा बदलाव जरूरी है. हरदम एक जैसी फिल्में नहीं बनाई जा सकतीं. एक ही तरह की फिल्में बनाता रहूंगा तो दर्शकों के साथसाथ मैं भी ऊब जाऊंगा. कलात्मक ताजगी अलगअलग फिल्मों से ही आती है. मैं मानता हूं कि मेरी फिल्म 'तक्षक' में स्टार हैं. अजय देवगन और तब्बू की जोड़ी है. उसी के अनुरूप ए. आर. रहमान का संगीत है. बहुत ही ज्यादा नाटकीयता है, फिर भी यह आम व्यावसायिक फिल्म नही होगी.

'तक्षक' के बारे में आप जो भी राय बनाना चाहें, वह फिल्म देखने के बाद ही बनाइएगा. मैं व्यावसायिक सिनेमा की खिलाफत करने वालों में से भी नहीं हूं. 'तक्षक' बनाने में भी मुझे संतोष है.

आप हमेशा साहित्यिक कृतियों को ही फिल्मों का आधार क्यों बनाते हैं?

यह महज एक संयोग ही है. वैसे मैं साहित्यिक रुचि का व्यक्ति हूं. मैं ने साहित्य पढ़ा है. साहित्यिक कृति पर काम करते हुए निर्देशक का काम आसान हो जाता है. मैं ने सआदत हसन मंटो, राकेश मोहन, यशपाल जैन सहित कई लेखकों को पढ़ा है. दिल्ली में 'गांधी' की शूटिंग के दौरान मेरे हाथ 'तमस' लग गई तो मैं ने उस पर काम किया. इसी तरह विजय तेंदुलकर ने भिवंडी के दंगों के वक्त मुझे एक घटना सुनाई, उसी से 'आक्रोश' का जन्म हुआ. शशि देशपांडे के उपन्यास से प्रभावित हो कर 'दृष्टि' बनाई.

आप की फिल्में विशाल दर्शक वर्ग तक नहीं पहुंचतीं...?

जब मैं फिल्म बनाना शुरू करता हूं, तभी मुझे पता होता है कि मेरा दर्शक वर्ग छोटा है. मेरी हर फिल्म की लागत वसूल हो जाती है. मैं महज बौद्धिक विकास या पुरस्कार के लिए फिल्में नहीं बनाता, पर लोग मुझ पर इस तरह के आरोप लगाते

हते हैं. मैं छोटे दर्शक वर्ग के लिए फिल्में नाता हूं, पर यह वर्ग पढ़ालिखा है. फिल्म ख कर यह वर्ग विचारों से जागृत होता है. ीरेधीरे यही जागृति पूरे देश में फैल सकती .

सामाजिक समस्याएं होते हुए भी आप की फ़ल्में व्यक्ति केंद्रित क्यों हो जाती हैं?

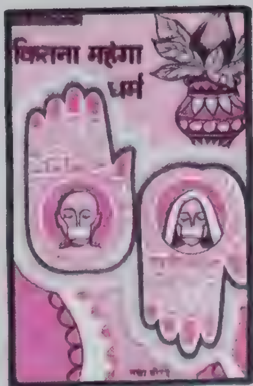
ऐसा अवश्यंभावी है. इस से बच नहीं कते, क्योंकि समस्यामूलक फिल्म, फिल्म हो कर एक वृत्तचित्र हो जाता है. समस्या ो फिल्म का रूप देने के लिए नाटकीयता जरूरी है और जब नाटकीयता होगी तो पात्र भी होंगे और पात्रों की अपनी कुछ मांगें भी होंगी. फिल्म से दर्शकों को जोड़ने के लिए पात्रों के मानवीय पहलुओं को भी रेखांकित करना ही पड़ता है. मेरी नवीनतम फिल्म 'हजार चौरासी की मां' की पृष्ठभूमि में नक्सलवाद है, पर यहां भी केंद्र में मां आ जाती है. बेटे की मौत के बाद मां उस की गतिविधियों को जानने के प्रयास में स्वयं बदलती जाती है. इस तरह की मां अब तक हिंदी फिल्मों में तो नहीं आई है. ●

शिश्व सुलभ साहित्य

कितना महंगा धर्म

''कितना महंगा धर्म '' समाज व धर्म के उन स्वयंभू ठेकेदारों के लिए मात्र एक चुनौती ही नहीं है जो शायद इस भ्रम में हैं कि इस बीसवीं सदी में भी गंदे हथकंडों द्वारा विवेक और बुद्धि की आवाज को दबाया जा सकता है यह उन विचित्र और पोचे आदशो एवं मूर्खतापूर्ण मान्यताओं को उजागर करने वाला ज्वलंत विचार भी है जो धर्म के घने अंधकार से निकाल कर वैज्ञानिक चिंतन के उजाले की ओर ले जाने की प्रेरणा व साहस देता है.

सखा बोरड़



मूल्य रु. 15

ज ही अपने निकटतम पुस्तक विक्रेता से खरीदें या आदेश भेजें
ल्ली बुक कंपनी, एम-12 कनाट सरकस, नई दिल्ली-110001. दिल्ली प्रकाशन: पटना
ोन : 655286); लखनऊ (फोन : 238856); मद्रास (फोन : 8268138); बैंगलौर
ोन : 2268091); कलकत्ता (फोन : 298981); साहिबाबाद (फोन : 8768817)

ी. द्वारा इस पुस्तक को मंगवाने पर मूल्य का 25% भेजना अनिवार्य डाक व्यय अतिरिक्त

विशेष छूट कूपन
यहां से काटिए

अग्रिम राशि भेजने पर
मूल्य केवल रु 14/-
डाक खर्च सहित

मेरी एक सहेली शरमीली है और लड़कों से हमेशा दूर रहती है. एक दिन जब वह बस में सफर कर रही थी. उसे एक लड़के की बगल वाली सीट खाली मिली और वह वहां बैठ गई. शरमीली होने के कारण वह लड़के की विपरीत दिशा में देख रही थी.

कुछ देर बाद उस के बाएं कंधे से दुपट्टा फिसल कर उस लड़के की तरफ गिर गया. परंतु मेरी सहेली ने उस ओर मुड़ कर न देखा और पूर्ववत अपनी दिशा में ही देखते हुए दुपट्टा खींचने की कोशिश करने लगी. परंतु दुपट्टा ऊपर न आ सका.

उस ने कई बार कोशिश की, परंतु दुपट्टा ऊपर न आया. लेकिन वह संकोचवश मुड़ कर भी नहीं देख रही थी. तभी बगल में बैठे लड़के ने कहा, "एक्सक्यूज मी."

जब मेरी सहेली ने उस की तरफ देखा तो पाया कि वह दुपट्टे की जगह उस की कमीज का कोना पकड़ कर खींच रही है. –लनिता मंडोनिया



यह भी खूब रही

*

मेरे पापा को जब भी बाजार से खरीदी कोई नई वस्तु ला कर दिखाई जाती है तो उस का मूल्य जान कर वह यही कहते हैं, "महंगी है."

एक दिन मैं अपने लिए 100 रुपए की एक नई कमीज खरीद कर लाया और पापा से उस का मूल्य आंकने को कहा.

पापा ने कमीज को उलटपलट कर देखने के बाद उस की कीमत 150 रुपए बताई, परंतु जब मैं ने उन्हें असली कीमत बताई तो वह आदतानुसार हमेशा की तरह बोले, "महंगी है."

इतना सुनते ही वहां उपस्थित सभी लोग हंसने लगे और पापा ने जब अपनी कही बात पर गौर किया तो झेंप गए. –विकी हुरा

*

एक बार मैं अपने ताऊजी व उन के परिवार के साथ ट्रेन में सफर कर रहा था. सफर के दौरान ताऊजी व ताईजी में अचानक किसी बात पर अनबन हो गई और ताईजी रो पड़ीं.

उन्हें रोता देख कर उन के सब से छोटे बेटे ने ताऊजी से पूछा, "पापा, मम्मी क्यों रो रही हैं?"

इस पर ताऊजी तीखी सी मुसकान होंठों पर लाए और बोले, "बेटा, तेरे मामा के जीजा मर गए हैं न, इसलिए रो रही हैं."

उन की यह बात बेटा तो समझ न पाया, परंतु उन का आशय जैसे ही हमारी समझ में आया, हम सभी जोर से हंस पड़े. ताईजी भी मुंह छिपा कर मंदमंद मुसकराने लगीं. –देवप्रिय गौतम

*

पिछले वर्ष मेरी ननद बच्चों सहित गरमी की छुट्टियां बिताने हमारे घर आई हुई थी.

एक दिन हम ने पिकनिक मनाने का कार्यक्रम बनाया और स्थानीय झील जा पहुंचे.

खानेपीने के पश्चात बच्चों ने नौकायन की इच्छा जाहिर की और सभी लोग नौकाविहार के लिए निकल गए, पर मैं और मेरी सास वहीं सामान के पास रुकी रहीं और दरी पर लेट गईं. थोड़ी ही देर बाद हमें झपकी आ गई. जब आंख खुली तो देखा कि हमारे आम के टोकरे से बहुत से बंदर आम निकाल रहे हैं.

हमें जागा हुआ देख कर वे सभी तुरंत पेड़ पर चढ़ गए. जब मैं ने टोकरी में झांका तो उस में सिर्फ 1 ही आम शेष रह गया था. तभी बचपन में पढ़ी कहानी 'बंदर और टोपीवाला' मेरे मनमस्तिष्क में घूम गई. उसी कहानी का अनुसरण करते हुए मैं ने उस बचे आम को उठाया, उन बंदरों के सामने उसे अच्छी तरह जांचापरखा और दूर फेंक दिया.



पर यह क्या, तुरंत ही उस पेड़ से एक छोटा सा बंदर कूदा और उस आम को भी उठा ले गया और मैं मूर्खों की भांति उसे देखती रह गई. –ललिता भाटिया ●

इस स्तंभ के लिए आप अपने, मित्रों व संबंधियों के अनुभव भेज सकते हैं. प्रत्येक प्रकाशित संस्मरण पर 50 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. अपने संस्मरण इस पते पर भेजें: सरिता संपादकीय विभाग, ई 3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.



क तरफ कई दर्शक यहां तक कि बच्चे भी 'आहट' जैसे रहस्य और रोमांच से भरपूर वने धारावाहिक को बंद कराने के लिए लत का दरवाजा खटखटा रहे हैं, तो दूसरी क इस तरह के डरावने धारावाहिकों के ण की संख्या में अप्रत्याशित बढ़ोतरी होती रही है.

अभी पिछले ही दिनों इसी तरह का एक धारावाहिक 'वो' का प्रसारण जी टीवी पर शुरू हुआ है. यह धारावाहिक हिल स्टेशन पंचगनी के 7 दोस्तों (जिन में 6 लड़के और 1 लड़की है) की कहानी है. यह सभी एकदूसरे पर यकीन करते हैं और अपनी निस्वार्थ दोस्ती, एकता, दृढ़ता और ताकत के बल पर दुश्मन के खिलाफ सामूहिक लड़ाई लड़ते हैं. उन का दुश्मन सिर्फ 'वो' है, जो कि एक जोकर है, पर वह इनसान नहीं बल्कि भूत है, जो लोगों को परेशान करता रहता है.

उस का निशाना अकसर बच्चे होते हैं. वास्तव में यह एक बौना है, जो लोगों के बारबार चिढ़ाए जाने से परेशान हो कर आत्महत्या कर लेता है, पर उस की आत्मा को शांति नहीं मिलती और वह भूत बन जाता है. मजेदार बात तो यह है कि 'वो' किडनेप किए गए बच्चे को परेशान नहीं



करता है. बहरहाल, पंचगनी के सातों दोस्त मिल कर बच्चों को 'वो' के चंगुल से छुड़ाते रहते हैं.

*

पिछले 15 साल के अपने कैरियर में शेखर सुमन ने कभी प्रेस कान्फ्रेंस करना जरूरी नहीं समझा. अब तक उन के बारे में काफी कुछ छपता रहा, पर वे हमेशा चुप रहे. जब अखबारों में उन के बारे में छपा कि वे धारावाहिकों में काम करने के लिए प्रति एपिसोड 1 लाख रुपए लेते हैं, तब भी उन की चुप्पी बनी रही. लेकिन जब पिछले दिनों आयकर वालों ने उन के यहां छापा मारा तो उन्हें तुरंत सफाई देने की याद आई और फिर उन्होंने प्रेस कान्फ्रेंस भी कर डाली.

वे कहते हैं, "मेरे बारे में पत्रकार बिना मुझ से सही जानकारी लिए कुछ भी लिखते रहे हैं. पत्रकारों ने लिखा है कि मैं प्रति एपिसोड के 1 लाख रुपए लेता हूं, जो कि पूरी तरह से गलत है. जो भी व्यक्ति धारावाहिक की अर्थव्यवस्था के बारे में जानता है वह समझ सकता है कि मुझे ही क्या किसी को भी 1 लाख रुपए नहीं मिल सकते. लोगों ने लिखा कि मैं ने बंगला खरीद लिया है, मेरे पास गेस्ट हाउस है. यह सब भी गलत बकते हैं. मेरे पास कोई बंगला नहीं. मेरी पत्नी के पास जेवर भी नहीं हैं. मैं ने पिछले 2 साल से अपना बैंक लाकर भी नहीं खोला है. मैं ने अभी एक दूसरा फ्लैट खरीदा है, जिस का निर्माण चल रहा है और इस के लिए मैं ने बाजार से 16 लाख कर्जा लिया है."

उन्होंने बताया, "वास्तव में मैं अपने चार्टर्ड एकाउंटेंट (सी.ए.) की वजह से आयकर वालों की चपेट में आ गया. मैं एडवांस टैक्स के रूप में 9 लाख रुपए दे चुका हूं, मगर मेरे सी.ए ने आयकर विवरणी जमा नहीं की थी, वह भी पिछले 3 साल से. जबकि उस ने मुझ से कहा कि सब कुछ सही जा रहा है.

"जब आयकर वालों ने मेरे घर छापा मारा तो बहुत अच्छे माहौल में बात हुई. मैं ने उन्हें सब कुछ बताया. मेरे सी.ए. किशोर जैन को बुलाया गया, पता चला कि सारी गलती उसी की है, पर सजा मुझे भोगनी पड़ रही है. दंड भी मुझे भरना पड़ रहा है. जिस दिन आयकर वालों ने छापा मारा उस दिन तक यानी कि 3 साल और 8 माह के बीच मेरी आय है कुल 51 लाख रुपए. इस के लिए मैं ने 9 लाख रुपए जमा किए हुए हैं. बाकी के दंड के साथ जमा करना है. यदि मेरे सी.ए. ने आयकर रिटर्न फाइल कर दी होती तो यह नौबत न आती. दूसरी बात, प्रेस ने मेरे बारे में जो कुछ बढ़ाचढ़ा कर लिखा है, उस से मैं आयकर वालों की निगाहों में आ गया. मुझे तो सिर्फ 1 नंबर के चेक से ही पैसे मिलते हैं. मैं तो चाहूंगा कि पत्रकार इस सच को छापें और दोबारा हर चीज मुझ से कनफर्म करने के बाद ही छापें, अन्यथा उन के कुछ भी लिख देने से मेरे जैसा इनसान परेशानी में पड़ जाता है."



वाह, क्या बात है. जब उन के बारे में लिखा जा रहा था कि उन्होंने बंगला खरीदा या उन की आय 1 लाख रुपए प्रति एपिसोड है, उसी वक्त शेखर ने प्रेस से बात की होती तो यह नौबत ही न आती. ●

चंचल छाया

★★★★ अति उत्तम ★★★ उत्तम ★★ मध्यम ★ साधारण ○ बेकार

★ प्यार किया तो डरना क्या

निर्माता : बंटी वालिया और सुहेल खान
र्देशक : सुहेल खान
ंगीत : जतिन ललित, हिमेश देशभैया, साजिद ाजिद
ुख्य कलाकार : धर्मेंद्र, सलमान खान, काजोल, रबाज खान, अंजला जावेरी, किरन कुमार, ुनिका, अशोक सर्राफ और टिकु तलसानिया.

'प्यार किया तो डरना क्या' एक संगीत धान कामेडी फिल्म है, जिस का आधार है क प्रेम कहानी. यह प्रेम कहानी बड़ी सीधी सी जिसे खींच कर काफी लंबा कर दिया गया . नायक सलमान खान द्वारा की गई कामेडी ी द्वितीय श्रेणी की है. कालिज जाने वाले ुवाओं को तो इस तरह की कामेडी पसंद आ कती है, मगर गंभीर दर्शकों को यह सब छछोरापन ही लगेगा. कालिज में पढ़ाई न कर छात्रों द्वारा छेड़छाड़ करना, हुड़दंग मचाना, ालिज के प्रिंसिपल का मसखरापन दिखा कर मारे निर्मातानिर्देशक आखिर क्या दिखाना ाहते हैं?

चाचा ठाकुर (धर्मेंद्र) और उस का भतीजा शाल (अरबाज खान) गांव में रहते हैं. मुसकान काजोल) विशाल की बहन है. वह शहर में ढ़ने आती है. कालिज में उस की मुलाकात सूरज सलमान खान) से होती है. दोनों में प्रेम हो ाता है. विशाल को यह सब पसंद नहीं आता. ह मुसकान को वापस गांव ले आता है. पीछेपीछे रज भी गांव पहुंच जाता है. सूरज मुसकान के र रह कर धीरेधीरे चाचा ठाकुर और विशाल का दिल जीत लेता है और मुसकान उस की हो जाती है.

फिल्म की इस कहानी में कोई नयापन नहीं है. फर्क है तो सिर्फ प्रस्तुतीकरण का. निर्देशक सुहेल खान की अपनी अलग स्टाइल है. उस ने सलमान खान को ज्यादा से ज्यादा मौका दिया है. पहले दृश्य में जब सलमान खान कमीज उतार कर हाथों में गिटार लिए परदे पर आता है तो हाल में बैठे दर्शक सीटियां बजा कर उस का स्वागत करते हैं. परंतु ज्योंज्यों कहानी आगे बढ़ती है, उस की ऊटपटांग हरकतें देख कर दर्शक उकताने लगते हैं.

फिल्म का निर्देशन कुछ हद तक अच्छा है. निर्देशक ने मध्यांतर से पहले फिल्म को काफी ढील दी है, मध्यांतर के बाद जा कर कहीं वह फिल्म को संभाल पाया है.

फिल्म का गीतसंगीत पक्ष अच्छा है. छायांकन भी काफी अच्छा है. छायाकार ने आउटडोर लोकेशनों की अच्छी फोटोग्राफी की है. 'ओढ़ ली चुनरिया तेरे नाम की' गीत की लोकेशन तो खासी अच्छी है. फिल्म में तीन संगीतकार हैं. तीनों ने अच्छा संगीत दिया है. एक कव्वाली पर अंजला जावेरी ने मदमस्त नृत्य किया है.

अभिनय की दृष्टि से सलमान खान सामान्य रहा है. उस ने उछलकूद काफी की है, साथ ही बारबार अपनी बाजुओं के डौले दिखाने की कोशिश भी की है. काजोल ठीकठाक रही है. उस ने गंभीर अभिनय किया है, कहीं कोई अंगप्रदर्शन नहीं किया. अरबाज खान पूरी फिल्म में भावहीन रहा है. धर्मेंद्र अब काफी बूढ़ा हो गया है. उस से संवाद तक अब नहीं बोले जाते. अंजला जावेरी में प्रतिभा तो है मगर अभी तक



फिल्म 'प्यार किया तो डरना क्या' के एक दृश्य में सलमान खान और काजोल : कामेडी और रोमांस साथसाथ.

किसी निर्देशक ने उस की प्रतिभा को पहचाना नहीं है.

O उस्तादों के उस्ताद

निर्माता : डी. एन. जोशी
निर्देशक : टी. एल. वी. प्रसाद
मुख्य कलाकार : मिथुन चक्रवर्ती, जैकी श्रोफ, मधु, विनीता, मोहन ज़ोशी और असरानी.

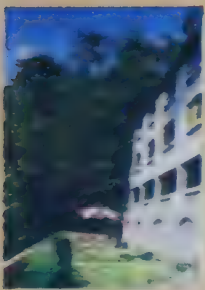
लगभग 30-35 साल पहले चरित्र अभिनेता शेख मुख्तार की फिल्म 'उस्तादों के उस्ताद 'आई थी. वह फिल्म अच्छीखासी चली भी थी. उसी की नकल पर एक और 'उस्तादों के उस्ताद' का निर्माण किया गया है. यह एक अपराध प्रधान फिल्म है, जिस में सभी चालू मसालों का सहारा लिया गया है.

फिल्म की कहानी काफी घिसीपिटी है. मिथुन चक्रवर्ती और जैकी श्रोफ एकदूसरे के उस्ताद दिखाए गए हैं. दोनों का धंधा चोरी का है. मिथुन तिजोरियां तोड़ता है तो जैकी श्रोफ जुर्म की दुनिया का बादशाह है. दोनों आपस में टकराते हैं और दोस्त बन जाते हैं. उन की जिंदगी में प्रेमिकाएं आती हैं कंचन (मधु) जैकी से प्रेम करती है और सपना (विनीता) मिथुन को चाहती है. दोनों नेकी की राह पर चलने की कसमें खाते हैं मगर खलनायक (मोहन जोशी) एक चाल चल कर दोनों को आपस में लड़वाता है. जैकी श्रोफ को 7 साल की सजा हो जाती है. कंचन उसे ठुकरा देती है. उधर सपना भी मिथुन से किनारा कर लेती है.

फिल्म की कहानी में कई झोल हैं. फिल्म के कई अंश अन्य फिल्मों से उड़ाए हुए लगते हैं. निर्देशन की दृष्टि से फ़िल्म कमजोर है. संपादन भी कमजोर है. निर्देशक ने फिल्म का क्लाइमैक्स कुछ रोचक बना दिया है. फिल्म में मारधाड़ ज्यादा है, अपहरण, नृत्य, गोलीबारी सभी कुछ भर दिया गया है.

अभिनय की दृष्टि से सभी कलाकारों ने साधारण स्तर का अभिनय किया है. मिथुन तो अब बूढ़ा हो चला है. जैकी श्रोफ से अधिक उम्मीद करना ही बेकार है. मधु भी फिल्मों में फ्लाप हो चुकी है. विनीता नई अभिनेत्री है. दोनों अभिनेत्रियों में एकदूसरे से आगे बढ़ने की होड़ भी दिखाई देती है. अन्य कलाकार साधारण हैं. फिल्म का गीतसंगीत पक्ष भी साधारण है. छायांकन सामान्य है. ●

हनीमून इन



शिमला

यह छोटा किंतु अनूठा रिसार्ट, 'ब्रिटिश राज की ग्रीष्मकालीन राजधानी' शिमला माल के केंद्र बिंदु 'लिफ्ट' से मात्र 10 मिनट की पैदल दूरी पर स्थित है. प्रत्येक कमरे की खिड़की से दिखाई देने वाली देवदार के जंगलों की हरीभरी घाटी तथा अद्भुत सूर्यास्त का दृश्य मंत्रमुग्ध कर देता है.

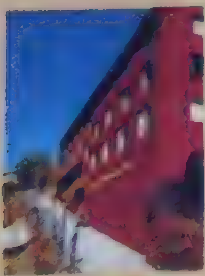
☆ विभिन्न प्रकार के व्यंजन ☆ रेस्तरां ☆ डिस्कोथिक ☆ विडियोगेम्स ☆ हौर्स राइडिंग ☆ हर एक कमरे से रोमांटिक दृश्य ☆ रंगीन टी. वी. उपग्रह चैनल सहित.



मनाली

बर्फ से ढके पर्वतों से घिरे इस उत्कृष्ट रिसार्ट में आप अपने साथी अथवा अपने परिवार के साथ प्रकृति की उत्तम समरसता का अनुभव कर के तरोताजा हो सकते हैं. यहां से जंगलों और पर्वतों का मनोरम दृश्य देखा जा सकता है. यहां विभिन्न प्रकार की सुविधाएं हैं:–

☆ पुस्तकालय ☆ दो रेस्तरां ☆ बिलियर्ड ☆ बच्चों के लिए झूले व विडियोगेम ☆ टेबल टेनिस ☆ डिस्कोथिक ☆ रंगीन टी. वी. उपग्रह चैनल सहित.



मसूरी

यह होटल 'पहाड़ों की रानी' मसूरी के विख्यात माल रोड के केंद्र में स्थित है. प्रत्येक कमरे से दून घाटी और उस में सितारों की चमकती रोशनी का खूबसूरत, जीवंत और अद्भुत दृश्य देखा जा सकता है.

☆ चैनल म्यूजिक ☆ रंगीन टी. वी. उपग्रह मनोरंजन सहित ☆ रूम सर्विस ☆ स्वादिष्ट भोजन ☆ कार पार्किंग.



आरक्षण केंद्र-ट्रेवलईज :

यह कूपन देने पर ट्रेवलईज या होटल काउंटर से आरक्षण पर 'सरिता' के पाठकों को 10 % की विशेष छूट.

गाने कैसेकैसे

मुंबइया संगीत जगत की सुपरहिट जोड़ी नदीमश्रवण के आउट होने के बाद जिस जोड़ी के उन की जगह लेने की संभावना है, उस में शामिल हैं, जतिनललित बंधु. उम्मीद है कि यह जोड़ी जल्दी ही नंबर वन के मुकाम पर पहुंच जाएगी.

इन के द्वारा संगीतबद्ध फिल्म 'गुलाम' का एक गाना है, 'आखों में तुम ने यह क्या कह दिया...तनहाई में हम मिले, इस तरह



बारिश में शोला भड़कने लगा...' इसे कुमार शानू और अलका याज्ञनिक ने बहुत बेहतर अंदाज में गाया है. गाने की खास बात इस की रिद्म और स्पीड है. यह न तो बहुत तेज और न बहुत ही धीमी रफ्तार का गाना है. पार्श्व में पूरे गाने में चांगो की साफ्ट रिद्म बेहद कर्णप्रिय है.

कुल मिला कर गाना श्रोताओं को अपना 'गुलाम' बनाने में सक्षम है.

*

संगीतकार विशाल की अगली फिल्म 'श्याम घनश्याम' का एक गाना है, 'श्याम घनश्याम...' इसे हरिहरण और सुरेश वाडेकर ने गाया है. गाने की खास बात इस में एक ही अंतरा है और अंत में लता मंगेशकर की मधुर आवाज में इस के स्थायी को गाना है. वैसे पूरे गाने को दोनों पुरुष गायकों ने बेहतर जुगलबंदी में गाया है. लेकिन फिर भी गाने में वह छाप नजर नहीं आई जैसी फिल्म 'माचिस' के 'चप्पाचप्पा...' में थी. गाने की गति भी धीमी है. कुल मिला कर गाना सुनने योग्य है.

*

संगीतकार उत्तम सिंह अब अन्य संगीतकारों के लिए एक बड़ी चुनौती के रूप में सामने हैं. उन के संगीत की खास बात यह है कि वह सहज गुनगुनाने वाली धुनें कंपोज करते हैं.

उन की नई फिल्म 'दुश्मन' का एक गाना है, 'आवाज दो हम एक हैं...' इसे लता मंगेशकर और उदित नारायण ने गाया है. लता की निरंतर जवान होती आवाज सुन कर आनंद आता है. पार्श्व की जादुई रिद्म कमाल की है, हालांकि कंपोजिंग पुराने गानों जैसी है. यह गीत लोकप्रिय होगा.

*

हाल ही में लंदन से पधारे एक गायक कमाल खां भारत के तथाकथित श्रोताओं के बीच अपना कमाल दिखा रहे हैं. इस की वजह यह है कि उन के द्वारा गाया एक गाना, 'आआ जाने जाना...', फिल्म 'जब प्यार किया तो डरना क्या' के अलावा एचएमवी के पौप अलबम में भी शामिल हो चुका है. वैसे कमाल खां की आवाज इतने कमाल की है नहीं. गाने में गिटार का इस्तेमाल अच्छा है. लेकिन तमाम कमजोरियों के बाद भी गाना चल रहा है... यह एक कमाल ही है.

–आरती जैन ●



अप्रैल (द्वितीय) 1998
चंपक
चंपक
सुनो कहानी
मोमबत्ती का रहस्य
ज्ञान की परख
खरगोश की टांग
दोस्त की बहादुरी
अकड़बाज चूहा
ज्ञान बढ़ाओ
चंपक समाचार
शब्दजाल प्रतियोगिता
मजेदार चित्रकथाएं
पीलू
मौत की घाटी
मन बहलाओ
देखो हंस न देना
नन्ही कलम से
चंपक : दिल्ली प्रेस भवन,
ई-3, झंडेवालान,
नई दिल्ली - 110 055.



खेलों की खिलाड़ियों की

● जसदेव सिंह

मैं कह नहीं सकता कि अन्य देशों के खिलाड़ियों की यह मानसिकता है या नहीं, पर हमारे खिलाड़ियों में निश्चित रूप से यह कमजोरी है कि 1-2 स्पर्धाओं में जीतने के बाद न जाने वे क्यों शिथिल पड़ जाते हैं और सफलता की शृंखला को जारी नहीं रख पाते. ऐसा पहले भी हुआ, अब भी हो रहा है. हाल ही के 2 उदाहरण हमारे सामने हैं.

आस्ट्रेलिया जैसी विश्व क्रिकेट की वरिष्ठ और दिग्गज टीम को हम ने 3 में से 1 नहीं, 2-2 टेस्ट मैचों में हराया और हराया भी बहुत ही प्रभावी ढंग से. पारी से हराना माने रखता है और वह हम ने किया. क्रिकेट खेल के हर विभाग में चाहे गेंदबाजी हो, चाहे बल्लेबाजी या क्षेत्ररक्षण, हमारे खिलाड़ियों ने अपने जौहर दिखाए. आस्ट्रेलिया के विरुद्ध विजय प्राप्ति से देश की इस खेल में प्रतिष्ठा तो ऊंची हुई ही, साथ ही कप्तान अजहरुद्दीन का एक खिलाड़ी के रूप में जो सूर्य लगभग अस्त होता दिखाई दे रहा था, वह पुनः पूरे जोरों के साथ चमक उठा. दोबारा कप्तान बनने के बाद अजहर का खेल फिर चमका और पूर्व कप्तान तूफानी बल्लेबाज सचिन तेंदुलकर के बल्ले की धार भी फिर से लौट आई. टेस्ट जीतने पर अजहर की खुशी का तो ठिकाना ही न था. तुरंत भविष्यवाणी कर दी कि हम तीसरा टेस्ट भी जीतेंगे और इस तरह यह शृंखला 3-0 से हमारे पक्ष में रहेगी. क्या ऐसा हुआ? नहीं हुआ, यह सभी जानते हैं.

खेलों में भी यह प्रचलित धारणा आमतौर पर सही सिद्ध होती है कि 'घमंडी का सिर नीचा'. कछुए और खरगोश की कहानी सभी जानते हैं, फिर भी प्रसन्नता के क्षणों में मन में दंभ जागृत हो ही जाता है. परिणाम यही रहा कि भारत, चेन्नई और कलकत्ता में शुरू के दोनों टेस्ट शान से जीत कर बंगलौर में तीसरे और अंतिम टेस्ट में मात खा गया.

मेरा यह सब लिखने का तात्पर्य यह नहीं कि हारने का कारण घमंड ही था, पर मैं यह अवश्य मानता हूं कि खुशी के क्षणों में हम बड़ा बोल तो बोल जाते हैं, लेकिन जब बारी कुछ कर दिखाने की आती है, तो कहीं न कहीं हम अपने खेल प्रदर्शन के प्रति उतने सतर्क और सजग नहीं रह पाते, जितना कि रहना चाहिए. मन में एक निश्चिंतता आ ही जाती है. दूसरी ओर प्रतिद्वंद्वी टीम के सामने एक लक्ष्य रहता है कि एक बार हार गए, दो बार हार गए, लेकिन हर बार नहीं हारना है. उस के खिलाड़ी मन लगा कर दृढ़ निश्चय के साथ खेलते हैं. हार तो गए ही, पर अब जो जीत गए तो कुछ प्रतिष्ठा तो बचेगी ही.

बंगलौर टेस्ट में अपनी हार के प्रमुख कारण, यानी लापरवाही को नकारते हुए अजहर ने कहा, 'हम में से कुछ ने बहुत खराब शाट खेले. पूरे टेस्ट में हमारी गेंदबाजी और क्षेत्ररक्षण खराब रहा'.

फिर आप लापरवाही किसे कहेंगे? जाहिर है, लापरवाही हो या न हो, जीत के बाद का खुमार तो था ही, कि तीसरा टेस्ट भी हमारे जेब में है. आस्ट्रेलियाई खिलाड़ियों ने वह गलतफहमी दूर कर दी और 30 वर्षों में भारतीय धरती पर पहली टेस्ट विजय प्राप्त की, साथ ही 12 टेस्ट मैचों के बाद यह आस्ट्रेलिया की पहली जीत थी.

पाकिस्तान से लगातार तीन हाकी टेस्ट जीत कर हमारी टीम के खिलाड़ी खुशी से

फूल कर कुप्पा हो गए. मार्च के शुरू में अपने पाकिस्तान भ्रमण के दौरान खेले गए 4 टेस्ट मैचों में भारत शुरू के दोनों मैच हार गया. पेशावर में 1-4 और रावलपिंडी में दूसरे टेस्ट में 1-2 से पराजित हो भारतीय खिलाड़ियों ने अपनी प्रतिष्ठा को दांव पर लगा देख जोश, निश्चय और लगन से जो खेल लाहौर और कराची में खेला, उसी का परिणाम था कि दोनों स्थानों पर उन्हें क्रमशः 4-3 और 2-0 से विजय प्राप्त हुई. शृंखला



2-2 की प्राप्ति से भारतीय हाकी का मस्तक ऊंचा उठ गया.

सोने पर सुहागा तब हुआ, जब दिल्ली में 19 मार्च को खेले गए पांचवें टेस्ट में भारतीय खिलाड़ियों ने अपने खेल के जौहर एक मरतबा फिर दिखाए. उसी दिन अपने पद की शपथ ले कर देश के प्रधानमंत्री पद पर आसीन हुए अटल बिहारी वाजपेयी की उपस्थिति में भ्रमणकारी पाकिस्तानी टीम को 2 से पराजित कर हमारी टीम ने शृंखला में बढ़त हासिल कर ली.

टीम के प्रशिक्षक ओलिंपियन भास्कर ने बड़े आत्मविश्वास के साथ विजय का सिलसिला जारी रखने का आश्वासन दिया. खिलाड़ी और कप्तान उत्साह और उमंग से भरपूर थे. उधर पाकिस्तान के कोच इस्लाहउद्दीन लगातार इन तीन पराजयों के बाद खामोश नहीं थे. बाद के तीनों मैचों के लिए उन्होंने टीम के साथ आए अन्य पूर्व अंतर्राष्ट्रीय खिलाड़ियों वहीद, शाहनाज और हनीफ मुहम्मद से सलाह कर अपनी रणनीति बनाई. एक निश्चित योजना के तहत खेलते हुए पाकिस्तान ने जालंधर टेस्ट में अपने कुछ जलवे दिखाए, लेकिन किसी तरह भारतीय टीम 2-2 की बराबरी पर मैच अनिर्णीत रखने में सफल रही.

बाद की कहानी बड़ी दुखदायी रही. हैदराबाद और चेन्नई टेस्ट मैं ने भी देखे. पाकिस्तान खेल के हर विभाग में भारत से बेहतर खेला. उस ने 3-1 के अच्छे स्कोर से विजय प्राप्त की. शृंखला फिर बराबर हो गई. इस प्रकार चेन्नई में 8वें और अंतिम टेस्ट मैच का महत्त्व बढ़ गया. दोनों ही टीमों के लिए वह टेस्ट जीतना जीवनमरण की बात बन गया

पाकिस्तानी खिलाड़ियों ने इस्लाहउद्दीन

के मार्गदर्शन में बनाई गई योजना पर अमल किया. 'कभी भी खिलाड़ी बदल लो' के नियम का पूरापूरा लाभ उठाते हुए इस्लाहउद्दीन बदलबदल कर हर खिलाड़ी को आजमाते रहे. यही नहीं, हैदराबाद की तरह चेन्नई में भी पाकिस्तानी टीम की कप्तानी बीच खेल में कभी कामरान अशरफ करते रहे, तो कभी शाहबाज और कभी ताहिर जमां. (यों टीम के अधिकृत कप्तान ताहिर ज़मां थे.)

2 टेस्ट हारने के बाद पाकिस्तानी हाकी अधिकारियों में शाहबाज और ताहिर जमां को ले कर विवाद उत्पन्न हुआ था और एक प्रशिक्षक ने तो उन्हें टीम से हटा देने तक की बात कही थी. लेकिन इस सब के बावजूद इन दोनों अनुभवी खिलाड़ियों में चयनकर्ताओं ने अपना विश्वास बनाए रखा. अतः परिणाम मनचाहा मिला. पाकिस्तान ने चेन्नई टेस्ट जीत कर शृंखला जीत ली.

भारतीय कोच ने भी खेल के दौरान खिलाड़ी बदले, पर उतनी बार नहीं. कप्तान धनराज पिल्ले और दोएक अन्य खिलाड़ी चोट लगने के कारण नहीं खेल पाए, इस से भी भारतीय प्रदर्शन पर प्रभाव पड़ा.

कुल मिला कर एक बात साफ है कि हमारी टीम ने पाकिस्तान की तरह कोई नीति या योजना निर्धारित नहीं की थी, यह साफ था. हमारे खिलाड़ियों पर मानसिक दबाव था, वरना तो चेन्नई में केवल उत्तरार्ध के खेल को छोड़ हैदराबाद सहित दोनों मैचों में भारतीय खिलाड़ी ही हावी थे. हैदराबाद में तो कप्तान धनराज पिल्ले भी खेले थे. मैदानी गोल करने के अवसर भारतीय खिलाड़ियों को पाकिस्तान से बहुत अधिक मिले, किंतु उन का लाभ नहीं लिया जा सका. गोल मुख पर पहुंच कर हमारे खिलाड़ी सीधा निशाना नहीं साध सके.

पाकिस्तान को मैदानी गोल करने के अवसर कम मिले, पर जो मिले, उन में से कुछ का लाभ ले उन्होंने गोल कर दिए. यों पेनल्टी कार्नर भारत और पाकिस्तान की कमजोरी है. उस कमी को पूरा करने के लिए अति आवश्यक है कि भारतीय खिलाड़ी मैदानी गोल करने की क्षमता प्राप्त करें.

वैसे भारतपाकिस्तान एकदूसरे से खेल कर भले ही प्रसन्न हो लें, पर अंतर्राष्ट्रीय हाकी में इन आपसी मुकाबलों का मेरी राय में तो कोई लाभ नहीं होने वाला. भारत को तो इस शृंखला से नुकसान ही हुआ है. अब जबकि अगले महीने 20 मई से विश्व कप में खेलना है, पाकिस्तान से पराजित हो, हमारे खिलाड़ी अपना मनोबल कितना ऊंचा रख पाएंगे, इस का उत्तर देना असंभव नहीं, तो कठिन तो है ही.

यदि भारतपाकिस्तान के बीच 12 वर्षों बाद यह हाकी संबंध फिर से स्थापित करने ही थे तो कम से कम ठीक विश्व कप हाकी से पहले ऐसा नहीं किया जाना चाहिए था, ऐसा मेरा सोचना है. हां, समय से यह शृंखला खेली जाती, तो अपनी कमजोरियां दूर करने का कुछ समय तो मिलता. अब इस बचे हुए समय में वैसा करना कठिन होगा. ●

विश्व बाल साहित्य

विश्व बाल पुस्तकें

आप के बच्चों के लिए अति आवश्यक



- मनोरंजक
- ज्ञानवर्द्धक
- मार्गदर्शक

आकर्षक रंगीन चित्रों में चीकू, चुंचू, पप्पू, पिटू और मोती भी.

350 से अधिक हिंदी और अंग्रेजी की पुस्तकें

उपहार के लिए सब से उत्तम

दिल्ली बुक कंपनी,

एम-12, कनाट सरकस, नई दिल्ली-110001

फोन : 3321313

व्यक्तिगत विज्ञापन

वैवाहिक विज्ञापन

वर चाहिए

कुर्मी, 28/158, एम.ए., एम.एड., पत्रकारिता में पी.जी. डिप्लोमा, सुंदर, स्मार्ट कन्या हेतु संभ्रांत परिवारीय सुयोग्य सरकारी सेवारत/लेक्चरर/बैंक सेवारत वर चाहिए. उच्च शिक्षित, व्यवसायी भी स्वीकार. शीघ्र विवाह, संपूर्ण बायोडाटा सहित लिखें. वि.नं. 5567, सरिता, नई दिल्ली-110055.

उत्तरप्रदेशीय मैथिल ब्राह्मण कन्या 23 वर्षीया, 157 सें.मी., 48 कि.ग्रा., होम साइंस ग्रेजुएट, अंगरेजी में पोस्टग्रेजुएशन हेतु अध्ययनरत, पिता प्रथम श्रेणी राजपत्रित अधिकारी के लिए डाक्टर, इंजीनियर, व्यवसायी, बिजनेस एक्जीक्यूटिव से प्रस्ताव आमंत्रित. वि.नं. 5579, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुर्मि क्षत्रिय, 23, 160, एम.ए., अत्यंत सुंदर, मेधावी कन्यार्थ सुव्यवस्थित वर चाहिए. वि.नं. 5580, सरिता, नई दिल्ली-110055.

विश्वकर्मा, मंगली, 26/5'3", विज्ञान स्नातक, गेहुआं रंग, गृहकार्यदक्ष, आकर्षक, सौम्य कन्या हेतु सेवारत/सुव्यवस्थित, सजातीय वर चाहिए. पिता सेवानिवृत्त वरिष्ठ अधिकारी. वि.नं. 5581, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जाटव, 23, 5'1", स्नातक, कंप्यूटर कोर्स, सहायक (अपोलो हास्पिटल), गौरवर्ण, सुंदर कन्या हेतु वर. जातिबंधन मुक्त, दिल्लीवासी को प्राथमिकता. वि.नं. 5582, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कोरी जुलाहा, 26, 155, 8,000/-, स्नातकोत्तर, केंद्रीय सेवारत दिल्ली हेतु सजातीय वर चाहिए. वि.नं. 5583, सरिता, नई दिल्ली-110055.

बाल्मिकी पंजाबी, 23, 5'3", बी.ए., बी.एड., एम.एड. अध्ययनरत, सुंदर, सुशील, गृहकार्यदक्ष, स्लिम कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए. वि.नं. 5584, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अकेली, स्वयं निर्णायक, कार्यरत, 40/8,000/-, को अधिकतम 44 तक योग्य स्थानांतरण संभव वर. वि.नं. 5585, सरिता, नई दिल्ली-110055.

ब्राह्मण कन्या, 24, 5'3", शांडिल्य गोत्र, स्नातक (प्रतिष्ठा), गोरा रंग, गृहकार्यों में दक्ष, के लिए सुयोग्य, व्यवसायी अथवा सुनियोजित ब्राह्मण वर चाहिए. उपजाति बंधन नहीं. प्रथम बार में ही बायोडाटा भेजकर शीघ्र संपर्क करें. वि.नं. 5586, सरिता, नई दिल्ली-110055.

चौरसिया, 21/5'2", एम.ए. भूगोल, रंग साफ, प्रतिष्ठित परिवारीय, उ.प्र. निवासी, शाकाहारी कन्या हेतु सजातीय, इंजीनियर, उच्च सेवारत अथवा उच्च व्यवसायी वर. शीघ्र व अच्छी शादी. वि.नं. 5597, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कूर्मि क्षत्रिय (कटियार), 20, 157 सें.मी., सुंदर, गोरी, धार्मिक, गृहकार्यदक्ष, प्रतिष्ठित परिवारीय, फैशन डिजाइन डिप्लोमा प्राप्त बी.ए. कन्या हेतु वर की आवश्यकता/पिता राजपत्रित अधिकारी/विज्ञापन मात्र उत्तम एवं सुयोग्य वर चयन हेतु. वि.नं. 5598, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अग्रवाल (बंसल), 26/152 सें.मी., एम.ए.बी.एड., गेहुआं रंग, गृहकार्यदक्ष कन्या हेतु सजातीय सेवारत या व्यावसायिक सुयोग्य वर चाहिए. शीघ्र विवाह. उपजाति बंधन नहीं. लिखें : वि.नं. 5775, सरिता, नई दिल्ली-110055.

हिंदू नाई, 22, 5'5", बी.ए., एलएल.बी. (अध्ययनरत), अतिसुंदर, सुशिक्षित, सुसंस्कृत परिवारीय, सुल्तानपुर निवासी कन्यार्थ योग्य वर चाहिए. वि.नं. 5776, सरिता, नई दिल्ली-110055.

धोबी, 26, 5'3", बी.ए., बी.एड., पब्लिक स्कूल अध्यापिका, रंग साफ, सुंदर, गृहकार्यदक्ष कन्या हेतु सरकारी सेवारत सुंदर वर चाहिए. वि.नं. 5777, सरिता, नई दिल्ली-110055.

विश्वकर्मा (बढ़ई), 24½, 5'4", बी.एससी., बी.एड., एम.एससी. (मैथ) अध्यापिका दिल्ली, शांडिल्य गोत्र बिहारवासी कन्यार्थ वर. वि.नं. 5778, सरिता, नई दिल्ली-110055.

21, 5'5", चौरसिया, बी.काम., कंप्यूटर डिप्लोमा, गेहुआं रंग, शाकाहारी, पिता व्यवसायी कन्यार्थ सजातीय, शिक्षित, प्रथम बार में ही पूर्ण विवरण सहित लिखें. शीघ्र/उत्तम विवाह. वि.नं. 5779, सरिता, नई दिल्ली-110055.

धोबी, 23, 5'3", सुंदर, एम.एससी., बी.एड., संपन्न परिवारीय कन्या हेतु सरकारी सेवारत वर चाहिए. वि.नं. 5780, सरिता, नई दिल्ली-110055.

पूर्वी यू.पी. सरयूपारिण ब्राह्मण, 23 वर्षीया, सुंदर, गोरी, लंबी, पतली, बी.ए. एवं कंप्यूटर (अध्ययनरत) कन्या हेतु 30 वर्ष तक स्वावलंबी वर चाहिए. वि.नं. 5781, सरिता, नई दिल्ली-110055.

24 वर्षीया, नाई, 157, गेहुआं रंग, स्लिम, बी.काम., डिप्लोमा कंप्यूटर एवं नेचरोपैथी में, पिता बैंक अधिकारी, शाकाहारी हेतु सजातीय सेवारत वर चाहिए. वि.नं. 5782, सरिता, नई दिल्ली-110055.

32 वर्षीया, एम.ए., (कमर से झुकी) गोरी, सुंदर कन्या हेतु सेवारत ब्राह्मण वर चाहिए. वि.नं. 5783, सरिता, नई दिल्ली-110055.

हिंदू नाई (पेशा रहित), 22½, 5'2", एम.ए. अध्ययनरत, डिप्लोमा फैशन डिजाइनर, घरेलू, साफ रंग, सुंदर, पतली कन्या हेतु उच्च नौकरी, व्यवसायी, सुसंपन्न परिवारीय, 28 वर्षीय तक वर. विवरण सहित पत्र व्यवहार करें. वि.नं. 5784, सरिता, नई दिल्ली-110055.

माहुरी वैश्य, 24/5'4", गेहुआं रंग, आकर्षक, शाकाहारी, एम.बी.बी.एस., पिता रिटायर्ड राजपत्रित अधिकारी कन्या हेतु सजातीय डाक्टर, इंजीनियर,

आफीसर, योग्य वर चाहिए. शीघ्र विवाह. कृपया फोन नं. सहित पूर्ण विवरण लिखें. वि.नं. 5785, सरिता, नई दिल्ली-110055.

दिल्लीवासी राजपूत, ठाकुर, बारहवीं क्लास पास, सुंदर, गोरी, 27/157 सेंटीमीटर कन्यार्थ वर चाहिए. शीघ्र, साधारण विवाह. फोन: 4364747. वि.नं. 5786, सरिता, नई दिल्ली-110055.

25 वर्षीया, हिंदू नाई (व्यवसाय से नहीं), 5'3", सुशील, गौरवर्ण, बी.एससी., एम.टी.ए., कानवेंट शिक्षित, कार्यरत, सुशिक्षित परिवार की कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए. शीघ्र विवाह. पिता उद्योगपति. वि.नं. 5787, सरिता, नई दिल्ली-110055.

धोबी (कन्नौजिया), 24/162, एम.एस. (गाइना), द्वितीय वर्ष, रंग साफ, आकर्षक कन्या हेतु एम.एस./एम.डी./आई.ए.एस., सुयोग्य, सजातीय वर वांछित. पूर्ण बायोडाटा एवं पारिवारिक पृष्ठभूमि सहित लिखें. शीघ्र विवाह. वि.नं. 5788, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुर्मी (क्षत्रिय), एम.ए., ड्राइंग, पेंटिंग, 23, 155, गृहकार्यदक्ष, सुंदर, सुशील, पिता एक्जीक्यूटिव इंजीनियर हेतु सेवारत, क्लास-2 व्यवसायी, सजातीय वर. वि.नं. 5789, सरिता, नई दिल्ली-110055.

माहेश्वरी, 24/162, गोरा रंग, बी.ए., गृहकार्यदक्ष कन्यार्थ सजातीय योग्य वर. शीघ्र विवाह, विज्ञापन उत्तम चयनार्थ. वि.नं. 5790, सरिता, नई दिल्ली-110055.

नाई (हिंदू), 24/157, एम.एससी. (गणित) प्रथम श्रेणी, गोरी, सुंदर, स्लिम, आकर्षक एवं पी.सी.एस./आई.ए.एस. परीक्षा हेतु अध्ययनरत कन्यार्थ आर्मी आफिसर, प्रशासनिक अधिकारी, इंजिनियर, प्रोफेसर, डाक्टर वर चाहिए. वि.नं. 5791, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुर्मी क्षत्रिय, 23, 5'2", सुंदर, गोरी, एम.ए. शोधरत (इतिहास) नेट उत्तीर्ण, शिक्षित परिवारीय कन्यार्थ सजातीय, स्मार्ट, उच्च सेवारत वर. संपूर्ण विवरण सहित लिखें. वि.नं. 5792, सरिता, नई दिल्ली-110055.

धोबी, 27/5'2", एम.बी.बी.एस. डाक्टर, सुंदर, गोरी, कार्यरत कन्या हेतु सजातीय, डाक्टर, इंजिनियर, अधिकारी वर चाहिए. वि.नं. 5793, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुर्मी क्षत्रिय, 26/150, गोरी, स्लिम, एम.ए., बी.एड., गृहकार्यदक्ष, स्मार्ट, संभ्रांत परिवार की कन्या (पिता राजपत्रित अधिकारी) हेतु वर चाहिए. अधिकारी, उच्च सेवावर्ग कार्यरत को वरीयता. वि.नं. 5794, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कूर्मि क्षत्रिय, 26/161, एम.फिल. (फिजिक्स) रुड़की, गेहुआं रंग, गृहकार्यदक्ष कन्यार्थ स्वजातीय, इंजिनियर, अधिकारी वर चाहिए. पिता पी.सी.एस. (प्र.) यू.पी., भाई इंजिनियर. वि.नं. 5795, सरिता, नई दिल्ली-110055.

बरनवाल (वैश्य), 26/160, स्मार्ट, प्रोबेशनरी आफीसर, स्टेट बैंक समूह में कार्यरत कन्यार्थ उपयुक्त सुंदर, प्रोफेशनल वर चाहिए. जातिबंधन नहीं. वि.नं. 5796, सरिता, नई दिल्ली-110055.

यादव, 26, 5'2", रंग साफ, बी.ए., डिप्लोमा इन कंप्यूटर और टीचिंग कन्या हेतु उपयुक्त वर चाहिए. पिता हाईकोर्ट एडवोकेट. वि.नं. 5797, सरिता, नई दिल्ली-110055.

चमार, 22, 5'4", बी.काम., रंग गेहुआं, गृहकार्यदक्ष हेतु सरकारी/अर्ध-सरकारी/प्रतिष्ठित कंपनी कार्यरत वर. वि.नं. 5798, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जाटव, 25, 5'4", मैट्रिक फेल कन्या हेतु सजातीय वर चाहिए. शीघ्र विवाह. वि.नं. 5799, सरिता, नई दिल्ली-110055.

धोबी, 29, 164, एम.एससी. (जीव विज्ञान), अस्थायी लेक्चरर, गेहुआं, आकर्षक, गृहकार्यदक्ष कन्यार्थ सुयोग्य, सुशिक्षित सेवारत को प्राथमिकता, पिता रेलवे सेवानिवृत्त, भाई लेक्चरर, जातिबंधन नहीं. शीघ्र विवाह. वि.नं. 5800, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुर्मि, क्षत्रिय, 25, 160, एम.ए., गेहुआं रंग, सुंदर, गृहकार्य में दक्ष कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए. वि. नं. 5801, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कहार, धीमर, कश्यप, 26/153, एडवोकेट दिल्ली, गोरी एवं सुंदर, सुशील, गृहकार्यदक्ष कन्यार्थ सुयोग्य वर चाहिए. वि.नं. 5802, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जाटव, प्रतिष्ठित परिवारीय, बी.एससी., एम.ए., 23½, 5'2½", गोरी, स्मार्ट कन्या हेतु लंबा, स्मार्ट, प्रथम श्रेणी अधिकारी, सजातीय वर चाहिए. पिता/भाई प्रथम श्रेणी अधिकारी. वि.नं. 5803, सरिता, नई दिल्ली-110055.

24 वर्षीया, अंडर मैट्रिक, गृहकार्यदक्ष, घरेलू गरीब परिवारीय कन्यार्थ योग्य वर चाहिए. शादी शीघ्र. दहेज, जातिबंधन नहीं. प्रथम बार में ही पूर्ण विवरण सहित लिखें. वि.नं. 5804, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सिख, विधवा, निसंतान, 5'1", 28 वर्षीया, बी.ए. आनर्स, बी.एड., कंप्यूटर डिप्लोमा, सुंदर, रंग गोरा, सुयोग्य पंजाबी वर चाहिए. वि.नं. 5805, सरिता, नई दिल्ली-110055.

मैथिल, ब्राह्मण, 22 वर्षीया, 5'3", एम.ए. (अर्थशास्त्र), गोरी, सुंदर, गृहकार्यदक्ष, पिता केंद्रीय सेवारत हेतु सुयोग्य वर. वि.नं. 5806, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अवधिया कुर्मी, 27/155, 8,000/-, केंद्रीय सेवारत (नई दिल्ली), बी.ए. (प्रतिष्ठा), सुंदर, गोरी, दाहिना पैर जरा सा जन्मजात पोलियो प्रभावित कन्या हेतु सरकारी सेवारत, दहेज रहित, सुयोग्य, स्वजाति वर चाहिए. दिल्ली में सेवारत को प्राथमिकता. पूर्ण बायोडाटा सहित लिखें. वि.नं. 5807, सरिता, नई दिल्ली-110055.

पासी, सुंदर, स्लिम, सुशील, 5'4", एम.बी.बी.एस. डी.जी.ओ., केंद्रीय स्वास्थ्य सेवा ग्रुप 'ए' में दिल्ली सरकार के अधीन अस्पताल में कार्यरत एवं गृहकार्य निपुण हेतु

सुसंस्कृत पारिवारिक पृष्ठभूमि के उपयुक्त डाक्टर, अधिकारी वर के अभिभावकों से पत्राचार आमंत्रित. जातिबंधन नहीं. वि.नं. 5808, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुर्मी क्षत्रिय, 23, 5'3", बी.ए., कंप्यूटर प्रोग्रामिंग, गोरी, गृहकार्यदक्ष, दो भाई, दोनों प्रथम श्रेणी अधिकारी, एक आर्मी आफिसर कन्यार्थ सजातीय वर चाहिए. वि.नं. 5809, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कोरी, हिंदू, जुलाहा, 23, 5'2", गेहुआं रंग, पोस्टग्रेजुएट कन्या हेतु सरकारी सेवारत, निजी व्यवसायी वर चाहिए. पूर्ण विवरण भेजें. वि.नं. 5810, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कश्यप राजपूत, सुंदर कन्या, 25, 160, 7,500/-, पीएच.डी. अध्ययनरत, कार्यरत, पत्रकारिता हेतु सुयोग्य वर चाहिए. देहली परिवार वरीयता. वि.नं. 5811, सरिता, नई दिल्ली-110055.

हिमाचली, 26½, 165, एम.ए., बी.एड., अध्यापिका, गृहकार्यों में दक्ष, गंभीर स्वभाव हेतु सरकारी सेवारत या व्यवसायरत, स्वस्थ, गुणवान वर चाहिए. धर्म, जातिबंधन नहीं. वि.नं. 5812, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कायस्थ (श्रीवास्तवा), स्लिम, गेहुआं रंग, एम.बी.ए. अध्ययनरत हैदराबाद के एक प्रतिष्ठित कालिज से (औसमानियां विश्वविद्यालय) कन्या हेतु इंजिनियर, बैंक अधिकारी, डाक्टर या सरकारी अधिकारी वर चाहिए. उपजाति बंधन नहीं. वि.नं. 5813, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जायसवाल, 21/163, बी.ई. (कंप्यूटर) कार्यरत, गौरवर्ण, आकर्षक कन्या हेतु इंजीनियर, डाक्टर, प्रशासनिक अधिकारी सजातीय वर चाहिए. पिता बड़ौदा गुजरात के बड़े प्रतिष्ठान उच्चाधिकारी. लिखें: वि.नं. 5814, सरिता, नई दिल्ली-110055.

पंजाबी ब्राह्मण, 32, 5'1", एम.ए. बी.एड., डी.सी.एड., गौरवर्ण कन्या हेतु वर चाहिए. जातिबंधन नहीं. वि.नं. 5815, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जायसवाल, 23/157, गोरी, सुंदर, गृहविज्ञान आनर्स, कंप्यूटर अध्ययनरत हेतु इंजिनियर, डाक्टर, सी.ए. वर. उपजाति मान्य. वि.नं. 5816, सरिता, नई दिल्ली-110055.

गौड़ ब्राह्मण, कौशिक गोत्रिय, मांगलिक, आदि नाड़ी, 23/152, गणित, स्नातकोत्तर, स्नातकोत्तर डिप्लोमा, आई.आर.पी.एम. तथा बी.एड. अध्ययनरत कन्या हेतु सुशिक्षित व्यवसायिक ज्ञान प्राप्त ब्राह्मण के प्रस्ताव आमंत्रित हैं. वि.नं. 5817, सरिता, नई दिल्ली-110055.

चौहान क्षत्रिय (वत्स), 23, 5'4", सुंदर, सुशील, गृहकार्य में दक्ष, नीट कंप्यूटर प्रशिक्षित, बी.ए. अध्ययनरत, कलकत्ता निवासिनी कन्या हेतु डाक्टर, इंजीनियर, लेक्चरर, अधिकारी, सुयोग्य वर चाहिए. वि.नं. 5818, सरिता, नई दिल्ली-110055.

पंजाबी, 24, 5'3", बैंगलूर से बी.डी.एस, सुंदर, सुशील, सभ्य, गृहकार्य में दक्ष, संपन्न परिवार की कन्या हेतु एम.बी.बी.एस. वर चाहिए. पिता जमींदार, माता स्कूल प्रिंसिपल. वि.नं. 5819, सरिता, नई दिल्ली-110055.

यादव, अविवाहिता, 30/163, आर्मी सर्विस (कैप्टन) कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए. दहेज नहीं. वि. नं. 5820, सरिता, नई दिल्ली-110055.

श्रीवास्तव, 33, एम.ए., बी.एड., खूबसूरत, गोरी, विधवा, कंप्यूटर कोर्स अध्ययनरत, (6 वर्षीय प्यारा पुत्र) हेतु कायस्थ, आई.ए.एस, अलाइड, एक्जीक्यूटिव, 40 तक वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 5821, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जातीय/अंतर्जातीय विवाह हेतु पांचाल ब्राह्मण (काष्ठकार), हिन्दीभाषी परिवारीय गोरी, आकर्षक, 24/160, बी.एससी., पी.जी.डी.सी.ए. कन्या हेतु प्रतिष्ठित सेवारत/व्यवसायरत, दहेज अनिच्छुक वर के सविवरण प्रस्ताव आमंत्रित. वि.नं. 5822, सरिता, नई दिल्ली-110055.

धोबी, 24, कन्या, बी.ए., पक्के रंग, हाथ में मामूली कमजोरी, कार्यकुशल, पिता बैंक अधिकारी वर चाहिए. एक बच्चे वाला विधुर भी विचारणीय. वि.नं. 5823, सरिता, नई दिल्ली-110055.

23 वर्षीया, 5'3", माथुर कायस्थ, बी.एससी., डी.एच.एम.एस., आकर्षक कन्या हेतु सजातीय वर चाहिए. वि.नं. 5824, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कहार (बाथम), 28/5'4", एम.ए. पास कन्या हेतु सजातीय वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 5825, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुशवाहा, मौर्य, 22, 161, कानवेंट एजूकेटेड, विज्ञान प्रतिष्ठा स्नातक, पोषाहार स्वास्थ्य में डिप्लोमा, सुंदर, गोरी, स्मार्ट, गृहकार्यदक्ष, पिता विश्वविद्यालय प्राध्यापक (अभियांत्रिकी) परिवार के सदस्य उच्च सरकारी पदों पर कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए. विवाह शीघ्र. दूरभाष (06274)-74306. वि.नं. 5826, सरिता, नई दिल्ली-110055.

दिगंबर जैन बड़जात्या, आयु 24 साल, ऊंचाई 5'4", एम.काम., गृहकार्यदक्ष कन्या हेतु सजातीय योग्य वर चाहिए. वि.नं. 5827, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जैन, तलाकशुदा, 28/165, शिक्षित, सुंदर, शारीरिक रूप से पूर्ण परंतु प्रजनन क्रिया में असमर्थ, इच्छुक जैन वर पूर्ण विवरण सहित लिखें. वि.नं. 5828, सरिता, नई दिल्ली-110055.

चौहान, धोबी, 26, 5'5½", बैंक कार्यरत, सुंदर, सुशील कन्या हेतु सुयोग्य, सजातीय, सरकारी सेवारत, बैंक कार्यरत को प्राथमिकता, वर चाहिए. वि.नं. 5829, सरिता, नई दिल्ली-110055.

21 वर्षीय, सरयूपारिन ब्राह्मण, 5'3", बी.ए. तृतीय वर्ष अध्ययनरत, गौरवर्ण, गृहकार्य में दक्ष, उत्तरप्रदेशीय कन्या हेतु सजातीय, शिक्षित एवं कार्यरत वर चाहिए. वरीयता उत्तरप्रदेशीय वर को दी जावेगी. वि.नं. 5830, सरिता, नई दिल्ली-110055.

24 वर्षीया, ऊंचाई 5'4", एम.ए., सुंदर, गृहकार्यदक्ष कान्यकुब्ज ब्राह्मण कन्यार्थ योग्य वर चाहिए. जातिबंधन नहीं. दहेज विरोधी ही संपर्क करें. वि.नं. 5831, सरिता,

नई दिल्ली-110055.

यादव, 28/155, घरेलू गृहकार्यदक्ष कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए. शीघ्र विवाह, दहेज नहीं. वि.नं. 5832, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जायसवाल, 36 वर्षीया, 5'3", इंटर, विधवा, लड़का 2½ वर्षीय, बिहार निवासी के लिए विधुर या तलाकशुदा वर चाहिए. वि.नं. 5879, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कान्यकुब्ज ब्राह्मण, 22 वर्षीया लड़की जो शादी के मात्र 10 माह में विधवा हो गई, विशाल हृदय, मानवतावादी छोटा संपन्न स्वजातीय अविवाहित/विधुर वर. वि.नं. 5880, सरिता, नई दिल्ली-110055.

वधू चाहिए

35 वर्षीय, 165, स्वनिर्मित व्यक्तित्व, कार्यक्षेत्र गांव, ऐसी लड़की जो धर्मजाति से ऊपर सिर्फ मानवीय विचार रखती हो, जो समाज में अपने मुख्य साथी के साथ मिलकर कुछ अलग करना चाहती हो. वि.नं. 5616, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कोरी, 26/160, बी.ए., रंग गेहुआं, स्वयं का सिविल कन्सट्रक्शन का ठेकेदारी का व्यवसाय, भाई एनएफएल में असिस्टेंट मैनेजर, मूलतः उत्तरप्रदेशीय निवासी हेतु सुंदर वधू चाहिए. वि.नं. 5632, सरिता, नई दिल्ली-110055.

वैश्य, बरणवाल, 27/5'7", ग्रेजुएट, स्मार्ट, होलसेल दवा-दुकान, अच्छी आय हेतु शिक्षित, गृहकार्य में दक्ष वधू चाहिए. उपजाति बंधन नहीं. संभ्रांत परिवार को प्राथमिकता. वि.नं. 5633, सरिता, नई दिल्ली-110055.

27/170/56/10,000/-, (दुकान), स्नातक, निर्व्यसनी, दिल्लीवासी अग्रवाल हेतु सुयोग्य कन्या. बंधन नहीं. वि.नं. 5634, सरिता, नई दिल्ली-110055.

रौनियार वैश्य, 34+/164, बी.टेक., वायुसेनारत हेतु सजातीय, 25+ स्लिम वधू चाहिए. गुप्ता: 06454-22717. वि.नं. 5635, सरिता, नई दिल्ली-110055.

लोधी राजपूत, 30/5'6"/12,000/-, इंजीनियर हेतु सुंदर, सुशिक्षित वधू चाहिए. वि.नं. 5636, सरिता, नई दिल्ली-110055

मौर्य कुशवाहा, 24, 170, गोरा, एम.बी.बी.एस. हेतु एम.बी.बी.एस./अध्ययनरत संपूर्ण विवरण सहित संपर्क करें. वि.नं. 5637, सरिता, नई दिल्ली-110055.

विश्वकर्मा, पूर्वी पांचाल (लोहार), 27/5'3", शास. हायर सेकंडरी में व्याख्याता, राजपत्रित मध्यप्रदेशवासी युवक हेतु सुंदर, सुशिक्षित, गृहकार्य में दक्ष, संभ्रांत, सजातीय कन्या चाहिए. बायोडाटा सहित लिखें. वि.नं. 5638, सरिता, नई दिल्ली-110055

दृष्टिहीन, 28, 5'10", 10,000/-, सरकारी कालिज प्राध्यापक, तीन स्वर्ण पदक विजेता, भारत सरकार की राष्ट्रीय सांस्कृतिक छात्रवृत्ति विजेता, गौरवर्ण, अरोड़ा युवक हेतु सुशिक्षित, सुंदर, संवेदनशील जीवनसाथी. दहेज/जातिबंधन नहीं. शीघ्र विवाह. वि.नं. 5639, सरिता, नई दिल्ली-110055.

माहेश्वरी, 27, 5'11", बी.काम., निजी व्यवसाय, आकर्षक, सुंदर, इकलौते पुत्र हेतु सजातीय, सुशिक्षित, सुंदर, लंबी, घरेलू कार्यों में निपुण कन्या चाहिए. दहेज बंधन नहीं. वि.नं. 5651, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कायस्थ, 62 वर्षीय विधुर, विद्युत अवर अभियंता, सेवामुक्त, पैंशन 4,000/-, निजी आवास, दायित्वमुक्त को घरेलू सत्यनिष्ठ, शिक्षित जीवनसाथी की आवश्यकता है. इच्छुक बेसहारा पूर्ण विवरण भेजें. वि.नं. 5652, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अविवाहित, 37/170 सें.मी., 5,000/-, मैट्रिक, सरकारी नौकरी, सेक्सुअल कमजोरी (उत्तेजना नहीं) हेतु वधू, बंधन नहीं. विवरण हिंदी में लिखें. वि.नं. 5653, सरिता, नई दिल्ली-110055.

लोधी, 26/170, इंजीनियर, प्रथम श्रेणी रेलवे अधिकारी हेतु सुंदर, सुशिक्षित, संभ्रांत परिवारीय वधू चाहिए. वि.नं. 5654, सरिता, नई दिल्ली-110055.

शर्मा, कश्यप, 31, 165, 12,000/-, दुबई में कार्यरत, सांवला युवक हेतु वधू. जातिबंधन नहीं. वि.नं. 5655, सरिता, नई दिल्ली-110055.

45, आंशिक, विकलांग, रेलवे अधीक्षक हेतु वधू चाहिए. विधवा भी. 7772734. वि.नं. 5659, सरिता, नई दिल्ली-110055.

पंजाबी, खत्री, विधुर, 50, 180, 12,000/-, सरकारी अफसर, निसंतान, निजी मकान हेतु कुंवारी, विधवा, तलाकशुदा वधू चाहिए. जातिबंधन नहीं. वि.नं. 5833, सरिता, नई दिल्ली-110055.

वैश्य, 5'5", 34, ब्रिटिश नागरिक (मूल निवासी बिहार), ब्रिटेन में लेक्चरर, सुदृढ़ आय, धारा प्रवाह हिंदी हेतु सुशिक्षित वधू चाहिए. जातिबंधन नहीं. वि.नं. 5834, सरिता, नई दिल्ली-110055.

40 वर्षीय, अविवाहित, अकेला हेतु विधवा, परित्यक्ता, आंशिक विकलांग या बच्चे वाली जीवनसंगिनी चाहिए. जातिबंधन नहीं वि.नं. 5835, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जायसवाल, 28, बी.काम., एलएल.बी., निजी व्यवसाय, कंप्यूटर एंड प्रिंटिंग हेतु सुंदर, शिक्षित, सजातीय वधू चाहिए. वि.नं. 5836, सरिता, नई दिल्ली-110055.

रायकवार (धीवर), 29/156/9,000/-, विधि स्नातक, रेलवे सेवारतार्थ सजातीय वधू चाहिए. वि.नं. 5837, सरिता, नई दिल्ली-110055.

70 वर्षीय, खन्ना, विधुर (देखने में कम उम्र), अपना अच्छा कपड़ा कारोबार हेतु सुंदर जीवनसंगिनी चाहिए. कोई मांग नहीं. उम्र का बंधन नहीं. वि.नं. 5838, सरिता, नई दिल्ली-110055.

विश्वकर्मा (लोहार), 5'11", बी.काम., व्यवसायी, उच्च मध्यम वर्गीय, मासिक आय पांच अंकों में हेतु खूबसूरत, गोरी, लंबी व शिक्षित वधू चाहिए. जाति व दहेजबंधन नहीं. वि.नं. 5839, सरिता, नई

दिल्ली-110055.

जाट, 24, 165, 8,000/-, निजी व्यवसाय, कान मुंबई, पूना, अहमदाबाद, ग्रेजुएट नवयुवक हेतु वधू चाहिए. जातिबंधन नहीं. वि.नं. 5840, सरिता, नई दिल्ली-110055.

गुर्जर, 24/5'8", 4,000/-, हाईस्कूल, निजी कृषि फार्म, मकान मथुरा हेतु सुंदर वधू चाहिए. दहेज, जातिबंधन नहीं. वि.नं. 5841, सरिता, नई दिल्ली-110055.

विश्वकर्मा, ब्राह्मण, 37, 165, एम.बी.बी.एस., डाक्टर, सरकारी नौकरी तथा आवास, कार हेतु सुंदर, डिको, नान-मेडिको वधू चाहिए. कोई बंधन नहीं. वि.नं. 5842, सरिता, नई दिल्ली-110055.

34, 5'8", मैट्रिक, बिजनेसमैन, 7,000/- मासिक, क्सुअली कमजोर, प्रतिष्ठित परिवारीय युवक हेतु आकर्षक, गृहकार्यदक्ष, घरेलू, सुशील, जीवनसाथी चाहिए. कोई बंधन नहीं. वि.नं. 5843, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुर्मि क्षत्रिय, 27, 170 सें.मी., बी.काम., आकर्षक, गोरा, शाकाहारी, उत्तम व्यवसायी, संपन्न प्रतिष्ठित परिवारीय, इकलौता पुत्र हेतु सुशिक्षित, सुंदर, गोरी, संभ्रांत परिवारीय, सजातीय वधू चाहिए. दिल्लीवासी को प्राथमिकता. पूर्ण विवरण भेजें. विज्ञापन उत्तम चयनार्थ हेतु. वि.नं. 5844, सरिता, नई दिल्ली-110055.

धोबी, बी.ई., 30/165, प्रतिष्ठित सरकारी कंपनी में अधिकारी हेतु सुंदर, सुशील वधू चाहिए. परिवार में अन्य डाक्टर, इंजीनियर. वि.नं. 5845, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अग्रवाल, गर्ग, 25, 5'6", 8,000/-, बी.ए. (द्वितीय), निजी व्यवसाय/मकान, कानूनी तलाकशुदा दिल्लीवासी हेतु सजातीय कन्या चाहिए. वि.नं. 5846, सरिता, नई दिल्ली-110055.

पासी, इंजिनियर, 29, 5'8", बी.ई. इलेक्ट्रीकल हेतु शासकीय सेवा कार्यरत सजातीय वधू चाहिए. मध्यप्रदेश को प्राथमिकता. वि.नं. 5847, सरिता, नई दिल्ली-110055.

गोयल (मारवाड़ी), सुंदर/धनाढ्य, उद्योगपति, 24/सी.ए./22/बी.ए. हेतु गौरवर्णीय परियों जैसी खूबसूरत वधुएं चाहिए. वि.नं. 5848, सरिता, नई दिल्ली-110055.

28 वर्षीय, 5'6", बी.काम., श्रीवास्तव (कायस्थ), नागपुर में केंद्रीय सेवा में सेवारत लिपिक हेतु योग्य वधू चाहिए. पूर्ण जानकारी सहित प्रथम बार में लिखें. वि.नं. 5849, सरिता, नई दिल्ली-110055.

30 वर्षीय, 5'6", मोटर मैकेनिक, बनीरोठ (राठौड़), मैट्रिक पास, दोहा कतर में 11वर्ष से कार्यरत, 15,000/- प्रतिमाह हेतु सुयोग्य सजातीय वधू चाहिए. S.S. Rajput, P.Box No. 9828, Doha Qatar (AG).

कुर्मी, क्षत्रिय, 27, 180, 14,000/- मासिक, आकर्षक, इंजीनियर, प्रतिष्ठित ग्रुप में कार्यरत हेतु सुंदर, सुशिक्षित वधू चाहिए. कृपया बायोडाटा सहित लिखें. वि. नं. 5851, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सुन्नी, मुस्लिम, आंशिक दृष्टिवान, एम.ए., बी.एड., 29, 5'4", 8,000/-, राजस्थान राजकीय अध्यापक को सुशील सुशिक्षित वधू चाहिए. वि.नं. 5852, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुर्मी, 30, 5'11", पीएच.डी., साइंटिस्ट, 10,000/-, सुशिक्षित परिवार हेतु शिक्षित, लंबी, सजातीय वधू चाहिए. वि.नं. 5853, सरिता, नई दिल्ली-110055.

चमार, 27, 5'8", कैमिकल इंजिनियर यूक्रेन में नौकरी आय 11,000/- डालर, रंग सांवला, उत्तरप्रदेश निवासी (पिता बिहार में सेल टैक्स डिप्टी कमिश्नर) हेतु गोरी, लंबी, बी.ए. तथा गृहकार्यदक्ष वधू चाहिए. वि.नं. 5854, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कलकत्ता निवासी, 38 वर्षीय, अविवाहित अग्रवाल, बी.एससी., 5'10", मालिक कारखाना, मासिक आय 20,000/-, जातीय बंधन नहीं. वि.नं. 5855, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुर्मी क्षत्रिय, 27/6', इंजीनियर, आई.आई.टी., एम.बी.ए., यू.एस.ए., प्रतिष्ठित बैंक न्यूयार्क कार्यरत युवक हेतु सुंदर, सुशील, प्रोफेशनली, एजुकेटेड, संभ्रांत परिवार की कन्या चाहिए. वि.नं. 5856, सरिता, नई दिल्ली-110055.

स्वाभिभावक यादव, 38 वर्षीय, 5'7", सुपुरुष कलकत्तावासी, स्वनिर्भर, आदर्शगुणसंपन्न हेतु समानगुणसंपन्न, प्रेरणास्त्रोत, अन्युनतम एच.एस. पास,

दिल्ली प्रेस विज्ञापन सेवा

गृहशोभा/सरिता/वुमंस ईरा में क्लासीफाइड एवं वर्गीकृत विज्ञापन बुकिंग के लिए दिल्ली स्थित एजेंटों के टेलीफोन नंबर :

● आराम बाग 3512562 ● कनाट प्लेस 3351800, 6474443 ● डा. मुखर्जी नगर 7259489 ● दरियागंज 3255256 ● फतेहपुरी 2512577 ● गुलाबी बाग 732346 (9810066470) ● इंद्रपुरी 5752046 ● झंडेवाला 7774646, 7534381 ● जनकपुरी 5591136 ● कृष्णा नगर 2467146 ● करमपुरा 5119812, 5468267 ● कोटला मुबारकपुर 4635107 ● करोल बाग 5714905, 5765486 ● कमला नगर 3980848, 2917014 ● माडल टाउन 7453771 ● नारायणा विहार 5790346 ● नोएडा 91-523155 ● प्रीत विहार 2249055 ● पीतमपुरा 7083359 ● पश्चिम विहार 5571721, पेजर 9632-166061 ● रमेश नगर 5156507 ● रोहिणी 7899671, 7040923 ● सब्जी मंडी 2910891 ● साहिबाबाद 91-630521, पेजर 9628-049097 ● शाहदरा 2284882 ● सरस्वती विहार 7021820, 7022420 ● साउथ एक्सटेंशन 4617888, 4691529, 4693487 ● तिलक नगर 5407527, 5406712 ● उत्तम नगर 5636526, 5540004 ● यूसुफ सराय 6850368, 6858858.

मेधाविनी संतानोत्पत्ति असमर्थ, अनिच्छुक/सहवास असमर्थ वधू चाहिए. धर्म, जाति, वर्ण, स्थान, भाषा, उम्र, विधवा, शोषिता, परित्यक्ता, बाधा नहीं. सविश्वास लिखें. वि.नं. 5857, सरिता, नई दिल्ली-110055.

43 वर्षीय, जैन, तलाकशुदा, स्मार्ट, केंद्रीय सरकार प्रथम श्रेणी अधिकारी हेतु सुंदर, सुशील, सजातीय, बेसहारा, विधवा, तलाकशुदा वधू चाहिए. वि.नं. 5858, सरिता, नई दिल्ली-110055.

राजस्थानी जैन, 29 वर्षीय, 5'8", 5,300/-, सरकारी सेवारत, विकलांग युवक हेतु वधू. जातिबंधन नहीं. निसंतान, विधवा स्वीकार्य. निजी आवास व वाहन. पूर्ण विवरण लिखें. वि.नं. 5859, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुर्मी, 26, 5'6", एम.डी. पीडिया (अध्ययनरत), स्वस्थ, आकर्षक, प्रतिष्ठित परिवारीय हेतु सुंदर मेडिको वधू. वि.नं. 5860, सरिता, नई दिल्ली-110055.

धोबी, कनौजिया, 27, 170, 8,000/-, हैंडसम, इकलौता, डिप्लोमा होटल मैनेजमेंट, प्रतिष्ठित अर्धसरकारी कंपनी, एक्जीक्यूटिव, देहरादून में अपना मकान हेतु सुंदर, सुशिक्षित कन्या चाहिए. वि.नं. 5861, सरिता, नई दिल्ली-110055.

नास्तिक, अकेला, स्वनिर्मित चरित्र, महानुभवी मूक-बधिर 48, प्रतीक्षारत फाउंडर लामेकर स्टेट्समैन, मैं सिडनी से लौटा हेतु उद्धारक कन्याएं, सहायता के लिए मुंबई/कहीं में सुधारक आश्रय (अस्थायी) चाहिए. बंधन नहीं. वि.नं. 5862, सरिता, नई दिल्ली-110055.

यादव, कानवेंटेड, एम.बी.ए., 32, 5'9", 40,000/-, मुंबई मल्टीनेशनल कंपनी में कार्यरत हेतु कानवेंटेड, एम.बी.ए. इंजीनियर, डाक्टर, सी.ए., सुंदर, गोरी वधू चाहिए. वि.नं. 5863, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जायसवाल, 55, विधुर, सरकारी इंजिनियर हेतु स्वस्थ, शिक्षित, निसंतान, विधवा, परित्यक्ता, स्वयं निर्णायक वधू. उपजाति मान्य. वि.नं. 5864, सरिता, नई दिल्ली-110055.

हिंदू (नाई), 29½, 5'8", 9,500/-, एम.ए., बी.एड., पीएच.डी., दिल्ली प्रशासन में अध्यापक, निजी मकान दिल्लीवासी हेतु सुंदर, सुशील वधू चाहिए. वि.नं. 5865, सरिता, नई दिल्ली-110055.

पंजाबी, अरोड़ा, 29, 5'11", अपना हैंडलूम एक्सपोर्ट बिजनेस हेतु घरेलू पढ़ीलिखी, सुंदर वधू चाहिए. वि.नं. 5866, सरिता, नई दिल्ली-110055.

32 वर्षीय (दिखने में 30), 5'7", 74 कि.ग्रा., दयालु, मददगार, आत्मनिर्भर, संगीत निर्माता हेतु स्वयं इच्छुक उदार विचारवान, से सीधे एवं विवरण पत्र आमंत्रित. धर्म, शिक्षा और बंधन नहीं. वि.नं. 5867, सरिता, नई दिल्ली-110055.

इंजिनियर, पंजाबी, विधुर, चुस्त, पेंशन 7,000/-, निजी घर, चंडीगढ़वासी हेतु समर्पित, शिक्षित, विधवा/तलाकशुदा लगभग 40/55, जाति/धर्म बंधन नहीं. वि.नं. 5868, सरिता, नई दिल्ली-110055.

आत्मनिर्भर, सुशिक्षित, प्रतिष्ठित, 45-50 वर्षीया जीवनसाथी जो एक उदारचित्त संस्कारिक, अकेला, अविवाहित, उच्च शिक्षित, निर्व्यसनी, सेवानिवृत्त, सीनियर अधिकारी की संपत्ति घर की उत्तराधिकारिणी होगी. बंधन नहीं. वि.नं. 5869, सरिता, नई दिल्ली-110055.

तेली, 23, 6', गोरा, स्मार्ट, बी.ई. मेकेनिकल, एम.एन.सी. कार्यरत, मासिक आय पांच अंकों में, उच्च शिक्षित, संभ्रांत परिवार, पिता उच्चाधिकारी हेतु लंबी, सुंदर, शिक्षित, संभ्रांत परिवार की कन्या चाहिए. वि.नं. 5870, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जाटव, पिता इंजीनियर, यू.पी. के प्रतिष्ठित परिवार, 28/177/15,000/-, स्मार्ट, आकर्षक व्यक्तित्व, कानवेंट शिक्षित, होटल मैनेजमेंट असिस्टेंट मैनेजर (प्रा.लि. कंपनी) दिल्ली में निजी घर/कार हेतु सुंदर, कानवेंट शिक्षित, स्मार्ट वधू चाहिए. वि.नं. 5871, सरिता, नई दिल्ली-110055.

वार्ष्णेय, 25/5'3"/2,600/-, स्मार्ट, सेल्समैन, धूम्रपान निषेध हेतु वधू. दहेजविरोधी, अग्रवाल विचारणीय लिखें: वि.नं. 5873, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुर्मी क्षत्रिय, 26, 5'6", आय चार अंकीय, स्मार्ट, पंजाब नेशनल बैंक में कार्यरत युवक हेतु सुंदर, सुशिक्षित, सजातीय वधू चाहिए. वि.नं. 5874, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अग्रवाल, गोयल, विधुर, 35/168, चुस्त एवं स्मार्ट, दो लड़के 9 वर्षीय एवं 6 वर्षीय, एलआईसी एजेंट, चेयरमैन क्लब मेंबर एवं पारिवारिक मेडिकल व्यवसाय, आय 15,000/-, निजी, सोनीपत हरियाणावासी हेतु सुयोग्य वधू चाहिए. वि.नं. 5875, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जायसवाल, 28 वर्षीय, 5'10", बी.काम., बिहार निवासी के लिए सुंदर एवं सुशील कन्या चाहिए. वि.नं. 5876, सरिता, नई दिल्ली-110055.

वरवधू चाहिए

धमैला, कुर्मी, 24½, 5'3", 3,000/-, रिसर्च सहायक केमिकल इंजीनियर, गेहुआं, सुंदर, सुशील, गृहकार्य निपुण कन्यार्थ मल्टीनेशनल, सरकारी/अर्द्धसरकारी/ इंजीनियर/बैंक अधिकारी, सुंदर, स्मार्ट तथा 27, 5'9", 55,000/-+ (डालर) वार्षिक, अमेरिका कार्यरत, इलैक्ट्रानिक इंजीनियर, सुंदर, सुशील, स्वस्थ युवकार्थ सुंदर, गोरी, लंबी, एम.सी.ए., कंप्यूटर इंजीनियर, बी.एससी., प्रतिष्ठित परिवारीय, वर तथा वधू चाहिए. पिता सेवानिवृत्त केंद्रीय उच्चाधिकारी, भाई डाक्टर. वि.नं. 5661, सरिता, नई दिल्ली-110055.

भारद्वाज (गढ़वाली), 25, 5', स्नातक, कार्यरत, सुंदर कन्या हेतु वर एवं 30, 5'5", 6,000/-, स्नातक, ए.एस.जी. (बी.एस.एफ.), आकर्षक युवक हेतु कन्या चाहिए. वि.नं. 5881, सरिता, नई दिल्ली-110055.

प्रतिष्ठित माहेश्वरी, परिवारीय, गोरी, सुंदर कन्या, 29, 158, 48, डिप्लोमा सिविल इंजीनियरिंग आनर्स हेतु

य वर एवं 28, 168, 5,000/-, डिप्लोमा इंजीनियर सुंदर, शिक्षित वधू. उपजाति बंधन नहीं. वि.नं. 5882, ता, नई दिल्ली-110055.

उत्तरप्रदेश निवासी, 28 वर्षीया, सुंदर, चमार कन्या, .ए. (भूगोल) प्रथम श्रेणी, पी.जी.टीचर, 3/8,000/-, रंग सांवला हेतु वर व 26 वर्षीय, टेक., भारत सरकार के उपक्रम में केमिकल इंजीनियर, 3/10,000/-, रंग गेहुआं के लिए वधू चाहिए. पिता त सरकार में प्रथम श्रेणी अधिकारी. वि.नं. 5883, ता, नई दिल्ली-110055.

हिंदू नाई, 32/5'4''/7,000/-, डिप्लोमा नियर, रक्षा उत्पादन, निजी व्यवसाय, व्यावसायिक म्पलेक्स निर्माणाधीन हेतु 5'2'', सुंदर, स्मार्ट, विज्ञान तक, सेवारत कन्या वरीयमान, एम.ए. अंग्रेजी, एलएल.बी. अध्ययनरत, 5', गोरी, स्मार्ट, आकर्षक फीचर्स हेतु डाक्टर, इंजीनियर, प्रवक्ता, अधिकारी वर चाहिए. वि.नं. 5884, सरिता, नई दिल्ली-110055.

गोद विज्ञापन

एक शिशु जो मई 1998 में पैदा होगा. गोद देना चाहते हैं. संपर्क करें. वि.नं. 5885, सरिता, नई दिल्ली-110055.

नवजात शिशु, अविवाहित महिलाओं/हास्पिटल से गोद हेतु चाहिए. वि.नं. 5886, सरिता, नई दिल्ली-110055.

दिल्ली निवासी दो बेटियों वाले परिवार को एक लड़का निकट भविष्य में गोद लेना है. अविवाहित की संतान (नवजात) या बेसहारा (उम्र 2/11 वर्ष) संपर्क

विज्ञापनदाताओं के लिए सूचना

1. सरिता में वैवाहिक व गोद विज्ञापनों की दर 8.00 रु. प्रति शब्द है. अंगरेजी पाक्षिक वूमंस ईरा में 6.00 रु. प्रति शब्द. यदि सरिता के साथसाथ वही विज्ञापन वूमंस ईरा में भी प्रकाशित कराया जाए तो उस के लिए केवल 3.00 रु. अतिरिक्त यानी 11.00 रु. प्रति शब्द होगा.

अन्य व्यक्तिगत व व्यावसायिक विज्ञापनों की दर सरिता में 12.00 रु. प्रति शब्द है तथा वूमंस ईरा में 8.00 रु. प्रति शब्द. यदि सरिता के साथसाथ वही विज्ञापन वूमंस ईरा में भी प्रकाशित कराया जाए तो उस के लिए केवल 3.00 रु. अतिरिक्त यानी 15.00 रु. प्रति शब्द होगा.

विशेष छूट : यदि एक ही विज्ञापन दो लगातार अंकों में प्रकाशित कराया जाए तो तीसरे अंक में विज्ञापन मुफ्त में छपेगा. केवल 25 रु. डाक व्यय के अतिरिक्त देने होंगे, यानी डाक खर्च कुल 75 रु. एवं पंजीकृत डाक व्यय 180/- रु. होगा. यह छूट केवल वैवाहिक एवं गोद विज्ञापन में दी जाती है.

2. जाति/धर्म का उल्लेख न कर विवाह करने वालों के विज्ञापन आधे शुल्क पर प्रकाशित किए जाते हैं. ऐसे विज्ञापनों में विज्ञापनदाता की निजी जाति/धर्म का उल्लेख भी नहीं होना चाहिए.

3. धनराशि अग्रिम आने पर ही विज्ञापन प्रकाशित किया जा सकेगा.

4. मूल विज्ञापन के साथ 'वि.नं... सरिता, नई दिल्ली-110055.' इन 6 शब्दों का मूल्य आवश्यक है. 'फोटो सहित' शब्द वाले व विज्ञापनदाता के निजी पते वाले विज्ञापन स्वीकार नहीं किए जाते. पर विदेशों में पत्रव्यवहार करने वाले विज्ञापनों में निजी पते छापे जाते हैं ताकि पत्रव्यवहार तुरंत हो सके. इन में बाक्स नं. की सुविधा उपलब्ध नहीं है.

5. विज्ञापनदाताओं के नाम व पते गुप्त रखे जाते हैं. यदि आप उन्हें पत्र लिखना चाहें तो कृपया लिफाफे पर 'वि.नं... सरिता, वूमंस ईरा, नई दिल्ली-110055.' लिख कर हमें भेज दें. आप का पत्र हम उन के पास डाक द्वारा भेज देंगे. कृपया प्रत्येक वि. नं. को अलगअलग पत्र लिखें. विज्ञापन नं. के उत्तर में प्राप्त पत्रों को विज्ञापनदाताओं के पास भेजने हेतु कोई शुल्क नहीं लिया जाता.

6. वैवाहिक विज्ञापन केवल पत्रव्यवहार के लिए संपर्क सूत्र का काम करते हैं. विवाह तय करने से पहले संबंधित व्यक्ति के बारे में पूरी जानकारी प्राप्त किए बिना और आवश्यक जांचपड़ताल किए बिना कोई निर्णय नहीं लेना चाहिए.

7. विदेशों में रहने वाले युवकों से विवाह तय करने से पहले उन के पूर्व विवाहित होने या न होने व उन के बारे में जांच कर लेनी चाहिए. इस के लिए उन के नियोक्ता (जिस कंपनी में वे काम करते हों) से संपर्क कर जानकारी प्राप्त की जा सकती है.

8. विज्ञापन नंबर के उत्तर में प्राप्त पत्रों को विज्ञापनदाता के पास दो माह तक ही भेजे जाते हैं.

मुख्य व्यक्तिगत विज्ञापन कार्यालय :

ई एम 12, कनाट सरकस, नई दिल्ली-110001. फोन : 3321313

य कार्यालय :

जी-3, एच वी एस कोर्ट, 21 कन्नींघम रोड, बंगलौर 560052. फोन : 2267233.

79 ए, मित्तल चैंबर्स, नरीमन पाइंट, मुंबई-400021. फोन : 2022409.

503, नारायण चैंबर्स, आश्रम रोड, अहमदाबाद-380009. फोन : 6577845.

करें. वि.नं. 5887, सरिता, नई दिल्ली-110055.

गोद देना है दो वर्षीय गोर पुत्र व नवजात शिशु. वि.नं. 5888, सरिता, नई दिल्ली-110055.

रिक्त स्थान

दक्षिण कलकत्ता निवासी, 45 वर्षीय विधुर, सेल्सएक्जीक्यूटिव, अकेले रह रहे को जरूरत है गृहकार्य हेतु सेवाभावनावाली, शाकाहारी, पढ़ीलिखी, आकर्षक महिला की. अच्छा वेतन. प्रथम बार में ही पूर्ण विवरण सहित लिखें. वि.नं. 5889, सरिता, नई दिल्ली-110055.

उत्तरप्रदेशीय, 29 वर्षीय, अंतर्राष्ट्रीय व्यवसायी हेतु अकेली, स्मार्ट, स्वस्थ विचारों वाली मित्रवत युवती सहायिका चाहिए. कोई बंधन नहीं. वेतन व सुखसुविधाएं सहित. वि.नं. 5890, सरिता, नई दिल्ली-110055.

शिक्षित 40 से कम महिला समर्पित जरूरतमंद संगीसाथी/हाउसकीपर, सभी सुविधाएं, मान, वेतन. दिल्लीवासी 56 वर्षीय अधिकारी चार, 12वीं पास मेंडस, 2 ड्राइवर्स, 12वीं पास. पोस्ट बाक्स 6639, नई दिल्ली-18.

40 वर्षीय, अग्रवाल, शाकाहारी, अकेले, मिडल क्लास दिल्ली व्यवसायरत को अकेली, सुंदर, अच्छे विचारों वाली सहायिका चाहिए. सभी सुविधाएं उपलब्ध, अच्छे विचार होने से भविष्य में शादी की संभावना. उम्र व जातिबंधन नहीं. वि.नं. 5891, सरिता, नई दिल्ली-110055.

राजपत्रित अधिकारी को बेसहारा, एकाकी, विनम्र, छरहरी, सुंदर युवा महिला, गृहप्रबंधिका चाहिए. वि.नं. 5892, सरिता, नई दिल्ली-110055.

हरिद्वार स्थित छोटे परिवार हेतु शिक्षित, भरोसेमंद, गृहसहायिका चाहिए. वि.नं. 5893, सरिता, नई दिल्ली-110055.

दिल्लीनिवासी छोटे, संपन्न परिवार को एक विश्वासी महिला (उम्र 40/55 वर्ष) की आवश्यकता है. व्यवहारकुशल, गृहकार्य में दक्ष. निवेदनकर्ता को आजीवन घर जैसा मानसम्मान, प्रेम, तनावरहित जीवन मिलेगा. निसंतान, विधवा, परित्यक्ता को प्राथमिकता. पूर्ण विवरण सहित लिखें. वि.नं. 5894, सरिता, नई दिल्ली-110055.

शिक्षा

बी. आर्किटेक्चर दाखिला पत्राचार कोर्स, एसपीए, सीईपीटी, जेजे, टीवीबी लिखें: मनोज गुप्ता आर्किटेक्ट, 83-84-एफ, कमला नगर, दिल्ली-7.

इंटीरियर डेकोरेशन डाक द्वारा सीखिए, इंगलिश/हिंदी माध्यम, लिखें: एकैडमी, 10ए/14, शक्ति नगर, दिल्ली-110007.

क्या अच्छी इंगलिश बोलना आपकी समस्या है? ओइसी से संपर्क स्थापित करें व अपनी समस्या को अलविदा कहें. 7180749, 7189591.

पत्रकारिता और संपादन, पत्रिका संचालन, लेख, फीचर, कहानी व पटकथा लेखन के पत्राचार कोर्स की विवरणी मंगाएं. कहानी लेखन महाविद्यालय (स), अंबाला छावनी.

समाज सेवा

अंतर्जातीय आडंबरहीन विवाह इच्छुक लिखें : आस्था सेवा संस्थान (रजि.), हवेली दरवाजा, महोबा, उ.प्र. 210427.

व्यवसाय

अमेरिकन ज्ञान पर अपना नाम, पता, 1,000/-, उत्तम क्वालिटी, गोंद लगे लेबिल छपवा सकते हैं. जिनके बाएं ओर सुनहरे बार्डर, शुल्क रु. 80/- वी.पी.पी. द्वारा (डाक खर्च अलग), कुलदीप सिंह, 32, दी माल अमृतसर-143017.

जमीनजायदाद

न्यू लाइफ प्रोपर्टीज, डी-9/1, सैक्टर-15, रोहिणी, दिल्ली. फोन: 7291731, 7291925, 7893471, प्लाट, फ्लैट, कोठियां खरीदने, बेचने हेतु.

कंवल प्रापर्टीज (रजि.) रोहिणी/पीतमपुरा: प्लाट्स, फ्लैट्स, कोठियां, खरीदें/बेचें: सी-1/83, सैक्टर-11, रोहिणी दिल्ली, 7040306, 7042500, .

प्रदीप एसोसिएट्स (फेयर डीलिंग), रोहिणी: कोठियां, प्लाट्स, फ्लैट्स खरीदें/बेचें: बी-8/1, सैक्टर-11, रोहिणी, दिल्ली, 7043464, 7051816.

मनमीत प्रापर्टी कैम्पस रोहिणी: प्लाट्स, फ्लैट्स, कोठियां, खरीदें/बेचें: सी1/25, सैक्टर-15, रोहिणी, दिल्ली, 7291077, 7294901, 9810089081.

राजीव एंड कंपनी, रोहिणी: प्लाट्स, सोसायटी, फ्लैट्स, कोठियां, खरीदें/बेचें: ई-2/1/32, सेक्टर-15, रोहिणी, दिल्ली. 7891750, 7294232.

ए क्लासिक प्रोपर्टीज खरीदने/बेचने हेतु (O) 7893827, 7295848. (R) 7297358. एफ 7-ए/33, सेक्टर-16, रोहिणी, दिल्ली-85.

घर डिजाइन

आर्किटेक्ट रचित डिजाइनर घरों के नक्शे, विवरण हेतु लिखें: डिजाइन अकैडमी, 83-84-एफ, कमला नगर, दिल्ली-110007.

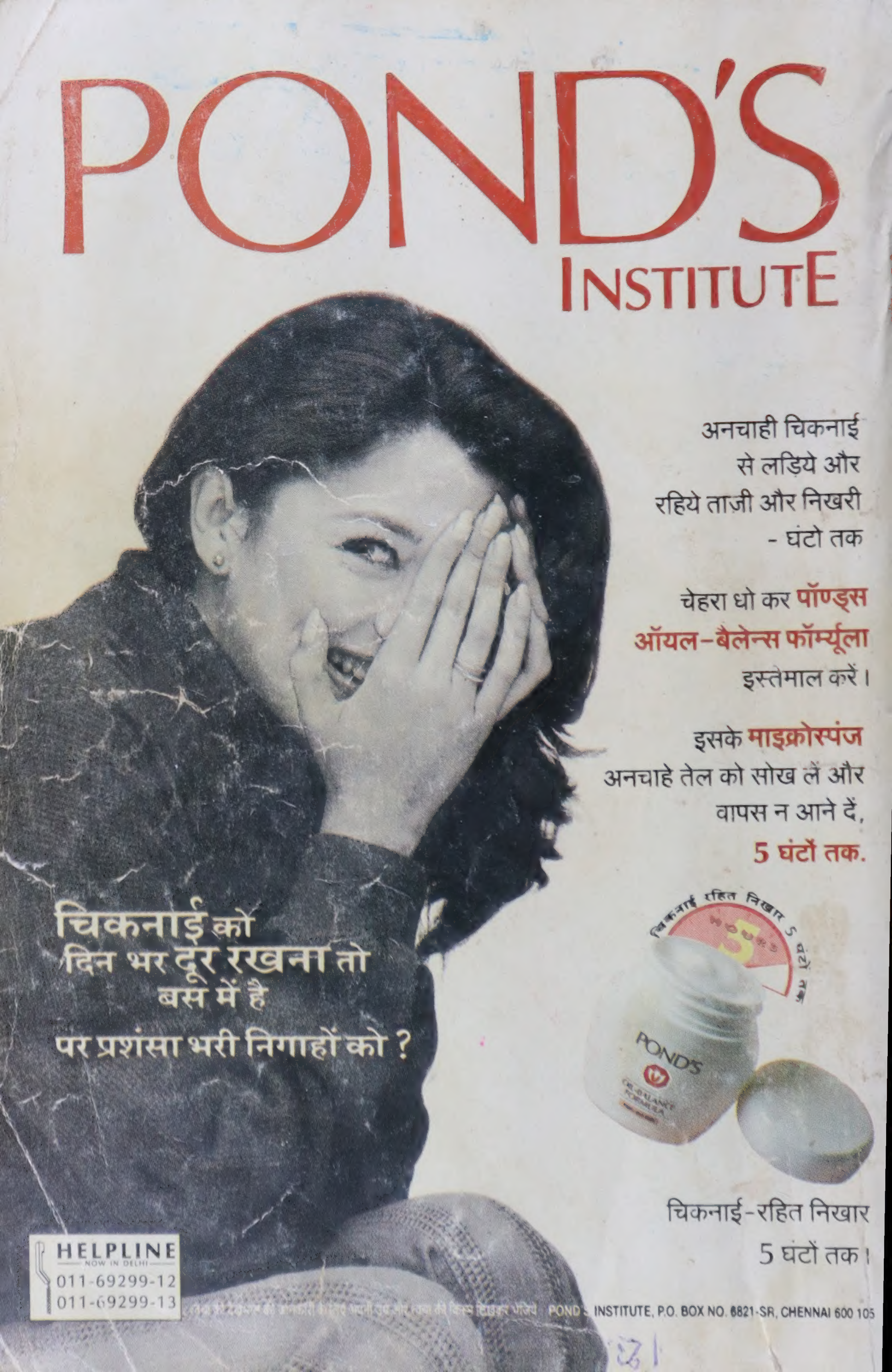
जासूसी सेवा

अपने शक, धोखे, चरित्र, अवैध संबंध, कोर्ट सुबूत, विवाह, पीछा संबंधी जांच/तहकीकात पूर्णतः गुप्त कराएं: इंटेलीजेंटडिटेक्टिव एजेंसी: 5557052, 5510065,5517502, 9811168986. फैक्स 011-5229687, ब्रांच मुंबई 2624560,2624785. फैक्स 91-22-2871166.

पुस्तकें

भूतों, प्रेतों के विरोध की सत्य कथाएं पढ़ने हेतु संपर्क करें. मेघराज मित्र, तर्कशील सोसायटी, बरनाला, पंजाब.


"किसी आम तेल में वो बात नहीं
जो मेरे हेयर ऑयल में है-
डैन्ड्रफ़ की रोकथाम!"
''मेरा क्लिनिक ऑल क्लियर डैन्ड्रफ़ हेयर ऑयल मुझमें जगाता है शानदार बालों का विश्वास.''
जी हां, साधारण तेल डैन्ड्रफ़ पर बेअसर रहते हैं. ऊपर से बाल भी चिपचिपाते हैं. मगर नए क्लिनिक ऑल क्लियर डैन्ड्रफ़ हेयर ऑयल में है एक विशेष तत्त्व जो डैन्ड्रफ़ के मूल कारण माइक्रोब्स को असरदार तरीके से मिटाता है और आपका डैन्ड्रफ़ क़ाबू में रखता है. इस चिपचिपाहट-रहित तेल से आपके बाल रहते हैं हल्के-फुल्के और आप पाते हैं एक नया ताज़ा एहसास, एक नया विश्वास!
नया क्लिनिक ऑल क्लियर डैन्ड्रफ़ हेयर ऑयल अपनाइए, विश्वास के साथ-साथ शानदार बाल पाइए!
क्लिनिक
ऑल क्लियर
डैन्ड्रफ़ हेयर ऑयल
नया
NEW
Clinic
ALL CLEAR
DANDRUFF HAIR OIL
डैन्ड्रफ़ पर असरदार. बाल बनाए शानदार.
Lintas CAC Do 7 1811 Hi
न्दुस्तान लीवर लि. का एक उत्कृष्ट उत्पादन.



POND'S
INSTITUTE
अनचाही चिकनाई
से लड़िये और
रहिये ताज़ी और निखरी
- घंटो तक
चेहरा धो कर पॉण्ड्स
ऑयल-बैलेन्स फॉर्म्यूला
इस्तेमाल करें।
इसके माइक्रोस्पंज
अनचाहे तेल को सोख लें और
वापस न आने दें,
5 घंटों तक.
चिकनाई को
दिन भर दूर रखना तो
बस में है
पर प्रशंसा भरी निगाहों को ?
POND'S
चिकनाई-रहित निखार
5 घंटों तक।
HELPLINE
NOW IN DELHI
011-69299-12
011-69299-13
INSTITUTE, P.O. BOX NO. 6821-SR, CHENNAI 600 105